SRI JAIN SIDHANT BHAWAN GRANTHAWALI

VOL.--2

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

भाग–२

जैन–सिद्धान्त–भवन–ग्रंथावली

(देव कुमार जैन प्राच्य ग्रन्थागार, जैन सिद्धान्त भवन, आरा की संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश एवं हिन्दी की हस्तलिखित पाण्डुलिपियों की विस्तृत सूची)

भाग–२

प्रस्तवन :

डा० गोकुलचन्द्र जैन

अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,

वाराणसी

संपादन :

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार, दर्शनाचार्य

शोधाधिकारी, देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान, आरा

(बिहार)

संकलन :

शशीभूषण त्रिपाठी, M. A. (संस्कृत)

कविराज दिवाकर ठाकुर, G.A.M.S. (आयुर्वेद)

गुप्तेश्वर तिवारी, आचार्य

श्री जैन सिद्धान्त भवन प्रकाशन

भगवान महावीर मार्ग, आरा–८०२३०१

Jaina Siddhant Bhawana Granthavali

Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁśa & Hindi Manuscripts

of

Sri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah

Vol.-2

Introduction :
Dr. Gokulchandra Jain
Head of the department of Prakrit & Jainagama.
Sampurnananda Sanskrit Vishvavidyalaya, Varanasi

Editor ;
Rishabhachandra Jain Fouzdar,
Research Officer
Devakumar Jain Oriental Research Institute, Arrah (Bihar)

Compilation :
Shashi Bhushan Tripathi, M.A.(San.)
Kaviraj Diwakar Thakur, G. A. M. S. (Aurveda)
Gupteshwar Tiwari

Sri Jaina Siddhant Bhawan
PUBLICATION
Bhagwan Mahavir Marg, Arrah-802301

Foreword

Bihar has played a great role in the history of Jainism. Last Tirthankar, Mahavira, who gave a great fillip to the Jain religion, was born here and spread his massage of peace and ahimsa. It is from the land of Bihar that the fountain of Jainism spread its influence to the different parts of India in ancient period. And in the modern age the Jain Siddhanta Bhavan at Arrah in Bhojpur district has kept the torch of of Jainism burning. It occupies a unique place among the modern Jain institutions of culture. This institution was established to promote historical research and advancement of knowledge particularly Jain learning.

There is a collection of thousands of manuscripts, rare books, pictures and palm-leaf manuscripts, in Shri Devakumar Jain Oriental Library Arrah attached to the said institution. Some of the manuscripts contain rare Jain paintings. These manuscripts are very valuable for the study of the creed as well as the socio-economic life of ancient India.

The present work "Sri Jain Siddhanta Bhavan Granthavali" being the Catalogue of Sanskrit, Prakrit, Apabhraṁsa and Hindi Manuscripts is being prepared in six volumes. Each volume contains two parts First parts consists of the list of manuscripts preserved in the institution with some basic informations such as accession number, title of the work, name of the author, scripts, language, size, date etc. Part second which is named as Pariśiṣṭa (Appendix) contains more details about the manuscripts recorded in the first part.

The author has taken great pains in preparing the present Catologue and deserves congratulations for the commendable job, This work will no doubt remain for long time a ready book of reference to scholars of ancient Indian Culture particularly Jainism.

(Naseem Akhtar)
Director, Museums
Bihar, Patna.

February 29, 1988.
Vikas Bhavan, Patna

प्रकाशकीय नम्र निवेदन

'जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली' का दूसरा भाग प्रकाशित होते देख मुझे अपार हर्ष हो रहा है। लगभग पाँच वर्ष पहले से इस सपने को साकार करने का प्रयत्न चल रहा था। अब यह महत्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ हो गया है। एक पंचवर्षीय योजना के रूप में इसके छः भाग प्रकाशित करने में सफलता मिलेगी ऐसी पूरी आशा है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' का यह दूसरा भाग जैन सिद्धांत भवन, आरा के ग्रन्थागार में सग्रहीत संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड़ एवं हिन्दी के हस्तलिखित ग्रन्थों की विस्तृत सूची है। इसमें लगभग एक हजार ग्रन्थों का विवरण है। हर भाग में इसका विभाजन दो खण्डों में किया गया है। पहले खण्ड में अंग्रेजी (रोमन) में ग्यारह शीर्षकों द्वारा पांडुलिपियों के आकार, पृष्ठ संख्या आदि की जानकारी दी गई है। 'भवन' के ग्रथागार में लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताडपत्र के ग्रथों का संग्रह है। इनमें अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं जो दुर्लभ तथा अद्यावधि अप्रकाशित है। अप्रकाशित ग्रन्थो को सम्पादित कराकर प्रकाशित करने की भी योजना आरम्भ हो गई है। वर्तमान में जैन सिद्धात भवन, आरा में उपलब्ध 'राम यशोरसायन रास (सचित्र जैन रामायण) का प्रकाशन हो रहा है जो शीघ्र ही पाठको के हाथ में होगा। इसमें २१३ दुर्लभ चित्र है।

'जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली' के कार्य को प्रारम्भ कराने मे काफी कठिनाइयो का सामना करना पड़ा लेकिन श्रीजी और माँ सरस्वती की असीम कृपा से सभी संयोग जुड़ते गए जिससे मै यह ऐतिहासिक एव महत्व पूर्ण कार्य आरम्भ कराने में सफल हुआ हूँ। भविष्य में भी अपने सभी सहयोगियो से यही अपेक्षा रखता हूँ कि हमें उनका सहयोग हमेशा प्राप्त होता रहेगा।

ग्रन्थावली एव रामयशोरसायन रास के प्रकाशन के सबसे बड़े प्रेरणा-श्रोत आदरणीय पिता जी श्री सुबोध कुमार जैन के सहयोग एवं मार्गदर्शन को कभी विस्मृत नही किया जा सकता। अपने कार्यकर्ताओ की टीम के साथ उनसे विचार विमर्श करना तथा सबकी राय से निर्णय लेना उनका ऐसा तरीका रहा है जिसके कारण सभी एकजुट होकर कार्य मे लगे हैं।

बिहार सरकार एव भारत सरकार के शिक्षा विभाग एवं संस्कृति विभाग ने इस प्रकाशन को अपनी स्वीकृति एव आर्थिक सहयोग प्रदान कर एक बहुत ही महत्वपूर्ण कदम उठाया है जिसके लिये हम निदेशक राष्ट्रीय अभिलेखागार, दिल्ली, निदेशक पुरातत्व एवं निदेशक संग्रहालय बिहार सरकार तथा भारत सरकार के सभी संबंधित

अधिकारियों के कृतज्ञ है और उनसे अपेक्षा रखेंगे कि भवन के अन्य अप्रकाशित हस्त-लिखित ग्रंथों के प्रकाशन में उनका सहयोग देश की सांस्कृतिक धरोहर की सुरक्षा हेतु भविष्य में भी हमें प्राप्त होगा।

डा० गोकुलचन्द्र जैन, अध्यक्ष, प्राकृत एवं जैनागम विभाग, संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने ग्रन्थावली की विद्वतापूर्ण प्रस्तावना आंग्ल भाषा में लिखी है। बिहार म्यूजियम के विद्वान एवं कर्मठ निर्देशक श्री नसीम अख्तर साहब ने समय निकालकर इस पुस्तक की भूमिका लिखी है। डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, संस्कृत-प्राकृत विभाग, जैन कालेज, आरा तथा मानद निदेशक श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोधसंस्थान, आरा ने आवश्यकता पड़ने पर हमें इस प्रकाशन के सम्बन्ध में बराबर महत्वपूर्ण मार्ग दर्शन दिया है। हम तीनोंही जाने माने विद्वानों का आभार मानते हैं।

श्री ऋषभ चन्द्र जैन 'फौजदार', जैनदर्शनाचार्य परिश्रम और लगन से ग्रन्थावली का संपादन कर रहे हैं। श्री ऋषभ जी हमारे संस्थान में मानद शोधा-कारी के रूप में भी कार्यरत हैं। ग्रन्थावली के दोनों खण्डों के संकलन के संपूर्ण कार्य यानी अंग्रेजी भाषा में एक हजार ग्रंथों की ग्यारह कालमों में विस्तृत सूची तथा प्राकृत एवं संस्कृत आदि भाषाओं में परिशिष्ट के रूप में सभी ग्रंथों के आरम्भ की तथा अंत के पदों का और उनके कोलाफोन के भी विस्तृत विवरण देने जैसा कठिन कार्य श्री विनय कुमार सिन्हा, एम० ए० और श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिन्हा, बी० ए० ने बहुत परिश्रम करके योग्यता पूर्वक किया है। डा० दिवाकर ठाकुर और श्री मदनमोहन प्रसाद बर्मा ने पुस्तक के अंत में 'वर्ण-क्रम के आधार पर ग्रन्थकारों एवं टीकाकारों की नामावली और उनके ग्रन्थों की क्रम संख्या का संकलन तैयार किया है।

श्री जिनेश कुमार जैन, पुस्तकालय-अधिक्षक, श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का सहयोग भी सराहनीय है जिनके अथक परिश्रम से ग्रन्थों का रखरखाव होता है। प्रेस मैनेजर श्री मुकेश कुमार वर्मा भी अपना भार उत्साह पूर्वक संभाल रहे हैं। इनके अतिरिक्त जिन अन्य लोगों से भी मुझे प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहयोग मिला है उन सभी का हृदय से आभारी हूँ।

अजय कुमार जैन
मंत्री
श्री देवकुमार जैन ओरिएन्टल लाईब्रेरी

देवाश्रम,
आरा

ABBREVIATION

V. S.	—	Vikrama Saṁvata
D.	—	Devanāgarī
Stk.	—	Sanskrit
Pkt.	—	Prakrit
Apb.	—	Apabhraṁśa
C.	—	Complete
Inc.	—	Incomplete

Catg. of Skt. Ms. – Catalogue of Sanskrit manuscripts in Mysore and coorg. by Lewis Rice. M. R. A. S,, Mysore Government Press, Bangalore, 1884.

Catg. of Skt. & Pkt Ms – Catalogue of Sankrit & Prakrit manuscripts in the Central Provinces & Berar. by. Rai Bahadur Hiralal, B.A. Nagpur, 1926.

(१) आ० सू० — आमेर सूची—डा० कस्तूरचन्द, कासलीवाल।

(२) जि० र० को० — जिनरत्नकोश –डा० वेलणकर, भण्डारकर ओरिएण्टल रिसर्च इन्स्टीच्यूट, पूना।

(३) जै० ग्र० प्र० सं० — जैन ग्रन्थ प्रशस्ति संग्रह—पं० जुगलकिशोर मुख्तार।

(४) दि० जि० ग्र० र० — दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नावली—श्री कुन्दनलाल जैन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली।

(५) प्र० जै० सा० — प्रकाशित जैन साहित्य—डा० पन्नालाल अग्रवाल।

(६) प्र० सं० — प्रशस्ति संग्रह डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल।

(७) भ० सं० — भट्टारक सम्प्रदाय –विद्याधर जोहरापुरकर।

(८) रा० सू० — राजस्थान के शास्त्र भंडारों की सूची—डा० कस्तूरचन्द कासलीवाल, दि० जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीरजी, जयपुर (राजस्थान)।

समर्पण

देवाश्रम परिवार में

पंडित-प्रवर बाबू प्रभुदास जी,

राजर्षि बाबू देवकुमार जी,

ब्र० पं० चन्दा मॉश्री,

और

बाबू निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जी

यशस्वी तथा गुणीजन हुए हैं।

उन सभी की पावन

स्मृति को यह

श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थावली

सादर समर्पित है।

देवाश्रम आरा — *सुबोधकुमार जैन*

१४-३-८७

INTRODUCTION
(VOL—I.)

I have great pleasure in introducing *Śrī Jaina Siddhānta Bhavan Granthāvalī* – a descriptive Catalogue of 997 Sanskrit, Prakrit, Apabhramsa and Hindi Manuscripts preserved in Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, popularly known as Jaina Sidhānta Bhavan, Arrah. The actual number of MSS exceeds even one thousand as some of them are numbered as *a* and *b*. Being the first volume, it marks the beginning of a series of the Catalogues to be prepared and published by the Library.

The Catalogue, devided into two parts, covers about 500 pages and each part numbered separately. In the first part, descriptions of the MSS have been given while the second part contains the Text of the opening and closing portions of MSS along with the Colophon. The catalogue has been prepared strictly according to the scientific methodology developed during recent years and approved by the scholars as well as Government of India. The description of the MSS has been recorded into eleven columns viz. 1. Serial number, 2. Library accession or collection number, 3. Titleof the work, 4. Name of the author, 5. Name of the commentator. 6. Material, 7 Script and language, 8. Size and number of folio, lines per page and letters per line. 9. Extent, 10. Condition and age, 11. Additional particulars. These details provide adequate informations about the MSS. For instance thirteen MSS of *Drvyasaṁgraha* have been recorded (S. Nos. 213 to 224). It is a well known tiny treatise in Prakrit verses by Nemicanda Siddhānti and has had attracted attention of Sanskrit ond other commentators. Each Ms. preserved in the Bhavana's Library has been given an independent accession number. Its justification could be observed in the details provided.

From the details one finds that first four MSS (213 to 215/2) contain bare Prakrit text. All are paper, written in *Devanāgarī* Script, their language being natured in poetry. Each Ms has different size and number of folios. Lines per page and letters per line are also different. All are complete and in good condition. Only one Ms (216) is a Hindi versón in poetry by some unknown

writer and is incomplete. Two MSS (218, 222) are with exposition in *Bhāṣā* (Hindi) prose and poetry by Dyānatarāya and three are in Bhāsā poetry by Bhagavatidas. Ms No. 223 dated 1721 v. s., is with Sanskrit commentary in Prose. Ms No. 229 is a *Bhāṣā vacanikā* by Jayacanda. These details could be seen at a glance as they are presented scientifically.

The Manuscripts recorded in the present volume have been broadly classified into following eleven heads : -

1.	Purāṇa, Carita, Kathā	1 to 155
2.	Dharma, Darśana, Ācāra	156 to 453
3.	Nyāyaśāstra	454 to 480
4.	Vyākaraṇa	481 to 492
5.	Kośa	493 to 501
6.	Rasa. chanda, Alaṅkāra & Kāvya	502 to 531
7.	Jyotiṣa	532 to 550
8.	Mantra. Karmakāṇḍa	551 to 588
9.	Āyurveda	589 to 600
10.	Stotra	601 to 800
11.	Pūjā, Pāṭha-vidhāna	801 to 997

The details have been presented in Roman scripts in Hindi Alphabetic order. The classification is of general nature and help a common reader for consultation of the Catalogue. However, critical observations may deduct some MSS which do not fall under any of these eleven categories (see MSS 295, 511, 512).

The Second Part of the volume is entitled as *Pariśiṣṭa* or Appendix. This part furnishes more details regarding the MSS recorded in the first part. Along with the text of the opening and closing portions of each Ms, colophons have been presented in *Devanāgarī* script. The text is presented as it is found in the MSS and the readers should not be confused or disheartened even if the text is currupt. The cross references of more than ten other works deserve special mention. Only a well read and informed scholar could make such a difficult task possible with his high industry and love of labour.

From the details presented in the Second part we get some very interesting as well as importnt informations. A few of them are noted below :—

(1) Some Mss belong to quite a different category and do not come under the heads, they have been enumerated, such as *Navaratnaparīkṣā* (295) which deals with Gemeology. The opening & closing text as well as the colophon clearly mention that it is a *Ratna Śāstra* by Buddhabhatt. Similarly, *Nītivākyāmṛtam* (511. 512) is the famous work on Polity by Somadeva Suri (10th cent.). *Trepanakriyākośa* (498, 499) is not a work on Lexicon. It deals with rituals and hence falls under *Ācāraśāstra*. These observations are intended to impress upon the consultant of the catalogue that he should not by pass merely by looking over the caption alone but should see thoroughly the details given in the Second part of the catalogue which may reveal valuable informations for him.

(2) Some of the MSS of *Āptamīmāṁsā* contain *Āptamīmāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda (455) *Āptamīmāṁsāvṛtti* of Vasunandi (456) and *Āptamīmāṁsābhāṣya* of Akalaṅka (457). These three famous commentaries are popularly known as *Aṣṭasahasrī*. *Aṣṭaśatī* and *Devāgamavṛtti*. Though these works have once been published, yet these can be utilised for critical editions.

(3) In the colophon of some of the MSS the parential MSS have been mentioned and the name of the copyist, its date and place where they have been copied, have been given. These informations are of manifold importance. For instance the information regarding parential Ms is very important. If the editor feels necessary to consult the original Ms for his satisfaction of the readings of the text, he can get an opportunity for the same. It is of particular importance if the Ms has been written into different scripts then that of the original one. Many Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works are preserved on palm leaves in *Kannada* scripts. When these are rendered into *Devanāgarī* scripts there are every possibility of slips, difference in readings and so on. It is not essential that the copyist should be well acquainted with all its languages and subject matter of each Ms. The difference of alphabets in different languages is obvious. Thus the reference of parential Ms is of great importance (373).

(4) The references of places and the copyists further authenticate the MSS. Some of the MSS have been copied in Karnataka at Moodbidri and other places from the palm leaf MSS written in *Kannaḍa* scripts (7, 318, 373) whereas some in Northen India, in Rajasthan, Uttar Pradesh, Bihar, Madhya Pradesh and Delhi.

5) It is also noteworthy that copying work was done at Jaina Siddhanta Bhavana. Arrah itself. MSS were borrowed from different collections & copying work was conducted in the supervision of learned Scholars.

(6) The study of colophon reveals many more inportant references of *Saṁghs*, *Gaṇas*, *Gacchas*, *Bhaṭṭārakas*, and presentation of *Śāstras* by pious men and women to ascetics. copying the Ms for personal study – *svādhyāya*, and getting the work prepared for his son or relative etc. Such references denote the continuity of religious practice of *śāstradāna* which occupy a very high position in the code of conduct of a Jaina household,

(7) The copying work of MSS was done not only by paid professionals but also by devout *śrāvakas* and desciples of *Bhaṭṭārakas* or other ascetics.

(8) In most of the MSS counting of alphabets, words, *ślokas*, or *gāthās* have been given as *granthaparimāṇa* at the end of the MSS. This reference is very important from the point of the extent of the Text. Many times the author himself indicates the *granthaparimāṇa*. Even the prose works are counted in the form of ślokas (32 alphabets each). The *Āptamimāṁsā Bhāṣya* of Akalaṅka is more popularly known as *Aṣṭaśatī* and *Āptamimāṁsālaṅkṛti* of Vidyānanda is famous as *Aṣṭasahaśrī*. Both works are the commentaries on the *Āptamimāṁṣā* (in verse) of Samanta Bhadra in Sanskrit prose, Vidyānanda himself says about his work :—

"*Śrotavy – aṣṭasahasrī śrutaiḥ kimanyaiḥ sahasrasaṁkhyānaiḥ.*"

Counting in the form of ślokas seems a later development. When the teachings of Vardhamāna Mahāvīra were reduced to writing counting was done in the form of *Padas*. For instance the *Āyāraṁga* is said to contain eighteen thousand *Padas*.

" āyāraṁgamatthāraha—pada - sahassehi "

(Dhavalā p. 100)

Such references are more useful for critical study of the text.

(9) Some references given in the colophons shed light on some points of socio-cultural importance as well. The copying work was done by Brāhmins, Vaiśyas, Agarawālas, Khandelāwāls, Kāyasthas and others. There had been some professionally trained persons with very good hand writing who were entrusted with the work of copying the MSS. The remuneration of writing was decided per hundred words. For the purpose of the counting generally the copyist used to put a particular mark (I) invariably without punctuation. In the end of some of the MSS even the sum paid, is mentioned. Though it has neither been recorded in the present catalogue nor was required, but for those who want to study the MSS these informations may be important.

The study of Colophons alone can be an independent and important subject of research.

From the above details it is clear that both the parts of the present volume supplement each other. Thus, the *Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a highly useful reference work which undoubtedly contributes to the advancement of oriental learning. With the publication of this volume the Bhavana has revived one of its important activities which had been started in the first decade of the present Centuty.

Shri Jaina Siddhant Bhavan, Arrah, established in the beginning of the present century had soon become famous for its threefold activities viz. 1) procuring and preserving rare and more ancient MSS, 2) publication of important texts with its english translation in the series of Sacred Books of the Jaina's and 3) bringing out a bilingual research journal *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*. Under the first scheme, many palm leaf MSS have been procured from South India, particularly from Karnataka, and paper MSS from Northern India However the copying work was done on the spot if the Ms was not lent by the owner or otherwise was not transferable. The earliest Śauraseni Prakrit *Siddhānta Śāstra Saṭkhaṇḍāgama*

with its famous commentaries *Davalā*, *Jayadavalā*, and *Mahādavlā* was copied from the only surviving palm leaf Ms in old *Kannaḍa* scripts, preserved in the *Siddhānta Basadi* of Moodbidri.

Bhavan's Collection became known all over the world within ten years of establishment. In the year 1913, an exhibition of Bhavan's collection was organised at Varanasi by its sister institution on the occasion of Three Day Ninth Annual Function of Śrī *Syādvāda Mahāvidyālaya*. A galaxy of persons from India and abroad who participated in the function greatly appreciated the collection. Mention may specially be made of Pt. Gopal Das Baraiya, Lala Bhagavan Din, Pt. Arjunlal Sethi, Suraj Bhan Vakil, Dr. Satish Chandra Vidyabhusan, Prof. Heraman Jacobi of Germany, Prof. Jems from United States of America, Ajit Prasad Jain, and Brahmachari Shital Prasad. A similar exhibition was organised in Calcutta in 1915. Among the visitors mention may be made of Sir Asutosh Mukherjee, Shri Aurvind Nath Tegore, Sir John woodruf and Sarat Chandra Ghosal.

The other activity of the publication of *Biblothica Jainica— The Sacred Books of the Jainas* began with the publication of *Dravya Samgraha* as Volume I (1917) with Introduction, English translation and Notes etc. In this series important ancient Prakrit texts like *Samayasāra*, *Gommatasāra*, *Ātmānuśāsana* and *Purusārtha Siddhyupāya* were published. Alongwith the Sacred Book Series books in English on Jaina tenets by eminent scholars were also published. *Jaina Siddhānta Bhāskara* and *Jaina Antiquary*, a bilingual Research Journal was published with the objectiveto bring into light recent researches and findings in the field of Jainalogical learning.

Thanks to the foresight of the founders that they could conceive of an Institution which became a prestigious heritage of the country in general and of the Jainas in particular. The palm leaf MSS in *Kannada* scripts or rendered into *Devanāgari* on paper are valuable assets of the collection. It is undoubtedly accepted that a manuscipt is more valuable than an icon or Architectural set-up. An icon may be restalled and similarly an Architectural set-up can be re-built, but if even a piece of any Ms is lost, it is lost for ever. It is how plenty of ancient works have been lost. It is why the followers of Jainism paid a thoughtful consideration to preserve

the MSS which is included in their religious practice. A Jaina Shrine, particularly the temple was essentially attached with a *Śāstra-Bhandāra*, because the *Jina*, *Jinavāṇī* and *Jinaguru* were considered the objects of worship. Almost all the Jaina temples are invariably accompanied with the *Śāstra-Bhandāras*. During the time of some of the Mughal emperors like Mahmud Gaznai (1025 A.D.) and Aurangzeb (1661-1669 A.D.) when the temples were destroyed, a new awakening for preservation of the temples and *Śāstra* started and much interior places were choosen for the purpose. A new sect of the Bhattārakas and Caityavāsis emerged among the Jaina ascetics who undertook with enthusiasm the activity of building up the *Śāstra Bhandaras*. As a result, many MSS collections came up all over India. The collections of Sravanabelagola, Moodbidri and Humach in Karnataka, Patan in Gujrat, Nagaur, Ajmer, Jaipur in Raj asthan, Kolhapur in Maharastra, Agra in Uttar Pradesh and Delhi are well known. A good number of copies of important MSS were prepared and sent to different *Śāstra Bhandāras*. One can imagine how the copies of a works composed in South India could travel to North and West. And likewise works composed in North-West reached the Southern coast of India. A great number of Sanskrit, Prakrit and Apabhramsa works were rendered into Kannada, Tamil and Malayalee Scripts and were transcribed on the Palm Leaf. It is a historical fact that the religious enthusiasm was so high that Shāntammā, a pious Jaina lady, got prepared one thousand copies of *Śāntipurāṇa* and distributed them among religious people. At a time when there were no printing facilities such efforts deserved to be considered of great significance.

The above efforts saved hundreds thousands MSS. But along with the development of these new sects these social institutions became almost private properties. This resulted into two unwanted developments viz. 1) lack of preservation in many cases and 2) hardship in accessiblity. Due to these two reasons the MSS remained locked for a long period for safety, and consequently the valuable treasure remained unknown to scholars. The story of the *Siddhānta* Śāstra *Satkhandāgama* is now well known. It is only one example.

With the new awakening in the middle or last quarter of the Nineteenth Century some enlightened Jaina householders came out

with a strong desire to accept the challenge of the age and started establishing independent MSS libraries. This continued during the first quarter of 20th century- In such Institution, Eelak Pannalal Sarasvati Bhavan at Vyar, Jhalara Patan and Ujjain, and Shri Jaina Siddhanta Bhawan at Arrah stand at the top. More significant part of these collections had been their availability to the scholars all over the world. Almost all the eminent Joinologist of the present century studing the MSS, have utilized the collection of Sri Jaina Siddhanta Bhawan. It had been my proud privilege and pleasure that I too have used Bhavan's MSS for almost all my critical editions of the works I edited.

During last few decades catalogues of some of the MSS collections, in Government as well as in private institutions, have been published Through these catalogues the MSS have become known to the world of Scholars who may utilise them for their study.

In the series of the publications of catalogues relating to Jainalogy, *Jinaratnakośa* by Velankar deserves special mention. It is quite a different type of reference work relating to MSS. Bharatiya Janapitha, Kashi published in Hindi in Devanagari script the *Kannadaprāntiya Tāḍapatrīya Grantha* Sūchī in 1948 recording descriptions of 3538 Palm leaf MSS. The catalogues of the MSS of Rajasthan prepared by Dr. Kastoor Chand Kasliwal and published in five volumes by Shri Digambar Jaina Atisaya Ksetra Shri Mahaviraji, Jaipur also deserve mention. L. D. Institute of Indology, Ahmedabad have published catalogue in several volumes. Among the publication of new catalogues mention may be made of *Dillī Jina-Grantha-Ratnāvalī* published by Bharatiya Jnanpith, New Delhi and the catalogue of *Nāgaura Jaina Śāstra-Bhandāra* published by Rajasthan University.

In the above range of catalogues, the present volume of *Śrī Jaina Siddhānta Bhavana Granthāvalī* is a valuable addition. As already started this is the beginning of the publication of catalogues of the MSS preserved in Sri Jain Siddhant Bhavan now Shri Deva Kumar Jain Oriental Library, Arrah. It is likely to cover eight volumes each covering about 1000 MSS. I am well aware that preparation and publication of such works require high industrious zeal, great

passions and continued endeavour of a team of scholars with keen insight besides the large sum required for such publications.

It is not the place to go into many more details regarding the importance of the MSS and contribution of Bhavan's collection, but I will be failing in my duty if I do not record the contribution of the founder Sriman Devakumarji and his worthy successors. I sincerely thank Shriman Babu Subodh Kumar Jain, Honorary Secretary of Shri Jain Siddhant Bhavan, who is carrying forward the activities of the Institute with great enthusiasm. Shri Risabh Chandra Jain deserves my whole hearted appreciation for preparing, editing and seeing through the press the Catalogue with fullest sincerity, ability and insight. His associates also deserve applause for their due assistance. I also thank my esteem friend Dr. Rajaram Jain, who is a guiding force as the Honorary Director of the Institute.

In the end I sincerely wish to see other volumes published as early as possible.

Dr. Gokul Chandra Jain
Head of Department of Prakrit
and Jainägam, Sampurnanand
Sanskrit Vishvavidyalay,
VARANASI

सम्पादकीय

श्री देवकुमार जैन ओरिएण्टल लायब्रेरी तथा श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा 'सेन्ट्रल जैन ओरिएन्टल लायब्रेरी' के नाम से देश-विदेश में विख्यात है। यह ग्रन्थागार आरा नगर के प्रमुख भगवान महावीर मार्ग (जेल रोड) पर स्थित है। वर्तमान में इसके मुख्य द्वार के ऊपर सरस्वती जी की भव्य एवं विशाल प्रतिमा है। अन्दर बहुत बड़ा संगमरमर का हॉल है, जिसमें सोलह हजार छपे हुए तथा लगभग छह हजार हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थों का संग्रह है। जैन सिद्धान्त भवन के ही तत्वावधान में श्री शान्तिनाथ जैन मन्दिर पर 'श्री निर्मलकुमार चक्रेश्वरकुमार जैन कला दीर्घा' है। इस कला दीर्घा में शताधिक दुर्लभ हस्तनिमित चित्र, ऐतिहासिक सिक्के एवं अन्य पुरातत्त्व सामग्री प्रदर्शित है। यहीं ८४ वर्ष पूर्व एक महत्वपूर्ण सभा में श्री जैन सिद्धान्त भवन, आरा का उद्घाटन (जन्म) हुआ था।

सन् १९०३ में भट्टारक हर्षकीर्ति जी महाराज सम्मेद शिखर की यात्रा से लौटते समय आरा पधारे। आते ही उन्होंने स्थानीय जैन पंचायत की एक सभा में बाबू देवकुमार जी द्वारा संगृहीत उनके पितामह पं० प्रभुदास जी के ग्रन्थ संग्रह के दर्शन किये तथा उन्हें स्वतन्त्र ग्रन्थागार स्थापित करने की प्रेरणा दी। बाबू देवकुमार जी धर्म एवं संस्कृति के प्रेमी थे, उन्होंने तत्काल श्री जैन सिद्धान्त भवन की स्थापना वहीं कर दी। भट्टारक जी ने अपना ग्रन्थसंग्रह भी जैन सिद्धान्त भवन को भेंट कर दिया।

जैन सिद्धान्त भवन के संवर्द्धन के निमित्त बाबू देवकुमार जी ने श्रवणबेलगोला के यशस्वी भट्टारक नेमिसागर जी के साथ सन् १९०६ में दक्षिण भारत की यात्रा प्रारम्भ की, जिसमें विभिन्न नगरों एवं गांवों में सभाओं का आयोजन करके जैन संस्कृति की सुरक्षा एवं समृद्धि का महत्व बताया। उसी समय अनेक गांवों और नगरों से हस्तलिखित कागज एवं ताड़पत्र के ग्रन्थ सिद्धान्त भवन के लिए प्राप्त हुए तथा स्थानों पर शास्त्रभंडारों को व्यवस्थित भी किया गया। इस प्रकार कठिन परिश्रम एवं निरन्तर प्रयत्न करके बा० देवकुमार जी ने अपने ग्रन्थकोश को समुन्नत किया। उस समय यात्राएँ पैदल या बैलगाड़ियो पर हुआ करती थीं। किन्तु काल की गति को कौन जानता है? १९०८ ई० में ३१ वर्ष की अल्पायु में ही बाबू देवकुमार जी स्वर्गीय हो गये, जिससे जैन समाज के साथ-साथ सिद्धात भन के कार्य-कलाप भी प्रभावित हुए। तत्पश्चात् उनके साले बाबू करोड़ीचन्द्र ने भवन का कार्य संभाला और उन्होंने भी दक्षिण भारत तथा अन्य प्रान्तों की यात्रा करके हस्तलिखित ग्रन्थों का संग्रह कर सेवा कार्य किया। उनके उपरान्त आरा के एक और यशस्वी धर्मप्रेमी कुमार देवेन्द्र

)

ने भवन की उन्नति हेतु कलकत्ता और बनारस में बड़े पैमाने पर जैन प्रदर्शिनियों और सभाओं का आयोजन किया। भवन के वैभव सम्पन्न संग्रह को देखकर डा० हर्मन जैकोबी, श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर आदि जगत् प्रसिद्ध विद्वान प्रभावित हुए तथा उन्होंने बाबू देवकुमार की स्मृति में प्रशस्तियाँ लिखीं एवं भवन की सुरक्षा एवं समृद्धि की प्रेरणाएँ दीं।

सन् १९१९ में स्व० बाबू देवकुमार जी के पुत्र बाबू निर्मलकुमार जी भवन के मंत्री निर्वाचित हुए। मंत्री पद का भार ग्रहण करते ही निर्मलकुमार जी ने भवन के कार्य-कलापों में गति भर दी। १९२४ मई में जैन सिद्धांत भवन के लिए स्वतन्त्र भवन का निर्माण कार्य आरम्भ करके एक वर्ष में भव्य एवं विशाल भवन तैयार करा दिया। तत्पश्चात् धार्मिक अनुष्ठान के साथ सन् १९२६ में श्रुतपञ्चमी पर्व के दिन श्री जैन सिद्धांत भवन ग्रन्थागार को नये भवन में प्रतिष्ठापित कर दिया। उन्होंने अपने कार्यकाल मे ग्रन्थागार में प्रचुर मात्रा में हस्तलिखित तथा मुद्रित ग्रंथों का सग्रह किया।

जैन सिद्धांत भवन आरा मे प्राचीन ग्रंथों की प्रतिलिपि करने के लिए लेखक (प्रतिलिपिकार) रहते थे, जो अनुपलब्ध ग्रन्थों को बाहर के ग्रन्थागारो से मंगाकर प्रतिलिपि करते थे तथा अपने संग्रह में रखते थे। यहाँ नये ग्रन्थो की प्रतिलिपि के अतिरिक्त अपने संग्रह के जीर्ण-शीर्ण ग्रन्थों की प्रतिलिपि का भी कार्य होता था। इसका पुष्ट प्रमाण ग्रन्थों में प्राप्त प्रशस्तियाँ हैं। जैन सिद्धान्त भवन, आरा से अनेक ग्रन्थ प्रतिलिपि कराकर सरस्वती भवन बम्बई एवं इन्दौर भेजे गये हैं।

सन् १९४६ में बाबू निर्मलकुमार जैन के लघुभ्राता चक्रेश्वरकुमार जैन भवन के मंत्री चुने गये। ग्यारह वर्षों तक उन्होने पूरे मनोयोग से भवन की सेवा की। पश्चात् सन् १९५७ से बाबू सुबोधकुमार जैन को मंत्री पद का भार दिया गया, जिसे वे अभी तक पूरी लगन एवं जिम्मेदारी के साथ निर्वाह रहे हैं। बाबू सुबोधकुमार जैन, भवन के चतुर्मुखी विकास के लिए दृढ़प्रतिज्ञ है। इनके कार्यकाल मे भवन के क्रिया-कलापों में कई नये अध्याय जुड़ गये हैं, जिनसे बाबू सुबोधकुमार जैन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों उभर-कर सामने आये है।

जैन सिद्धांत भवन, आरा के अन्तर्गत जैन सिद्धांत भास्कर एवं जैना एण्टीक्वायरी शोध पत्रिका का प्रकाशन सन १९१३ से हो रहा है। पत्रिका द्वैभाषयिक, हिन्दी-अंग्रेजी तथा षाण्मासिक है। पत्रिका में जैनविद्या सम्बन्धी ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक सामग्री के अतिरिक्त अन्य अनेक विधाओं के लेख प्रकाशित होते हैं। शोध-पत्रिका अपनी उच्चकोटि की सामग्री के लिए देश-देशान्तर में सुविख्यात है। इसके अंक जून अर दिसम्बर में प्रकट होते हैं।

जैन सिद्धान्त भवन, आरा का एक विभाग श्री देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान है। इसमें प्राकृत और जैनविद्या की विभिन्न विधाओं पर शोधार्थी कार्य कर रहे हैं। संस्थान में शोध सामग्री प्रचुर मात्रा में भरी पड़ी है। संस्थान सन् १९७२ ई० से मगध विश्वविद्यालय, बोध गया द्वारा मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में इसके मानद् निदेशक, डा० राजाराम जैन, अध्यक्ष, प्राकृत-संस्कृत विभाग, हर-प्रसाद दास जैन कॉलेज (मगध वि. वि.) आरा हैं। इस समय संस्थान के सहयोग से १५ शोधार्थी शोधकार्य कर रहे हैं तथा अनेक पी. एच, डी की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

इस संस्था द्वारा अबतक अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इस संस्था के हस्तलिखित ग्रन्थों के सूचीकरण कार्य मे यह दूसरा उपहार 'जैन सिद्धान्त भवन ग्रंथावली, का द्वितीय भाग है। इसमें संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंस एवं हिन्दी भाषाओं के १०२३ ग्रंथों की विवरणात्मक सूची प्रकाशित है। ग्रंथ को प्रथम भाग की तरह दो खंडों मे विभक्त किया गया है। प्रथम खड में पाण्डुलिपियों का विवरण रोमन लिपि में दिया गया है। दूसरे खण्ड में परिशिष्ट शीर्षक से ग्रन्थों के प्रारम्भिक अंश, अन्तिम अंश तथा प्रशस्तियाँ दी गई हैं। सूची मे आधुनिक पद्धति से ग्रन्थों का विवरण व्यवस्थित किया गया है। विवरण निम्न ग्यारह शीर्षकों में प्रस्तुत है—

(१) क्रम संख्या। (२) ग्रन्थ सख्या। (३) ग्रन्थ का नाम। (४) लेखक का का नाम। (५) टीकाकार का नाम। (६) कागज या ताड़पत्र। (७) लिपि और भाषा। (८) आकर मेमी-में, पत्रसख्या, प्रत्येक पत्र की पंक्ति संख्या एवं प्रत्येक पक्ति की अक्षर सख्या। (९) पूर्ण-अपूर्ण। (१०) स्थिति तथा समय (११) विशष जानकारी यदि कोई हैं।

ग्रन्थावली को सामान्य रूप से विषय वार निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत विभक्त किया गया है—

(१) पुराण-चरित-कथा।

(२) धर्म दर्शन-आचार।

(३) रस छन्द, अलकार काव्य,।

(४) मत्र-कर्मकाण्ड,।

(५) आयुर्वेद।

(६) स्तोत्र, (७) पूजा-पाठ विधान।

अनेक ऐसे भी ग्रन्थ हैं, जिनका विषय निर्धारण बिना आद्योपान्त अध्ययन के सम्भव नहीं हो सकता है, उन ग्रन्थों को भी इन्हीं शीर्षकों के अन्तर्गत व्यवस्थित किया गया है।

क्र० ९९८ से १०६८ के बीच लगभग पचास ऐसे ग्रन्थ हैं जो पूजा से-सम्बन्ध रखते हैं क्योंकि वास्तव में यह प्राय: व्रत-कथाएँ हैं। ऐसी कथाओं में पूजा-अर्चना की प्रधानता होती है। इसी के साथ कथा कही जाती है, जिससे जनसामान्य धर्म से प्रभावित होकर आत्मोन्नति की ओर प्रवृत्त होता है। क्योंकि बाल-बुद्धि लोगों के प्रतिबोध के लिए कहानी ही सबसे अधिक उपयोगी एवं सरल विधा है।

प्रस्तुत सूची में तत्त्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, भक्तामरस्तोत्र, कल्याणमन्दिर स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, सिद्धपूजा आदि की प्रतियाँ बहुसंख्यक हैं। क्रम संख्या १३६१ से २०२० तक स्तोत्र एवं पूजा-विधान के ही ग्रंथ हैं। एक विषय के इतने अधिक ग्रन्थों का एक साथ संग्रह होना, अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है। आयुर्वेद के शारदातिलक सटीक, वैद्यमनोत्सव, योगचिन्तामणि, वैद्यभूषण प्रभृति ग्रंथों की पाण्डुलिपियाँ विशेष महत्व की तथा प्राचीन भी हैं।

अन्य ग्रंथागारों में उपलब्ध हस्तलिखित प्रतियों के सन्दर्भ यथास्थान दिये गये हैं। इसमें जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली भाग —१ के भी सन्दर्भ दिये गये हैं। यह सन्दर्भ प्रतियों के खोजने में सहयोगी होंगे। इससे यह भी ज्ञात होता है कि देशभर के अनेक शास्त्रभण्डारों, मंदिरों तथा संस्थानों में हस्तलिखित ग्रन्थों की भरमार है। जो अभी तक अप्रकाशित पड़े हुए हैं। उन्हें प्रकाश में लाने की दिशा में जो प्रयत्न हो रहे हैं, वे पर्याप्त नहीं हैं। विद्वानों, अनुसन्धाताओं, तथा सम्बद्ध संस्थाओं को इसे एक आन्दोलन के रूप आगे बढ़ाने का उपाय करना चाहिए।

ग्रन्थावली के इस भाग को तैयार करने में डा० गोकुलचन्द्र जैन, वाराणसी, श्री सुबोधकुमार जैन श्री अजयकुमार जैन आदि व्यक्तियों का महत्वपूर्ण निर्देशन रहा है। उक्त सभी का हृदय से आभारी हूँ। आशा है भविष्य में भी सबका निर्देशन एवं सहयोग आशीष पूर्वक प्राप्त होता रहेगा। ग्रंथावली के सम्पादन, संयोजन में जो त्रुटियाँ हुई हैं, उनके लिए विद्वज्जन क्षमा करेंगे।

ऋषभचन्द्र जैन फौजदार
शोधाधिकारी,
देवकुमार जैन प्राच्य शोध संस्थान
आरा (बिहार)

INTRODUCTION TO SECOND VOLUME

In continuation to my introduction to first volume of *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvalī*, I have great pleasure in introducing the Second Volume of the same series. Like the First Volume the Second Volume contains descriptions of more than One Thousand Sanskrit, Prakrit, Aprabhraṁśa and Hindi Manuscripts preserved in *Shri Devakumar Jain Oriental Library, Arrah*. It has been prepared strictly according to the Scientific Methodology adopted in First Volume. In the introduction to First Volume, I have discussed in detail various points related to the Catalogue in general and *Śrī Jaina Sidhānta Bhavana Granthāvalī* in particular.

The Second Volume is also divided into two parts. In the first part descriptions of manuscripts have been given, and in the second part the text of the opening and closing portions of MSS along with Colophons have been recorded in Devanāgarī scripts. The MSS have been classified under some general heads like Purāna-Carita-Kathā, Dharma-Darśana-Ācāra etc. This classification helps a common reader. Those who want to go into details, they should have a keen eye on the contents while looking on the titles. The MSS recorded under the head of *Kathā* (nos 998 to 1026) are the part of *Ācāra* or *Pūja-Vidhāna* and not related with the narrative literature in its strict sense.

The manuscripts recorded in the present volume have their own importance. By publication of this volume they have became accessable to scholars, and now could be best adjudged when utilized for study or critical editions, Here I would like to draw the attention on certain points which seems to me significant to this volume.

It has been generally observed by scholars and religious critics that due importance to *Bhakti* and *Karmakānda* (rituals) have not been given in Jaina religion. A large number of MSS recorded in the present volume are related to various type of rituals, devotional songs-*Stotras-Stuti-Pūjā Pāṭha, Pratisthā* etc. and other related matters. The number and variety of MSS clearly testify that *Bhakti and Karmakānda* occupy an important position in Jaina Tradition. It is true that according to Jainism *Bhakti* and *Kriyākānda* alone can not lead to liberation or *Mokṣa*.

In this volume seven more MSS of Dravyasaṁgraha have been recorded. It shows the popularity of the treatise. All the MSS related to it should be taken into consideration while undertaking a critical study of the Text.

Some important Prakrit and Apabhraṁśa MSS like Samayasāra (1165—1168, Pravacanasāra (1158—1160), Saṭpāhuḍa (1172—1173), Kārtikeyānuprekṣā (1133) Paramātmaprakāśa (1154, 1155) have also been recorded in this volume.

Seventeen MSS relating to Indian medicine i. e. *Āyurveda* have been mentioned some of which like Aṣṭāṅgahṛdaya of Vāgbhata (1344), Śāraṅgadhara-saṁhitā (1356) o Śāradātilaka (1355), Madanavinoda (1349) deserve special mention.

A good number of MSS is related to stotra literature. Some of them are close to *tantra*. It is true that Tantrism could not be developed in Jainism like some other schools of Indian religions, still some trends can be seen in the works like *Padmāvatīkalpa*, *Jvālāmālinīkalpa*, *Sarasvatīkalpa* etc.

In the end I like to thank the editors and publishers for bringing the Second Volume with in a short time after the publication of first volume. I do hope that the same enthusiasm will continue in preparing and publication of other volumes of the Catalogue.

—Dr. Gokul Chandra Jain

श्री जैन सिद्धान्त भवन ग्रन्थावली

SHRI DEVAKUMAR JAIN ORIENTAL LIBRARY,

JAIN SIDDHANT BHAVAN, ARRAH (BIHAR)

S. No.	Library accession or Collection No. if any	Title of Work	Name of Author	Name of Commentator
1	2	3	4	5
998	Nga/48/15/4	Ananta-Caudaśa-Kathā	Jnānasāgara	—
999	Nga/47/4/43	,, ,, ,,	—	—
1000	Ta/42/50	Ananta-Vrata-Kathā	—	—
1001	Nga/47/4/54	Anantanāth-Kathā	—	—
1002	Nga/411 Jha/	Aṣṭānhikā Kathā	Jnānasāgara	—
1003	Nga/48/15/6	,, ,,	—	—
1004	Nga/47/4/64	Aṭhāī ,,	Bhairondāsa	—
1005	Nga/47/4/47	Ādityavāra ,,	—	—
1006	Nga/40/1	,, ,	—	—
1007	Nga/41/Ga	,, ,,	—	—
1008	Nga/47/4/48	,, ,,	—	—

Mat. or Subt.	Script	Size in cms. No. of folios or leaves lines per page & No. of letters Per line	Extent	Condition and age	Additional Particulars
6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	17 5×13.5 7 14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 6×18 0 6 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6 13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 3.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.0×18.0 6.16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 11 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.2×9.0 22.9.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 3.13.16	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1009	Nga/48/25	Ādityavāra Kathā	—	—
1010	Ta/42/45	Ākāśa-Pañcamī Kaṭhā	Jnānasāgar	—
1011	Nga/41 Ta	,, ,, ,,	—	—
1012	Ta/12/1	Bhaviṣyādatta Kathā	—	—
1013	Nga/40/7	Canda Kathā	Rajācanda	—
1014	Ng/41 (Gha)	Caturdaśi Kathā	Jnānasāgara	—
1015	Nga/40/2	Caturavacanoccāriṇī Kathā	—	—
1016	Ta/26/1	Dāna-Kathā	Bhārāmalla	—
1017	Nga/47/4/63	Daśa-Lākṣnī Kathā	—	—
1018	Nga/47/4/68	,, ,, ,,	Bhairondāsa	—
1019	Nga/41/ Cha	,, ,, ,,	Jṇānasāgara	—
1020	Nga/48/15/3	,, ,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. poetry	23.0×16 7 8.12.29	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32 3×19. 0 3 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	O d	
P.	D; H. Poetry	24.2×16.0 68.10.30	C	Good 1948 V. S	
P.	D; H. Poet ıy	14 2×9 0 31.9 22	C	Good	
P.	D; H Poetry	14.5×11.0 8.13.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	14 2×9 0 11.9.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	2o 3×17 5 38.14.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 8.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 8.13.16	C	Old	
P.	D; H, Poetry	17.5×13.5 7.14.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1021	Ta/42/52	Daśa-lākṣaṇī-vrata-Kathā	Jnānasāgara	—
1022	Nga/44/16/1	,, ,, ,, ,,	—	—
1023	Ta/27/1	Darśana-Kathā	Bhārāmalla	—
1024	Nga/40/4	Dhama-pāpa-buddhi Kathā	—	—
1025	Ja/60	Dhūpa-daśami Kathā	—	—
1026	Nga/47/4/79	Dudhārasa-vrata ,,	—	—
1027	Ja/53	Hari-vaṁsa Purāna	—	—
1028	Ja/27/1	,, ,, ,,	—	—
1029	Jha/10/3	,, ,, ,,	—	—
1030	Ja/59	Jaṁbū-caritra	—	—
1031	Nga/46/8	Labdhi-vidhāṇa Kathā	—	—
1032	Ja/6/1	Mahāvīra-Purāṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	13.0×10.3 5.9.10	Inc	Old	There are so many opening pages are not available.
P.	D; H. Poetry	19.7×16.5 48.14.21	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	14.2×9.0 14.9.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.5×10.5 5.8.28	Inc	Good	Its three to twelve pages aae lost.
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; Skt./ H. Poetry	27.9×17.3 149.14.40	C	Good	
P.	D; Skt./ H. Prose/ Poetry	21.5×14 4 41.15.38	Inc	Old	The heading of this book his clouvayed.
P.	D; H. Prose	26.8×10.5 8.12.37	Inc	Old	It has no opening and clysing.
P.	D; H. Poetry	29.4×14.1 22 13.38	C	Good 1933 V. S.	Rajyakumāra canda seems to be copiar.
P.	D; H. Poetry	19.0×17.0 5.15.22	C	Old	
P.	D; H Poetry	30.2×15.0 85.12.49	Inc		Opening pages are missing.

1	2	3	4	5
1033	Nga/37/9	Nemi-nātha-Vivāha	Vinadilāla	—
1034	Nga/47/4/62	Niskāṅkṣita-guna Kathā	—	—
1035	Ta/42/46	Niśśalyāṣṭami ,,	Jnānasamudra	—
1036	Nga/41/Jha	Nirdoṣa-saptami ,,	Jnānasāgara	—
1037	Nga/48/15/8	Pañcami ,,	Surendra-Bhūsaṇa	—
1038	Ja/11	Parśva-purāṇa	Lālā Caṇdulāla	—
1039	Ja/10	,, ,,	—	—
1040	Nga/41/Cha	Ratnatraya Kathā	—	—
1041	Ta/42/51	,, ,,	Jnānasāgara	—
1042	Nga/84/15/5	Ratnatraya-vrata Kathā	,,	—
1043	Nga/44/16/2	,, ,, ,,	—	—
1044	Ta/42/44	Ravivrata ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	22.0×13.0 6.15.13	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 3.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	C	Old	
P.	P; H. Poetry	17.5×13.5 10.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	28.0×13.0 144.13.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	29.0×14.0 11.12.28	Inc	Good	
P.	D; H Poetry	14.5×11.0 6.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 5.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×10.2 11.9.10	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 4.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1045	Nga/48/15/1	Ravi-vrata Kathā	—	—
1046	Ja/34/1	,, ,, ,,	Bhanukīrti	—
1047	Ta/26/2	Rātri Bhojana-tyāga Kathā	Bhārāmalla	—
1048	Ta/42/54	Rohiṇī Kathā	—	—
1049	Nga/48/15/7	,, ,,	—	—
1050	Nga/41/ṭha	Rohiṇī-vrata Kathā	—	—
1051	Ja/62	Roṭa-tija ,,	Dyānatarāya	—
1052	Ta/42/56	,, ,,	—	—
1053	Nga/46/9/1	,, ,,	—	—
1054	Nga/46/9/2	,, ,,	—	—
1055	Nga/41	Salūnā ,,	Vinodīlāla	—
1056	Nga/46/3	Śīla-Kathā	Malla-sena ?	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	19.0×14.9 8 11.15	C	Old	
P.	D, H. Poetry	20.3×17.5 33.14.21	C	Good	
P	D; H / Skt. Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	17.5×13 5 9.14 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.3×13.0 9 8.23	C	Good	
P.	D; H. Prose	32.3×19 0 1 33.37	C	Good	
P.	D; H. Prose	18.8×17.6 2.17.23	C		
P.	D; H Poetry	18.8×17.6 3.14.17	C		
P.	D; H, Poetry	14.5×11.0 19.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.6×16.6 27.13.36	C	Old	

1	2	3	4	5
1057	Ta,28/2	Śila-vrata Kathā	Bhārāmalla	—
1058	Nga/40/3	Śilavatī ,,	—	—
1059	Nga/41/Ja	Solahakāraṇa Kathā	Jnānasāgara	—
1060	Nga/46/6	,, ,,	,,	—
1061	Nga/48/15/2	Ṣodaśa-kārana ,,	,,	—
1062	Ta/42/48	Ṣravaṇa-dwādasī ,,	,,	—
1063	Nga/45/1	Saipāla-Caritra	Jivarāja	—
1064	Nga/45/12	,, ,,	—	—
1065	Ta/42/47	Sugandha-daśamī Kathā	Jnānasagara	—
1066	Nga/48/15/9	,, ,, ,,	—	—
1067	Nga/47/4/78	,, ,, ,,	—	—
1068	Nga/41	Sugandhadaśamī ,,	Jnānasāgara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.8×17.2 45.14.23	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	14 2×9 0 50.9.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.2×15.0 4 16.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	17 5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.7×11.2 40.13 37	C	Good	
P,	D; H. Poetry	24.5×11.3 38.15 35	C	Old	
P	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; H. Poetry	17.5×13.5 4.14.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C		
P.	D; H. Poetry	5×11.0 5.13.16	C		

1	2	3	4	5
1069	Nga/40/5	Swarūpa-sena Kathā	—	—
1070	Ta/14/35	Vīra Jinānda	—	—
1071	Ja/34/5	Viṣṇu Kumāra ,,	Vinodīlāla	—
1072	Ta/11/1	Arihant -Kevalī	Rāma-gopālā	—
1073	Ta/6,9	Ārādhanāsāra	—	—
1074	Nga/38/10	Arādhanā-pratibodha	—	—
1075	Ja/1	Artha Prakāṣikā	—	—
1076	Ta/9/1	Ātmānuśāsana	Guṇa-bhadra	—
1077	Ja/38	Banārasī-Vilāsa	Banarasidāsa	—
1078	Nga/47/4/67	Bāraha-bhāvanā	—	—
1079	Nga/47/15/6	,, ,,	—	—
1080	Ta/6/18	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. prose	14.2×9.0 32.9.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 3.11.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 19.15.16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	14.5×11.7 29.9.15	C	Good 1917 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 8.18.15	C	Old	
P.	D; H Poetry	15 7×9.0 7.9.22	C	Good	
P.	D; H Prose	33.4×18.9 411.13.33	C	Good	The opening pages are damaged.
P.	D; Skt. Prose	19.0×14 5 37.15.13	C	Old 1928 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.1 107.12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 2.12.19	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 1.20.17	C	Old	

1	2	3	4	5
1081	Nga/44/13/7	Bīsa Tīrthaṅkaranāmāvalī	—	—
1082	Ja/15	Brahma-Vilāsa	Bhagavatidāsa	—
1083	Nga/45/7	,, ,,	,,	—
1084	Ta/42/3	Caitya-Vandanā	—	—
1085	Ta/14/3	,, ,,	—	—
1086	Nga/45/10	Cāturmāsa Vyākhyā	—	—
1087	Ja/40	Caudaha-guna-sthāna	—	—
1088	Ja/45/3	,, ,, ,,	—	—
1089	Ja/51/21	Catvāri-daṇḍaka	—	—
1090	Ta/14/42	Caubīsa ,,	Daulata-rāma	—
1091	Ja/65/1	,, ,,	,,	—
1092	Ja/23/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.5×8.5 3.6.13	C	Old	
P	D; H. Poetry	25.0×12.0 170.11.34	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.8×13.9 168.11.33	C	Old 1967 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.30.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 3.13.18	C	Old	
P	D, Skt. Prose/ Poetry	24.7×11.3 72.13.38	C	Old	
P.	D; H. Prose	22.0×13.5 63.12.27	C	Old	
P.	D; H. Prose	15.0×11.3 8.10.19	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 6.12.20	C	Good	Other subjects are also written in last pages.
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 10.10.14	C	Good	
P.	D; H. Prose	22.4×14.2 18.17.18	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1093	Ja/45/2	Caubīsa ṭhāṇā	—	—
1094	Ja/41	Carcā-Saṅgraha	—	—
1095	Ja/8	Carcā-Samādhāna	Bhūdharadāsa	—
1096	Ja/30	,, ,,	—	—
1097	Nga/45/11	Daśāskandha	—	—
1098	Ja/35/6	Dāna-Vāvanī	Dyānatarāya	—
1099	Ja/16/6	,, ,,	,,	—
1100	Nga/37/4	Dāna-śīla-tapa-bhāvanā	—	—
1101	Nga/30/2/1	Devagaman	Samantabhadra	—
1102	Ja/41/1	Digambara āmnāya	—	—
1103	Ja/12	Dharma-grantha	—	—
1104	Ja/25	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	15 0×11.3 5.10.20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.2×13 6 148.11.33	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.7×14.0 83.11.44	C	Good 1893 V. S.	
P.	D; H. Poetry	20 8×14.2 157.16.17	C	Good	
P.	D; Pkt. Prose/ Poetry	23.4×10.3 42 13.40	C	Old 1735 V. S.	
P	D; H Poetry	18 3×11 5 10.16 15	C	Good	
P	D; H. Poetry	23.3×19.0 10.15 18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20 3×11.5 13 9.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 14 9 26	C	Old	
P.	D; H. Prose	21.2×13.6 2.11 30	C	Old	
P.	D; H. Poetry	12 9×27.4 230.9.19	C	Old	
P.	D; H. Prose/ Poetry	22.0×14.4 110.20.14	Inc	Old	Its opening 48 pages and last page are missing.

1	2	3	4	5
1105	Nga/44/8	Dharmāmṛtasāra	—	—
1106	Nga/44/13/4	Dharmāṣṭaka	—	—
1107	Ja/9	Dharma-parīkṣā	Manohara	—
1108	Ja/14	Dharmaratna	—	—
1109	Ja/13	,, ,, granthā	—	—
1110	Ja/35/8	Dharma-rahasya	Dyānatarāya	—
1111	Nga/30/1	Dharmasāra Satasai	Śiromaṇidāsa	—
1112	Ta/61/14	Dravya-Saṅgraha	Nemicanda	—
1113	Nga/30/2/2	,, ,,	,,	—
1114	Ta/37	,, ,,	—	—
1115	Ta/4/1	,, ,,	Nemicanda	—
1116	Ta/6/1	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	21.0×16.5 60.15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 4.6.13		Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.0 181.12.48	C	Good	
P.	D; H. Poetry	26.9×13.2 181.9.24	C	Good	
P.	P; H. Poetry	26.6×14.0 206.9.24	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11 5 10.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	17.5×14.3 75.13.22	C	Good 1832 V. S.	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 10.23.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.8 5.9.26	C	Old	
P.	D;H /Skt. Poetry	16.0×12.0 41.10.16	C	Old	Starting three pages are missing so it has opening.
P.	D;H./Pkt. Prose	23.2×19.5 20.13.32	C	Old 1871 V. S.	
P.	D;Pkt./H. Poetry/ Prose	22.2×14.7 49.18.20	C	Old	

1	2	3	4	5
1117	Ja/23	Dravya-Saṁgraha	Nemicandra	—
1118	Nga/16/2	„ „	„	—
1119	Ta//14/33	Dvâdasānuprekṣā	—	—
1120	Ja/51/19	Eryā-patha Sāmāyika	—	—
1121	Nga/38/13	Gat.-Lakṣana	—	—
1122	Ja/49	Gommata-sāra	Nemicandra	—
1123	Ta/3/46	Gyāna kē aṭh aṅga	—	—
1124	Nga/28/1	Haṇavanta aṇuprēkṣā	Paṇḍita Bacharāja	—
1125	Nga/48/11/5	Jina-gâyatri trikāla-sandhyâ	—	—
1126	Ta/24/3	Jina-guṇa-saṁpatti	—	—
1127	Ja/65/7	Jina-mahimā	—	—
1128	Nga/47/4/77	Jēva-râsi-kṣamā-vaṇī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./ H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 19.17.15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 6.11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 2.9.22	C	Good	
P.	D; H. Prose	36.5×18.7 454.11.38	C	Good	
P.	D; Pkt./ H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Good	
P,	D; Pkt. Poetry	14.6×14.1 7.14.19	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×13.2 0.10.13	Inc	Old	
P	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 3.37.33	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 4.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1129	Nga/40/6	Jnāna-pacīsī	Banarasīdāsa	—
1130	Ja/23/4	Jnānāmava-Vacanika	Śubhacandra	—
1131	Nga/16/3	Karma-prakṛti-granthā	Nemicandra	—
1132	Ta/17/1	Karma-battīsī	—	—
1133	Nga/20,2	Kāratīkeyānu prekṣā	Kārtikeya	—
1134	Ja/51	Laghu-tattvārtha sūtra	—	—
1135	Ta/3/12	Laghu-sāmāyika	—	—
1136	Ta/42/80	,, ,,	—	—
1137	Nga/38/9	Leśyā-Swarūpa	—	—
1138	Ta/4/3	Līlāvatī-prakīrṇaka	Bhāskarācārya	—
1139	Ja/18	Mithyātva Khaṅdana	Padmasāgara	—
1140	Ja/4	Mokṣamārga	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	14.2×9.0 3.9.22	C	Old	
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 40.18.15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 18.11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.5×9.5 10.10.19	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	25 6×15.0 38.15.21	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20 1 2.13.34	C	Good	It is also named Arhat pravacana.
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 2.12.36	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	
P	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9.0 2.9.22	C	Good	
P	D; Skt. Pros / Poetry	19.3×13.0 167.17.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.9×10.8 113.9.32	C	Good	
P.	D;H./Pkt. Prose/ Poetry	32.1×15.0 224.12.50	Inc	Good	

1	2	3	4	5
1141	Ja/65/5	Mokṣa-mārga paiḍī	Banārasidāsa	—
1142	Ta/14/36	,, ,, ,,	,,	—
1143	Ta/6/13	Mṛtyu-mahotsava	—	—
1144	Nga/16/1	Mukti Suktāvali	—	—
1145	Ta/18/11	Navakāra-māhātmya	—	—
1146	Ja/27/5	Naya cakra	Devasena	—
1147	Nga/16/5	,, ,,	,,	—
1148	Ja/41/2	,, ,, Vacanikā	Hemarāja	—
1149	Nga/28/6	,, ,, ,,	Devasena	Hemarāja
1150	Nga/20/3	Nirvāṇa-kāṇḍa	—	—
1151	Nga/20/4	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1152	Ta/6/22	Panca Viṁśatikā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 7.10.14	C	Good	
P.	D. H. Poetry	15.2×12.8 5.11.15	C	Old	
P	D; Pkt. Skt. Poetry	22.2×14.7 3.20.19	C	Old	
P.	D; H Poetry	13.0×15.0 23.11.21	C	Good	Opening two pages are missing.
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 6.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	21.5×14.4 12.19.13	C	Old	It is also called Ālāpapaddhati.
P.	D; Skt. Prose	13.1×15.0 13.11.21	C	Good	
P.	D; H, poetry	21.2×13.6 17.11.34	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.4×17.6 26.11.19	C	Good 1962	
P.	D; Pkt. Poetry	25.6×15.0 3.15.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.6×15.0 3.14.18	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.2×14.7 2.20.20	C	Old	The charts of Mantra and Tantra are in its last pages.

1	2	3	4	5
1153	Ja/45/1	Panca-purmṣṭhi	—	—
1154	Ta/6/8	Parmātma-prakāśa	Yogīndradeva	—
1155	Nga/16/6	„ „	„	—
1156	Ja/6/3	Parikṣā-mukha Vacanikā	—	—
1157	Nga/16/4	Praśna-mālā	—	—
1158	Jha/5/2	Pravacana-sāra	Candrakīrti-mahārāja ?	—
1159	Jha/10/1	Pravacanasāra	—	—
1160	Jha/10/2	„ „	Hemarāja	—
1161	Ta/11/2	Prāyaścitta-grantha	Akalanka-swāmī	—
1162	Nga/47/4/70	Pāpa-puṇya-māhātmya	—	—
1163	Nga/47/4/69	Puṇya-māhātmya	—	—
1164	Ta/12/2	Samyyktva Koumudī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.0×11.3 9.10.20	C	Good	
P.	D; Apb. Poetry	22.2×14.7 25.19.13	C	Old	
P.	D; Apb. Poetry	13.0×15.0 29.11.21	C	Good	It is also called paramappayāsu.
P.	D; H. Prose	30.2×15.0 1.11.37	Inc	Good	
P.	D; H. Prose	20.3×15.8 57.17.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.8×14.4 27.14.35	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	26.6×10.5 14.14.39	Inc	Old	
P.	D; H. Prose/ Poetry	26.8×10.5 28.12.47	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	145.×11 7 6.11 18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 9 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18 0 1.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	24.2×16.0 44.10.30	C	Good	

1	2	3	4	5
1165	Nga/39/2	Samayasāra-gāthā	—	—
1166	Ja/37	„ nāṭaka	—	—
1167	Nga/42/1	„ „	Banārasīdāsa	—
1168	Nga/42/2	„ „	„	—
1169	Nga/16/8	Samavaśaraṇa	—	—
1170	Nga/16/7	Samud-ghāta	—	—
1171	Ta/11/8	Saṭdarśana	—	—
1172	Ta/6/1	Saṭpāhuḍa	Kundakunda	—
1173	Nga/16/4	„	„	—
1174	Nga/47/4/55	Saṭleśyābheda	—	—
1175	Ta/14/40	Sāmāyika	—	—
1176	Ta/14/15	„	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	21.0×14.5 81.13.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0×8.0 344.6.16	C	Old 1884 V. S.	
P.	D; H. Poetry	15.0×14.0 128.13.19	C	Good 1840 V. S.	
P.	D; H. Poetry	13.0×15.0 40 11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13 0×15.0 3.11.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11 7 2.11.20	C	Good	
P	D; Pkt Poetry	22.2×14.7 35.19.15	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.0×15.0 36.11 21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16 18	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	15.2×12.8 2.12.13	C	Old	
P.	D; Pkt/ Skt. Prose/ Poetry	15.2×12.8 25.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1177	Ta/42/95	Sāmāyika	—	—
1178	Ja/51/20	,,	—	—
1179	Nga/19	,,	—	—
1180	Ta/26/3	Sāṣācāra	—	—
1181	Ja/45/4	Sātatattva	—	—
1182	Ja/3	Siddhāntasāra	Nathamala	—
1183	Ja 65/3	Sindūra-Prakarana (Sūktimuktavali)	Somaprabhācārya	Harṣakīrti
1184	Ta/9/3	Sindūra-Prakaraṇa		—
1185	Nga/31/2/6	,, ,,	Somaprabhācārya	Harṣakīrti
1186	Nga/47/4/76	Śīla-Vrata	—	—
1187	Jha/5/1	Śrāvakācāra	Gumāni-Lāla	—
1188	Ta/14/14	Śrāvaka-pratikramaṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Poetry/ Prose	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 2.9.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.3×17.5 3.14.21	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	15.0×11.3 7.10.20	C	Old	
P.	D; H. Prose	32.1×16.0 26.11.47		Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 51.10.14	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	19.0×14.5 19.15.13	C	Old	Pandita Paramānanda seems to be copier.
P.	D; H. Poetry	12.3×16.0 21.15.16	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	29.8×14.4 151.12.48	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 19.11.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1189	Ta/42/94	Śrāvaka-Pratikramaṇa	—	—
1190	Nga/48/6/1	Śrāvaka-Vrata-Saṅdhyā	—	—
1191	Nga/48/11/4	„ „ „	—	—
1192	Nga/47/4/60	„ „ Vidhāna	—	—
1193	Nga/25/11	Śrī-pāla-darśana	—	—
1194	Nga/44/19/1	„ „ „	—	—
1195	Ja/6/2	Sudṛṣti Taraṅginī	—	—
1196	Ta/6/4	Tattwasāra	Devasena	—
1197	Nga/44/12/1	Tatvārtha-Sūtra	Umā Swāmī	—
1198	Nga/46/12/1	Tatvārthā-sūtra	—	—
1199	Nga/47/4/38	„ „	Umā Swāmī	—
1200	Nga/47/4/38	„ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	32.3×19.0 4.33.21	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7×9.2 8.7.18	Inc	Old	
P.	D;Skt. Poetry	16.5×13.2 6.12.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16 18	C	O'd	
P.	P; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 5.9.25	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.2×15.0 43.15.38	Inc	Good	
P.	D, Pkt Poetry	22 2×14.7 4 21.21	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.2 10.23.17	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	22.5×13.0 24.18.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	20.6×18.0 13.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.5×8.5 38.6.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1201	Nga/48/7	Tatvārtha-sūtra	Umāswāmi	—
1202	Ta/14/24	,, ,,	,,	—
1203	Ta/42/17	,, ,,	,,	—
1204	Nga/38/6	,, ,,	,,	—
1205	Ja/23,2	,, ,,	,,	—
1206	Ta/6/6	,, ,,	,,	—
1207	Ja/27/3	,, ,,	,,	—
1208	Nga/25/6	,, ,,	,,	—
1209	Nga/20/1	,, ,,	,,	—
1210	Nga/17/2/1	,, ,,	,,	—
1211	Nga/20/1/2	,, ,,	,,	—
1212	Ja/33/2	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	15.5×11.6 23.8.20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	15.2×12.8 19.11.15	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 4.33.39	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.8×9.0 4.9.22	C	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	22.4×14.2 57.19.15	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	22.2×14.7 9.20.20	C	Good	
P.	D;H./Skt. Prose	21.5×14.4 56.17.13	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	28.4×17.0 9.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.6×15.0 13.15.21	C	Good	
P.	D;Skt./H. Prose	25.0×17.0 45.20.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	29.0×17.8 11.21.17	C	Good	
P.	D; S. Prose	19.7×13.0 10.18.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1213	Ja/34/2	Tattvārtha Sūtra	Umāswāmī	—
1214	Ja/27	,, ,,	,,	—
1215	Nga/31/2/2	,, ,,	,,	—
1216	Nga/29/3	,, ,,	,,	—
1217	Ja/2	,, ,, Vacanikā	Jayacanda	—
1218	Nga/32	Trepanakriyā	—	—
1219	Ta/5/12	..	—	—
1220	Nga/48/26/1	Trikāla-Caturviṁśati	—	—
1221	Ta/16/3	Trivarṇācāra	Jinasenācārya	—
1222	Ja/5	Trilokasāra	—	—
1223	Ja/1 (Kha)	Vacanikā	—	—
1224	Ta/6/10/Ka	Vairāgya-pacisī	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Prose	19.0×14.9 18.11.15	C	Old	
P.	D. Skt. Prose	20.2×14.5 14.15.18	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	12.3×16.6 3.17.16	C	Good	
P.	D;H /Skt. Prose	13.2×21.0 71.16.13	C	Good	
P.	D; H. Prose	32.2×15.3 272.12.56	Inc	Good	
P.	D; H. Prose/ Poetry	25.3×15.0 175.16.18	C	Old	The language of this Mss. is not clear.
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 2.26.25	Inc	Old	
P.	D; H poetry	17.5×13.5 3.8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×9.5 28.9.16	C	Old	It has no heading or opening.
P.	D; H. Prose	31.0×16.2 295 11.59	C	Good	Two pages are damaged.
P.	D; H. Prose	33.4×18.9 18.13.33	Inc	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 2.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1225	Ja/27/4	Yoga	Śubhacandra	—
1226	Nga/31/2/5	Yogī-rāsā	Jinadāsa	—
1227	Nga/44/19/9	Akṣara Battīsī	Bhagavatidāsa	—
1228	Nga/47/4/52	„ Vavanī	—	—
1229	Nga/33/7	Anyamata Śloka	—	—
1230	Nga/47/4/44	Aṭhāī-Rāsā	Vinayakīrti	—
1231	Ta/14/32	„ „	—	—
1232	Ta/3/49	Bāraha-māsā	Vinodīlāla	—
1233	Nga/47/4/50	„ „	—	—
1234	Ja/40/2	Candra-śataka	—	—
1235	Nga/46/2/1	Careā-śataka	Dyānatarāya	—
1236	Nga/46/2/2	Caubola-pacisī	„	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	21.5×14.4 50.22.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	12.3×16.6 5.13.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 10.8.21	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.8×18.2 10.18.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.13.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4 12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.0×13.5 16.13.34	C	Old	
P	D; H. Poetry	27.0×17.0 12.13.28	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	

1	2	3	4	5
1237	Ja/16/7	Dasa-bola-pacisi	Dyānatarāya	—
1238	Ja/35/7	,, ,, ,,	—	—
1239	Nga/46/2/3	Daśa-thānaCaubisi	Dyānatarāya	—
1240	Ja/35/1	Dhāla-gaṇa	—	—
1241	Ja/16/3	,, ,,	—	—
1242	Ta/6/17	Dohā	Rūpa-canda	—
1243	Ja/26	Dohāvalī	—	—
1244	Ja/27/2	,,	—	—
1245	Ja/28	,,	—	—
1246	Nga/31/4/10	Dwipañcāśatikā	Banarsidāsa	—
1247	Nga/44/11	Fuṭakara-Kāvya	—	—
1248	Ta/9/2	Jnāna-Sūryodaya Nāṭaka	Vādicandra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 6.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 7.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 10.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 9.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 7.18.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.0×15.0 4.18.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.5×14.4 16.18.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.0×14.7 4.18.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.3×12.4 13.25.20	C	Old	Opening pages are missing.
P.	D;Skt./H. Prose/ Poetry	13.0×10.0 20.10.15	Inc	Old	
P.	D; Skt/ Poetry	19.0×14.5 25.15.17	C	Old 1928 V. S.	

1	2	3	4	5
1249	Ta/35/7	Jaina-rāso	—	—
1250	Ta/3/44	Jakarī	Bhūdharadāsa	—
1251	Ta/14/34	Jogī-Rāso	—	—
1252	Ta/3/55	Kavitta	—	—
1253	Ta/3/54	,,	—	—
1254	Ja/40/3	,,	Trilokacanda	—
1255	Nga/41/Ka	Kṛpaṇa-Pacisī	—	—
1256	Ta/42/55	Māla-Pacisi	—	—
1257	Nga/44/20	Nāmamālā	Nandadāsa	—
1258	Ja/65/4	Navaratna-Kavitta	—	—
1259	Nga/31/3/9	Nemi-Candrikā	—	—
1260	Nga/41/ba	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Skt. Poetry	15.5×12.0 22.10.19	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.14.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	P; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.5 2.12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 7.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.7×11.2 26.17.16	C	Old 1806 V. S.	It is also called Mānamañjarī
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 5.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×13.5 168.14.16	C	Old	The mss. is damaged and very old.
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	Inc	Old.	

1	2	3	4	5
1261	Nga/44/10/5	Nemicandrikā	—	—
1262	Nga/37/8	Nemināthā Bārahamāsā	Vinodilāla	—
1263	Ja/16/4	,, Vivāha	,,	—
1264	Ta/3/47	,, ,,	,,	—
1265	Ja/35	,, ,,	,,	—
1266	Nga/47/4/73	Pakhavārā	Tulasī	—
1267	Ta/3/39	Paramārtha Jakarī	Śrīrāma	—
1268	Nga/46/1	Piṅgala	Śrīdhara	—
1269	Nga/47/4/51	Rājula Pacīsī	—	—
1270	Nga/44/10/4	,, ,,	Vinodilāla	—
1271	Nga/44/9/2	,, ,,	,,	—
1272	Nga/44/Pa	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 15.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×22.0 6.16.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	23.8×19.0 5.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.2×11.5 6.16.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P,	D; H. Poetry	30.0×15.8 16.10.37	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	18.5×13.0 6.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×10.5 11.12.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 9.13.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1273	Nga/44/19/5	Rājula Pacīsī	—	—
1274	Nga/44/19/2	Ristā	—	—
1275	Nga/47/4/81	,,	—	—
1276	Ja/65/8	,,	—	—
1277	Ja/40/1	Rūpacanda-Śataka	Rūpacanda	—
1278	Ja/58	Satasaiyā	Vṛndāvana	—
1279	Nga/45/5	Samkitadhikāra	—	—
1280	Ta/3/2	Sammeda Śikhara Māhātmya	—	—
1281	Nga/45/8	,, ,, ,,	—	—
1282	Nga/45/6	,, ,, ,,	Lohācārya	—
1283	Ja/46	Śikhara Māhātmya	Lālacanda	—
1284	Nga/46/5/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 13.10.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2.9. 5	C	Old	
P	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old 1853 V. S.	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 12.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.5 6.12.35	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.3×16.4 131.14.16	C	Old 1953 V S.	
P.	D; H. Poetry	23.5×9.0 31.20.58	C	Old 1702 V. S.	
P.	D; H. Poetry	22 3×15.0 3.9.21	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	24.0×12 2 11.9 25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.7×15.0 103.9.23	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	19.3×10.6 72.10.28	C	Old 1892 V. S.	All the pages are Damaged.
P.	D; H. Prose	23.1×15.1 70.18.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1285	Nga/47/4/45	Solaha-kāraṇa-rāsā	Sakalakīrti	—
1286	Ta/42/53	Śruta-pañcamī-rāsā	—	—
1287	Nga/46/5/1	Srī-pāla-darśana	—	—
1288	Ta/10	Subhāṣitāvalī	—	—
1289	Nga/47/4/49	Bāhubali	—	—
1290	Ta/6/15	Viveka Jakarī	Rūpa-canda	—
1291	Nga/46/2/4	Vyavahāra-pacīsī	—	—
1292	Nga/26/11	Bhaktāmara-stotra-mantra	Mānatuṅga	—
1293	Nga/26/3	,, ,,	,,	—
1294	Nga//26/9	Caubisa tīrthaṅkara mantra	—	—
1295	Ja/51/15	Gāyatri mantra	—	—
1296	Nga/43/3/1	Ghantā-karṇa-mantra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.10.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.1×15.1 2.14.14	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.0×13.0 178.6.14	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 14.19.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.0 4.23.28	C	Good	
P.	D; H./Skt. Prose/Poetry	29.0×17.0 20.24.17	C	Good	Opening pages are missing.
P.	D; H./Skt. Prose/Poetry	20.0×16.4 49.13.22	C	Good	It has fourty eight mantra charts.
P.	D;H./Skt. Poetry	29.0×17.0 6.24.17	C	Good	
P	D; Skt. Prose	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 1.9.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1297	Nga/43/6/7	Ghaṇṭā-karṇa-mantra	—	—
1298	Ta/5/6	Homa-Vidhi	—	—
1299	Nga/13,4	Jaina-gāyatrī	—	—
1300	Nga/13/3	Jaina-Saṁkalpa	—	—
1301	Nga/26/7	Jinendra-stotra	—	—
1302	Nga/48/11/7	Kāmadā-Yantra	—	—
1303	Nga/48/6/3	Kriyā-kāṇda-mantra	—	—
1304	Nga/26/8	Mahālakṣmī-ārādhanā	—	—
1305	Ja/51/18	Mantra	—	—
1306	Ta/11/4	,,	—	—
1307	Nga/43/2	,, Saṁgraha	—	—
1308	Nga/48/11/6	Mantra-Yantra	Rāmacandra	—

6	7	8	9	10	11
P	D. Skt. Prose	17.3 × 13.0 2.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	25.0 × 15.0 7.25.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3 × 18.3 2.20.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.3 × 18.3 1.21.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0 × 17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.5 × 13.2 2.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. poetry/ Prose	15.7 × 9.2 10.7.18	C	Old	It is so demage that it cannot read and write.
P.	D,H.Skt. Poetry	29.0 × 17.0 2.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3 × 20.1 2.13.35	C	Good	It has mantra charts also.
P.	D; Skt. Prose	14.5 × 11.7 9.11.22	C	Good	
P.	D; Skt, Prose	16.4 × 13.4 10.13.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Prose	16.5 × 13.2 1.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1309	Ta/3/51	Namokāra-mantrā	Vinodilāla	—
1310	Ta/42/84	Padmāvatī-daṇḍaka	—	—
1311	Nga/43/4/2	,, Kalpa	Malliṣeṇa	—
1312	Nga/43/6/2	,, ,,	—	—
1313	Ta/42/85	,, Kavaca	—	—
1314	Ta/42/104	,, ,,	—	—
1315	Nga/48/11/2	,, ,,	—	—
1316	Nga/26/12	,, ,,	—	—
1317	Nga/48/6/2	,, ,,	Rāmacandra	—
1318	Ta/30/2	,, Mantra	—	—
1319	Nga/43/6/12	,, ,,	—	—
1320	Ta/42/83	,, Paṭala	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.31	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.3×14.0 11.10.20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 7.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	16.5×13.2 2.12.17	C	Old	
P,	D;H./Skt. Prose	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.7×9.2 6.7.18	C	Old	
P.	D;H./Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1321	Ta/16/6	Pañdraha-yañtra-vidhi	—	—
1322	Nga/26/2	Pārśwanāthā-stotra-mañtra	—	—
1323	Nga/43/6/4	,, ,,	—	—
1324	Nga/26/3	,, ,,	—	—
1325	Nga/48/20	Prāta-gāyatri	Harayaśa-miśra	—
1326	Nga/13/6	Sakalī-karaṇa vidhāna	—	—
1327	Nga/45/4	Sāmāyika-vidhi	—	—
1328	Nga/26/14	Śāñtinātha-mañtra	—	—
1329	Nga/43/6/6	Saraswati-mañtrā	—	—
1330	Nga/47/5/7	,, ,,	—	—
1331	Nga/38/14	,, ,,	—	—
1332	Nga/26/4	,, stotra	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose	15.5×9.5 8.10.25	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 2.24.16	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13 0 3.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 3.14.16	C	Good	
P.	P; Skt Prose	16.0×10.3 37.7.19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	24.4×18.7 5.21.17	C	Good	
P.	D; H. Prose	25.0×10.0 17.15.42	C	Old	
P.	D;H./Skt. Prose	29.0×17.0 3.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.5×16 0 2.12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.00 6.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	29.0×17.0 2.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1333	Nga/44/19/8	Solaha-kāraṇa-mantra	--	—
1334	Ta/3/42	Sūtaka-vidhi	—	--
1335	Ta/4/11	Tantra mant·a Saṁgarah	—	—
1336	Nga/20/15	Trıvaınācāra-mantra	—	—
1337	Ta/39/18	Vaśikarana-adhıkārā	—	—
1338	Ta/39/20	Vaś;ādhikāra	--	—
1339	Nga/43/8	Vrata-mantra	—	—
1340	Nga/43/6/11	Visarjana „	—	—
1341	Nga/48/16	Vivāha-vidhı	—	—
1342	Ta/2/2	Yantra-mantra-saṁgraha	—	—
1343	Ta/2/3	„ „ „	—	—
1344	Ta/2/1	Aṣṭāṅga hṛdaya	Vāgbhaṭṭa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.5×12.5 2.7.18	C	Old	
P.	D, H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Old	
P.	D; Skt Prose	11.5×15.5 161.21.16	Inc	Old	
P.	D;H /Skt Prose	29.0×17.0 13.24.17	C	Good	
P.	D; Skt Prose	20.0×12.0 2.17.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 2.16.1	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry Prose	15.5×11.6 2.10.21	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 2 12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.3×10 2 21.8.14	Inc	Old	1 to 3 and 6 or 7 pages are missing.
P.	D; H. Prose	20.5×17.1 139.25.22	C	Old	The mantras & tantras charts are availeble in the mss.
P.	D; H Prose	16.5×21.0 52.17.23	C	Old	There are so many yantra & mantra charts in the mss.
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	28.6×18.5 183.22.24	C	Good	

1	2	3	4	5
1345	Ta/1/2	Cikitsā-śāstra	—	—
1346	Ta/1/1	„ sāra	—	—
1347	Ta/4/2	Jwara-hara-yantra	—	—
1348	Ta/4/6	Kuṭṭaka-karaṇa chāyā vyavahāra	Bhāskarācārya	—
1349	Ta/4/1	Madana-vinoda-nighaṇṭu	Madanapāla	—
1350	Ja/33	Nāḍi-Prakāśa	—	—
1351	Ta/2/1/1	Nidāna	Mādhavācārya	—
1352	Ta/4/9/2	Pañca-daśa Vidhāna	—	—
1353	Ta/1/3	Rāma-vinoda	—	—
1354	Ta/4/9	Rūpa-maṅgala	—	—
1355	Ta/4/8	Śāradā-tilaka saṭīka	—	—
1356	Ta/2/1/2	Śārangadhara Saṁhitā	Śārangadhara	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Prose/ Poetry	27.0×11 9 120.13.49	Inc	Old	Closing pages are missing.
P.	D; H. Prose/ Poetry	19.5×14.7 59 14.29	C	Good	
P	D; Skt. Prose	19.3×13.0 2 14.17	C	Good	
P.	D;Skt./H Prose/ Poetry	19.3×13.0 18.19.19	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	19.3×13.0 183.14.17	C	Good 1912 V S.	
P	D; H. Prose	19.7×13.0 16.15.11	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	28 6×18 5 64.22 16	C	Old	
P.	D;Skt /H. Prose Poetry	13.5×11 5 25 15.15	C	Old	
P	D; H. Poetry/ Prose	26.0×16.3 158.21.14	C	Good 1906 V. S.	
P	D;Skt /H. Prose	15.8×13.3 74.13.18	C	Good	
P	D; Skt./ H. Poetry	15 8×13.3 163.13.18	C	Good 1676 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	28.6×18.5 61.23.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1357	Ta/1/4	Vaidya-bhūṣaṇa	Nayanasukha	—
1358	Ta/4/10	,, manotsava	Banśīdhara Miśra	—
1359	Ta/1/4/1	Yoga-Cintāmaṇi	Harṣakīrti	—
1360	Ta/2/4	Yūnānī-Cikitsā	—	—
1361	Ta/42/99	Ācārya-bhakti	—	—
1362	Ta/3/50	Ādinātha-stuti	Vinodīlāla	—
1363	Nga/47/4/58	,, ārtī	—	—
1364	Nga/30/2/5	,, stotra	—	—
1365	Nga/47/4/53	Ādityanātha ārtī	—	—
1366	Ja/51/24	Ambikā-devi stotra	—	—
1367	Nga/26/5	Aṅka-garbha-ṣadāracakra	Devanandī	—
1368	Nga/47/4/72	Ārati	Nirmala	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	24 0×16 0 11.34 20	C	Old 1794 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	15.8×13.3 81.13.18	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	24.0×16 0 134.22.22	C	Old 1794 V. S.	
P.	D; H. Prose	20.5×17.5 98.23.22	C	Old	
P.	P; Skt./ Pkt. Poetry	32 3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; H Poetry	22 5×15 0 3.12.31	C	Good	
P	D; H Poetry	20 6×18 0 2.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	32.3×20.0 1.13.35	C	Good 1959 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	29 0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1369	Ta/18/3	Ārati	—	—
1370	Ta/18/10	,,	Dyānatarāya	—
1371	Ta/3/4	,,	—	—
1372	Nga/44/17	,, Saṁgraha	—	—
1373	Ta/39/2	Aṣṭaka	—	—
1374	Ta/6/9	Bhajana	—	—
1375	Nga/12/1	Bhajanāvalī	Ajita-Dāsa	—
1376	Nga/12/2	,,	,,	—
1377	Nga/12/3	,,	,,	—
1378	Nga/16/9	,,	—	—
1379	Ja/31	Bhajana-Saṁgraha	Ajita-Dāsa	—
1380	Nga/13/5	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D. H Poetry	11 0×4.0 2.13.19	C	Old	
P.	D; H Poetry	11.0×11 0 2.12.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2 12.32	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.0×16.0 4.13.21	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.0×12.0 2.19 20	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.2×1[illegible].7 2 20.17	C	Old	
P.	D; H. poetry	25.0×22.0 445.15.24	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.0×26.0 25.14.26	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.4×22.0 42.22.26	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.0×15.0 5.16.21	C	Good	
P.	D; H, Poetry	20.5×12.7 12.16.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.6 5.21.18	C	Good	

1	2	3	4	5
1381	Nga/26/1/1	Bhaktāmara Stotra	Mānatuṅga	—
1382	Nga/28/2	,, ,,	,,	—
1383	Nga/38/1	,, ,,	,,	—
1384	Ta/3/10	,, ,,	,,	—
1385	Ta/42/63	,, ,,	,,	—
1386	Ta/4/2	,, ,,	,,	—
1387	Nga/46/12/2	,, ,,	,,	—
1388	Nga/45/2	,, ,,	,,	Hemarāja
1389	Nga/47/4/8	,, ,,	,,	—
1390	Nga/48/21/1	,, ,,	,,	—
1391	Ta/9/5	,, ,,	,,	Sivacandra
1392	Ta/14/26	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 5 21.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.6×14 1 6.13.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 7.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 5.12.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 7.10 21	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	22.5×13.0 7.18.13	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	25.2×12.1 34 9.34	C	Good 1849 V. S.	
P.	D; Skt Poetry	20.6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 10.12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 15.19.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 8.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1393	Nga/20,5	Bhaktāmara stotra	Mānatuṅgā	
1394	Nga/47/4/15	,, ,,	—	—
1395	Ta/18/13	,, ,,	—	—
1396	Ta/31	,, bhāṣā	Hemrāja	—
1397	Nga/41/2/5	,, Stotra	,,	—
1398	Ta/6,3	,, ,,	,,	—
1399	Ja/35/4	,, ,,	,,	—
1400	Nga/20/6	,, ,,	,,	—
1401	Nga/25/1	,, ,,	,,	—
1402	Ja/52	,, Vacanikā	Mānatuṅga	—
1403	Nga/47	,, Stotra Vacanikā	Mānatuṅga	—
1404	Nga/48/6/7	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P	D; Skt. Poetry	25.6×15.0 7.14.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 9.12.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×16.1 6.12.25	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 12.8.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 5.19.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 8.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.6×15.0 7.16.16	C	Good	
P	D; H. Poetry/	28.4×17.0 4.24.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	27.5×12.5 29.11.38	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.1×16.3 47.10.27	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.2 25.7.18	Inc	Very Old	

1	2	3	4	5
1405	Ta/30/4	Bhaktāmara ṭikā	Jinasāgara	—
1406	Nga/44/13/5	,, stotra	Mānatanga	—
1407	Ta/14/16	Bhakti saṁgraha	—	—
1408	Nga/13/7	Bhairavāṣṭaka	—	—
1409	Ta/42/78	,,	—	—
1410	Ta/19/1	Bhairava stotrā	—	—
1411	Ta/9/9	Bhūpāla caturaviṁśati stotrā	Śivacandra	—
1412	Nga/47/4/11	Bhūpāla caubisi		—
1413	Ta/4/6	,, ,,	Bhūpalakavi	—
1414	Ta/42/67	,, ,,	,,	—
1415	Nga/38/5	,, stotra	,,	—
1416	Nga/26/1/6	,, caubisi stotra	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20 1×15.6 7.13.20	C	Good	
P	D;H /Skt. Poetry	13 5×8.5 18.6.13	C	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry	15.2×12 8 51.11.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.2×18.7 1.21.23	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	10 3×9.5 6.7.8	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	19.0×14.5 11.20.19	C	Old 1927 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.17.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 6.11.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 6.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1417	Nga/25/5	Bhūpāla stotra	–	–
1418	Nga/47/4/12	,, caul isi bhāṣā	–	–
1419	Nga/47/4/57	Bisa-viraha-māna-ārati	–	–
1420	Nga/44/10/8	Brahma-lakṣaṇa	–	–
1421	Ta/42/87	Caityālaya stotrā	–	–
1422	Ta/42/10/7	Cakreśwari ,,	–	–
1423	Nga/43/1	,, ,,	–	–
1424	Nga/43/3/5	Candra-prabha ,,	–	–
1425	Nga/48/6/5	,, ,,	–	–
1426	Ta/42/98	Cāritra bhakti	–	–
1427	Nga/48/8/2	Caturviṅśati stotra	–	–
1428	Nga/43/6/8	,, ,,	–	–

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.17.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.1 1.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	14.9×11.2 4.8.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 3.9.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	9.6×6.0 6.4.8	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	17.3×13.0 2.13.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1429	Nga/43/3/2	Caturviṁśati Stotra	—	—
1430	Nga/44/10/2	,, Jina Stotra	—	—
1431	Ta/18/9	Caubīsa tīrthaṅkara pada	—	—
1432	Ta/42/69	Cintāmaṇi Stotra	—	—
1433	Ja/61	,, Pārśwanātha Stotra	Dyānatarāya	—
1434	Nga/44/10/25	,, ,, ,, ,,	—	—
1435	Nga/47/4/66	Caubīsa Jina Ārtī	Bhairondāsa	—
1436	Nga/47/4/74	,, ,, ,,	—	—
1437	Ja/23/3	,, Daṇḍaka Vinatī	Daulatarāma	—
1438	Nga/47/4/32	Darśana Jnāna Caritra Āratī	Dyānatarāya	—
1439	Ta/6/5	Darṣana-Stuti	—	—
1440	Ta/42/105	Darśanāṣṭaka	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	17.0×13.0 3.9.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 1.11.28	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 11.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	22.0×13.0 2.13.11	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.12.22	C	Old	
P.	D; H. poetry	20.6×18 0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.4×14.2 6.18.15	C	Old	
P.	D; H./ Skt. Poetry/ Prose	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P.	D; H, Poetry	22.2×14.7 2.21.18		Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1441	Ta/42/89	Deva-stavana	—	—
1442	Nga/38/4	Ekibhāva-stotra	Vādirāja	—
1443	Nga/26/1/4	,, ,,	,,	—
1444	Ta/42/66	,, ,,	,,	—
1445	Ta/4/5	,, ,,	,,	—
1446	Nga/44/10/10	,, ,,	,,	—
1447	Nga/47/4/10	,, ,,	,,	—
1448	Nga/44/15	,, ,,	—	—
1449	Nga/48/21/3	,, ,,	,,	—
1450	Ta/9/7	,, ,,	—	Sivacandra
1451	Nga/47/4/12	,, ,,	,,	—
1452	Nga/25/2	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.0 5.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29 0×17.8 3.21.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	23.2×19.5 6.11.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.17.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.6×9.2 19.7.19	Inc	Old	It has no opening and closing.
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 7.12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	19 0×14.5 12 19.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 4.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1453	Nga/26/6	Ganadhara Stuti	—	—
1454	Nga/30/2/4	Gautama-Swāmi Stotrā	—	—
1455	Nga/48/8/1	Ghaṅtā-Karna ,,	—	—
1456	Nga/44/10/6	Gurubhakti	Bhūdharadāsa	—
1457	Ta/14/31	,,	—	—
1458	Ta/3/9	Guruvinati	Bhūdharadāsa	—
1459	Nga/45/3	Gunāvali	—	—
1460	Ta/9/4	Gunāṣṭaka	Parmānanda	—
1461	Nga/39	Jaina-pada-Saṁgraha	—	—
1462	Nga/44/10/26	Jinacaitya Namaskāra	—	—
1463	Ja/38/3	Jinadeva Stuti ,,	—	—
1464	Ta/42/7	Jinapañjara Stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.0 3.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.8 1.9.26	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	9.6×6.0 4.4.8	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.2×12.8 4.12.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12.36	C	Good	
P.	D; H Poetry	25.0×11.0 18.15.39	C	Old	
P,	D; H. Poetry	19.0×14.5 5.14.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry/	11.0×17.5 183.9.23	Inc	Old	Last pages are missing.
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 3.13.22	C	Old	
P	D; H. Poetry	22.0×13.0 2.14.32	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1465	Ta/18/16	Jinapanjara Stotra	—	—
1466	Nga/48/18/1	,, ,,	—	—
1467	Ta/42/70	Jinarakṣā Stavana	—	—
1468	Ja/50	Jinasahasranāma	Śikharacanda	—
1469	Ta/3/16	Jinendra darśana Stotra	—	—
1470	Ta/3/38	Jina-darśana	Nawala	—
1471	Ta/3/17	,, ,,	—	—
1472	Nga/26/13	Jwālāmālinī Stotra	Candraprabha	—
1473	Nga/43/3/6	,, ,,	—	—
1474	Nga/43/6/3	,, ,,	—	—
1475	Nga/48/2	,, ,,	—	—
1476	Nga/48/6/8	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	11.0×11.0 4.12.17	C	Old	
P	D; Skt Prose/ Poetry	40.0×11.4 1.52.16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	32.2×20.2 90.13.37	C	Good 1957 V. S.	Copied by Bhagawānadatta.
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 1.12.36	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 3.12.31	C	Old	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 2.12.36	C	Good	
P,	D;H.Skt. Poetry	29.0×17.0 3.24.17	C	Good	
P	D; Skt. Prose/ Poetry	17.0×13.0 4.9.21	Inc	Old	
P	D; Skt. Prose	17.3×13.0 2.12.11	C	Old	
P	D; Skt. Prose	12.8×9.5 6.10.12	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	15.7×9.2 4.7.18	C	Old	Damaged.

1	2	3	4	5
1477	Nga/48/5	Jwālā-mālinī Stotra	—	—
1478	Ta/42/90	,, ,,	—	—
1479	Nga/26/1/3	Kalyāṇa-mandira Stotra	Kumudacandra	—
1480	Nga/47/4/7	,, ,, ,,	,,	—
1481	Nga/48/21/2	,, ,, ,,	,,	—
1482	Ta/4/3	,, ,, ,,	,,	—
1483	Ta/42/64	,, ,, ,,	,,	—
1484	Nga/38/2	,, ,, ,,	,,	—
1485	Ta/9/6	,, ,, ,,	,,	Pandit Śivacandra
1486	Nga/44/10/1	Kalyāṇamandir Stotra	Banārasidāsa	—
1487	Ta/18/12	,, ,,	,,	—
1488	Nga/25/3	,, ,,	,,	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Prose	14 3×11 2 8.7.18	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19 0 2 33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29 0×17.8 5.21.17	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20 6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16 5×12.5 10.12.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19.5 7.11.20	C	Old	
P.	D; Skt poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9 0 8.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	19.0×14.5 16.20.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.0 5.11.28	C	Good	
P.	D; H, Poetry	11.0×11.0 8 12.17		Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 3.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1489	Nga/47/4/16	Kalyāṇa-mandira	—	—
1490	Nga/44/13/3	,, ,,	—	—
1491	Nga/43/6/7	Kṣetrapāla Stotra	—	—
1492	Ta/42/106	,, ,,	—	—
1493	Nga/48/4	,, ,,	—	—
1494	Ta/42/103	,, ,,	—	—
1495	Nga/26/1/8	Laghusahasranāma	—	—
1496	Nga/47/4/5	,, ,, ,,	—	—
1497	Ta/18/8	,, ,, ,,	—	—
1498	Nga/41/Na	,, ,, ,,	—	—
1499	Nga/13/8	Lakṣmī Stotra	—	—
1500	Ta/42/76	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 12.6.13	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3×13.0 5.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	16.4×10.0 3.7.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 5.21.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 7.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	11.0×11.0 5.12.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 3.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	24.3×18.0 2.21.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1501	Nga/26/1	Lakṣmi-Stotra	—	—
1502	Nga/44/4	Mahāvira-Ārati	—	—
1503	Ta/30/8	Maṇḍaloddhāra Stotra	—	—
1504	Ta/3/41	Maṅgala Ārati	Dyānatarāya	—
1505	Nga/43/6/5	Maṇibhadra Stotra	—	—
1506	Ta/42/77	Maṅgalāṣṭaka	—	—
1507	Ta/39/23	Maṅgala-jina-darśana	Rūpacandra	—
1508	Ta/3/7	Muniśwara Vinatí	Bhūdharadāsa	—
1509	Nga/26/1/7	Namaskāra	Śrīpāla	—
1510	Nga/47/4/4	,,	,,	—
1511	Ta/42/102	Nandiśwara-Bhakti	—	—
1512	Nga/47/2	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.7 1.24.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21 0×16.0 3.13.14	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.1×15.0 2 13.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P.	D; Skt. H Prose Poetry	17.0×13 0 5.13 11	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.0×12.0 1.24 18	Inc	Old	
P,	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P	D; H. Poetry	29.0×17.8 3.21.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Pkt. Poetry/ Prose	20.2×15.8 8.10.27	C	Old	

1	2	3	4	5
1513	Ta/6/12	Naraka Vinatī	Guṇasāgara	—
1514	Nga/48/14	Nārāyana-lakṣmī-stotra	—	—
1515	Ta/42/74	Nava-graha-stotra	—	—
1516	Ta/42/39	,, ,,	—	—
1517	Ta/18/14	Navakāra-dhāla	—	—
1518	Nga/43/6/9	,, Stotra	—	—
1519	Ta/42/79	Navakāra-mantrā-Stotra	—	—
1520	Nga/47/4/65	Neminātha Ārati	Bhairondāsa	—
1521	Nga/48/6/4	Neminātha Stotra	—	—
1522	Nga/38/11	Nijāmani	Brahma Jinadāsa	—
1523	Ta/42/100	Nirvāna Bhakti	—	—
1524	Ta/6/11	,, Kānda	Bhagavatīdāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	22.2×14.7 4.18.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	13.8×12.0 29.10 13	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11 0×11.0 4.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.6×18.0 1.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 3.7.18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D; H. Poetry	15.7×9.0 7.9.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 3.18.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1525	Nga/44/19/6	Nirvāṇa-Kāṇḍa	Bhagavatidāsa	—
1526	Nga/47/4/35	,, ,,	,,	—
1527	Nga/47/5/11	,, ,,	,,	—
1528	Ja/35/3	,, ,,	,,	—
1529	Nga/25/7	,, ,,	,,	—
1530	Nga/26/1/11	,, ,,	,,	—
1531	Ta/6/21	,, ,,	—	—
1532	Nga/48/26/6	,, ,,	—	—
1533	Nga/26/1/10	,, ,,	—	—
1534	Nga/33/5	,, ,,	—	—
1535	Nga/47,4 34	,, ,,	—	—
1536	Ta/47/5/10	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 5 10.27	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16 18	C	Old	
P.	D; H Poctry	16.5×16.0 4.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.2×11 5 3.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2 24.17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 2.26.26	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22 2×14.7 3.18 21	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	16 5×13.5 3 8.24	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	29.0×17.8 2.23.16	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.7×15.7 3.18.15	C	Good	
P	D; Pkt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Pkt Poetry	16.5×16.0 3.12.19	C	Old	

1	2	3	4	5
1537	Ta/44/20	Nirvāṇa Kāṇḍa	—	—
1538	Ta/3/35	,, ,,	Bhaiyā Bhagavatidāsa	—
1539	Nga/44/13/1	,, ,,	—	—
1540	Nga/26/1/12	Oṁkārastuti	—	—
1541	Nga/47/4/61	Pada	—	—
1542	Nga/47/5/8	,,	—	—
1543	Ta/18/15	,,	Kusalsuri	—
1544	Ta/14/38	,,	—	—
1545	Ta/30/3	,,	—	—
1546	Ta/28/2	,,	Amicanda	—
1547	Ta/27/2	,,	Jinadāsa	—
1548	Nga/44/13/9	,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; H. Poetry	22.5×15.0 5.12.31	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×8.5 4.6.13	C	Good	Starting three pages are missing.
P.	D; Skt Poetry	29.0×17.8 2.23.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 1.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 4.12.17	C	Old	
P,	D; H. Poetry	15.2×12.8 2.12.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.1×15.6 2 13.20	C	Old	
P	D; H. Poetry	19.8×17.2 1.14.18	C	Good 1948 V. S.	
P.	D; H. Poetry	19.7×16.5 2.14.21	C	Good 1948 V. S.	Copied by Amīcanda.
P.	D; H. Poetry	13.5×8.5 3.6.13	Inc	Old	

1	2	3	4	5
1549	Nga/48/23/6	Pada	—	—
1550	Nga/48/4	,,	—	—
1551	Nga/44/19/7	,,	—	—
1552	Nga/37/2	,,	—	—
1553	Ta/3/84	,,	—	—
1554	Ja/65/6	,,	Jagarāma	—
1555	Nga/37/13	,,	Ramcandra	—
1556	Ja/65	,,	Jagarāma	—
1557	Ja/65/2	,,	—	—
1558	Nga/37/12	,,	Vṛndāvana	—
1559	Ja/29	,,	—	—
1560	Nga/31/1	Padasaṅgraha	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	16.8×12.8 1.11.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13.5×12.0 2.8.12	C	Good	
P.	D; H Poetry	19.5×12.5 3.9.23	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	17.4×11.0 5.7.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 6.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 53.10.14	C	Good	
P.	D; H. poetry	22.0×13.0 8.15.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 59.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.5×10.0 4.10.14	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.0 4.14.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 3.15.15	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	14.8×14.8 82.13.15	C	Good	

1	2	3	4	5
1561	Ja/21/1	Pada saṁgraha	—	—
1562	Ja/21/2	Pada vinatí	—	—
1563	Nga/25/12	Pada-hajūrē	Dyānatarāya	—
1564	Nga/37/10	Pada holí	—	—
1565	Ja/51/14	Padmāvati aṣ to ttara śatanāma	—	—
1566	Nga/43/6/1	Padmāvati stotra	—	—
1567	Nga/48/11/3	,, ,,	—	—
1568	Ta/39/5	,, ,,	—	—
1569	Ta/42/82	,, ,,	—	—
1570	Ta/30/5	,, ,,	—	—
1571	Ja/51/17	,, ,,	—	—
1572	Nga/25/15	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.0×15.3 12 11.14	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; H. Poetry	22.8×18 2 31.16.13	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 0.24.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.0 4.15.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3×20.1 2 13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16 3×13.0 10.13.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16 5×13 2 8.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 5.19 20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 1×15.6 2.13.20	C	Good	
P	D; Skt Poetry	32.3×20.1 1.13 35	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	28.4×17.0 22 24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1573	Nga/25/9	Padmâvati stotra	—	—
1574	Ja/51/12	,, sahastranāma	—	—
1575	Nga/48/11/1	,, ,,	—	—
1576	Nga/46/13	,, ,,	—	—
1577	Ta/42/36	,, ,,	—	—
1578	Ta/39/15	,, ,,	Sevārâma	—
1579	Nga/44/12/2	,, vinati	—	—
1580	Nga/48/1/4	,, ,,	—	—
1581	Nga/44/17	Padmanandipaṇca-vimśatikā	Padmanandi	—
1582	Nga/43/3/3	Pānco-namaskāra stotra	—	—
1583	Ta/16/4	,, ,,	—	—
1584	Nga/44/10/11	Parameṣṭhi stotra	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H Poetry	28.4×17.0 3.24 17	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×20 1 7.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×13.2 14.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Prose	13.0×11.6 1.7.10	Inc	Old	Only first page is available.
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12 0 14 22.17	C	Old 1827 V. S.	
P.	D; Skt./ H. Poetry	32 3×20 2 3.23.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.0×11.7 8.10.15	C	Old	
P.	D; H. Prose	11.0×10.2 12.11.9	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 5 9.19	C	Old	
P.	D, Skt. Prose	15.5×9.5 13.8.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Good	

1	2	3	4	5
1585	Ta/6/2	Paramānanda stotra	—	—
1586	Nga/44/10/15	,, ,,	—	—
1587	Ta/42/86	Pārśwanātha stotra	—	—
1888	Ta/42.74	,, ,,	—	—
1589	Nga/48/6/6	,, ,,	—	—
1590	Nga/43/3/4	,, ,,	—	—
1591	Nga/30/2/3	,, ,,	—	—
1592	Nga/41/2/8	,, ,,	Dyānatarāya	—
1593	Ta/3/53	,, stuti	Vinodilāla	—
1594	Ta/42/92	,, stotra	—	—
1595	Ta/18/5	Pārśwanāthāṣṭaka	—	—
1596	Ta/30/1	,, ,,	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	22.2×14.7 2.18.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 3.13.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.7×9.2 3.7.18	C	Old	The mss. is totely damaged.
P.	D; Skt. Poetry	17.0×13.0 2.9.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	19.0×14 8 3 9 20	C	Old	
P,	D;Skt./H Poetry	14 5×11.0 3.9.17	C	Good	
P	D; H. Poetry	22.5×15 0 2.12.31	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	11.0×11.0 3.13.19	C	Old	
P.	D;H /Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Old	Starting one to eleven Pages are missing.

1	2	3	4	5
1597	Nga/47/4/56	Pārśwajina-ārati	Bhairoadāsa	—
1598	Nga/48/20	Pratyaṅgirā-siddhi-mantra-stotra	—	—
1599	Ta/42/81	Ṛṣi-maṇḍala Stotra	—	—
1600	Nga/31/1/7	,, ,,	—	—
1601	Nga/47/4/17	,, ,,	—	—
1602	Nga/26/10	,, ,,	—	—
1603	Nga/13/5	,, ,,	—	—
1604	Nga/31/2/3	Sādhū-Vandanā	Banārasidāsa	—
1605	Ta/42/16	Sahasra-nāma-stotra	Jinasena	—
1606	Nga/26/1/13	,, ,, ,,	,,	—
1607	Ta/19/2	,, ,, ,,	,,	—
1608	Ta/14/25	,, ,, stavana	Āśādhara sūri	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2 16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	17.9×18.5 24.7.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	12.3×16.6 7 16 14	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20.6×18 0 7 16 18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	29.0×17.0 4.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetrv/ Prose	15 4×12 3 26 13.15	Inc	Old	Opening first page is missing.
P.	D; H Poetry	12 3×16.6 4 18.16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 4.33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 6 23.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	10.3×9.5 54.7.9	C	Good	Sixteen pages have no folio and paging.
P.	D; Skt Poetry	15.2×12.8 14.11.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1609	Ta/18/7	Sahasṛa-nāma-stotra	Jinasena	—
1610	Nga/31/2/8	" " "	—	—
1611	Ta/29	" "	—	—
1612	Ta/42/68	Samantā-bhadṛa-stotra	—	—
1613	Ta/3/5	Sammeda-śikhara-stuti	—	—
1614	Ta/39/16	Sammedācala stotra	—	—
1615	Nga/48/13	Sandhyā	—	—
1616	Nga/47/4/58	Śantijine ārati	—	—
1617	Ja/29/1	Śanti-stuti	—	—
1618	Ta/42/73	Śāntināthāṣṭaka	—	—
1619	Ta/3/11	Śāradāṣṭaka	Banārsidāsa	—
1620	Nga/44/10/20	Śāradā stūti	—	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	11.0×11.0 26.10.10	Inc	Old 1842 V. S.	
P.	D; H. Poetry	12.3×16.6 9.16 16	Inc	Old	Last śataka is missing.
	D; H. Prose	19.5×15.0 50 12 19	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 4.33.37	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.5×15.0 1.5.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3.21.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16.0×10.2 11 6 19	C	Good	
P	D, H. Poetry	20 0×18 0 2 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1×14 0 2.12 14	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1 33.37	C	Good	
P	D; H. Poetry	22.5×15 0 2.12.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	C	Old	

1	2	3	4	5
1621	Ta/42/18	Saraswati stuti	Malaya Kirti	—
1622	Ta/42/75	„ stotra	—	—
1623	Nga/48/9	„ „	—	—
1624	Ta/40	Śāstra Vinati	—	—
1625	Ta/42/96	Siddha-bhakti	—	—
1626	Ta/18/17	Sitā-Vinati	—	—
1627	Nga/41/2/7	Śripāladarśana	—	—
1628	Nga/37/1	Śripāla Vinati	Sripâlarâjā	—
1629	Ta/42/97	Śruta-bhakti	—	—
1630	Ja/16/1	Stotra	—	—
1631	Nga/47/4/31	Sthāpanā Ārati	—	—
1632	Ja/32	Stuti	Haridāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.7×11.7 6.14.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	13 7×9.7 3.11.10	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33 37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	11.0×11.0 13.9.8	C	Good	
P.	D; H poetry	14.5×11.0 5 9 15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	9.8×15 7 5.13.11	C	Good	
P.	D; Skt / Pkt. Poetry	32.3×19 0 2 33 37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	23.3×19.0 4.15.18	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2 16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	19.5×15.0 5.15.2)	C	Good 1965 V. S.	

1	2	3	4	5
1633	Ta/42/88	Suprabhāta stotra	—	
1634	Ja/51/16	Sūrya-sahasra-nāme	—	—
1635	Nga/47/4/26	Swayambhū stotra	—	—
1636	Ta/42/10	,, ,,	—	—
1637	Ta/3/30	,, ,,	—	—
1638	Ta/14/23	,, ,,	—	—
1639	Ja/29/4	Vinati	—	—
1640	Nga/25/8	,,	—	—
1641	Nga/37/11	,,	Vrndavana	—
1642	Ja/45/5	,,	Bhūdharadāsa	—
1643	Ta/3/40	,,	—	—
1644	Ta/42/29	,,	Jnánaságara	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3 × 19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3 × 20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6 × 18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3 × 19.0 1.33.37	C	Good	
P.	P; Skt. Poetry	22.5 × 15.0 3.12.31	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2 × 12.8 20.11.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	21.1 × 14.0 16.13.13	C	Good	
P.	D; H. Poetry	28 4 × 17.0 3.24.17	C	Good	
P.	D; H Poetry	22.0 × 13.0 5.15.14	C	Old	
P.	D; H. Poetry	15.0 × 11.3 3.10.23	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5 × 15.0 1.12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3 × 19.0 2.33 37	C	Good	

1	2	3	4	5
1645	Nga/48/1/3	Vinati	—	—
1646	Ta/30/6	,,	Harṣakírti	—
1647	Nga/48/23/5	,,	—	—
1648	Nga/44/19/3	,,	—	—
1649	Nga/44/12/3	,,	—	—
1650	Nga/47/4/75	,,	Bhūdharadāsa	—
1651	Nga/44/10/7	,,	—	—
1652	Ta/3/8	Vinati-tribhuvana swāmi	—	—
1653	Nga/44/10/9	Viṣāpahāra stotra	Dhanañjaya Kavi	—
1654	Nga/38/3	,, ,,	,,	—
1655	Nga/26/1/5	,, ,,	,,	—
1656	Nga/43/21/4	,, ,,	,,	—

(Stotra)

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	11.7×14.0 5.10.15	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.1×15.6 2.13.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16 8×12.8 3.11.12	C	Old	
P.	D; H Poetry	19.5×12.5 3.10.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×20.4 4.23.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5×13.1 2.13 22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5 13.22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	15.8×9.0 6 9.22	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	29.0×17 8 4 21.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×12.5 8.12.12	C	Old	

1	2	3	4	5
1657	Ta/9/8	Viṣāpahāra stotra	Dhanañjaya Kavi	—
1658	Ta/4/4	,, ,,	,,	—
1659	Ta/42/65	,, ,,	,,	—
1660	Nga/47/4/9	,, ,,	,,	—
1661	Nga/44/10/3	,, ,,	—	—
1662	Nga/47/4/14	,, ,,	—	—
1663	Nga/44/12/4	,, ,,	—	—
1664	Nga/44/13/2	,, ,,	—	—
1665	Nga/25/4	,, ,,	—	—
1666	Ja/35/5	,, ,,	—	—
1667	Ja/16/4	,, ,,	—	—
1668	Nga/47/4/6	Vṛhat-sahastra-nāma	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	19.0×14.5 13.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	23.2×19 5 6.11.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 5.16.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	12 5×13.1 4.12.23	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×20 2 4.23.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	13 5×8 5 13.6 13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28.4×17 0 4.24 17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.3×11.5 5.16.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.3×19.0 4.15.18	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 13.16.14	C	Old	

1	2	3	4	5
1669	Nga/47/8/3	Vṛhat-svayambhū	Samanta-bhadra	—
1670	Nga/43/70	,, ,, stotra	,,	—
1671	Nga/26/1/9	,, ,, ,,		—
1672	Ta/42/101	Yoga bhakti	—	—
1673	Nga/30/2/7	Abhiṣēka-vidhi	—	—
1674	Nga/47/5/1	Ādinātha-pūjā	—	—
1675	Nga/41/Ta	,, ,,	—	—
1676	Nga/41/dha	Ādityawāra-pūjā	—	—
1677	Nga/27/3	Ādityavāra-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1678	Ta/39/22	Ākṛtrima-caityālaya-Ārati	—	—
1679	Ta/3/22	,, ,, Arhya	—	—
1680	Nga/26/2/8	,, ,, pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ H. Poetry/ Prose	20.8×16.3 18 15.18	C	Old	
P.	D; Skt./ H. Poetry/ Prose	17.6×13.0 22.12.21	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	29.0×17.8 13.23.17	C	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14 8 1.9.26	Inc	Old	It has no closing.
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 4.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	C	Old	
P.	D;Skt./H Poetry	14.5×11.0 2.13.16	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	27 8×17.6 15.10.31	C	Good	
P.	D; Pkt Poetry	20.0×12 0 1.24.18	C	Old	
P	D; Skt, Poetry	22.5×15.0 1.12.32	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30.3×17.5 2.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1681	Ta/42/30	Anańta-jina-pūjā	—	
1682	Ta/42/49	Anańtā-pūjā-vidhi	—	—
1683	Ja/51/22	,, ,, ,,	—	—
1684	Nga/44/10/12	Ari-hanta-dakṣiṇī	—	—
1685	Ta/39/6	Aṣṭabijakṣara-pūjā	—	—
1686	Ta/14/28	Aṣṭānhikā-pūjā	—	—
1687	Ta/35/6	,, ,,	—	—
1688	Ta/42/26	,, ,,	—	—
1689	Nga/47/8,15	,, ,,	—	—
1690	Ta/3/33	,, ,,	Dyānatarāya	—
1691	Nga/47/4/24	Aṭhāī-pūjā	,,	—
1692	Nga/27/5	Bāhubalī-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	32.3 × 19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry/ Prose	32.3 × 19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3 × 20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D; H Poetry	18.5 × 13.1 4.13.32	Inc	Good	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.0 × 12.2 4.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2 × 12.8 12.12.18	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.5 × 12.6 11.10.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32 3 × 19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8 × 16.3 22.15.17	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	22.5 × 15.0 7 12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6 × 18.0 8.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	18.5 × 30.5 6.21.20	C	Good	

1	2	3	4	5
1693	Nga/47/8/7	Bāhubali-muni-pūjā	—	—
1694	Nga/47/4/53	Bhairo-rāga	—	—
1695	Ja/38/1	Bisā-Tirthankara arghya	—	—
1696	Ta/3/25	Bisa-Virahamāne-pūjā	—	—
1697	Nga/48/12/2	,, ,, ,,	—	—
1698	Ta/14/5	,, ,, ,,	—	—
1699	Nga/48/23/1	,, ,, ,,	—	—
1700	Nga/47/4/21	,, ,, ,,	—	—
1701	Nga/41/2/2	Bisa-Vidyamāna-pūjā	—	—
1702	Nga/26/2/11	Bisa-Tirthankara-jakari	—	—
1703	Nga/47/3/80	Bisa-Virahamāna ārati	—	—
1704	Nga/48/26/5	Bisa-Tirthankara-Jayamālā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	20.8×16.3 4.16.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 1.16 18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.0×13.1 9.12.27	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22 5×15.0 4.12.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×12.0 4.8.12	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 3.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. poetry	16.8×12.8 4 11.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 6×18.0 5.16.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 4 9.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	30.3×17.5 2.16.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 1.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×13.5 2.8.24	C	Old	

1	2	3	4	5
1705	Nga/47/5/4	Candra-prabha-pūjā	—	—
1706	Nga/17/1/1	,, ,, ,,	Ajitadāsa	—
1707	Ta/42/15	Cāretra-pūjā	—	—
1708	Ta/14/11	,, ,,	Narendrasena	—
1709	Nga/47/4/30	,, ,,	,,	—
1710	Ta/39/7	Caturaviśati-yakṣiṇi-pūjā	—	—
1711	Ta/39/8	,, mātṛkā pūjā	—	—
1712	Ta/39/9	Caturaniviśati-tirthaṅkara-pūjā	—	—
1713	Nga/33/1	,, ,, ,,	—	—
1714	Nga/33/2	,, ,, ,,	—	—
1715	Ja/34/4	,, ,, ,,	—	—
1716	Nga/47/7	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16.0 5.12.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	25.0×15.0 3.19.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.12.16	C	Old	
P.	P; Skt. Poetry	20.6×18.0 0.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.20.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 0×12.2 4.20.20	C	Good	
P.	D;H /Skt. Poetry	23.4×15.0 21.19.14	C	Good	Its two opening pages are damaged. Copied by Rāmcandra
P.	D; H. Poetry	22.5×13.4 4.16.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 3.15.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.0×14.1 100.13 13	C	Old	

1	2	3	4	5
1717	Ta/14/13	Caturaviṅśati-jina Jayamālā	—	—
1718	Nga/41/ṇa	Caubisa-tīrthaṅkara-pūjā	—	—
1719	Nga/48/3	„ „ „	—	—
1720	Ja/55	„ „ „	—	—
1721	Ta/13	„ „ „	Caudharī Rāmacanda	—
1722	Nga/46/10	Caubiśī pūjā	—	—
1723	Nga/38/8	Caturaviṅśati tīrthaṅkara paḍa	—	—
1724	Ta/5/4	Ciṅtāmaṇi-pūjā	Śaṁbhūnātha	—
1725	Ta/24/6	„ pārśwanātha pūjā	Jnānasāgar	—
1726	Nga/47/8/16	„ „ „	—	—
1727	Ta/39/1	„ „ „	—	—
1728	Ta/42/38	„ „ „	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;H./Pkt. Poetry	15.2×12.8 3.11.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 5.13.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	40.9×15.8 2 40.15	C	-	
P.	D; H Poetry	35.0×18.0 71.11.30	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.0×13.3 113.10 22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×17.8 4.13.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 10.24.16	C	Good 1793 V. S.	
P	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 16 37.33	C	Old 1819 V, S.	
P	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 6.16.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1729	Ta/39/13	Cintâmani Jayamāla	—	—
1730	Nga/48/26/2	Darśana-pāṭha	—	—
1731	Nga/44/13/8	,, ,,	—	—
1732	Ta/35/1	,, ,,	—	—
1733	Ta/42/61	,, pūjā	—	—
1734	Ta/42/13	,, ,,	—	—
1735	Nga/47/4/28	,, ,,	Narendrasena	—
1736	Ta/3/29	Daśalākṣaṇī ,,	Dyânatarāya	—
1737	Nga/47/4/25	,, ,,	,,	—
1738	Nga/44/10/14	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1739	Ta/14//8	,, ,,	—	—
1740	Ta/42/59	,, ,,	Dyānatarāya	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./ H./Skt. Prose	20.0×12.0 1.23.19	C	1825 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×13.5 2.8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×8.5 4.6 13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 2 10.16	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×00.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18 0 6.16 18	C	Old	
P.	D;Skt./H Poetry	22 5×15 0 7.12 31	C	Good	
P.	D;Skt /H Poetry	20.6×18.0 15 16 18	C	Old	
P.	D; Skt / H. Poetry/ Prose	18.5×31.1 4.13.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 16.12.12	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1741	Ta/42/9	Daśa-lākṣaṇí-pūjā	—	—
1742	Ta/35/5	,, ,, ,,	—	—
1743	Ta/38/1	,, ,, jayamālā	—	—
1744	Ta/24/2	,, ,, Vratodyapana	—	—
1745	Ta/39/10	Digpālārcana	—	—
1746	Nga/26/2/2	Deva-Pūjā	Ājādhara Sūri	—
1747	Nga/25/14	,, ,,	—	—
1748	Nga/14/4	,, ,,	—	—
1749	Ja/45	,, ,,	—	—
1750	Nga/27/2	,, ,,	—	—
1751	Nga/26/2/13	,, ,,	—	—
1752	Nga/41/2/1	,, ,,	—	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 3.10.15	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	14.5×12.5 15.8.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 5.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	20.0×12.2 3.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 5.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	28 4×17.0 6.24.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 8×26.0 13 14.25	C	Good	
P.	D; H / Skt. Poetry/ Prose	15.0×11.3 36 11 33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	26 0×17 7 8 20.16	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	30.3×17.5 2.19.13	Inc	Good	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	14.5×0.11 17.9.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1753	Ta/3,18	Devapūjā	—	—
1754	Nga/44/2	,,	—	—
1755	Nga/47/4/18	,,	Dyānatarāya	—
1756	Nga/44/3	,,	—	—
1757	Ta/14/4	,,	—	—
1758	Ta/16,1	,,	—	—
1759	Ta/18/2	,,	—	—
1760	Nga/48/19	,,	—	—
1761	Nga/48/23/1	,,	—	—
1762	Ta/35/2	,,	—	—
1763	Nga/44/10/16	,,	—	—
1764	Nga/48/12/1	,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	22.5×15.0 5.12.36	C	Good	
P.	D; Pkt / Skt. Poetry/ Prose	20.5×16.0 9.15.17	Inc	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	20.6×18.0 12 16.18	C	Old	
P.	D; H / Skt. Poetry/ Prose	20.0×16.0 26.14.19	C	Old	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	15.2×12.8 10.12.16	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.5×9.5 11.6.18	Inc	Old	
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	11.0×11.0 13.13.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16 1×10 1 8.8.26	C	Old	
P.	D;Skt /H Poetry	16.7×1 .9 12 10.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 7.10.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	C	Old	
P.	D; Pkt. Poetry	13.5×12.0 17.8.13	C	Good	

1	2	3	4	5
1765	Ta/42,2	Deva-pūjā	—	—
1766	Ta/3/19	Deva-jayamālā	—	—
1767	Ta/5/10	Deva-pratiṣṭhā Vidhi	—	—
1768	Nga/48/1/2	Dharaṇendra-pūjā	—	—
1769	Ta/39/3	,, ,,	—	—
1770	Ja/51/11	,, ,,	—	—
1771	Ta/3/36	Garbha Kalyānaka	Rūpacanda	—
1772	Ja/57	Giranāra-pūjā	—	—
1773	Nga/48/24	,, ,,	—	—
1774	Nga/47/8/11	,, ,,	—	—
1775	Ta/3/21	Gurū-jaya-mālā	—	—
1776	Nga/14/7	Guru--pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt./Skt Poetry	32.3×19.0 3.30.37	C	Good	
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15.0 2.12 31	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	25.0×15.0 1.27.20	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	13.7×12.0 89.10.13	C	Old	
P.	P; Skt. Poetry	20.0×12.2 4.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20 8×16.4 10.15.21	C	Good	
P.	D; H Poetry	16.2×9.5 8 6.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 6.15.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.32	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 7.14 25	C	Good	

1	2	3	4	5
1777	Nga/41/2/4	Guru-pūjā	Vinodīlāla	—
1778	Nga/47/9/42	,, ,,	—	—
1779	Ta/14/39	,, ,,	—	—
1780	Ta/42/8	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1781	Nga/44/10/19	,, ,,	—	—
1782	Ta/18/6	,, ,,	—	—
1783	Nga/26/2/5	,, ,,	Brahma Jinadāsa	—
1784	Ta/3/27	,, ,,	Hemarāja	—
1785	Nga/48/1/5	Homa-Vidhi	—	—
1786	Ta/24/4	Jala-yātrā-Vidhi	—	—
1787	Ta/5/7	Jinayajna Vidhāna	—	—
1788	Nga/25/10	Jinavara Vinati	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D;Pkt./H. Poetry	14.5×11.0 6.9.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15 2×12.8 3.14.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	11.0×11.0 4.13.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 3.16.16	C	Good	
P,	D; H. Poetry	22.5×15 0 5.12.31	C	Good	
P	D; Skt. Poetry/ Prose	14.0×11.7 12.10.12	C	Old	
P	D; Skı. Poetry/ Prose	30.2×20.0 1.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	25.0×15.0 68.21.17	Inc	Good	
P.	D; H. Poetry	28.4×17.0 2.24.17	C	Good	

1	2	3	4	5
1789	Nga/47/5/2	Jina-guṇa-sampati-pūjā	—	
1790	Ta/3/26/1	Jina-vāṇī-pūjā	Brahma Jinadāsa	—
1791	Nga/47/8/13	Jambū-swamī-pūjā	—	—
1792	Ja/63	,, ,,	—	—
1793	Nga/44/10/22	Jaya-mālikā-pūjā	—	—
1794	Nga/47/4/29	Jnāna-pūjā	—	—
1795	Ta/14/10	,, ,,	Narendrasena	—
1796	Ta/42/14	,, ,,	—	—
1797	Nga/17/1/3	Jwālā-mālinī-pūjā	—	—
1798	Nga/43/6/10	,, ,,	—	—
1799	Nga/47/8/17	,, ,,	—	—
1800	Ta/42/40	Jyeṣṭha-jinavara-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Po ry	16 5×16.0 6.12.19	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	22.5×15.0 6.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 8.15.17	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	16.7×12.8 11.8.22	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 2.13.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18.0 5.16 18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15 2×12.8 7.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	25.0×15.0 5.20.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 7.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 2.15.17	Inc	Old	
P.	D; H./ Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1801	Nga/48/26/4	Kalaśābhiṣeka	—	—
1802	Nga/41/Ka	Kalikuṇḍa-pūjā	—	—
1803	Nga/47/4/40	,, ,,	—	—
1804	Ta/42/22	,, ,,	—	—
1805	Nga/44/10/18	,, pārśwanātha--pūjā	—	—
1806	Ta/14/12	,, ,, ,,	—	—
1807	Nga/26/2/6,7	,, ,, ,,	—	—
1808	Ta/24/1	Kañjikā-vratodyāpana	Paṅdita Naṅdarāma	—
1809	Nga/14/3	Karma-dahan-pūjā	—	—
1810	Ta/42/24	Kṣmā-vanī ,,	—	—
1811	Ta/30/9	Kṣetrapāla ,,	Viśwasena	—
1812	Ta/41/28	,, ,,	Subhacaṅdra	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	16.5×13 5 5.8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 2 13 17	C	Old	Opening pages are missi r.
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	32.3×19 0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	15 2×12.8 4.12 15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17 5 5.16 16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30 2×20 0 2 37 33	C	Old	
P.	D; skt. Poetry	20 8× 0 0 23.14 25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20 1×15.6 26.13.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 0.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1813	Ta/39,12	Kṣetra-pāla-pūjā	—	—
1814	Ta/30/7	,, ,,	—	—
1815	Ta/42/31	,, ,,	Viśwasena	—
1816	Nga/43/6/16	,, ,,	Vijayapāla	—
1817	Nga/41/Dha	,, ,,	—	—
1818	Ja/51,8	,, ,,	—	—
1819	Ta/42/23	Labdh-vidhāna-pūjā	—	—
1820	Nga/47/9/3	Laghu-karma-dahana-pūjā	—	—
1821	Nga/47/9/1	Laghu-pañcakalyānaka-vidhāna	—	—
1822	Ja/29/2	Mahāvīra arghya	—	—
1823	Nga/78/26/3	Maṅgala	—	—
1824	Ta/42/91	Mantra-vidhi	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	20.0×12.0 4.19.20	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.1×15.6 3.13.20	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 6.33.37	C	Good	
P.	D;Skt./H, Poetry	17.3×13.0 3.13.13	C	Old	
P.	D; Skt Poetry	14.5×11.0 15.13 16	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. poetry	32.3×19.0 1 33 37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15 9 7.13 19	C	Good 1928 V. S.	
P	D; H. Poetry	20.5×15.9 12.13 29	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 1.12.13	C	Old	
P.	D; H. Poetry	16.5×13.5 5 8.24	C	Good	
P.	D; Skt. Prose	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
1825	Nga/31/2/7	Mokṣa-paidi	Banarasidāsa	—
1826	Nga/29/2	Nandīśwara-pūjā	—	—
1827	Nga/28/5	,, ,,	—	—
1828	Nga/44/10/23	,, dvipa-pūjā	—	—
1829	Nga/47/8/8	Navagraha-pūjā	—	—
1830	Nga/27/1	,, ,,	—	—
1831	Nga/36/1	,, ,,	—	—
1832	Ja/51/7	,, ,,	Jinasāgar	—
1833	Nga/46/7	,, ,,	—	—
1834	Ta/39/11	,, ,	—	—
1835	Nga/47/4/41	Navakāra-panca-triṅśat-pūjā	—	—
1836	Ta/20/1	Nava-pada-kalaśa-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12.3×00.0 4 16.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.2×21.0 34.17.11	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	14.6×14.1 23.12.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13 1 4.13.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 28 16 21	C	Old	
P.	D;Skt /H. Poetry	26.0×16.7 20.19.16	C	Good 1913 V. S.	
P.	D;Skt./H Poetry	13.6×17.8 32.9 26	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 4.13.35	C	Good	It contains chart of nine grahas.
P.	D; Skt./H Poetry	23.2×15.0 24.16.15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12 0 3.19.20	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	10.9×9.6 25.7.13	Inc	Old	Page no. one to thirty seven are missing.

1	2	3	4	5
1837	Nga/44/19/4	Neminâtha Jayamālā	—	—
1838	Ta/14/37	Nhavaṇa-pūjā	—	—
1839	Ta/42/11	,, ,,	—	—
1840	Nga/47/4/37	,, kavya	—	—
1841	Nga/47/5/13	Nirvâṇa pūjā jayamâlā	—	—
1842	Nga/44/9/1	,, ,,	—	—
1843	Nga/47/4/33	,, ,,	—	—
1844	Nga/33/4	,, ,,	—	—
1845	Ta/42/21	,, ,,	—	—
1846	Nga/44/10/27	,, ,,	Bhagavatidâsa	—
1847	Ta/14/30	,, ,,	—	—
1848	Nga/47/5/5	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.5×12.5 2 10.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.12.18	Inc	Old	Closing is missing.
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16 18	C	Old	
P.	P; Pkt. Poetry	16.5×16.0 3.12.19	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	11.0×10 5 8.11.12	C	Good	Sixteeng opening pages are missing.
P.	D; Pkt./ Skt. Poetry	20.6×18.0 4.16.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.7×15.7 2.18.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	18.5×13.1 4.13.22	C	Old	
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	15.2×12.8 5.12.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.5×16 0 3.12.19	C	Old	

1	2	3	4	5
1849	Ta/42/42	Nirvāṇa-pūjā	—	—
1850	Nga/47/8/5	Nirvāna-kṣetra-pūjā	—	—
1851	Nga/47/8/1	,, ,, ,,	—	—
1852	Ta/3/34	,, kalyāṇaka ,,	—	—
1853	Ta/3/37	,, ,,	Rūpacanda	—
1854	Nga/36/2	Nitya-niyama-pūjā	—	—
1855	Nga/37/5	Pada-Lāvani	—	—
1856	Ta/39/4	Padmāvati-pūja-vidhāna	—	—
1857	Ja/51/13	,, ,,	Cārūkīrti	—
1858	Ta/42/35	,, ,,	—	—
1859	Ta/42/37	,, ,,	—	—
1860	Ta/39/14	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.33	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 7.15.18	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 2.15.18	C	Old	
P.	D;H./Skt. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Old	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 1.12 31	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	17.8×13.7 24.14 15	C	Good	
P.	D; H Poetry	20.8×13.0 4.14 12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.2 2.19.20	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 4.13.35	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 8.20.16	C	Old	

1	2	3	4	5
1861	Nga/43/6/15	Padmāvatī-pūjā	—	
1862	Nga/41/4	,, ,,	—	—
1863	Ja/51/9	,, vratodyāpana	—	—
1864	Nga/41/1	Pancabālayati-pūjā	—	—
1865	Ta/33	Pañca kalyāṇka-pūjā Pātha	Bhagawāna Prasād	—
1866	Nga/47/4/2	Pañca-kalyāṇaka-pāṭha	Rūpacanda	—
1867	Ta/42/1	,, ,, ,,	,,	—
1868	Nga/14/2	,, ,, Pūjā	—	—
1869	Nga/47/4/82	,, ,, ,,	—	—
1870	Nga/26/2/1	,, ,, dohā	—	—
1871	Ta/5/1	,, ,, pūjā	—	—
1872	Nga/47/8/6	Pañca-kumāra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 5.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 4.13.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 5.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	16.0×9.5 6.7.25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.7×15.8 44.17.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 8.18 21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32 3×19.0 3.30.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 24.14.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 28.16.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	30.3×17.5 21.16.16	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 17.28.21	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 4.16.21	C	Old	

1	2	3	4	5
1873	Ja/57/3	Pañca-kumāra-vidhāna	—	—
1874	Ta/18	Pañca-maṅgala-pāṭha	—	—
1875	Nga/25/13	,, ,, ,,	Rūpacanda	—
1876	Nga/41/2	,, ,,	,,	—
1877	Ja/26/1	,, meru pūjā	—	—
1878	Ta/3,32	Panca ,, ,,	Dyānatarāya	—
1879	Nga/47/4/23	,, ,,	,,	—
1880	Nga/44/10/21	,, ,,	—	—
1881	Ta/42/25	,, ,,	Bhūdhardāsa	—
1882	Nga/47/8/14	,, ,,	—	—
1883	Ta/42/57	,, ,,	Dyānatarāya	—
1884	Ja/57/4	Pañca-parmeṣṭi-Arghya	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry/ Prose	32.3×20.1 2.13.35	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	11.0×11.0 9.13.19	C	Old	
P.	D; H. Poetry	28 4×17.0 4.24 17	C	Good	
P.	D; H, Poetry	14.5×11.0 14.8.19	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.0×15.0 22 18.14	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D; H. poetry	20.6×18 0 6 16 18	C	Old	
P	D; Skt Poetry	18.5×13.1 2 13.22	C	Old	
P	D;Skt./H Poetry	32.3×19 0 1 33.37	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20.8×16.3 13.15.17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 0.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	

1	2	3	4	5
1885	Ta/3/23	Panca-parmeṣṭhi Jayamālā	—	—
1886	Ta/33/2	,, ,, Pāṭha	—	—
1887	Ta/5/8	,, ,, Pūjā	Dharmabhūṣaṇa	—
1888	Nga/47/9/2	,, ,, ,,	—	—
1889	Nga/33/3	,, ,, ,,	—	—
1890	Nga/14/1	,, ,, ,,	Yaśonandi	—
1891	Nga/37/7	Pārśwanātha Kavitta	—	—
1892	Nga/48/1/1	,, Pūjā	—	—
1893	Nga/47/5/9	,, ,,	—	—
1894	Ja/51/10	,, ,,	—	—
1895	Ja/51/5	,, ,,	—	—
1896	Nga/47/4/3	Prabhāti-Maṅgala	Rūpacanda	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Pkt. Poetry	22.5×15.0 2.12.33	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.7×15.8 4.17.16	Inc	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 15.23.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.9 8.13.19	C	Good	
P.	D;Skt /H Poetry	23.5×14 5 18 16.11	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	20.8×26 0 39.14.25	C	Good	
P.	D; H. Poetry	12.0×18 3 4.17.17	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	13 7×12.0 14.10.14	C	Old	1 to 11 pages are missing.
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 5.12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 4.13.35	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 3.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 2.16.18	C	Old	

1	2	3	4	5
1897	Ta/42/34	Pratiṣṭhā-tilaka	Narendra Sena	—
1898	Ta/3/52	Pūjā-māhātmya	Vinodilāla	—
1899	Nga/44/2	,, Saṁgraha	—	—
1900	Ja/19	,, ,,	—	—
1901	Ja/29/5	,, Vidhāna	—	—
1902	Nga/46/4	Punyāha-Vācana	—	—
1903	Ja/51/2	,, ,,	—	—
1904	Nga/48/19	,, ,,	—	—
1905	Nga/43/6/14	,, ,,	—	—
1906	Ta/3/1	,, ,,	—	—
1907	Nga/46/11/1	,, ,,	—	—
1908	Nga/44/5	Puṣpānjali Pūjā	Lalitakīrti	—

(Pūjā-Pāṭha-Vidhāna)

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	32.3×19.0 15.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 2.12.31	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18 5×13.5 102.13.26	Inc	Old	The Mss. is not in order.
P.	D; H. Poetry	23.7×15.0 27.20.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 119.13 13	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	36.0×19 0 5.12 44	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×20 1 4.13 34	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	16.8×14.0 16.10.15	C	Old	
P.	D; Skt. Prose/ Poetry	17.3×13 0 5.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	21.0×10.9 16.8.18	C	Good 1866 V. S.	
P.	D; Skt. Prose	36.4×19.0 1.12.39	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.5×15.5 3.12.26	C	Good	

1	2	3	4	5
1909	Ja/34	Ratnatraya-Pūjā	Dyānatarāya	—
1910	Ta/42/62	,, ,,	,,	—
1911	Ta/42/12	,, ,,	—	—
1912	Ta/3/31	,, ,,	Dyānatarāya	—
1913	Nga/41/Kha	,, ,,	—	—
1914	Nga/47/4/27	,, ,,	Dyānatarāya	—
1915	Ta/14/9	,, ,,	Narendra Sena	—
1916	Ta/38/2	,, Jayamālā	—	—
1917	Ja/34/3	Ravivrata-Udyāpana	Viśvabhūṣana	—
1918	Nga/47/4/1	,, Pūjā	—	—
1919	Ta/42/33	,, ,,	—	—
1920	Nga/48/10	Ṛṣi-maṇḍala Pūjā	--	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 3.15.15	C	–	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 4.12.31	C	Good	
P.	D;Skt /H. Poetry	14.5×11.0 5.13.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 6×18 0 3 16.18	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 9.1 .15	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×12.5 6.8.13	Inc	Old	
P.	D; Skt. Poetry	19.0×14.9 11.17.16	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	20.6×18.0 4.18.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	12.0×16 5 7 13 14	C	Old 1818 V. S.	Hemarāja seems to be the copier of this Mss.

1	2	3	4	5
1921	Nga/47/3	Ṛṣi-maṅdala Pūjā	—	—
1922	Ta/5/5	,, ,,	—	—
1923	Nga/13/1/2	,, ,,	—	—
1924	Nga/22	Sahasranāma ,,	Sikhara-Caṅda	—
1925	Ja/51/1	Sakalī-Karaṇa	—	—
1926	Ta/16/2	,, ,, Vidhi	—	—
1927	Ta/16/5	,, ,, ,,	—	—
1928	Nga/44/6	,, ,, ,,	—	—
1929	Nga/38/15	Samādhi-maraṇa	Dyānatarāya	—
1930	Ja/17	Sāmāyika Pāṭhā	Jayacanda	—
1931	Nga/36/3	,, Vacaṅikā	,,	—
1932	Ta/6/20	Samavaśarṇa	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	20.0×16.0 25.13.20	C	Good 1956 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 18.25.20	C	Good	There are four pages blank.
P.	D; H. Poetry	24.4×18.5 25.21.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	27.0×17.6 8.14.35	C	Good 1942 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	32.3×20.1 2.13.34	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	15.5×9.5 18.6.18	Inc	Old	Last pages are missing.
P.	D; Skt. Prose	15.5×9.5 22.9.25	C	Old 1921 V. S.	
P	D; Skt Poetry/ Prose	20.0×16.0 9.13.14	C	Good 1955 V. S.	
P.	D; H. Poetry	15.7×9.0 3.9.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.5×11.0 59.9.29	C	Good	
P	D; H. Poetry	20.0×12.0 76.15.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.2×14.7 1.13.18	Inc	Old	Closing pages are missing.

1	2	3	4	5
1933	Nga/31/2/4	Samavasaraṇa	—	
1934	Ta/39/21	Sammedācala Pūjā	—	—
1935	Ta/42/41	Sammeda-Śikhara Pūjā	Rāmcandra	—
1936	Nga/33/6	,, ,, ,,	—	—
19,7	Ja/33/6	,, ,, ,,	—	—
1938	Ta/3/14	,, ,, ,, Vidhāna	Gangādāsa	—
1939	Nga/47/8/10	,, ,, Pūjā	—	—
1940	Nga/47/8/4	,, ,, ,,	—	—
1941	Nga/44/10/24	,, ,, ,,	—	—
1942	Nga/47/8/2	Samuccáya-Caubis-Pūjā	—	—
1943	Ja/56	Śāntinātha-Pūjā	—	—
1944	Nga/46/12/3	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	12 3×16.3 14 13.14	C	Good 1974 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 2 24.18	C	Old 1819 V. S.	
P.	D; H. Poetry	32.3×19 0 3.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	23.9×13.3 9.18.12	C	Good	
P.	D; H. Poetry	19.0×14.9 24 12 17	C	Old 1920 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	22 5×15.0 8.12.36	C	Good	
P	D; H. Poetry	20 8×16 3 16.15 17	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 21 15.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 5.13.22	C	Old	
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 4.15.18	C	Old	
P	D; H. Poetry	28.8×15.0 9.22.20	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×13.0 5.18.13	C	Old	

1	2	3	4	5
1945	Nga/47/4/39	Śānti-pāṭhā	—	—
1946	Ta/3/24	,, ,,	—	—
1947	Nga/48/23/4	,, ,,	—	—
1948	Ta/42/4	,, ,,	—	—
1949	Nga/43/6/18	Śānti-Cakra-pūjā	—	—
1950	Nga/43/4/1	Śāntidhārā	—	—
1951	Ta/42/88	,,	—	—
1952	Nga/46/11/2	,,	—	—
1953	Ta/42/27	Saptarṣi-pūjā	—	—
1954	Ta/14/41	,, ,,	—	—
1955	Ta/41	,, ,,	—	—
1956	Nga/26/2/34	Saraswati-pūjā	Brahma Jinadāsa	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. Skt. Poetry	20.6×18.0 3.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.5×15.0 1.12.00	C	—	
P.	D; Skt Poetry	16.8×12 8 3.11.12	C	Old	
P.	D; Skt, Poetry	32 3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	17.3×13.0 7.13.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry/ Prose	16 3×14.0 3.11.20	Inc	Old	Last page is missing.
P.	D; Skt. poetry/ Prose	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt Prose	36.4×19.0 2 12.39	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19 0 3.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 3.12.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	12.5×8.6 5.9.19	Inc	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	30.3×17.5 4.16.16	C	Good	

1	2	3	4	5
1957	Ta/42/19	Śāstra-pūjā	Dyānatarāya	—
1958	Ta/39/19	,, ,,	Malayukīrti	—
1959	Nga/41/2/6	,, ,,	—	—
1960	Nga/47/4/36	,, ,,	—	—
1961	Ta/14/29	,, ,,	—	—
1962	Nga/14/8	,, ,,	—	—
1963	Ta/3/20	,, Jayamālā	—	—
1964	Nga/47/8/12	Satrunjayagiri-pūjā	Viśvabhūṣaṇa	—
1965	Nga/14/6	Siddha-pūjā	—	—
1966	Nga/44/10/17	,, ,,	—	—
1967	Ta/35/3	,, ,,	—	—
1968	Ta/14/6	,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; Skt, Poetry	20.0×12.0 2.24.17	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 7.9.17	C	Good	
P.	D;Skt./H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 5.12.13	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20 8×26 0 4.14.25	C	Good	
P.	D; Skt Poetry	22.5×15.0 2.12 33	C	Good	
P,	D; Skt. Poetry	20.8×16 3 16.16.15	C	Old	
P	D; Skt. Poetry	20.8×26 0 6.14.25	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 7.13.22	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 5.10.16	C	—	
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 6.12.15	C	Old	

1	2	3	4	5
1969	Ta/18/4	Siddha-pūjā	—	—
1970	Nga/47/4/19	,, ,,	Khuśālacanda	—
1971	Nga/41/2/3	,, ,,	—	—
1972	Ta/3/26	,, ,,	Khuśālacanda	—
1973	Nga/48/23/3	,, ,,	—	—
1774	Nga/48,18/2	,, ,,	—	—
1975	Nga/48/12/3	,, ,,	—	—
1976	Ta/42/6	,, ,,	—	—
1977	Nga/26/2/9	,, ,,	—	—
1978	Ja/29/3	,, ,,	—	—
1979	Ja/51/6	,, ,,	—	—
1980	Ta/3/13	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D Skt. Poetry	11.0×11.0 4 13.19	C	Old	
P.	D;Skt./H Poetry	20.6×18.0 6.16.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	14.5×11.0 7.9.17	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.0 7.12.32	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	16.8×12.8 6.11.12	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	16.0×10.1 5.9.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	13.5×12 0 6.8.12	C	Good	
P	D; Skt. Poetry	32 3×19 0 1.33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	30.3×17.5 3.16.16	C	Good	
P.	D; H. Poetry	21.1×14.0 3.12.10	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×20.1 1.13.35	C	Good	
P.	D; H. Poetry	22.5×15.5 2.12.36	C	Good	

1	2	3	4	5
1981	Ja/54	Siddha-cakra-pūjā	—	—
1982	Ta/20/2	,, ,,	—	—
1983	Nga/27/4	Siddha-kṣetra-pūjā	—	—
1984	Ta/42/43	,, ,, ,,	—	—
1985	Nga/44/14	Śikhara-vilāsa-pūjā	—	—
1986	Nga/28/3	Sīla-vattīsī	—	—
1987	Nga/47/6	Siṁhasana-pratiṣṭhā	—	—
1988	Nga/41/ṭha	Śītalanātha-pūjā	—	—
1989	Ta/20/3	Snāna-pūjā-vidhi	—	—
1990	Nga/14/9	Solaha-kāraṇa-pūjā	—	—
1991	Ta/35/4	,, ,, ,,	—	—
1992	Ta/38/3	,, ,, ,,	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; H. Poetry	18.6×11.4 113.22.22	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H. Poetry	10.9×9.6 40.8.11	Inc	Good	Last pages are missing.
P.	D; Skt. H.	18.5×30.6 6.21.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	32.3×19.0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry/ Prose	15.5×9.5 9.8.26	Inc	Old 1942 V. S.	Opening tweenty pages are missing.
P.	D; App. Poetry	14.6×14.1 7.13.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.7×14.5 20.14.16	C	Old 1955 V. S.	
P.	D; H. Poetry	14.5×11.0 6.13.16	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	10.0×00.0 26.8.12	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 5.14. 5	C	Good	
.	D; Skt. Poetry	15.5×12.6 4.10.15	C	Old	
.	D; Skt. Poetry	14.5×12.5 13.11.18	Inc	Old	Closing is missing.

1	2	3	4	5
1993	Ta/14/7	Solaha-kāraṇa-pūjā	—	—
1994	Nga/44/10/13	,, ,, ,,	—	—
1995	Nga/47/4/22	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
1996	Ta/3/28	,, ,, ,,	—	—
1997	Ta/42/7	Ṣodaśa-kāraṇa ,,	—	—
1998	Ta/39/17	Solaha-kāraṇa ,,	—	—
1999	Ta/42/58	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2000	Nga/29/1	,, ,, ,,	—	—
2001	Ja/44	,, ,, ,,	Dyānatarāya	—
2002	Nga/47/5/3	Sonāgiri-pūjā	—	—
2003	Ta/3/3	Stavana Jayamālā	—	—
2004	Ta/42/93	Swādhyāya-pāṭha	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt. Poetry	15.2×12.8 4.12.16	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	18.5×13.1 6.13.22	C	Good	
P.	D; H. Poetry	20.6×18.0 5.16.18	C	Old	
P.	D;Skt./H. Poetry	22.5×15.0 5.12.31	C	—	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 2 33.37	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	20.0×12.0 3 21.18	Inc	Old	
P.	D; H. Poetry	32 3×19 0 2.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	13.0×19 7 33.15.15	C	Good	
P.	D; H. Poetry	18.0×11.5 4.7.18	C	Good 1965 V. S.	
P.	D; H. Poetry	16.5×16.0 6.12.19	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	22.0×15.0 2.12.30	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	

1	2	3	4	5
2005	Nga/17/1/2	Śyāmala-yakṣa-pūjā	Ajita Dāsa	—
2006	Ta/42/32	Tattvārtha-sutrāṣṭaka-jayamālā	—	—
2007	Ja/9/7	Terahadwipa-pūjā	—	—
2008	Nga/47/8/9	Tina-loka-saṁvandhi-pūjā	—	—
2009	Ta/5/11	Tisa-caubisi ,,	—	—
2010	Ta/5/3	,, ,, ,,	Bhāvaśarmā	—
2011	Ta/5/2	Udyāpana	—	—
2012	Nga/47/5/10	Vardhamāna-pūjā	Vṛndāvana	—
2013	Ja/20	Vartamāna caubisi-pāṭhā	,,	—
2014	Ta/39	,, ,, pūjā	—	—
2015	Ta/24/5	,, jinanāma	—	—
2016	Nga/14/5	Vidyamāna-bisa-tirthaṅkara pūjā	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D. H. Poetry	25.0×15.0 4.19.21	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	32.3×19.0 1.33.37	C	Good	
P.	D; H. Poetry	29.8×15.5 111.14.31	Inc	Old	Closing para is missing.
P.	D; H. Poetry	20.8×16.3 7.15.18	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 5.28.25	C	Good	
P.	D; Skt. Poetry	25.0×15.0 29.25.16	C	Good	
P.	D; Skt. poetry	25.0×15.0 5.28.20	C	Good	The chart of tirthankara is on its last page.
P.	D; Skt Poetry	16.5×16.0 6.12.19	C	Old	
P.	D;H./Skt. Poetry	23.3×19.0 64.18.23	C	Good 1952 V. S.	Published.
P.	D; H. Poetry	22.6×13.8 100.12.36	C	Good 1890 V. S.	Copied by Raghunātha Sharmā.
P.	D; Skt. Poetry	30.2×20.0 16.37.33	C	Old	
P.	D; Skt. Poetry	20.8×26.0 3.14.25	C	Good	

1	2	3	4	5
2017	Nga/26/2/10	Vidyamāna-bīsa-Tīrthaṅkara-pūjā	—	—
2018	Nga/24	,, ,, pūjā vidhāna	Śikharacanda	—
2019	Ta/42/5	,, ,, ,,	—	—
2020	Ta/11/5	Vrata-Vidhāna	—	—

6	7	8	9	10	11
P.	D; Skt./ Pkt. Poetry	30.3 × 17.5 5.16.16	C	Good	
P.	D: H. Poetry	29.0 × 17.0 49.21.16	C	Good 1929 V. S.	
P.	D; Skt. Poetry	32.3 × 19.0 2.33 37	C	Good	
P.	D: H. Poetry	14 5 × 11.7 12.11.22	C	Good	

परिशिष्ट

१- पुराण, चरित, कथा

९९८. अनन्त चौदश-कथा

Opening : श्री जिनवर [illegible], [illegible] अघनीगमो ।
भावे [illegible] प्रनमो पाय, भावे वंदो श्री गुरुराय ॥

Closing : जे कोइ इह व्रत भाव करें, ते नर मुक्तरमण कर धरें ।
श्री भूषन पद अनमो सही, कथा ग्यानसागर मुनि कही॥१६॥

Colophon : इति अनंतव्रत कथा समाप्तम् ।

९९९. अनन्तचौदश-कथा

Opening : देखें, क्र० ९९८ ।

Closing : देखें क्र० ९९८ ।

Colophon : इति श्री अनंत चौदस की कथा समाप्तम् ।

१०००. अनन्तव्रत कथा

Opening : अनंत देव वंदो सदा, मन्में कर बहु भाव ।
सुर असुर सेवत सदा, होइ मुकति परभाव ॥१॥

Closing : तब इह कथा करी चित लाइ, तैसी शास्त्र में करी बनाइ ।
विध पूरब [illegible] जो कोइ, ताको मुक्ति निहचै करि होइ ॥३५॥

Colophon : इति अनंतव्रत कथा ।

१००१. अनन्तनाथ कथा

Opening : वृषभ आदि चौबीस जिन, नमूं ताह सिरनाय ।
दूजे श्री गुरु [illegible] नमूं, तीजी सारद माय ॥

Closing : [illegible] नागपुर [illegible] जु सोय ।
पढ़ै पढ़ावै मनधरै ताकूं सुमकत होय ॥६६॥

Colophon : इति श्री अनंत चौदस की कथा समाप्तम् ।

१००२. अष्टान्हिका कथा

Opening : श्री जिन सारद गणधरपाय, ... ।
व्रत अष्टान्हिका कथा विचार, भाषूं आगमनैं अनुसार ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नरनारी करैं, ते भवसागर से तरैं ।
श्री भूषण गुरुपद आधार, ब्रह्म ज्ञानसागर कहै इह सार ॥४३॥

Colophon : इति श्री अठाई व्रत कथा सम्पूर्णम् ।

१००३. अष्टान्हिका कथा

Opening : यादव वंसि नेमकुमार, भाव धरि वंदौ भवतार ।
कहो अष्टान्हिका सार ॥१॥

Closing : तस दिक्षित बोले ब्रह्मचारी हरषनिधि शिक्षामण सारी ।
भणो सुणो नरनारी ॥१६॥

Colophon : इति नंदीश्वर व्रत कथा संपूर्णम् ।

१००४. अठाईकथा

Opening : पंचपरमेष्टी चरन कूं धारो निस दिन ध्यान ।
सो मेरी रक्षा करो जातैं होय कल्यान ॥

Closing : श्रावग धर्म सुजान, वतन कालपुर जानियो
भैंरो कही बखान, भव्य जन सुनियैं चित्त दे ॥७३॥

Colophon : इति श्री भैंरों जी कृत अठाई रासा समाप्तम् ।

१००५. आदित्यवार-कथा

Opening : रिखहणाह प्रणमौं जिनंद जा प्रसाद मन होय आनंद,
प्रणमौं अजित प्रणासै पाप दुख दालिद भव हरै संताप ॥

Closing : कर्म्म छिप्यो कारण मत भई तब यह धर्मकथा मन ठई ।
मनधर भाव सुनै जो कोय सो नर स्वर्ग देवता होय ॥

Colophon : इति श्री आदित्यवार कथा जी समाप्तम् ।

१००६. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, १००५ ।

Closing : कमक्षय कारण इहु मति भई तब या धर्म कथा भरनई ।
मूर्ति धरि भाव सुर्णे जो कोइ सो नर स्वर्ग देवता होई ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ गुण-महिमा युक्त रविवार व्रत कथा संपूर्णम् ।

१००७. आदित्यवार-कथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेस । प्रणमौं भव्यपयोज दिनेस ।।

Closing : यह व्रत जो नरनारी करै, सो बहु नहि दुरगति परै ।
भाव सहित सुरनरसुख लहै, बार बार जिन जी यों कहै ।।२५

Colophon : इति श्री रविव्रत कथा समाप्ता ।

१००८. आदित्यवार-कथा

Opening : देखें, क० १००७ ।

Closing : देखें, क० १००७ ।

Colophon : इति श्री रवि कथा जी लघु समाप्तम् ।

१००९. आदित्यवार-कथा

Opening : प्रथम सुमिरि जिन चौबीस, चौदह सै बैपन जु मुनीस ।
सुमिरी सारद भक्ति अनंत, गुरु देवेन्द्र जु कीर्ति महंत।।१।।

Closing : रविव्रत तेज प्रताप थई लक्ष्मी फिरी आई
कृपा करि धरनेंद्र और पद्मावती माई ।।

जहाँ ... तहाँ रिद्धि सब छोर जु पाई
मिले कुटुम परिवार भले सज्जन मन भाई।
पढ़े सुने जे प्रात उठि नरनारी जु सुबुद्धि,
तिनको धरनेंद्र पद्मावति देहि सर्वथा सिद्धि ॥

Colophon : इति श्री रविवार कथा सम्पूर्णम् ।

१०१०. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : पडिवा प्रथम कला घट जागी, परम प्रतीत रीत रस पागी।
प्रतिपदा परम प्रीत उपजावै, वह प्रतिपदा नाम कहावै ॥

Closing : काष्टासंघ सरोज प्रकाश, श्री भूषण गुरु धर्म निवास।
तास शिष्य बोलै चंग, ब्रह्म ज्ञानसागर मन रंग ॥

Colophon : इति आकाश पंचमी कथा

१०११. आकाश-पंचमी-कथा

Opening : श्री जिनसासन पय अनुसरूं गणधर निज वंदिन करूं।
साध संत प्रणमूं पाय, जे हुयी कथा अनोपम थाय ॥१॥

Closing : देखे—क्र० १०१० ।

Colophon : इति श्री आकाश पंचमी व्रतकथा समाप्तम् ।

१०१२. भविष्यदत्त-कथा

Opening : स्वामी चंद्रप्रभु जिननाथ, नमोचरण धरि मस्तक हाथ।
लांछन धर्यो चंद्रमा जासु काया काल अधिक प्रगासु ॥१॥

Closing : यह कथा संपूरन भई, सकल भव्य को मंगल भई।
पढ़े सुने जो करे बखाण, सो पावे शिवपुरि पद थाण ॥
॥११६॥

Colophon : इति श्री श्रुतपंचमी कथा भवसुदत्त चरित्र संपूर्णम्। संवत् १८४८ वर्ष मिति पौस बदि ६ श्री पार्श्वचंद्र सूरि गछो श्री गुरुजी श्री १०८ श्री चंद्रभाण जी तत् शिष्य लिख्यतु ज्ञासिरदारमल्लेन श्री मफातपुरनगरमध्ये चतुर्मासकृतम्।

१०१३. चंदकथा

Opening : सिद्धि सुबुद्धि दातार तुव गौरीनंदकुमार।
चंदकथा आरम्भ कीयो सुमति दियो अपार ॥

Closing : उबुधरेखा अचपला जोग, तीजो और परमला भोग।
.... आपणो राज ॥

Colophon : इति चंदकथा सपूर्णम्।

१०१४. चतुर्दशीकथा

Opening : देखे क्र० ६६८।

Closing : देखें--क्र० ६६८।

Colophon : श्री चतुर्दशी व्रत कथा समाप्तम्।

१०१५. चतुर्वचनोच्चारिणी कथा

Opening : विक्रमादित्योरूप. परदेशि द्विजाश्चतुर्वचनानि।
वाचयति यस्तस्मात् हारयित्वा तमेव परिणमति ॥

Closing : चतुर्वचनां महोत्सवेन परिणीय स्वनगरे समानीयं भोगा-
नुभवनं कुर्वन् शर्म्मणाकालं महाश्रेयो युक्तो अभूत्।

Colophon : इति चउबोली कथा सपूर्णम्।

१०१६. दानकथा

Opening : देव नमौं अरहंत सदा, अरु सिद्ध समूहन को चितलाई,
सूरि अचारज की प्रनमौं, प्रणामौं जु उपाध्याय के नित पाई।

साधु नमों निरग्रन्थ मुनी गुरु, परम दयाल महा सुखदाई,
नि पंच गुरु एह मैं सुनमूं इनकी सुमरै भवताप नसाई
॥१॥

Closing : दान कथा पूरण भई, पढ़ै सुनें सब कोय।
दुःख दरिद्र नासै सबै, तुरत महासुख होय ॥७६॥

Colophon : इति श्रीदानकथा भारामल्लकृत संपूर्णम्।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २६।

१०१७. दशलाक्षणी कथा

Opening : धर्म जु दश लांछन कहै तिनको करूं बखान।
जो जिय तिहुको चित्त धरै ताको होय कल्यान ।।१॥

Closing : इह विध व्रत नर जो करै, पावै शिव पद थान।
बूडे दुख संसार के, भैरौं कहै बखान।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।

१०१८. दशलाक्षणी कथा

Opening : ऋषभनाथ प्रणमूं सदा गुरु गनधर के पाय।
तीन भवन विख्यात है सब प्रानी सुखदाय ॥१॥

Closing : सत्रह सै इक्यावनवा भादव मास सुखसार।
शुक्ल तिथ त्रयोदशी सुभ रविवार विचार ॥६१॥
भूला चूका होय जो लीजो सुकवि सुधार।
मोह दोस दीजो नहीं करी जु भव हितकार ॥६२॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा समाप्तम्।
देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, पृ० २८।

१०१९. दशलाक्षणी कथा

Opening : प्रथम नमन जिनवरकौं करूं, सादर गणधर पद अनुसरूं।
दसलाक्षिण व्रतकथा विचार, भाखूं जिन आगम अनुसार।१॥

Closing : भट्टारक श्री भूषणधीर, सकलशास्त्र पूर्ण गम्भीर ।
तस पद प्रणमी बोलैसार, ब्रह्म ज्ञानसागर सुविचार ।।५५।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी कथा सम्पूर्णम् ।

१०२०. दशलाक्षणी कथा

Opening : देखें—क० १०१६ ।

Closing : देखें—क० १०१६ ।

Colophon : इति श्रीदसलाक्षणी व्रत कथा संपूर्णम् ।

१०२१. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : देखें—क० १०१६ ।

Closing : देखें—क० १०१६ ।

Colophon : इति दशलाक्षणी व्रत कथा ।

१०२२. दशलाक्षणीव्रत कथा

Opening : — ....
पंचामृत अभिषेक उदार ।
जिन चोविस सतरमो भडार,
अष्ट विध पूजा करो परकार ।।१७।

Closing : देखें—क० १०१६ ।

Clolophon : इति श्री दसलाक्षीणी व्रत कथा समाप्तम् ।

१०२३. दर्शनकथा

Opening : नमों देव अरहंत पद, नमों सारदामाय ।
नमौं गुरु निरग्रन्थ जे, अघहर मंगल दाय ।।

Closing : दरसन कर पूरन भयो मनोवति कौं सुखदाय ।
तास कथा फल पायकै शुभ गति लई सिवदाय ।।५७०।।

Colophon : इति श्री दरसन कथा सम्पूर्णम् ।

विशेष— २०१६ पर उल्लिखित पद के Author भारामल्ल हैं। लगता है कि पद्य इन्हीं से संयुक्त है अतः इसका भी लेखक भारामल्ल को ही होना चाहिए है।

१०२४. धर्म-पापबुद्धि कथा

Opening : अथो यानगरे राजा सिंहसेनो राज्यं करोति ।
तन्मत्रीबुद्धसेनो धर्म्मन्याय मत्र करोति ।
राजा दुराचारासत्यपरधनदारहरणलक्षणान्याय विदधाति ।

Closing : ... ... तपो विधाय यथा स्व स्वर्गेषु जग्मु ।
सदैव धर्मबुद्धिः करणीया । सर्वलोकस्वायमुपदेशः ।

Colophon : इति धर्मपापयुक्तयोः कथा संपूर्णम् ।

१०२५. धूपदशमी कथा

Opening : पंच परम गुरु बंदन करू, ताकरि मम अघ सब हरू ।

Closing : श्रुतसागर ब्रह्मचार को ले पूरव अनुसार ।
भाषामार बनायके सुखत खुशियाल अपार ॥१४३॥

Colophon : इति संपूर्णम् । संवत् १६४८ भादवा सुदी २ लिखाइतं
षेमराज जी लिखितं मदनगोपाल ने कलकत्ता जैन मंदिर मध्ये ।

१०२६. दुधारसव्रत-कथा

Opening : प्रथम नमौं श्रीवीरजिनंद वंदौं सदगुरु पद अरविंद ।
जासु प्रसाद कहूं सुभकथा, गौतम गणधर भाषी यथा ॥

Closing : श्रेणक आगल गौतम स्वामि एह कथा भाषी अभिराम ।
ए दुधारस व्रतनी कथा चंद भनै मैं भाषी तथा ॥४३॥

Colophon : इति दुधारस जी की कथा समाप्तम् ।

१०२७. हरिवंशपुराण

Opening : सिद्धं संपूर्ण तत्वार्थं सिद्धे कारणमुत्तमम् ॥
प्रशस्त दर्शनज्ञानं चरित्रप्रतिपादनम् ॥

Closing : संकोडी कर चरणे उग्रग्रीवा अहो मुहादि ॥
द्वीजं सुहपावै लहो तं सुह पावेहि तुह्य हु जनए ॥

Colophon : इतिश्री हरीवंस पुराण की भाषा चौपाई वंध संपूर्णम् ।
देखें, जे० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४६ ।

१०२८. हरिवंशपुराण

Opening : देखें, क्र० १०२७ ।

Closing : ······· और अरिष्ठा पांचवी नरक उस विषे इंद्रन की
भूमि की मुटाई कोस ३ । और श्रेणीवद्धों की कोस ४ ।
और प्रकीर्णको की कोस सात ७॥ २१॥

Colophon : अनुपलब्ध

१०२९. हरिवंशपुराण

Opening : महाधीर बहुश्रुत विराजै श्रुतकेवली जिनश्रुतका व्याख्यान करै
और वा मडप के समाप चार मडप ·· ·· ।

Closing : ··· देवते मनुष्य होय निरजन पद पावैगी सातवी
पटरानी गौरी · ··· ·· ।

Colophon : अनुपलब्ध

१०३०. जम्बूचरित्र

Opening : श्री अरिहंत नमो सदा, अरी न आवै पास ।
अष्टकर्म दूरे टले आठो गुन परकास ॥

Closing : उपर रचा मुनिराज ते, श्री सीमधर देव ।
भाव भगति चित लायके सब जन करते सेव ।५२३॥

Colophon : इति जंबूचारित्र जी सम्पूर्णम् । लिखित राज्य कुमारचंद आरामपुर नगरे स्वगृहं संवत् १६३३ मिति वैशाख शुक्ल सप्तम्यां ७ तिथौ रविवासरे निजपठनार्थं पुन: भव्यजीव पठनार्थम् । शुभमस्तु कल्याणमस्तु ।

१०३१. लब्धिविधानकथा

Opening : प्रथम नमौ श्री जिनवर पाय दूजै प्रणमौं सारदमाय ।
लब्धि विधान तणी सुभ कथा भाखूं जिन आगम छै
यथा ।१॥

Closing : श्री भूषण गणनायक धीर ·· ··· होसी सीव ॥५६

Colophon : इति श्री लब्धि विधान कथा समाप्तम् ।

१०३२. महावीर-पुराण

Opening : इण विधि कहि ती जंबु कुमार मुनि सो कहसी निरधार ।
मागी के षिजत् इकनारी मरत् चाहिलयौ ततकार ।२१।

Closing : यातै श्री जिनराज के चरण कमल सिरनाय,
राखौ भवि उरक विरै सुरग मुक्ति पदपाय ॥६३॥

Colophon : इत्यार्षे त्रिषष्ठिलक्षणमहापुराणसंग्रहे भगवद्गुणभद्राचार्यप्रणीतानुसारेण श्रीउत्तरपुराणस्य भाषाया श्रीवर्द्धमानपुराण परिसमाप्तम् । इति श्री उत्तरपुराण समाप्तम् । शुभ सम्वत् १८६६ शाके १७३४ मासोत्तमेमासे शुक्लेपक्षे त्रयोदश्या बुधवासरे पुस्तकमिदं पूर्णम् । रघुनाथ समंगे लेखि पट्टनपुरगायघाट मध्ये निजमति । लेखक पाठकयो मंगलमस्तु ।

१०३३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समे जो समुद्र विजै छारि कामधनेम को व्याह रचो है,
गावत मंगलाचार वधु कुल में सबके जो उछाह मचो है,

तेल चढावन को जुवती अपने-अपने कर थाल सचो है,
नेग करै सब ब्याहन को घर मडप चित्र विचित्र खिचो
है ।१।।

Closing : नेम कुमार ने जो गली थी दिन छपन लो छदमस्त रहो है,
केवल ज्ञान भएव प्रभु को तब आठवी भूल महानुमहो है,
सात सै वर्ष विहार कीदो उपदेश ते धर्म महानुमहो है,
निर्वाण गये मुनि पांच सै छपन लाल विनोदिने सग
गही है ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ जी काव्याहुला संपूर्णम् ।

१०३४. निःकांक्षित्-गुण कथा

Opening : प्रनमूं आदि जिनेश को फुन गुरु गौतमराय ।
सारदमाय प्रसादतै करूं कथा मन लाय ।।१।।

Closing : निः कांक्षित गुन की कथा भैया कही बखान ।
मो निहर्चै कर पाल है, पावै शिव पद थान ।।

Colophon इति नि कांक्षितगुन कथा समाप्तम् ।७६।।

१०३५. निशल्याष्टमी कथा

Opening देखे, क्र० १०३६ ।

Closing : काष्टासंघ कलोधरचंद, श्री भूषण गुरु परमानन्द ।
तस पद पंकज मधु करतार, ज्ञानसमुद्र कथा कहै
बिचार ।।६३।।

Colophon : इति निशल्याष्टमी कथा ।

विशेष -- इसमे निर्दु ख सप्तमी कथा भी है ।

१०३६ निर्दोषसप्तमी कथा

Opening : श्री जिनचरण कमल अनुसरू, सारद निज गुरु मनमेधरू ।
निरदोष सप्तमीकी कथा, बोलो जिनआगम छै यथा ।१।।

Closing : ए व्रत जे नरनारी करैं, ते नर भवसागर उत्तरैं ।
अजर अमर पद अविचल लहै, ब्रह्मज्ञानसागर इमि कहै।।४१।

Colophon : इति श्री निरदोष सप्तमी कथा समाप्तम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ७८ ।

१०३७. पंचमी कथा

Opening : श्री श्री जिनराज के, चरण कमल गुणहीर ।
भव सागर तारण तरण, शरण हरण पर पीर ।।१।।

Closing : हस्तिकनिपुर में यह रची, श्री सुरेन्द्रभूषण रची ।
यह विधि अनुपाले जो कोई, सो नरनारी अमर
पद होई ।।८०।।

Colophon : इति पचमी कथा समाप्ता ।

१०३८. पार्श्वपुराण

Opening : मोह महातम दलन दिन तप लक्ष्मी भरतार,
तैं पारस परमेस हो उ सुमति दातार ।।१।।

Closing : संवत् सत्रह सै समै और नवासो लीय ।
सुदि असाढ तिथि पंचमी ग्रन्थ समापत कीय ।।

Colophon इति श्री पार्श्वनाथ पुराण भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री पार्श्वपुराण जी बाबू महावीर प्रसाद मनोहरदास के
वास्ते लेखक लाला चंदुलाल लिखा सन् १२६३ साल सलोने
के रोज पूरा हुआ ।
देखें जै० सि० भ० ग्र० क० ६१ ।

१०३९. पार्श्वपुराण

Opening : बीज राखि फलभोगवै जो किसान जगमाहि ।
त्यों चक्री नृप सुख करै धर्म विसारै नाहि ।।

Closing : सोलह कारण भावना परमपुण्य को खेत।
भिन्न असो लहो तीर्थङ्कर पद हेत ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०४०. रत्नत्रयकथा

Opening : श्री जिन चरण कमल नमूं, सारद प्रणमी अध निगमूं,
गौतम केरा प्रणमुं पाय, जेहथी बहुविधि मगल थाय ।।१।।

Closing : यामै मणि माणिक्य भंडार पद-पद मंगल जयजयकार।
श्री भूषणगुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञान बोलै सुबिचार ।।४५।।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा सम्पूर्णम् ।

देखें, जैं० सि० भ० ग्र० I. क्र० १०३।२

१०४१. रत्नत्रयकथा

Opening : देखें, क्र० १०४०।

Closing : देखें, क्र० १०४०।

Colophon : इति रत्नत्रय कथा ।

१०४२. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, क्र० १०४०।

Closing : देखें, क्र० १०४०।

Colophon : इति श्री रत्नत्रयकथा संपूर्णम् ।

१०४३. रत्नत्रय-व्रत-कथा

Opening : देखें, क्र० १०४०।

Closing : कुजवरनि स — — होए।
व्रत दुनीया ले नर सोऐ।
पुण्या तणो संच भंडार
पर भवं पाव मोक्षि उवार ॥२७॥

Colophon : नही है।

१०४४. रविव्रतकथा

Opening : श्री सुखदायक पास जिनेश, प्रणमौ भव्य पयोज दिनेश।
सुमरो सारद पद अरविंद, दिनकर वत प्रगटौ मानद ।१।

Closing : करम रेख कारण मति भइ, तव इहु धर्म कथा अठ ठइ।
मनि धरि भाव सुणै जो कोइ, सो नर स्वर्ग देवता
होइ ॥१८८॥

Colophon : इति रविव्रत कथा।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I. क्र० १०५।

१०४५. रविव्रतकथा

Opening : देखें, क्र० १०४४।

Closing : येह व्रत जो नरनारी ··· भानु कीरति मुनिवर यों
कहै ॥२४॥

Colophon : इति रविव्रत कथा संपूर्णम्।

१०४६. रविव्रतकथा

Opening : चौवीसतीर्थंकर जो कु नमस्कार कर मैं रोटतीज कथा व्रत कहिंग है। इह जम्बूद्वीप है तामै भरत क्षेत्र है तामै आर्य खण्ड है, धन्यापुरी नामा नगरी वर्सै है।

Closing : देखें, क्र० १०४५।

Colophon : इति रविव्रत कथा संपूर्णम् ।
विशेष—इसमे रोटरीज व्रत कथा भी सम्मिलित है ।

१०४७. रात्रिभोजन-त्याग-कथा

Opening : समोसरन सोभा सहित, जगत पूज्य जिनराज ।
नमूं त्रिविध भव उदधि कौं त्यारन विरद्य जिहाज ॥१॥

Closing : कथामांहि चउपई - करै कवि बीनती ॥१८॥

Colophon : इति रात्रि भोजन कथा तथा नागसिरी चरित्रनी भोजन त्याग व्रतकथा समाप्तम् । मिति पौह शुक्ल पंदरस १५ । संवत् १६५१ का । शुभं लिख्यतं अमीचद श्रावक जैसवाल पाटम का वासी ।

१०४८. रोहिणी-कथा

Opening : वासपूज्य जिन नत्वा कथा वक्ष्ये जिनागमात् ।
दुर्गं धा च व्रतेनाभूद्रोहिणी पुण्यरोहिणी ॥

Closing : श्रीगौतममुखकथा श्रुत्वा श्रेनिक: सहर्षोग्रहमागता ।
अन्योपि कोपि रोहिणी विधान करोति नारि वा नरो वा सेवविधानं प्राप्नोति ॥

Colophon : इति रोहिणी कथा ।

१०४९. रोहिणी-कथा

Opening : वासुपुज्य जिनराज भवदधि तरण जिहाज सम ।
भव्य लहे सुख साज नाम लेत पातिक हरे ॥

Closing : रोहिनि व्रतु पाले जो कोई, सो नर नारि अमर पद होई ।
मन वच काय सुध जो धरै क्रमने मुक्ति वंधु सुख भरै ॥

Colophon : इति रोहिनी कथा समाप्तम् ।

१०५०. रोहिणी-व्रत-कथा

Opening : वासुपूज्य जिनराज को वदो मन वच काय ।
ता प्रसाद भाषा करौं सुनौ भक्ति चित लाइ ॥

Closing : जो यह व्रत निहचै धरै, करै रोहिणी साय।
निहचै थिर मन जो धरै, तो जीव मुक्ति होय ।।७६।।

Colophon : इति श्री रोहिणीव्रतकथा समाप्तम्।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ११०

१०५१. रोटतीज-कथा

Opening : चौवीसो जिन को नमो श्री गुरु चरण प्रभाव ।।
रोटतीज व्रत की कथा कहौं सहित चित चाव ।।

Closing : गणधर इद्र न करि सके तुम विनती भगवान।
द्यानत प्रीति निहारिके कीजै आपसमान ।।

Colophon ; इति सम्म्पूर्णम्।

१०५२. रोटतीज-कथा

Opening : इह जबू द्वीप हैं तामैं भरत क्षेत्र है, तामैं आर्य खंड है, धन्यपुरी नाम नगरी वसै है।

Closing : और जो कोइ भव्य स्त्री या पुरुष रोटतीज व्रत करैं भलि गति पावै।

Colophon : इति रोटतीज व्रत कथा।

१०५३. रोटतीज-कथा

Opening : देखे, क्र० १०५२।

Closing . खेदे, क्र० १०५२।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्ता।

१०५४. रोटतीज-कथा

देखें, क्र० १०५२।

Closing : देखें, क्र० १०५२।

Colophon : इति रोटतीज कथा समाप्तम् ।

१०५५. सलूनाकथा

Opening : प्रथमहि प्रथम जिनेन्द्र चरण चित लाइए,
प्रथम महाव्रत धर्म सुताहि मनाईए ।
प्रथम महामुनि लेय सुधर्म धुरंधरो,
प्रथमधर्म प्रकासन प्रथम तीर्थंकरो ॥

Closing : मुनि उपसर्ग निवारनी कथा सुनै जो कोय ।
करूणा उपजै चित्त में दिन मंगल होय ॥१८॥

Colophon : इति श्री विनोदीलालकृत श्री सलूना कथा समाप्तम् ।

१०५६. शीलकथा

Opening : पार्सनाथ परमातमा वंदौ जिनपद राइ।
मोही धर्मवाण न करौ कहौ कथा मनलाइ ॥१॥

Closing : सील कथा पूरी भई पढ़ै सुनै नित सोई ।
दुख दरिद्र नासै सबै तुरत महा सुख होई ॥५६॥

Colophon ; इति श्री सील कथा मल्लसेनाचार्यकृत संपूर्णम् ।

१०५७. शीलव्रतकथा

Opening : प्रथमही प्रणमौं श्री जिनदेव — ' जिनराज अनूप ।१।

Closing : जो दखी सोई लिखी सुद्ध असुद्ध न जान ।
पंक्ति अरथ विचारिकै पढ़ियौ सुद्ध सुजान ॥५३॥

Colophon : इति सील कथा संपूर्णम् ।

विशेष—पद भी जो २०१८ पर उल्लिखित है इसी से सम्बन्धित है। अतः इसका भी लेखक भारामल्ल ही होना चाहिए। दोनों ग्रंथों को

पढ़ने से ऐसा लगता है कि पहले कथा वगैरह लिखने के बाद पद लिखने की परिपाटी हो ।

- देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १२८ ।

१०५८. शीलवतीकथा

Opening : जीवितादप्यधिकत्वेन पालितो नियमोऽपुनर्भवाय भवेत् ।

Closing : ततोऽनर्थमूलं तं विप्रं शीलवती सत्कृत्य बहुमानास्पदं-कृतवान् ।

Colophon : इति शीलवती कथा संपूर्णम् ।

१०५९. सोलहकारणकथा

Opening : श्री जिन चौविसौ नमू , सारद प्रणमि अवनितमूं ।
निज गुरु केरा प्रणमूं पाय, सकल संत प्रणमी सुखदाय ।।१।

Closing : यामे सकल भोग संयोग, टलै आपदा रोग वियोग ।
श्री भूषण गुरु पद आधार, ब्रह्मज्ञानसागर कहै सार ।३६।

Colophon : इति श्री सोलहकारण कथा समाप्तम् ।

१०६०. सोलहकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९ ।

Closing : देखें, क्र० १०५९ ।

Colophon : इति सोलहकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६०. शोडशकारणकथा

Opening : देखें, क्र० १०५९ ।

Closing : देखें, क्र० १०५९ ।

Colophon : इति षोडशकारण कथा संपूर्णम् ।

१०६२. श्रावणद्वादशीकथा

Opening : प्रथम नमूं श्री जिनवर पाय, प्रणमूं गणधर सारद माय ।
सद् गुरु पद पंकज मन धरुं, सार कथा बारसनी करूं ।।१।।

Closing : रोग सोग संतापह टलै, मनवांछित फल पूरण मिलै।
श्री भूषण सुत दाए लहै, ब्रह्मज्ञानसागर हम कहै ।।

Colophon : इति श्रवणद्वादशी कथा ।

१०६३. श्रीपालचरित्र

Opening : प्रणम्य सिद्धचक्रं च सद्गुरुं निजमानसे ।
श्रीपालचरित्त वक्ष्ये सुगम शिष्यहेतवे ।।

Closing : जीवराजेन रचितं श्रीपालचरितं शुभम् ।
प्रीतसुन्दरेनाशुलिखित श्री सद्गुरुप्रसादत: ।।

Colophon : इति श्रीपालचरित्रे गद्यबंधे चतुर्थ प्रस्ताव: । शुभं भूयात् ।
सं० १६०५ रा० मि० आसोज शुक्ल त्रयोदशी दिवसे मंगलवारे लिपी
कृतेय ऋषि: श्री विक्रमपुर मध्ये चउमासीस्थिता: ।

१०६४. श्रीपालचरित्र

Opening : श्री अरिहंत अनंतगुण, धरीयैं हिय में ध्यान ।
केवल ग्यान प्रकाश कर दूर हरण अग्यान ।।१।।

Closing : कहै जिनै हरष भविक नर सुण ज्यो नवपद महिमा थुणिज्यो रे ।
गुण पंचासैं ढालें गुणिज्यों निज मति कठिण लूणिज्यो रे ।।

Colophon : इति श्रीपाल महाराजा चोपई समाप्तम् ।

१०६५. सुगंधदशमी-कथा

Opening : श्री जिन शारद मन मैं धरुं सद गुरु नैं नित वंदन करूं ।
साधु सत पद वंदों सदा, कथा कहूं दशमीनी मुदा ॥१॥

Closing : ए व्रत जे नर नारी करैं, ते भवसागर वेगैं तरे ।
छांडै पाप सकल सुख भरैं, ब्रह्मज्ञानसागर उच्चरैं ॥

Colophon : इति सुगंध दशमी कथा ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १४५ ।

१०६६. सुगंधदशमी कथा

Opening : सुगंध दशमी व्रत सुनि कथा, वर्द्धमान प्रकाशी यथा ।
पूरब देश राजग्रह नाम, श्रेणिक राज करे अभिराम ॥१॥

Closing : हमराज वीयन यो कही विश्व भूषण प्रकाशी सही ।
मनवचकाय सुनैं जो कोई, सो नर स्वर्ग अपर पति होई ॥३८॥

Colophon : इति सुगंधदशमी कथा समाप्ता ।

१०६७. सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगंधदशमी कथा जी समाप्तम् ।

१०६८ सुगंधदशमी-कथा

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।

Closing : देखें, क्र० १०६५ ।

Colophon : इति श्री सुगंध दशमी कथा समाप्तम् ।

१०६६. स्वरूपसेनकथा

Opening : कौसांबीवास्तव्यो राजाजयसेनो जयावती प्रियंस्तस्यपुत्र-
द्वयमभूत् । ज्येष्ठो रूपसेनो लघुर्देवसेनः ।

Closing : सूरसेनोपितया सहसंसारिक सुखमनुभूय
प्राते स्वरूपेण स्वपत्न्या सहितो दीक्षाम् ॥
आदायालोचितदु खकर्मा ..... आससाद ॥

Colophon : इति मिश्रे स्वरूपसूरसेन कथा संपूर्णम् ।

१०७०. वीरजिणंद

Opening : वीर जिनंद समोस राजी वंद मेघकुमार,
सुण देसण वइरागीउ जी इह संसार असार रि माई उन
मति देह मुझ आज ॥१॥

Closing : तप तन सो शीतहागइ जी
पहुतो अनुत्र विमाण वीर चरण नित सेवसइ जी
ते पामसि भव पार हु स्वामी अम्ह० ॥

Colophon : इति वीर जिणंद समाप्तः ।

१०७१. विष्णुकुमारकथा

Opening : देखें– क्र० १०५५ ।

Closing : विष्णु कुमार मुनिंद्र की करनी कथा रसाल सुनो ।
भव्य जन भाव सो कही विनोदीलाल मुनि उपसर्ग निवा-
रनी कथा सुनो ।
जो कोई करूना उपजै चित मैं दिन दिन मंगल होय ।

Colophon : इति श्री विष्णु कुमार की कथा सम्पूर्ण ।
देखें, जै० सि भ० ग्र० I, क्र० १५१ ।

१०७२. अरिहंतकेवली

Opening : श्रीमद्वीरजिनं नत्वा वृद्धमानं महोत्सवम् ।।१।।

Closing : वैरिणां वैरमुक्तश्च मित्रबांधवहेतवे ।
धर्मवृद्धिर्भवेस्तुभ्यं सर्वथानात्रसंशयः ।।३ ।

Colophon : इति तकारादि चतुर्थप्रकरणम् ।
इति अरहंत केवली संपूर्णम् । संवत् १६१७ मिति चैत्रकृष्णा १० । बुधवासरे लिप्पीकृतं ब्राह्मण रामगोपाल बासी मौजपुर कालकलेपुर मध्ये लिखी । शुभं भूयात् ।

१०७३. आराधनासार

Opening : विमलयरगुणसमद्धं सिद्धं सुरसेण वंदियं ।
सिरसा णमिऊण महावीरं वोच्छं आराधनासारं

Closing : अमुणियतच्चेणइमं भणियं जं पि देवसेणेण ।
सोहं तं चमुतिदा अथिऊ जंइ पवयण विरुद्धं ।।

Colophon : इति आराधनासारसमाप्तः ।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० १६५ ।

१०७४. आराधना प्रतिबोध

Opening : श्री जिनवर वाणी नमेवि गुरुनिर्ग्रंथ पाय प्रणमेवि ।
कहुं आराधना सुविचार संक्षेपिसारो उद्धार ।।१।।

Closing : जे सुणें नरनारी जे जाइ भवनैपार ।
श्री दिगम्बर इति कह्यो विचार आराधना प्रतिवोधसार ।।

Colophon : इति आराधनाप्रतिवोध संपूर्णः ।

१०७५. अर्थप्रकाशिका

Opening : बहुरि ज्ञानकूं अल्पाक्षर करि प्रधान
कह्या तोहू, अल्पाक्षर तैं पूज्यपणां प्रधान है। अर दर्शन पूज्य है।

Closing : बरतो भव्यनि उर विषैं स्यादद्वाद उज्जास।
यातैं निज परतत्त्व सरिस होय जु अर्थ प्रकाश ।।

Colophon : इति श्री तत्त्वार्थ सूत्र की अर्थप्रकाशिका नाम वचनिका समाप्त।
शुभं भवतु। कल्याणमस्तु।

१०७६. आत्मानुशासन

Opening : वीर प्रणम्य भववारिनिधिप्रपोतमुद्योतिताऽखिलपदार्थमनल्पपुण्यम्,
निर्वाणमार्गमऽनवद्यगुणप्रवधं आत्मानुशासनमहं प्रवरं प्रवक्ष्ये ।।

Closing : श्री नाभेयोजिनोभूयाद् भूयसे श्रेय सेसव:।
जगद्ज्ञान जलेयस्यद भाति कमलाकृति ।।

Colophon : इनि श्री गुणभद्राचार्य कृत आत्मानुशासन काव्य प्रवंध संपूर्णम्।
लिखितं पंडित परमानदेन ठकैत नामनगरे, सवत् १९२८
का मार्गसिरमासे कृष्णपक्षे तिथौ दसम्यां गुरुवासरे उपाध्याय
विद्व वरिष्ठ श्री १०८ भट्टारक राजेन्द्रकीर्तिजित् पठनार्थं
परमानंद शुभंभूयात्। श्रीरस्तु:।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १७२।

१०७७. बनारसी विलास

Opening : प्रथम सहस्रनाम सिन्दूर प्रकरधाम बावनो सवैया वेद निरनै
पंचासिका।
त्रेसठि सिला का मारग ना करम की प्रकृति कल्याण मंदिर
पारनंदन मुक्तावलि का।

पैडीकर्म्म छतीसी पिब्बइ ध्यान बतीसी आध्यात्म बतीसी पचीसीग्यान रासिका ।
सिव की पचीसी भवसिन्धु की चतुरदसी अध्यात्म फागति षोडस निवासिका ।.१॥

Closing , सत्रह सै एकोतरे समै वैत सितपाख ।
दुतिया सो पूरन भई यह बनारसी भाष ॥

Colopohn : इति बनारसी बिलास संपूर्णम् । शुभंभूयात् सवत् १८६० माघौसमे मासभाद्रेमासे शुक्लेपक्षे एकादश्या सोमवासरे । पुस्तकमिदं रघुनाथ शर्मणे लेखि । पट्टनपुर मध्ये आलमगज निवास । पुस्तक सख्या श्लोक अनुष्टुप तीनहजार छसै (३६००) लिखि आरे मे बाबू परमेष्ठी सहाय का ।

१०७८. बारह भावना

Opening : पंच परम पद बंद हूँ, मन वच सीसनिवाय ।
भावै बारह भावना, निज आतम लव लाय ।।

Closing . भूला चूका होय जो, भव्य जन लेहु सुधार ।
मोह दोस दीजै नही, भैरो कहै बिचार ।।
श्री जिन धरम न विसारियै ॥

Colophon : इति श्री बारह भावना जी समाप्तम् ।

१०७६. बारह भावना

Opening : राजा राणा क्षत्रपति हाथिन के असवार ।
मरना सबको एकदिन अपनी अपनी बार ॥१॥

Closing जांचे सुरतरु देय सुख चिंतन चिंता रैन ।
बिन जाचे बिन चिंतये धर्म सकल सुख देन ॥

Colophon . इति बारह भावना सम्पूर्णम् ।

१०८०. बारह भावना

Opening : आदिदेव जिनपें नमों, वंदो गुरु के पय ।
बरनौं बारह भावना सुनऊ चतुर चित लाय ॥१॥

Closing : जहाँ संवर तहाँ निर्जरा, जहाँ आश्रव तहाँ बंध ।
इतनी कला विवेक की और बात संबंध ॥१५॥

Colophon : इति ।

१०८१. बीस तीर्थंकर नामावली

अक्षरमात्र पदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविवर्जितरेफम् ।
साधुभिरत्र मम क्षन्तव्य को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥

Closing : नियमप्रभ जी, वीरसेन जी, महाभद्र जी, जयदेव जी, अजीत-वीर्य जी ॥२०॥

Colophon : इति श्री वीसतीर्थंकर के नाम संपूरण ।

विशेष — इसी में भविष्यत चौवीसी भी अन्तर्भूत है ।

१०८२. ब्रह्म विलास

Opening : प्रथम प्रणमि अरिहंत बहुरि श्री सिद्ध नमिज्जै ।
आचारिज उवज्झाय तासु पदवंदन किज्जै ।
साधु सकल गुणवंत संतमुद्रा लखि बंदो ।
श्रावक प्रतिमा धरन बरन नमि पाप निकंदो ।
सम्यक्त्वंत स्वसुभावधर जीव जगत महिहों ।
जित तित नित त्रिकाल बंदत भविक भाव सहित सिर नाईनित ॥१॥

Closing : बहुत बात कहियै कहायनी यहै जीव त्रिभुवन कौ धनी ।
प्रगट होइ जब केवल ग्यान शुद्ध सरूप वहै भगवान ॥

Colophon : इति श्री भैयाभगोतीदास कृत ब्रह्मविलास सम्पूर्णम् । मार्गा-

मासे उत्तमफाल्गुनमासे तिथौ ६ गुरुवारक दिन पुस्तकसमाप्तम् । लिख्यत काशीमध्ये राजमंदिरसीतला घाट देवि क दरवाजा । लिख्यत गौड़ ब्राह्मण शिवलालक हस्त लिखत जोसीवर वर जीवण । पुस्तक लाला शंकरलाल जी लिखाईत पठनार्थं उपकारार्थं श्री भगवान समर्पणमस्तु । ग्रंथ संख्या ४८०० ।

मंगलं लेखकाना च पाठकानां च मगलम् ।
मंगलं सर्वलोकानां भूमिपतिर्मंगलम् ॥

देखें—(१) जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १८६ ।

१०८३. ब्रह्म विलास

Opening : देखें, क्र० १०८२ ।

Closing : देखें, क्र० १०८२ ।

Colophon : इति श्री भैयाभगौती दासकृत ब्रह्मविलास संपूर्णम् । श्री संवत् १८६७ । शाके १७३२ मासाना मासे उत्तम माघ मासे शुक्लपक्षे तिथौ । १५ । भृगुवासरे पुस्तक समाप्त भई । लिख्यत गौड़ ब्राह्मण शिवलाल काशीमध्ये राजमंदिर सीतला-घाट । पुस्तक लाला मनुलाल जी की पठनार्थं परोपकारार्थम् ।
यादृशं पुस्तकं······ ····· · ··न दीयते ॥१॥
लेखिनी पुस्तिका · ···मर्दता ॥२॥
जले रक्ष थले — पुस्तकं ॥४॥
ग्रंथ संख्या ४८०० बारहजारआठ सौ
पत्र संख्या—१९८ ॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ।
मंगलं लेखकानां च पाठकानां च मगलम् ।
मंगलं सर्वलोकानां भूमिभृतिर्मंगलम् ।

१०८४. चैत्यवंदना

Opening : वर्षेषु वर्षान्तरपर्वतेसु नंदीश्वरे यानि च मंदिरेषु ।
यावन्ति चैत्यायतनानि लोके, सर्वाणि वंदे जिनपुंगवानाम् ॥१॥

Closing : णवकोडि — .... अकिट्टिमा वंदे ॥

Colophon : इति चैत्य वंदना ।
देखें—(१) दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२७ ।
(२) रा० सू० IV, पृ० ३८४, ३८७, ४३२ ।

१०८५. चैत्यवंदना

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यंतराणां निकाये,
नक्षत्राणां च निवासे ग्रहगणपटले ताराकाणां विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणध्वस्त सान्द्रांधकारे,
श्रीमत्तीर्थंकराणां प्रतिदिवसमहं तत् चैत्यानि वंदे ॥

Closing : जन्म-जन्म-कृतं पापं जन्मकोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरामूलं हन्यते जिनवंदनात् ॥१२॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२ ।

१०८६. चातुर्मासव्याख्या

Opening : स्मारं स्मारं स्फुरद्ज्ञानधामजैन-जगतम् ।
कारं कारं क्रमांभोजे गौरव प्रणितिं पुन: ॥१॥

Closing : अक्षयादितृतीयाया: व्याख्यानं बोध्यप्राप्तम् ।
अलेखि सुगमं कृत्वा क्षमाकल्याणपाठकै: ॥१॥

Colophon : इत्यक्षयातृतीया व्याख्यानम् । ग्रंथाग्रमनुमानत: श्लोका सप्तति:
॥६०॥

विशेष—इसमें चतुर्मास के साथ ही अष्टान्हिका व्याख्या, दीवाली-व्याख्या, सौभाग्य पंचमी व्याख्या, ज्ञानपंचमी व्याख्या, मौन-एकादशी, पौष—दशमी व्याख्या, मेरु तेरस व्याख्या, होलिका व्याख्या अक्षयतृतीयादि व्याख्या का समावेश किया गया है।

१०८७. चौदहगुण स्थान

Opening : गुण आत्मीक परिनाम गुणी जीव नाम पदार्थ ते आत्मीक परिनाम तीन जात के। शुभ, अशुभ, शुद्ध तिन ही परिनाम ३ मापक चौदह स्थानक जीवन जाननाम्।

Closing : जथा पाषाणतै सर्वथा भिन्न भया सुवर्ण निः कलंक शोभै त्यौं अपनी अनंत शक्ति करि विराजमांन केवलग्यान ॥२॥ केवल दर्शन ॥२॥ अनंत वीर्य ॥३॥ छाइक सम्यक्त ॥४॥ चैतन्य भानु ॥५॥ .... परमात्मा कहीये।

Colophon : यह चौदह गुन स्थान का स्वरूप संक्षेप मात्र वर्णन जिनवानी अनुसार कथन कर पूरन किया।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, क्र० २०४।

१०८८. चौदह गुणस्थान

Opening : तिस मुक्ति कैं स्थान आने कौं इह चौदह सीढी है सो प्रथम मिथ्यात गुन स्थान ही में यह जीव अनादिकाल से पडा आया है तहाँ कछु भी इसको अपमाध्सा बुरा होने का ग्यान नहीं हुआ सो मिथ्यात का पांच प्रकार का भेद है—

Closing : जन्म मर्न इत्यादिक ससार का अनेक दुखकर रहित हुआ, अजर अमर कौं प्राप्त हुआ।

Colophon : इति श्री चौदहगुणस्थान की चरचा सम्पूर्णम्। समाप्तम्। शुभमस्तु।

१०८९. चत्वारिदंडक

Opening : चत्तारिमंगलं अरिहंतमंगलं सिद्धमंगलं ।
साहुमंगलं केवलीपण्णत्तोधम्मोमंगलं ॥१॥

Closing : वंदेहिंणिम्मलयरा आचेइं अहियं पयासंता ।
सायर इवगंभीरा सिद्धसिद्धि मम दिसंतु ॥८॥

Colophon : इति थोस्सामिदंडक संपूर्णम् ।

१०९०. चौबीस दण्डक

Opening : वंदौं वीर सुधीर को महावीर गंभीर ।
वर्द्धमान सन्मति महादेव देव अतिवीर ॥

Closing : अंतहकरण जु सुख होय. जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारण करण कूँ, भाषी दौलतराम ॥५७॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१०९१. चौबीस दण्डक

Opening : देखे—क्र० १०९० ।

Closing : देखें—क्र० १०९० ।

Colophon : इति श्री चौवीस दंडक चौपाई संपूर्णम् ।

१०९२. चौबीस दण्डक

Opening : प्रथम दंडकनि के नाम तहाँ नारक १, भवनवासी देव १०, ज्योतिषी १, व्यंतर १, वैमानिक १, पृथ्वी १, अप १, तेज १, वायु १, ... ।

Closing : … — ….तेजकाय वायुकाय विषेभी उपजे है ऐसे चौबीस दंडकनि का कथन लिख्या सो त्रिलोकसार … .. आदि ग्रन्थनि ते सोधि करि लेवे ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१०६३. चौबीसठाणा

Opening : गइइंदियं च काए जोए वेए कषायणाणेय ।
संयमदंसणलेस्सा भव्विया समत्तसण्णिआहारे ॥१॥

Closing : अपकाय । वायकाय । तेजकाय । पृथ्वीकाय ।
वनस्पती । वेइन्द्री । तेइन्द्री । चौइन्द्री । जलचर ।
पंक्षी । चौपदा । उरपद । देव । नारकी । मनुष्य ।

Colophon : इति श्री चौवीस ठाना की चरचा सम्पूर्णम् । मिति पौष कृष्ण बुधवार । सम्वत् १८७४ ।

दोहा— करि कटि ग्रीवा नयनदुख तनदुख बहुत सुजान ।
लिख्यो जाति अति कवित तैं सब जानत आसान ॥
शुभंभवतु ।

१०६४. चर्चा-संग्रह

Opening : धर्म्मधुरंधर आदि जिन, आदि धर्म्म करतार ।
नमूं देवअधरण तैं सव विधि मंगलसार ॥१॥

Closing : एक-एकपाखंडी के उपरि एक एक अप्छरा नृत्य करे ऐसे सब मिलि सताईस कोड होय छै ऐसा जानना ।

Colophon : इति चर्चासंग्रह समाप्तम् । शुभं भवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६१ ।

१०६५. चर्चासमाधांन

Opening : जयोवीरजिन चंद्रमा उदैअपूरब जासु ।
कलिजुग काले पाप में कीनो तिमिर विनास ॥१॥

Closing : देवराजपूजतचरण असरण सरण उदार ।
चहुं सब्ब मंगलकरण प्रियकारणि कुमारि ॥१६॥

Colophon : इति चरचा समाधांन ग्रंथ भूधरदास कृत समाप्त: ॥ संवत् १८६३ । माघ शुक्ल ११ ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० क्र० १९६ ।

१०६६. चरचानमाधान

Opening : देखें, क्र० १०६५ ।
Closing : देखें, क्र० १०६५ ।
Colophon : इति श्री चरचा समाधाननाम ग्रंथ सम्पूर्णम् । संवत् १८४१ समये अषाढमासे शुक्लपक्षे शुभदिने इदं पुस्तकं लेखनीयम् ।

१०६७. देशास्कंध

Opening : नम: सर्वज्ञया तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवान महावीरे ।
... ... — ... ... ।

Closing : वम्सावा सम्पादया सवियाणं कप्पई निमन्थाणं
वा ... ... तब्भेववायणवेत्तय ॥

Colophon : इच्चेयं संवच्छरियं थेरकप्पं अहासुत्तं अहाकप्प अहामग्गं अहातच्चं सम्मं काएणव फासित्ता पालित्ता सोभित्ता तीरित्ता किट्टित्ता आराहित्ता आणा अणुपालित्ता आच्छगइया समणा निग्गंथा तेणेव भवग्गहेणेणं सअत्थं सहेभयं सवागरणं ....
इति वेमि पज्जो सवणाकप्पो सम्मत्ते दसासु असकंधस्स अट्ठम-

ज्झयणं ग्रंथाग्रं श्लोक १२१६ संवत् १७३५ प्रथम ज्येष्ठमासे कृष्णपक्षे सौम्यवारे सप्तमीकर्मवाह्या श्रीमत् वृहत् खरतरगच्छा तुच्छ युगप्रवरपदधर भट्टारक १०४ श्रीजिनचंद्रसूरिणादानां शिष्येण विनयवता क्षमासमुद्रेण कल्पसूत्रप्रतिलिखति स्म श्रीराज द्रंगे श्री ।

१०६८. दोनवावनी

Opening : वंदो अरि जिनंद व्रत तीरथ परगारयौ ।
णमो श्रेयंस नरिंद दान तीरथ अभ्यास्यौ ॥

Closing : रतनत्रै आभरन विराजै वीरनंद गुरु गुन समुदाय ।
तिनके चरन कमल जुग सुमिरत भयो प्रभावज्ञान अधिकाय ।
तव श्री पद्मनंदनै कीनै दान प्रकाश काव्य सुखदाय ।
पद्मनंद बनाइ दानवावनी द्यानत राय ।।

Colophon : इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम् ।

१०६९. दोनवावनी

Opening : देखें, क्र० १०६८ ।
Closing : देखें, क्र० १०६८ ।
Colophon : इति श्री दानवावनी सम्पूर्णम् ।

११००. दा-शील-भावना

Opening : प्रथम जीनेसर पाय नमीं यामी सुगुरु पसाय ।
दान शील तप भावना बोली सुबहु संवाद ।।१।।

Closing : दान शील तप भावना रचौं संवाद भणता गुणता भावसुरे ।
रीद्धि समृद्धि सुप्रमादौरे धर्म हीयेधरौ ।।१।।

Colophon : इति श्री दान शीलतप भावना सम्पूर्णम् ।

११०१. देवागम

Opening : देवागमनभोयान चामरादिविभूतयः ।
मायाविष्वपि दृश्यते नातस्त्वमसि नो महान् ॥१॥

Closing : जयति जगति .... समुपासते ॥

Colophon : इति श्री समंतभद्रपरमार्हताचार्यविरचितं देवागमसूत्रं संपूर्णम् ।

दोहा : श्री देवागम ग्रंथ को पौष कृष्ण नव जान ।
... ... एक परमान ॥१॥
लिपिपूरन पुस्तक कियो शुभमुहुर्त शनिवार,
हरिदास सुत अजित को आरा देश मझार ॥२॥
सो जयवंतो नित रहो जब लग सूरजचंद,
यह जिन सासन त्रिजग हित पूरन सिव सुखकंद ॥३॥
शुभं भूयात् । शुभम् ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रं० I, क्र० ४५४ ।

११०२. दिगम्बरआम्नाय

Opening : श्री भद्रबाहु स्वामी पीछे दिगम्बर संप्रदाय में केतेक वर्ष अंगनि के पाठी रहे ।

Closing : संप्रदाय में जथावत आचार का तौ अभाव ही है जो कहीं होय तौ दूर क्षेत्र मे होयगा, परन्तु मोक्षमार्ग की प्ररूपणा तो ग्रंथनी के महात्म तैं वर्तें है ।

Colophon : इति दिगम्बर आम्नाय ।

११०३. धर्मग्रंथ

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथित वर धरम सरण जयवंत ॥

Closing : स्याद्वाद आगम निर्दोष अन्य सर्व ही है जु सदोष।
स्याग दोष गुण धरे विचार हेतु विचय ध्यान निर्धार ।।

Colophon : इति श्री धर्मरत्न सपूर्णम् ।

११०४. धर्मग्रन्थ

Opening : ……… दोउनिका न्यारा-न्यारा मानना ।

Closing : … … एकेन्द्रिय तो सर्वत्र है ही, अर कर्मभूम ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११०५. धर्मामृतसार

Opening : अनतर अविनासी भगवान ऋषभपुराण पुरुषोत्तम तिनिकूं
प्रणाम करि महापुराण की पीठिका प्रगट करिए है ।

Closing : अर नाभिराज कमल मंडित तलाव की उपमाकूं धरें उदय
होणहार भगवान रूप सूर्य ताकि अभिलाषा करता निरंतर
निरषता संतापरमउदयरूप अतुलधैर्य को धारताभया ।

Colophon : श्री श्री श्री ।

११०६. धर्माष्टक

Opening : मैं देव निति अरिहंत चाहूं सिद्ध कौं सुमरण करौं ।
मैं सुर गुरु मुनी तीन पदमय साध पद हिरदै धरौ ।।१।।

Closing : यह भावना उत्तम सदा भासु तुम सुनो जिनराज जी,
तुम कृपानाथ अनाथ धानत दया करनी न्याव जो ।
दुष्ट कर्म विनास ज्ञान प्रकास मोकूं कीजिए,
करि सुगति गमन समाधि मरण सुभगति चर्ण की दीजिये ।।८।।

Colophon : इति धर्मचाष्टक भाषा सम्पूर्णम् ।

११०७. धर्मपरीक्षा

Opening : पणमूं अरहंत देवगुरु निरगंथ दयाधरम ।
भवदधितारन अवर सकल मिथ्यात मणि ॥

Closing : भनत सुनत यह भाधरि अहनिसि होइ आनन्द ।
धरमसुण्यातै उपजै यामैं परमाणन्द ॥७५॥

Colophon : इति श्री धर्म्मपरीक्षा भाषा मनोहरकृत सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८७१ । शाके १७३६ पौष शुक्ल नवमी भृगुवासरे । पुस्तकमिदं सम्पूर्णमेति । लेखकाक्षर रघुनाथ पाण्डेय पट्टनपुर मध्ये गायघाट स्थाने ।

११०८. धर्मरत्न

Opening : मंगल लोकोत्तम नमों श्री जिन सिद्ध महंत ।
साधु केवली कथितवर धरम शरण जयवंत ॥१॥

Closing : श्रुतकेवलि गुरु के अवगाढ केवलि प्रभु के परम अवगाढ़ ।
आत्मानुशासन के माहि, इति दस भेद सुकथन कराही ॥

Colophon : नहीं है ।

११०९. धर्मरत्न ग्रन्थ

Opening : देखें—क्र० ११०८ ।

Closing : धर्मरत्न की ज्योति फैलो चहुं दिस
जग तम शिव मारग उद्योत जयवंतो वर्तो सदा ॥

Colophon : नहीं है ।

१११०. धर्मरहस्य

Opening : पचनि में कहिये परमेश्वर पंचहु अक्षर नामदिये है।
ऊ नमकार सबै सिब ऊपर पचनि ते उतपत किये ते।
लोक अलोक त्रिकाल में नाहि कोई तीन की समदेष हिये ते ।१।

Closing : धर्म पचास कवित्तउ भंउलत फल विराग स्वभाव कथा है।
आपनि औरनि को हितकार पढो नरनार सुभाव तथा है।
अक्षर अर्थ की भूलि परि जहाँ सोध तहाँ उपकार जथा है।
द्यानत सज्जन आप विषैरत होय वारधि शब्द मथा है।

Colophon : इति धर्मरहस्य कवित्त बावन सम्पूर्णम्।

११११. धर्मसार सतसई

Opening : वीर जिनेश्वर प्रणमु देव, ··· ····
··· — सुमिरत जाके पाप नसाय ।1101।

Closing : गुन थोर — ···· ·· बल वीर ।।1071।।

Clolophon : इति श्री धर्मसार भट्टारक श्री सकलवीरत उपदेशक पंडित सीरोमण दास विरचिते श्री पचकल्यानक महिमा संपूरन लिखत धरमसंनेही नै। इति श्री धरमसार ग्रंथ सपूर्णः। सवत् 1832। शाके 1697 मीति वैसाष शुदि सोमवासरे सपूर्ण.।

१११२. द्रव्यसंग्रह

Opening : जीवमजीवं दव्वं जिणवरवसहेण जेण णिद्दिट्ठं।
देविंदविंदवंदं वंदे तं सव्वदा सिरसा ।।

Closing : दव्वसगहमिणं मुणिणाहा दोससंचयचुदासुदपुण्णा।
सोधयंतु तणु सुत्तधरेण णेमिचंदमुणिणा भणियं ज ।।६०।।

Colophon : इति श्री नेमिचंदविरचितं द्रव्यसंग्रहं समाप्तम् ।
देखें, जै० रि० भ० ग्र० I, क्र० २१३ ।

१११३. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें—क्र० ११११ ।
Closing : देखें—क्र० ११११ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादकः तृतीयोध्यायः इति श्री द्रव्यसंग्रह जी समाप्तम् ।

१११४. द्रव्यसंग्रह

Opening : वरं प्राणपरित्यागो न वरं मानखंडनम् ।
प्राणक्षये क्षणं दुख मानखंडे दिने दिने ॥६॥
Closing : देखें—क्र० ११११ ।
Colophon : इति मोक्षमार्गप्रतिपादक तृतीयोध्याय. । इति द्रव्यसंग्रह समाप्तः

१११५. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ११११ ।
Closing : सवत् सत्रह सौ इकतीस । माघ सुदी दसमी शुभ दीन ॥
मगलकरण परम सुखधाम । द्रव्यसंग्रह प्रति करु प्रणाम ॥
Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह कवित्तबध संपूर्णम् । सवत् १८७१ पौष शुक्ल एकादस शनिवार को लिखा ।

१११६. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० ११११ ।

Closing : .... विरुद्ध भावटाली करी साचो सूत्र भाव कंस्यो छइ जिणइ ॥

Colophon : इति धर्माधर्म पञ्चतनु बालाबोधे द्रव्यसंग्रह सूत्र समाप्तम् ।

१११७. द्रव्यसंग्रह

Opening : तहाँ प्रथम या ग्रंथ की पीठिका ऐसें जो या ग्रंथ मे तीन अधिकार है तहाँ पहिला तौ षट्द्रव्यपंचास्तिकाय की प्ररूपणा का अधिकार है तहाँ आदिगाथा तो मंगल अर्थ है तहाँ एक गाथा उक्तं च सब इंद्र के संख्या का है । । ।

Closing : मंगल श्री अरहंत वर, मंगल सिधि सुसूरि ॥
उपाध्याय साधु सदा, करो पाप सब दूरि ॥१॥

Colophon : इति श्री द्रव्यसंग्रह ग्रंथ समाप्ता: ।

१११८. द्रव्यसंग्रह

Opening : देखें, क्र० १११२ ।

Closing : देखें, क्र० १११२ ।

Colophon : इतिद्रव्यसंग्रहसूत्रं समाप्तम् ।

१११९. द्वादशानुप्रेक्षा

Opening : जिणवर भासि ... ~ सुणऊ जीव सुलक्षणा ॥१॥

Closing : .... रयणत्तय गुण ॥

Colophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्ता ।

११२०. ईर्यापथ सामयिक

Opening : ॐ नि: समोहं जिनानां सदनमनुपमं श्रीपरीतैंतिभक्त्या,
स्थित्वागत्वानिषिद्य चरणपरिणतोल सर्नेहंरतयुग्मम् ;

भाले संस्थाप्यबध्या मम दुरितहर कीर्तिय: शक्रवंद्यम्,
निद्रादूरं सदात्त क्षयरहितममुज्ञानभानु जिनेन्द्रम् ।।

Closing : पापिष्ठेन दुरात्मना जड़धिया मायाभिमालोभिना,
रागद्वेषमलीमशेषमनसादु खकर्म्मयं निर्मितम् ।
त्रैलोक्याधिपते जिनेंद्रभगवत् श्रीपामूलेंघ्रुना,
निंदाद्दूरमहं जजामि सततं निवृ'तये कर्मणाम् ।।

Colophon : इति ईर्यापथ सम्पूर्णम् ।

११२१. गतिलक्षण

Opening : स्वर्गच्युतानामीहजीवलोके चत्वारिनित्यमुदयं वसति ।
दानप्रसंगो मधुरा च वाणी देवार्च्चनं सद्गुरु सेवन च ।।

Closing : बह्वाशी नैव संतुष्टो, मायालुप्तप्रपंचक: ।
मूढस्य पलालश्चैव तिर्यग्योन्या गतोनर: ।।

Colophon : इति गतिलक्षणं समाप्तम् ।

११२२. गोम्मटसार

Opening : वंदौं ज्ञानानंदकर नेमिचंद गुनकंद ।
माधव वंदित बिमलपद पुण्य पतोनिधिनंद ।।१।।

Closing : अपर्याप्त मै मिश्रगुणस्थान नांही तातैं कृष्ण लेश्या का मिश्र गुणस्थान विषै देव बिना तीन गति हैं इत्यादिक यथा संभव अर्थ जानियंत्रनिकरि कहिए है, अर्थ सोजानना .... ।

Colophon : इति आचार्य गोम्मटसार द्वितीयनाम पंचसंग्रह ग्रन्थ की जीव-तत्त्व प्रदीप का नाम संस्कृत टीका कै अनुसारि सम्यग्ज्ञान चंद्रिका नामा भाषा टीका ... — ... ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २४४ ।

११२३. ग्यान के आठ अंग

Opening : विजन अपसममह । · — ... वसुअंगय ।।

Closing : और ज्ञान के आठ अंग है सो धर्मात्मा जीवन करि धारवे योग्य हैं।

Colophon : इति ग्यान के अष्टअंग सम्पूर्णम् ।

११२४. हुणवन्त अणुप्रेक्षा

Opening : सिद्धाणिजोय जीव वणस्सई काल् पुग्गभाच्चेव ।
सव्वमलोगागासं छच्चेव अणतया भणिया ॥

Closing : इयचारियाइं सुणेवि — ... — ... ...
.... — राहवेण सइंसुअडालेहिं ॥

Colophon : इति हुणवत अणुप्रेक्षा. समाप्तम् । पंडित बछराज् लिखितम् ।

११२५. जिन गायत्री त्रिकाल संध्या

Opening : अथोच्यते त्रिवर्णानां शौचाचारविधिक्रमः ।
प्रातरेव समुत्थाय स्मृत्वास्तुत्वा जिनेश्वरम् ॥१॥

Closing : — संधोपासनं ॥८॥ चेति सप्तकर्मणि क्रमेण कुर्य्यादिनितदाह नमो हैते भगवते समार मागरनिगमानाय अर्हं जलनिर्मघामि स्वाहा ।२॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ... ।

११२६ जिनगुणसम्पति

Opening : नस्तुवे सर्वदा देव गौपेशं गोपति परम् ।
दर्शनादर्पनं पश्यन् त्रैलोक्यं त्रिगुणायते ॥१॥

Closing : इति व्रतमहिमानं विदितपुराण मकिलिख्य भो विबुधजनाः ।
कुरुत समीलं व्रतमतिरम्यं शिवसौख्यं यदि प्राप्तुमनाः ॥७॥

Colophon : इति जिनगुणसम्पत्ति विधान समाप्तः । श्रीरस्तु कल्याणमस्तु । शुभमस्तु ।

११२७. जिनमहिमा

Opening : श्री जिनवर नाम की महिमा अगम अपार ।
धरि प्रतीति जे जपत, ते सफल करत अवतार ।।

Closing : अद्भुत अतिसै तुम धरे वीतराग निज लीन ।
पूजक सहजैं उच्चह्वै निंदक सहजै हीन ।।७।।

Colophon : इति जिनमहिमा संपूर्ण ।

११२८. जीवराशि क्षमावाणी

Opening : ह्रिवराणी पद्मावती जीवराश षिमावैं .... ।
... ... – जे मैं नीक विराधिया ।।

Closing : रामवयराडी जे सुनै ... ... तत्काल ।।३२।।

Colophon : इति जीवराशि सिक्षावाणी समाप्तम् ।

११२९. णनपचीसी

Opening : सुरनरतिर्यग्योनि मैं निरहै निगोदिभवंत ।
महामोह की नींद मैं सोए काल अनंत ।।१।।

Closing : कहे उपदेश वाणारसी चेतन अब कछु चेति ।
आप समझावै आप कूं जपै कर्म के हेति ।२५।।

Colophon : इति श्री ज्ञान पचीसीसंपूर्णम् ।

११३०. ज्ञानार्णव-वचनिका

Opening : पिंडस्थं पदस्थं च रूपस्थं रूपवर्जितम् ।
चतुर्द्धाध्यानमाम्नातं भव्यराजीवभास्करैः ।।१।।

Closing : अक्षर पदकूं अर्थ रूप ले ध्यान मैं,
जें ध्यावैं उम मंत्र रूप एकता नमैं,

ध्यान पदस्थ जु नाम कह्यो मुनीराज नैं ।
जे या मैं हू लीन लहै निज काज मैं ।।१।।

Colophon : इति श्री शुभचन्द्राचार्य विरचित योगप्रदीपाधिकार ज्ञानार्णव-नाम संस्कृत ग्रन्थ की देश भाषामय वचनिका विषै पदस्थध्यान का प्रकरण समाप्त भया । श्रीरस्तु ।

११३१. कर्मप्रकृति ग्रंथ

Opening : पणमिय सिरसा णेमि गुणरयणविहूसणं महावीरं
सम्मत्तरयणणिलयं पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ८६ ।।१।।

Closing : पाणवधादीसु रदो जिण पूयामुक्खमग्गविग्घयरो ।
अज्जेइ अंतरायं ण लहइ जं इच्छियं जेण ।।

Colophon : इति श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तदेव विरचितायां कर्म्मप्रकृतिग्रंथः समाप्तः ।
देखें, जि० र० को०, पृ० ७२ ।

११३२. कर्म-बतीसी

Opening : पर्म निरंजन परम गुरु परम पुरुष परधान ।
वन्दो परम समाधिमय भयभंजन भगवान ।।१।।

Closing : यह परमारथ पथ गुन, अगम अनंत बषान ।
कहत बनारसी दास इम जथा सकत परवान ।।३२।।

Colophon : इति ध्यान बतीसो संपूर्णम् ।

११३३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा

Opening : तिहुवणतिलयं देवं वंदित्ता तिहुंअणिदपरिपुज्जम् ।
वोच्छं अणुवेहाओ भविय जणाणंदजणणीओ ।।

Closing : मुनि श्रावक के भेदतैं, धरमदोय परकार।
ताको सुनि चिन्तो सतत, गहि पावो भवपार ।।

Colophon : इति स्वामि कार्तिकेय अनुप्रेक्षा समाप्तम् मिति चैत सुदि ७ संवत् १९३८ वार मंगल।
इति श्री

११३४. लघुतत्त्वार्थसूत्र

Opening : दृष्टं येन चराचरं केवलज्ञान चक्षुषा।
प्रणमामि महावीरे वंदे कांतां प्रवक्ष्यते ।।१।।

Closing : त्रिविधो मोक्षमार्गहेतवा। ।१३। पंचविधनिर्ग्रंथाः ।।१४।। त्रिविधा सिद्धाः ।१५।। द्वादशसिद्धस्यानुयोगनामानि ।१६।। अष्टौरेसिद्धगुणाः ।।१७। द्विविधा सिद्धाः ।।१८।। वैराग्यं चेति ।।१९।।

Colophon इति लघुतत्वार्थ सम्पूर्णम्।
विशेष — इसके पहले हेत्र में ही लिखा है कि अब 'अर्हत्प्रवचन' कहेंगे। अतः इसका नाम भी वही होना चाहिए।
देखें—जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० २८०।

११३५. लघुसामायिक

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभावने।
नमः श्रीवर्द्धमानाय वर्द्धमानजिनेसिने ।।१।।

Closing : एवं सामायिकं सम्यक् सामायिक खडितः ।।
वर्तनामुक्तिमानस्य कस्य पूर्णयसेर्मना ।।१४।।

Colophon : इति श्री लघु सामायिक सम्पूर्णम्।

११३६. लघु सामायिक

Opening : सिद्धवस्तुवचो भक्तया सिद्धान्प्रणमतः सदा।
सिद्धकार्यः शिवं प्राप्तः सिद्धि ददतु नोव्ययम् ॥१॥

Closing : देखें, क्र० ११३५।

Colophon : इति लघु सामयिकम्।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६६।

११३७. लश्या स्वरूप

Opening : आर्तरौद्रसदाक्रोधी मत्सरीधर्मवर्जितः।
निर्दयोवैरसंयुक्त ··· कृष्णलेश्याधिकोनरः ॥१॥

Closing : किन्हाए जाई नरयं नीलाए थावरो होई कानुहुए तिरिय गई।
पीताए मानुसो होई, पी भाए देव गइ सुक्काए पावई सासयं
ठाणं

Colophon : इति लेश्यास्वरूपं सम्पूर्णम्।

११३८. लीलावती प्रकीर्णक

Opening : प्रीति भक्तजनस्य यो जनयते विघ्नं निर्विघ्नंस्मृतस्तवृंदारकवृंद
वंदितपदं नत्वामतंगाननम्।
पाटीं सदगणितस्य वच्मिचतुरप्रीतिप्रदांस्फुटां संक्षिप्ताक्षरकोमला-
मलपदैर्लालित्यलीलावती ।.१॥

Closing : ··· ··· एक का बोलबाला रहा रहत है और सोलह रहत
है ऐसा अंक राखै और मिटाय डालै। अब एकका भाग सोलह
मैं देइ पायें सोलह दश अंक के सोलह दाडिम पाये।

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितायां गणित – – लीलावत्यां
प्रकीर्णकानि समाप्ता।

११३९. मिथ्यात्व खण्डन

Opening : प्रथम सुमरि अरहंत कौ सिद्धन कौ धरिध्यान ।
सरस्वती सीस नमाइकैं, बंदौ गुरु जु ग्यान ॥

Closing : ग्रंथ अनूपम रच्यौ यह है ग्रंथिनि कौ सारिथ ।
पूरिष हाथि मदेहु भवि अधिक जतन सौं राखि ॥

Colophon : इति मिथ्यात्व खण्डन सम्पूर्णम् । शुभ संवत् १८७६ मीति चैत्र सुदि ।९। रविवासरे उपदेश ब्रह्मपद्मसागर जी लिखितं अनुश्रावक आरा नगर ।
श्रीरस्तु ।

विशेष— इसके बाद एक छप्पय भी दिया हुआ है ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २८५ ।

११४०. मोक्ष मार्ग

Opening : मंगलमय मंगलकरण वीतराग विज्ञान ।
नमो ताहि जाते भए अरहंतादि महान् ॥

Closing : जैसे बावरे कै भी हस्त पदादि अंग होहैं । परन्तु जैसे मनु क्षेते से न होहै । तैसे मिथ्या दृष्टिनि कै भी व्यवहार रूप निशंकितादि अंग हो है, परन्तु जैसे निश्चय की सापेक्षा लिए सम्यक्तकै होइ तैसे न हो है ।

Colophon ; नहीं है ।

११४१. मोक्षमार्ग पैडी

Opening : इयक समैं रूचिवंत जो गुरु अक्खैहै सुनमल्ल ।
जो तुम अंदर चेतना वहै तु साटी अल्ल ॥१॥

Closing : भव थिति जिनकी घटि गई तिनकों यह उपदेश ।
कहत बनारसीदासयों मूढ़ न समुझेलेस ॥२२॥

Colophon : इति मोक्षमार्ग पैडी समाप्ता ।

११४२. मोक्षमार्ग पैंडी

Opening : देखें, क्र० ११४१ ।

Closing : देखें, क्र० ११४१ ।

Colophon : इति मोक्षपैडी संपूर्णः ।

११४३. मृत्यु महोत्सव

Opening : मृत्युमार्गप्रवृत्यस्य वीतरागो ददातु मे ।
समाधिबोधिपाथेयं यावन्मुक्तिपुरीपुरम् ॥

Closing : स्वर्गैश्वर्यविचित्रनिर्मलकुले संस्मर्यमानाजनैः,
भूत्वा मुक्तिविधायिनी बहुविधं वांक्षानुरूप फर्मम् ।
भुक्त्वा भोगमहर्निशं परकृतं स्थित्वा क्षणमडले,
पात्रावेशविबर्जनामिवमृतं संतो लभतिस्तत ॥

Colophon : इति मृत्युमहोत्सव सम्पूर्णम् समाप्ता ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २७७ ।

११४४. मुक्तिसूक्तावली

Opening : देवलोक ताको घर आगन राजा ऋद्धि सेवतसुपाँय ।
ताके तन सौभागआदि गुन केलि विलास करि नित आय ॥
सो नर उतरत भवसागर निरमल होइ मोक्षपद पाय ।
करत भाव विधि सहित बनारसि जो जिनवर हरजिमन लाइ
॥१॥

Closing : सोलहसैइक्यानवै रितुग्रीष्म वैशाख ।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाख ॥१०४॥

Colophon : इति मुक्तिमूक्तावली भाषा समाप्ता ।
श्रीः सवत् १६६८ वर्षेकार्त्रिकादिप्रतिपदायां शनिवासरे श्री आगरामध्ये लिखितं लेखकेन केनचित् । लेखक पाठकयोः शुभंभवतु । इति श्री ।

विशेष— इस ग्रन्थ की अन्तिम पंक्ति के अनुसार सवत् १६६१ है लेकिन Colophon में १६६८ लिखा है ।

११४५. नवकार महात्म्य

Opening : ब्राह्मी ॥१॥ चंदनवालिका ।२। भगवती राजीमति ।३। द्रूपदी ।४। कौशल्या ।५। मृगावति ।६। ··· ·· ··· ।

Closing : अरि करि हरिसाइण डाइण भूत वेताल,
सवि पाप प्रणार्मै थास्यै नमलमाल ।
इण सुमरण संकट दूरि टलइ ततकाल,
जंपै जिनगुण प्रभू सूरिवर सीस रसाल ॥७॥

Colophon : इति श्री नवकार माहात्म्यसिकाय समाप्तम् ।

विशेष — इसमें सोलह सतियों के नाम भी दिये गये हैं ।

११४६. नयचक्र

Opening : गुणानां विस्तरं वक्ष्ये ········ ···· — ।
नत्वावीरंजिनेश्वरम् ·· ·– – — ।

Closing : तत्र संश्लेशरहित वस्तुसंबंधविषयः नयचरितामद्भूतव्यवहारः यथा देवदत्तस्य धनमिति श्लेषसहितवस्तुसंबंध ··· यथा जीवस्यशरीरमिति ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धतिः । श्री देवसेनपंडितविरचिता नयचक्रपरिसमाप्ताः ।

१११४७. नयचक्र

Opening : देखें, क्र० ११४६ ।

Closing : देखें, क्र० ११४६ ।

Colophon : इति सुखबोधार्थमालापद्धति श्री देवसेनपडित विरचिता । इति श्री नयचक्रं समाप्तम् ३०६ श्लोक अनुष्टुप निश्चयेन । इति श्री ।

११४८. नयचक्र वचनिका

Opening : वंदो श्री जिन के वचन स्यादवाद नयमूल ।
ताहि सुनत अनुभव तहाँ है मिथ्या निरमूल ॥१॥

Closing : सत्रह सै छत्तीस के संवत् फाल्गुन मास ।
उजली तिथि दशमी जहाँ कीनो वचन विलास ॥

Colophon : इति श्री नारायणदास हेमराज कृत नयचक्र वचनिका समाप्तम् । देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० २६६ ।

११४९. नयचक्र वचनिका

Opening : देखें, क्र० ११४८ ।

Closing : देखें, क्र० ११४८ ।

Colophon : इति श्री नयचक्र पंडित नरायनदास उपदेशशिष्य हेमराज कृत सामान्य वचनिका संपूर्णम् । इति श्री नयचक्र जी की वचनका सम्पूर्णम् । मिति ज्येष्ट वदि ६ । बुधवार । संवत् १९६२ मु। । चंदेरी ।

११५०. निर्वाणकाण्ड

Opening : अठ्ठावयम्मि उसहो चंपासवास्सपुज्जजिणणांहो ।
उज्जंत णेमिजिणो पावासणि व्वुदो महावीरो ॥१॥

Closing : जोइपठयतियालं णिव्वुई कंकपीभावसुद्धीए ।
भुंजिनरसुरसुक्कं पठइ सो लहइ णिव्वाणं ॥

Colophon . इति सम्पूर्णम् । शुभं ।

११५१. निर्वाण काण्ड

Opening : वीतराग वंदो सदा, भाव सहित सिरनाय ।
कहुँ काण्ड निर्वान की, भाषा विविध बनाय ॥१॥

Closing : संवत् सत्रह सै एक ताल, आश्विन सुदी दशमी सुविशाल ।
भैया वंदन करे त्रिकाल, जै निर्वानकाण्ड गुणमाल ॥२२॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड भाषा सम्पूर्णम् ।
श्री शुभं इति ।

११५२. पंचविंसतिका

Opening : सव्वमलमायउ सिद्ध' सिद्धगति हयगिदउदपुज्जं ।
णेमि ससिगुरवीर पणमिय तिय सुद्धिमवमहणं ।

Closing : मोहाकुमुइणि चद भवदुहसायरणं जाण पत्तमिणं ।
धम्म विलाससुहद भणिदं जिणवासवम्हेण ।।२६॥

Colophon : इति धर्मव्यंसविका लिख्य सम्पूर्ण करी ।

११५३. पंच परमेष्टी

Opening : इस जीव के संसार में पाँच ही परमइष्ट है । तातै इनको पंच परमेष्ठि कहिए । तिनका स्वरूप सामान्ययनै लिखिए । ... ।

Closing : वस्त्र का त्याग ।१। दंतवन का त्याग । खड़े होय अहार ले ।१। लघु भोजन एक बेर ले । एवं सप्त ए अठाईस गुन साधु महाराज जी का कहुया ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पंचपरमेष्टी की चर्चा स्वरूप सपूर्णम् ।

११५४. परमात्मप्रकाश

Opening : चिदानंदैकरूपाय जिनाय परमात्मने ।
परमात्मप्रकाशाय नित्यं सिद्धात्मने नमः ।

Closing : परमपयगयाण भासओदिव्वकाउ,
भणति मुनिवराण मुक्खदो दिव्व जोउ ।
विसयसुहरयाणं दुल्लहो जोहु लोए ।
जयउ सिवसरूवो केवलो कोपिटवोहो ।।३४६।।

Colophon : इति श्री योगीन्द्रदेवविरचित परमात्मप्रकाश; समाप्तः ।

११५५. परमात्मप्रकाश

Opening : देखे, क्र० ११५४ ।

Closing : देखें, क्र० ११५४ ।

Colophon : इति परमात्मप्रकाशः समाप्त । ग्रन्थाग्रं ४५१ श्लोक अनुष्टुप । श्री । श्रीरस्तु । लेखकपाठकयोः शुभ भूयात् ।

११५६. परीक्षामुख वचनिका

Opening : श्रीमत् वीर जिनेस रवि, तम अज्ञान नसाय ।
शिवपथ वरतायो जगति, वंदो मैं तसु पाय ।।१।।

Closing : ··· कोटि जीव तुल्य कौन गणना में गणिये तौउ हमै इस ग्रंथ की टीका करे हैं सो जैसे नदी का जल नवीन घट बिषेकिछुधा-

लिये सोहू शीतल होय पीने वाले को पुरुषनि के चित को प्रिय लागे तैसे तिस प्रभाचन्द्र के वचन ही अपूर्व ... — ।

Colophon । नहीं है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क० ४६८ ।

११५७. प्रश्नमाला

Opening : आदि अंत चौबीसलौ वदौ मन वच काय ।
भव्यन को उपदेश दें करो मगलाचार ॥१॥

Closing । इस प्रश्नमाला को अपने कठ मे पहिरें ते भव्यात्मा कल्यान के वांछित सुबुधी जुग भौमो में सोना पावेंगे । अैसी जान इस प्रश्नमाला को धारण करहु ॥

Colophon · इति श्री हिष्टतारंगनाम ग्रथमध्ये अनेक ग्रंथान के अनुसार प्रश्नमाला कथन करननो नाम संधि संपूर्णम् ।

विशेष— इसके बाद एक दोहा भी दिया गया है ।

११५८. प्रवचनसार

Opening । सर्व्वव्याप्येकचिद्रूपस्वरूपाय परात्मने
स्वोपलब्धिप्रसिद्धाय ज्ञानानंदात्मने नमः ॥१॥

Closing । व्याख्येयं किल विश्वमात्मसहितं — एकं परं चित् ॥

Colophon : इति तत्त्वप्रदीपिका नाम प्रवचनसारवृत्ति समाप्तम् । शुभ अस्तु । संवत् १६९२ वर्षे फाल्गुनमासे कृष्णपक्षे ५ शनीवासरे काष्टासंघे नंदीतट ˙ भट्टारक श्री रामसेन्यान्वये तदनुक्रमेण भट्टारक श्री चंद्रकीर्त्ति भट्टारंराजकीर्त्ति तस्य शिष्य ब्रह्मधन जी स्वहस्तेनालिखितम् । शुभं भुयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I. क० ३१२ ।

११५९. प्रवचनसार

Opening : देखें—क्र० ११५८।

Closing : देखें—क्र० ११५८।

Colophon : अनुपलब्ध।

११६०. प्रवचनसार

Opening : स्वयं सिद्ध करतार करै निज करम मरम ....
.... एक विध अजरअमर

Closing : — मूर्तिक पदार्थ को जानै है अति चंचल है अनंतज्ञान की महिमा ते गिरा है अत्यन्त विकल है महामोह .... — ।

Colophon : नहीं है।

११६१. प्रायश्चित्त ग्रन्थ

Opening : जिनचन्द्रं प्रणम्याहमकलंक: समन्तत: ।
प्रायश्चित प्रवक्ष्यामि श्रावकाणा विशुद्धये ॥

Closing : प्रायश्चित्तं य: करोत्येव देव जाते दोषे तत्प्रशात्यर्थमार्य:
रास्ट्रस्यासौ भूमि: ग्रस्यात्यनोपि स्वस्ताचास्यावस्थित
शं तनोति ॥६०॥

Colophon : इति अकलंकस्वामिनिरूपित प्रायश्चित्तग्रन्थं संपूर्णम्।
देखे--जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३२१।

११६२. पाप-पुण्य माहात्म्य

Opening : वर्द्धमान जिनवर नमूं, मन वच सीस नवाय।
फुन गुरु गोतम कौं नमूं, जातै पातक जाय ॥१॥

Closing : सत्रै सै इक्यानवै, पोष शुदी तिथ दूज ।
सुभ नक्षत्र पूरन करी, जिन वांनी कूं पूज ॥
जे नर सुर घर गांवहीं, तथा सुनै मन लाय ।
जिनवांनी सरधा करै अंत सिद्धगत जाय ॥६॥

Colophon : इति अष्टद्रव्य सेती जिन पूजा करी समाप्तम् ।

११६३. पुण्य माहात्म्य

Opening : पूरब पुन्न कियौ जिन मोय, तेरा वस्तु जु प्रापत होय ।
मानुष जनम जु पावै थाय, उत्तम कुल मैं उपजै आय ॥१॥

Closing : शक्र समान तपस्या करै, दुष्ट शारमीसैं तप करै,
इतने गुन निरमल जिस जोय, तासौ नमस्कार मम सोय ॥८॥

Colophon : इति श्री पुण्य महात्तम समाप्तम् ।

११६४. सम्यक्त्व कौमुदी

Opening : परम पुरुष आनन्दमय चेतनरूप सुजांन ।
नमी सिद्ध परत्मा जग परकासक भान ।

Closing : चंद सुर पांनी ··· ···· तब लग जैन प्रकाश ॥८६॥

Colophon : इति श्री सम्यक्त्व कौमदी कथा साद्दा जोधराज गोदीका बिरचिते उदितोदय भूप अर्हदास संवादिकसर्ग गमनचरनतनांम एकादश परिच्छेद । इ ति श्री सम्यक्त्व कौमदी सम्पूर्णम् । संबत् १८४६ वर्षे मिति ज्येष्ट सुदि ३ वार मंगल श्रीपार्श्वचंद्र सूरि गच्छे श्री १०८ श्री चद्रभाण जी तत् शिष्य लिखत्तु शासिरदारमल्लेन श्री सफातपुर नगरमध्ये ।
देखे, जैं० सि० भ० ग्र० J, क्र० ११४ ।

११६५. समयसार गाथा

Opening : वीतरागं जिनं नत्वा ज्ञानानंदैकसपदः ।
वक्ष्ये समयसारस्य वृत्ति तात्पर्यसंज्ञिकाम् ।।१।।

Closing : सुद्धोसुद्धादेसो णायव्वो परमभावदरिसीहिं ।
ववहारदेसिदो पुणजेदुअपरमे ठिदा भावे ।।१२।।

Colophon : इति समयसार गाथा सम्पूर्णम् ।

११६६. समयसार नाटक

Opening : करम भरम जग तिमिर हरन खग उरग लपन पगसिव मग दरसी ।
निरखत नयन भविक जल वरखत हरषन अमित भाविक जन दरसी ।।
मदन कदन जित परम धरम हित सुमिरत भगति भगत सवदरसी ।
सजल जलद तन मुकुट सपत फन करम दलन जिन नमन वनारसी ।।१।।

Closing : समैसार आतमदरव नाटक भाव अनंत ।
सोहै आगम नाम मैं परमारथ विरतंत ।।७२७।।

Colophon : इति श्री परमागमसमैसारनाटकनाम सिद्धान्त संपूर्णम् । श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । शुभंभवतु ।
देखें, जै० सि० भ० ग्रे० I, क्र० ३४२ ।

११६७. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ११६६ ।

Closing : देखें, क्र० ११६६ ।

Colophon : इति श्री परमागम समैसार नाटक नाम सिद्धान्त समाप्तम्। सवत् १८८४ भादो शुक्ल तेरस सोमवासरे जवाहरमल्ल स्वाध्याय हेतबे।

११६८. समयसार नाटक

Opening : देखें, क्र० ११६६।

Closing : देखें, क्र० ११६६।

Colophon : इति श्री नाटक समयसार सम्पूर्णम्।
रंध्रचद्र वसु ससि अवधि भादव सित ससिवार।
द्वितिया तिथि पोथी उभय पूरन भई सवार ॥१॥
समयसार नाटक अगम ब्रह्मग्यांत विश्राम।
पढ़त सुनत सुपसं उपजै भावित आसाराम ॥२॥
संवत् १८४० कातिग शुक्ल १ रवि दिने लिखित महुकमरामेण पठनार्थमात्मारामः। शुभंभवतु।

११६९. समवशरण

Opening : समोसरण मंडित नमो परमागम जिनरूप।
सुरनरपति वंदित चरण, महिमा अगम अनूप ॥१॥

Closing : इह विधि श्री जिनराज जगनायक सासुत मुकत।
अहिनिसि मगलकाजे पढत सुनत सब कहुकरौ ॥३०॥

Colophon : इति श्री समोसरणभेद।

११७०. समुद्घात

Opening : सातसमुद्घात कहै वेदना समुद्घात ॥१॥ कषाय समुद्घात ॥२॥ मारणांतिक समुद्घात ॥३॥ वैक्रिय समुद्घात ॥४॥ तैजस समुद्घात ॥५॥ आहारक समुद्घात ॥६॥ केवलि समुद्घात॥७॥

Closing : अट्ठावीस योगन एकसोअट्ठावीस धनुष मष्ठ्योत्तर अगुल इतनी जंबूद्वीपकी परिधि ।

Colophon : नहीं है ।

११७१. षट्दर्शन

Opening : शिवमत बोध सुवेदमत नैयायिक मत पक्ष ।
मीमांसकमत जैनमत षट् दरसन पर लक्ष ।।१।।

Closing : रायपवानी ९ पुतीनचावन १० लोचन बडरा ११ घरघरमी १२ कवित्त १३ राग्रा १४ वृषभनवारन १५ पेषतैनाई १६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

११७२. षट्पाहुड

Opening : काऊण णमोयार जिणवरवसहस्सवड्ढमाणस्स ।
दसणमंगवां वोच्छामि जहा कम्म समासेण ।।

Closing : अरहंतो सुहमना .... पुणा केरियं अण ।।४८।।

Colophon इति श्री कुदकुंदाचार्य विरचितं शीलप्रामृतं समाप्तम् । सवत् १७८५ वर्षे बैशाखमासे शुक्लपक्षे तिथौ द्वादशी १२ मगलवार श्रीराम ।

११७३ षट्पाहुड

Opening : देखें, क० ११७२ ।

Closing : एवं जिण पण्णत्त मोक्खस्स य पाहुडं सुभत्तीए ।
जो पढइ सुणइ भावइ सो पावइ सासयं सुक्खं ।।

Colophon : इति श्री कुन्दकुदाचार्यविरचित मोक्ष-पाहुड षष्ठ समाप्तम् ।

११७४. षट्लेश्याभेद

Opening : कृष्ण नील कापोतले पीत पदम सुक जान ।
सुभ असुभ जु कर्म के ए षट् भेद बखान ॥

Closing : यह षट् विध लेश्या कही सुनौ भविक दे कांन ।
असुभ जांन निर वारियै भैरो कही बयान ॥

Colophon : इति श्री षट् लेश्या आरती ।

११७५. सामायिक

Opening : देखें क्र० ११३६ ।

Closing : देखे, क्र० ११३६ ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

११७६ सामायिक

Opening : पडिक्कमामि भते इरिया वहियाणं विराहणाए अणागुत्ते अइगमणे ।

Closing : गुरुवः पातु वो नित्य ···· मोक्षमार्गोपदेशका ।

Colophon : इति सामायिक समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ३६५ ।

११७७. सामायिक

Opening : देखें—क्र० ११७६ ।

Closing : देखे—क्र० ११७६ ।

Colophon : इति सामायिकम् ।

११७८. सामयिक

Opening : देखें, क्र० ११३६ ।

Closing : देखें—क्र० ११३६ ।

Colophon : इति लघु सामायिक सपूर्ण । जाप्य १०८ दीजे ।

११७९. सामायिक

Opening : नमः श्रीवर्द्धमानाय निर्द्धूतकलिलात्मने ।
सालोकानां त्रिलोकाना यद्विद्यादर्पणायते ॥१॥

Closing : अथय पौर्वाह्निकदेववंदनायां पूर्वाचार्यानुक्रमेण,
सकलकर्मक्षयार्थं भावपूजावंदनास्तवसमेतम् ।

Colophon : इति लघुसामायिकसंपूर्णम् ।

११८०. सापाचार

Opening : वंदौ देव युगादि जिन, गुरु गणधर के पाय ।
सुमरू देवी सारदा, रिद्ध सिद्ध वरदाय ॥१॥

Closing : मगल भगवान वीरो मगल गौतमो गणी ।
मंगलं कुंदकुंदाद्यो, जैनधर्मोस्तु मगलम् ॥

Clolophon : इति सापाचार जिनमत की सपूर्णम् ।

११८१. साततत्त्व

Opening : जीव ।१। अजीव ।२। आस्रव ।३। बंध ।४। संवर ।५।
निर्ज्जरा ।६। मोक्ष ।७। एहि सात तत्त्व है इनमै पुन्य और
पाप मिलिके नौ पदारथ कहिए हैं ।

Closing : इस पाप का सरूप विचार कर कै त्यागनां जोग है। एही नौ पदारथ समान रूप कहा। विशेष .... निर्वर्त होय है ।१।।

Colophon : इति श्री सातत्तत्व नव पदार्थ की चरचा संक्षेप मात्र जनाया है सो संपूर्णम्। शुभं भवतु।

११८२. सिद्धान्तसार

Opening : तीन जगतपति जिनको धर्मराज के नायक शिवसुखदायक हैं।
इस पंचगुरु कौं प्रणाम करि कै आवै भवन उदधिकौं कथन
सुनौं भाषु अवै ।।१।।

Closing : जे इह मध्य सुलोक विषै जिनराज के मंदिर है अखखण्डन।
श्री निर्वाण सुभूमि जहां न समोक्ष भये करिकर्म विखण्डन।
जेइ सर्वज्ञकी अनजाणये सबको करि भूषित आनन।
ते इथ सायक देहु मुझै करि जोरि करो सबको नित वंदन ।२५।।

Colophon : इति श्री सिद्धान्तसार दीपक महाग्रंथे भट्टारक श्री सकलकीर्ति प्रणीतानुसारेण नथमलकृत भाषायां मध्यलोक वर्णनोनाम दसमोध्यायाधिकार ।।१०।।

११८३. सिंदूर-प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : सोभित तप गजराज सीस सिंदूर पूरब विवोध।
.... - बनारसि जोरि कर ।।

Closing : सोरह सै इक्यानवैं रितु ग्रीष्म वैशाष।
सोमवार एकादशी कर नक्षत्र सितपाष ।।३।।
नामसुक्तिमुक्तावली द्वाविंशति अधिकार।
शतसि लोक परवान सब इति ग्रंथ विस्तार ।।४।।

Colophon : इति श्री सिंदूरप्रकरण सुक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ समाप्तम् । संवत् १८०३ वैशाख सुदी १४ बृहस्पतिवासरे लिखित यति लालचन्द पठनार्थं लाला मोवरधमदासजी ।

विशेष — दि० जि० ग्र० र०, के अनुसार इसके लेखक सोमप्रभाचार्य है तथा टीकाकार हर्षकीर्ति है ।

११८४. सिन्दूर-प्रकरण

Opening : सिंदूरप्रकरस्तपकरि ···· ··· ···· पार्श्वप्रभो पातु वः ।

Closing : किं जानै बहुभिः करोति हरिणी ···· ··· यानिर्भयौ ॥

Colophon : इति सिंदूरप्रकरणम् सम्पूर्णम् । लिखितं पंडित परमानन्देन मिति चैत्र कृष्णे पञ्चम्यां शुक्रवासरे रात्रौ श्री जिनचैत्यालये संवत्सर १९२८ का । शुभं भूयात् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५२६ ।

११८५. सिंदूर प्रकरण (सूक्तिमुक्तावली)

Opening : देखें क्र० ११८३ ।

Closing : देखें, क्र० ११८३ ।

Colophon : इति सिन्दूरप्रकरण सूक्तिमुक्तावलीनाम ग्रंथ सम्पूर्णम् ।

११८६. शीलव्रत

Opening : समजुगीय चतुर — ··· ··· परनारिसौं ॥१॥

Closing : सौयन्न गुण कहणकौ ···· ···· वषानै ॥

Colophon : इति श्री सील कथा समाप्तम् ।

११८७. श्रावकाचार

Opening : राजत केवलज्ञान · — सहज सुभाय ॥१॥

Closing : ···· एक सर्वज्ञ वीतराग का वचन ताते तू अंगीकार। कर और ताके अनुसार देवगुरुधर्म का सरूप अंगीकार कर श्रद्धान कर।

Colophon : इति कुदेवादि का वरनन संपूर्ण। इति श्रावकाचार ग्रंथ संपूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३८३।

११८८ श्रावक प्रतिक्रमण

Opening : जीवप्रमादजनिता: प्रचुरा:प्रदोषा,
यस्मात्प्रतिक्रमणत. प्रलय प्रयांति।
तस्मात्तदर्थममलं मुनिबोधनार्थम्,
वक्ष्ये विचित्रभवकर्मविशोधनार्थम्।।

Closing : अक्खरपयत्थहीणं मत्ताहीणं च जं मए भणियं।
तं खमंउ ···· दुक्खक्खयं दितु।।

Colophon : श्रावकप्रतिक्रमणं समाप्तम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३७९।

११८९. श्रावक प्रतिष्ठाक्रमापण

Opening : देखें, क० ११८८।

Closing : देखें क० ११८८।

Colophon : इति श्रावकप्रतिक्रमापणम्।

११९०. श्रावक व्रतसंध्या

Opening : अपवित्र: पवित्रो ······ ··· मुच्यते।।

Closing : श्रीमत्सिद्धजिनं प्रणमामि सततं ज्ञानामृतं भूषणम् ।
बदे श्री जिनसेवकं प्रतिदिनं संध्या त्रिकाल कुरु ।।

Colophon : इति श्री संध्या सपूर्णम् ।

११६१. श्रावकव्रतसंध्या

Opening : देखें, क्र० ११६० ।

Closing : देखें, क्र० ११६० ।

Colophon : इति जैनसंध्या सपूर्णम् ।

११६२. श्रावकव्रतविधान

Opening : बारां व्रत श्रावग तने, तिनको कहूं बखान ।
जो जिय निहचै चित्त धरै ताको होय कल्यान ।।१ ।

Closing : वरत जु बारै इम कहै, सुनो भविक दे कान ।
सो निहचै धर पालीयो भैरों कहै बखान ।।

Colophon : इति श्रावक व्रत समाप्तम् ।

११६३. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्धं मन धरसंन, उदघाटै जुगपाट तुरंत ।
बर बार भरम भजिगयो, पुन्यहि फलतै दरसनभयो ।

Closing : तीर्थङ्कर वंदौ जिनदेव सीसनवाय करौपद सेव ।
शुद्धभाव जाके मन भयो सम्यक्दृष्टि मुकतहि गयो ।।

Colophon : इति श्रीपालदर्शन सम्पूर्णम् ।

११६४. श्रीपालदर्शन

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क० ११६३ ।
Colophon : इति श्रीपाल बरसन सम्पूर्णम् ।

१९६५. सुदृष्टि तरंगिणी

Opening : जैसे जे मुनि सम्यक महीत चारित्र के धारक थे सो कोई कर्म की ओरा वरी तै मोह की प्रबलता करि सम्यक राजपद छूटि गया हो ... ।

Closing : आगे अक्षर ज्ञान कहीए है सो उह प्रजाय समास के अन्तभेद में एक भेद और मिलाइए तब अक्षर ज्ञान है सो यह अर्थाक्षर नाम ज्ञान है सो ए सर्व श्रुतिज्ञान के संक्षेप मैं माम यह अक्षर ज्ञान है ।

Colophon : नहीं है ।

११९६. तत्वसार

Opening : आणग्गिदड्ढकम्मे णिम्मलसुविसुद्धलद्धसब्भावे ।
णमिऊण परमसिद्धे सुतच्चसार पवोच्छामि ॥

Closing : सोऊण तच्चसारं रइयं मुणिणाहदेवसेणेण ।
जो सद्दिट्ठी भावइ सो पावइ सासय सोक्खं ॥

Colophon : इति तत्वसार समाप्त: ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ३९१ ।

११९७. तत्वार्थसूत्र

Opening : त्रैकाल्य द्रव्यषट्क ... ... सर्वः शुद्धदृष्टिः ॥

Closing : तवयणं वयधरणं ... ... निवारेइ ॥

Colophon : इति दशाध्याय सूत्र उमास्वामी कृत सपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४०४ ।

११६८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें --क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० ११६७ ।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र संपूर्णम् ।

११६६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।

Closing : तत्वार्थसूत्रकर्त्तारं ... उमास्वामीमुनीश्वरम् ॥

Colophon : इति उमास्वामिकृत तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।

१२००. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।

Closing : ... ...धर्मास्तिकायाभावात् ॥८॥ क्षेत्रकालगतिलिङ्गतीर्थचारित्र-प्रत्येकबुद्धबोधितज्ञानावगाहनांतरसंख्या ।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमो मोक्षशास्त्रे दशमोऽध्याय. ।

१२०१. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।

Closing : देखें, क्र० ११९९।

Colophon : इति श्री तत्वार्थ उमास्वामीकृत सूत्र जी समाप्तम्। संवत् १९२७ मीति भाद्रपद कृष्ण पक्ष।४। चद्रवासरे लिखितं नीलकंठ व्यासशर्माऽहं। श्रीकृष्णाय नमः।

१२०२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : मोक्षमार्गस्य नेतारं भेत्तारंकर्मभूभृताम्।
ज्ञातार विश्वतत्त्वानां वन्दे तद्गुणलब्धये॥

Closing : देखे क्र० ११९७।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र समाप्त.।

१२०३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७।

Closing : देखे, क्र० ११९९।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे सूत्र समाप्तम्।

१२०४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७।

Closing : देखें, क्र० १२०१।

Colophon : इति तत्वार्थसूत्र सम्पूर्णः।

१२०५. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे क्र० ११९७।

Closing : तपश्चरण करिबो, व्रत धरिबो, संयम शरणको करिबो ....
.... चतुरगति के दुख ते छूटे।

Colophon : इति समाप्ता।

१२०६. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० ११६७।
Closing : देखे, क्र० ११६७।
Colophon : इति।

१२०७. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७।
Closing : देखें, क्र० १२०५।
Colophon : नहीं है।

१२०८. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र०, ११६७।
Closing : अरिहंतभासियत्थं गणहरदेवेहिं गंथियं सम्मं।
पणमामि भत्तिजुत्तो सुदणाणमहोवहं सिरसा।
Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१२०९. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७।
Closing : णवमे संवरणिज्जरं दसमे मोक्खं वियाणेहि।
इय सत्ततच्चभणियं, दहसुत्ते मुणिंदेहि ॥६॥

Colophon : इति श्री उमास्वामि विरचितं तत्वार्थसूत्र समाप्तम् ।
संवत्सर १६३७ । मिति माघ वदी १२ वार वृहस्पति । इति ।

१२१०. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।
Closing : देखे, क्र० १२०५ ।
Colophon : नहीं है ।

१२११. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।
Closing : देखें, क्र० ११६६ ।
Colophon : इति श्री दशाध्यायसूत्र उमास्वामीकृत सम्पूर्णम् ।

१२१२. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखे, क्र० १२०२ ।
Closing : देखें, क्र० १२०० ।
Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्र दशमोऽध्याय. समाप्त: ।।

१२१३. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११९७ ।
Closing : देखें, क्र० १२०० ।
Colophon : इति तत्वार्थधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्याय: समाप्त: ।

१२१४. तत्त्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० ११६७ ।

Closing : देखे, क्र० ११६७।

Colophon : इति सूत्रदशाध्याय समाप्तम्। श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ ८ भोमवासरे, संवत् १६५५ श्रीरस्तु।

१२१५. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें, क्र० १२०२।

Closing : पढमे पढम णियमा विदिए विदियं च मव्वकालम्मि।
अपुणु खाईयमम्मं जम्मि जिणा तम्मि कालम्मि।

Colophon : इति तत्वार्थाधिगमे मोक्षशास्त्रे दशमोध्यायः समाप्तः। श्री पटणा-मध्ये साहुव विलदाश तस्य पुत्र साहुभगवतिदास तस्य पुत्र आलम-चन्द पठनाय सम्वत् १७७२ वर्ष कार्तिक कृष्ण नवमी तिथौ सोम दिने सम्पूर्णम्।

१२१६. तत्वार्थसूत्र

Opening : देखें क्र० ११६७।

Closing : देखे, क्र० १२०५।

Colophon : इति श्री समाप्तः।

१२१७. तत्वार्थसूत्र वचनिका

Opening : श्री वृषभादि जिनेश्वर अंत नाम शुभवीर।
मनवचकाय विशुद्ध करि बंदौं परम शरीर।

Closing : समयसार अध्यातमसार प्रवचनसार रहसि मनधार।
पंचास्तिकाया ए जीम, नाटकत्रयी कहावै पीम।
तैत्वारथ सूत्तर की टीका, सर्वारथसिद्धि नाम सुठीक
दूजीन तत्वारथ वार्तिक श्लोकरूप वार्तिक तार्तिक।

Colophon : नहीं है ।

१२१८. त्रेपनक्रिया

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रंथ एक गुटका है जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के पत्र भी अपठनीय हैं ।

१२१९. त्रेपनक्रिया

Opening : जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
... ... सव्वसाहूणं ।

Closing : अस्पस्ट ।

Colophon : अस्पप्ट ।

१२२०. त्रिकाल चतुर्विशति

Opening : निर्व्वाण जी ।१। सागरजी ।२। महासाधु जी ।३। विमल प्रभु जी ।४। सुद्धाय जी ।५। श्रीधर जी ।६। श्रीदत्त जी ।७। अमलप्रभ जी ।८।

Closing : कंदर्प्प जी ।२०। जयनाथ जी ।२१। श्री विमल जी ।२२। दिव्य-वाद जी ।२३। अनंतवीर्यजी ।२६।

Colophon : इति त्रिकाल चतुर्विसति का नाम संपूर्णम् ।

१२२१. त्रिवर्णाचार

Opening : त्रैलोक्ययात्रां चरितुं प्रवीणा धर्मार्थकामा प्रभवंति यस्याः ।
प्रसादतो वर्त्तत एव लोके सारस्वति सा वरतात्मनोद्वे ॥१॥

Closing : सारस्वत्या प्रसादेन काव्य कुर्वन्ति पंडिता ।
ततस्सैषा समाराध्या भक्त्या शास्त्रे सरस्वति ॥

Colophon : इत्यार्षे श्रीमद्भगवन्मुखारविंदविनिर्गते श्रीगौतमर्षिपादपद्माराधकेन श्री जिनसेनाचार्येन विरचिते त्रिवर्णाचारे उपासकाध्ययनसारोद्धारे ग्रहिधर्मदेवपूजा निरूपणीयोनाम पंचमं पर्व्वः ।

१२२२. त्रिलोकसार

Opening : त्रिभुवनसार अपार गुन गायक ··· ·· ।
··· ··· श्री अरहंत महंत ॥१॥

Closing : सुखनाम निराकुलता का है । निराकुलता वीतराग भावनितै हो है । तातै परम वीतराग भावरूप शुद्धात्म रूप जनित परम आनद की प्राप्ति करहु ।

Colophon : इति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ४२७ ।

१२२३. वचनिका

Opening : वदों श्री वृषभादि जिनधर्मतीर्थकरतार ।
नम जासपद इंद्रसत शिवमारग रुचिधार ॥१॥

Closing : हे करुणानिधान मेरी रक्षा करहु । तब भगवान कहते भये । हे राम शोक न करि, तूचल देव हैकै एक दिन वासुदेव सहित इन्द्र की नाई पृथ्वी का राज करि । जिनेश्वर का व्रत धरि ।

Colophon : नहीं है ।

१२२४. वैराग पचीसी

Opening : रागादिक दोषन तजै, वैरागी जो देव ।
मन वचसीसनवाय के,कीजै तिनकी सेव ॥

Closing : एक मात पंचास मैं सब बर सुखकार ।
पोष सुकल तिथि धर्म , जै जै निमपतिवार ॥

Colophon : इति श्री बैराग्य पचीसी सम्पूर्ण ।

१२२५. योग

Opening : यह आत्मा संसार अवस्था में जीवात्मा कहावें है और जब यह ही अपनी अंतरंग बाह्य स्वरूप द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव रूप सकल सामग्री के पावैं है ।

Closing : माल आदि दश ध्यान मैं ध्येय थापि मन लाए ।
प्रत्याहार जु धारणा यह ध्यान विधिसार ॥१॥

Colophon : इति श्री शुभचन्द्र आचार्य विरचित योगम् ।

१२२६. योगीरासा

Opening : आदि पुरुष युग आदि ··· ··· आदि जती आदि नाथो ।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ । जय जय जय जगनाथो

Closing : योगीरासा सीखो रे श्रावक दोन न कोई लीजै ।
जिणदास त्रिविध करि जंपई सिद्धह् सुमिरण कीजई ।

Colophon : इति योगी रासा सम्पूर्णम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ० ४२ ।

१२२७. अक्षर बत्तीसी

Opening : कहे करम बस कीजै, कनक कामिनी दृष्टि न दीजै ॥

Closing : यह अक्षर बत्तीसिका रची भगवती दास ।
बाल ख्याल कीनौ कछु लही आतम परगास ॥

Colophon : इति अक्षर बत्तीमी सम्पूर्णम् ।

१२२८. अक्षर बावनी

Opening : ॐ मु अलष परब्रह्म को धरौ सदाचित ध्यान ।
जा प्रमाद निहचै मनुज होत सुकृत को थांन ॥१॥

Closing : हरष होत प्रभू दरस तैं लहत अनेक अनंद ।
लक्ष्मी चंद्र समांन जस सुविध सीस सुखचद ॥४५४॥

Colophon : इति श्री अक्षर बावणी जी समाप्तम् ।

१२२९. अन्यमत श्लोक

Opening : अहिंसा सत्यम-तेय त्यागो मै [illegible] त्ववर्ज्जनम्
पञ्चस्वेतेषु धर्म्मेषु सर्वे धर्मा प्रतिष्ठिता ॥१॥

Closing : अनुदिने नभसा देवस्य महर्षयो माहर्षिभि जुहेया जनकस्य
जतस्य सायणा रक्षा भवतु शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु वृद्धिर्भवतु
स्वस्तिर्भवतु श्रद्धाभवतु ...... ॥

Colophon : नहीं है ।

१२३०. अठाईरासा

Opening : वरत अढाई जे करै ते पावै भवपार प्राणी ।
जंवूद्वीप सुहावणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : मन वच काया जे पढैं ते पावै भवपार ।
विनयकीरत सुवम्‌ मनै जनम सफल संसार प्राणी ॥

Colophon इति श्री अढाई रासजी समाप्तम् ।

१२३१. अढाईरासा

Opening : देखें, क्र० १२३० ।

Closing : देखें, क्र० १२३० ।

Colophon : इति अढाई पूजा रासौ संपूर्णम् । शुभं भवतु ।

१२३२. बारहमासा

Opening : विनवे उग्रसेन की लाडिली .... समुझावहु मोहि ये हे सगरी ॥१॥

Closing : बारह मास पूरे भये .. प्रति उत्तर लाल विनोदि गाई ।

Colophon : इति बारहमासा समाप्तम् ।

१२३३. बारहमासा

Opening : देखे—क्र० १२३२ ।

Closing : देखें—क्र० १२३२ ।

Colophon : इति श्री बारहमासा जी समाप्तम् ।

१२३४. चंद्रशतक

Opening : अनुभौ अभ्यास मैं निवास शुद्ध चेतन कौ,
अनुभौ सरूप शुद्धबोध कौ प्रकाश है ।
अनुभौ अनूप रूप रहत अनंत ग्यान,
अनुभौ अतीत त्याग ग्यांन सुख रास है ।
अनुभौ अपार सार आपही कौ आप जानै
आपही मैं व्यापदीसै जामैं जड़ नास है ।

अनुभौ अरूप है सरूप चिदानन्द चंद,
अनुभौ अतीत आठ कर्म सौ अफास है ॥१॥

Closing : गुण ठांणौ मिथ्यात अवृत तन छुटै च्यारगत
सासादन गुण थान नरक तजि होई तीन रत।
मिश्र षीन संजोग तहां जीव मरहि न कोई
मुनि अजोग गुन थान छुटै प्रगटै सिव सोई
सपत सेष गुण थे छुटै एक गत देव की
कह्यो अरथ गुरु ग्रंथ मै सति वचन जिन सेवकी ॥

Colophon : इति श्री चंदशतक समाप्तम्।

१२३५. चर्चाशतक

Opening : जै सरवग्य अलोक लोक इक अंड्वत देषै।
हसतामल ज्यों हाथ लीक ज्यौं सरव विशेषै।
छदों हर्वं गुणपरज काल त्रय वर्तमान सम।
दर्पण जेम प्रकाश नाश मल कर्म महातम।
परमेष्ठी पांचो विघनहर मंगलकारी लोक मैं।
मन वच काय सिरनायभुव आणंद सौं द्यौ द्योक मैं ॥१॥

Closing : चरचा मुख सो भनै सुनै प्रानी जहि कानन।
केई सुनै धरि जाहि नांहि भाषै फिरि आनन।
तिनि को लखि उपगार सार यह सतक बनाई।
पढ़त सुनत ह्वै बुद्ध सुद्ध जिनवानी गाई।
इसमे अनेक सिद्धान्तकौ मथन कथन द्यानत कहा।
सब मांहि जीवकौ नाम है जीव भाव हम सरदहा ॥१०४॥

Colophon : इतिं चरचा शतक समाप्तम्।

१२३६. चौबोल पचीसी

Opening : दरब षेत अरुकाल भाव दरव षट तत्त नव।
ग्यायक दीनदयाल सो अरिहंत नमो सदा।

Closing : कवित्त बनाए साधनि सुनाए मन आए गाए गुन ग्यान ।
चरचा कूप अनूपम बानी हंसभूप चिद्रूप निसान ।
गोमटसार धार द्यानत मैं कारन जीव तत्व सरधान ।
अक्षर अरथ अमिल जो देखौ लेखौ सुद्ध छिमां उर आंन ।।२५।।

Colophon : इति दरब चौबोल पचीसी संपूर्णम् ।

१२३७. दसबोल पचीसी

Opening : छप्पय—एक सरूप अभेद दोय ······ ··· ।
·· ··· जिह तिह विध भवजल तरौ ।।१।।

Closing : वृषभसेन गुणसेन ·· — ··· यह पुद्गलमरजायहै ।।२५। ।

Colophon : इति दसबोल पचीसी सपूर्णम् ।

१२३८. दसबोल पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२३७ ।

Closing : देखे, क्र० १२३७ ।

Colophon इति दसबोल पचीसी सम्पूर्णम् ।

१२३९. दशथान चौबीसी

Opening : रिषभदेव रिषभदेव छीर गंभीर धीर धुनि ।
चार बीस जगदीश ईश ते ईस दुगुन गुन ।
सुरग ठांम निज माम मातपुरतात वरन तन ।
आय काय सुभचिह्न मुकुत आसन दस वरनन ।

जसगाय पुन्न उपजाय बुद्ध पाय करो मंगल अमर ।
सिरनाय नमौं जुग जोर कर भो जिनद भो तापहर ॥१॥

Closing : जै जै मल्ल ब्रह्मचरिज अटल बल सकल बनाए ।
एक एक जिन स्वांम नाम दस दस गुन गाए ।
सुनत सुनत चित चुनत धुनत दुख संतत प्रानी ।
धानतराय उपाय गाय जिन पाय कहानी ।
गद जनम जरामृत नहि मग एक उघदविगर ।
सिरनाय नमौ जुग जोरि कर भो जिनद भो तापहुर ॥३०॥

Colophon : इति श्री दसथान चौवीसी सपूर्णम् ।

१२४०. ढालगण

Opening : देव धरम गुरु वंदिके कहूं ढाल गण सार ।
जा अवलोके बुद्धि उर उपजे सुभ करतार ॥१॥

Closing : अव जनमैं नाही या भवमाही सवके साईं सवजानी ।
तुमको जो ध्यावैं तुमपद पावैं कवी कहावैं अधिकानी ॥६२॥

Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१२४१. ढालगण

Opening : देखें, क्र० १२४० ।

Closing : देखें, क्र० १२४० ।

Colophon : इति श्री ढालगण सम्पूर्णम् ।

१२४२. दोहा

Opening : अपनौ पद न विचार कैं अहो जगत के राइ ।
भववन छाय कहा रहे सिवपुर सुधि विसराइ ॥१॥

Closing : रूपचंद सद्गुरुनिको, जनु बलिहारी जाइ ।
आपुन वे सिवपुर गए, भव्यनु पंथ दिखाई ॥१०१॥

Colophon : इति श्री पंडित रूपचंद विरचिते दोहरा परमारथी समाप्ता ।
शुभं भवतु ।

१२४३. दोहावली

Opening : जिनके वचन विनोदते प्रगटे शिवपुर राह ।
ते जिनेंद्र मंगल करो नितप्रति नयो उछाह ॥१॥

Closing : जो सम्यक्त सहित .... सोना और सुगन्ध ॥

Colophon : नहीं है ।

देखे, जै सि० भ० ग्र० I, क्र० ५०८ ।

१२४४. दोहावली

Opening : देखे, क्र० १२४३ ।

Closing : देखे, क्र० १२४३ ।

Colophon : नही है ।

विशेष— चार जगह दोहावली शीर्षक देकर दोहे लिखें गये हैं । चारो में चार-चार पत्र हैं जिनमें एक समान दोहे दिये गये है ।

१२४५. दोहावली

Opening : देखे, क्र० १२४३ ।

Closing : देखें, क्र० १२४३ ।

Colophon : नहीं है ।

१२४६. द्विपञ्चाशतिका

Opening : अतिसूछिम करि ... . लेपये छांनियें ॥२२॥

Closing : बावन कवित एतौ मेरी मतिमान लए।
हंस के सुभाइ ग्याता गुण गहि लीजियो ॥४५२॥

Colophon : इति श्री बनारसीदास नामांकित द्विपंचाशतिका समाप्ता।

१२४७. फुटकर-काव्य

Opening : अब हम देव का सरूप जिन सिद्धान्त के अनुसार वर्णन करते हैं सो सर्व सभासद सज्जन महासयो कूं श्रद्धान करण योग्य है।१॥

Closing : देहे निर्ममता गुरौ विनयता नित्यं श्रुताश्यासता।
चारित्रोज्वलतामहोपशमता संसारनिर्वेदता ... .. ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१२४८. ज्ञानसूर्योदयनाटक

Opening : अनाद्यनतरूपाय पंचवर्णात्ममूर्त्तये।
अनंतमहिमाप्राप्त सदाकार: नमोस्तु ते ॥१॥

Closing : अस्पष्ट।

Colophon : इति श्रीवादिचंद्र आचार्यकृत श्री ज्ञानसूर्योदयनाटक सपूर्णम् श्री पाठकानां शुभ भूयात्। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु लिखित पंडित परमानंदेन मिति माघ कृष्ण तिथौ तृतीयायां रविवासरे संवत् १९२८ का लक्ष्मणपुरसमीपे पैतुरनगरे जिन चैत्यालये।

देखे, रा० सू० III, क्र० ८६।

१२४९. जैन-रासौ

Opening : अर्हंता छियाला सिद्धा अट्ठे सूर छतीसा।
उवझाया पणवीसा अट्ठाईसा हवेई साहूणं ॥

Closing : जे नर आप घात कर मरी होइ तिरजंच चिहूं गति फिरी ।
संसारा दुख भोगवी दिख आपु धनुरी थाई .... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

रा० सू० III, पृ० १४१,

१२५०. जकड़ी

Opening : अब मन मेरे वे सुनि सुनि सिख सयानी ।
जिनवर चरनो वे करि करि प्रीत सज्यानी ॥

Closing : धन्य धन्य सतगुर के नायक सब सुखदायक तिहुंपन में ।
जिन सो समझ परी सब भूदर सदा सरन इस भाव वन में ॥

Colophon : इति सिस्य जकड़ी संपूर्णम् ।

१२५१. जोगीरासो

Opening : आदि पुरुष जो आदिज गोसमु, आदि जति आदिनाथो ।
आदि जगत गुरु जोग पयासिउ जय जय जय जगनाथो ॥

Closing : योगीय रसौ सिखहु रे श्रावग दोसुण को लीजै ।
जो जीनदास हंत्रि विधि हिए सिद्धह सुमिरणु कीजै ॥४२॥

Colophon : इति जोगीरासु समाप्ता ।

रा० सू० III, पृ० १६५ ।

१२५२. कवित्त

श्री जिनराज गरीबनेवाज सुधारन काज सबै सुखदाई ।
दीनदयाल बड़े प्रतिपाल दया गुनमाल सदा सिरनाई ॥
दुरगति टारन पाप निवारन हो भवतारन की भवताई ।
बारंबार पुकार करौ जन की विनती सुनिए जिनराई ॥

Colsing : हो दीनबन्धु श्री पति करुना निधान जी।
ये मेरि विथा क्यो न हरो वार क्यों लगी ॥

Colophon : इति।

१२५३. कवित्त

Opening : श्री जिनवर के नाम की महिमा अगम अपार।
धरि प्रतीति जे जपत हैं सफल करत अवतार ॥१॥

Closing : अद्भुत अतिसै तुम धरै वीतराग निज लीन।
पूज्यक सहिजै उब्वर्है निंदक सहिजै लीन ॥६॥

Colophon : इति सम्पूर्णम्।

१२५४. कवित्त

Opening : भो जल मांहि भरयो चिरजीव सदीव अतीत भव स्थिति गाठी।
राग विरोध विमोह उदैव सुकर्म्म प्रकृति लगी अति गाठी।
पेच पर्यो दिढ पुग्गल सो इह भाँति सही बडी आपद गाठी।
सम्यक् ध्यांन भज्यो जबही तबही सबकर्मनि की जड़काठी ॥

Closing : कहै वेदवके कहूं आप मुनि वेके कहूं आप जो जायकै
कहूँ इष्ट कहूं मित्र है।
कहूँ जोग विधि जोगी, कहूँ राज रस भोगी कहूँ वैद कहूँ रोगी
कहूं कटक कहै मिष्ट है।
कहूं लता के छाया कहूं फूल के फूल्यो कहु भौर कै भल्यो कहूं
रूपके दिखाए है।
सकल निवासी अविनासी सर्वभूत वासी गुपत प्रगासी आपै
सिख आपै सिष्ट है।

Colophon : इति कवित्त।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५०६।

१२५५. कृपणपचीसी

Opening : एक समदेहरा में पंचसब जुरे हुते संघ इनवात जिहाँ जातकी चलाई है ।
चालो भले गिरिनारि नेमनाथ परिस्येबेकों जनम सफल तिहा कीर्ति बढ़ाई है ।।
तहाँ एक बैठी हुती किरपण पुरिषनार उने सुनी बात आंनि घर में चलाई है ।
सुनि हो पियारे पिउ जोथारे आवै जितु हमैं नुमे दोउ बोलो वली वन आई है ।।१।।

Closing : कहे लालविनोदी भव सुनो धन पाय जस लीजिये ।
करिजाज प्रतिष्ठा जग्य जिनसुदान सुपात्रा दीजिये ।।

Colophon : इति श्री कृपणपचीसी समाप्तम् ।

१२५६. मालपचीसी

Opening : सुरलोकासमुतीर्थ्या सौधर्मेण निर्मिता ।
माघे चैत्रे वृहद्द्वारे मर्थ्यमाला प्रतिष्ठिते ।।१।।

Closing : माला श्री जिनराज की पावै पुन्य संजोग ।
जस प्रगटै कीरति बढै धन्य कहै सब लोग ।।३६।।

Colophon : इति मालपचीसी ।

१२५७. नाममाला

Opening : तं नमामि पर परमगुरु कृष्ण कवल दल नैन ।
जग कारन करूना निधे गोकुल जाको अैन ।।१।।

Closing : जमल जुगल जुग द्वंद्व है, उभय मिथुन विविधीय ।
जुगल किशोर सदा वसौ, नंददास के हीय ।।२५६।।

Colophon : इति श्री नंददासेन कृता मानमंजरी नाममाला संपूर्णम् । शुभम् अस्तु । पाठकस्य शुभं भूयात् । संवत् १८०६ । शाके १६७१ ॥ पौष वदि अष्टमी गुरुवासरे पुरैनिआं नगरे फतेहपुर ग्रामे श्री खेदु पाण्डेय पुस्तकमिदं लेखि ।

१२५८. नवरत्न-कवित्त

Opening : धन्वतरि छिपनकअमरघटकर्प्यवेताल ।
वररुचि-संकु-वराहमिहरकालिदासनवलाल ॥१॥

Closing : कुलवंत पुरुष कुलविधि तजै वधु न मानै वन्धु हित ।
सन्यास क्षरिधन संग्रहै ए जग में मूरख विदित ॥

Colophon : इति नवरत्न कवित्त समाप्त: ।

१२५६. नेमिचन्द्रिका

Opening : अस्पष्ट ।

Closing : अस्पष्ट ।

विशेष— यह ग्रंथ एक गुटका है, जो बहुत ही अस्पष्ट है । बीच के कुछ पत्र पढ़े जा सकते हैं ।

१२६०. नेमिचंद्रिका

Opening : आदिचरण हिरदै धरो, अजित चरणचित लाइ ।
संभव सुरत लगाइकै अभिनंदन मनु लाइ ॥१॥

Closing : तौ होई ब्याह को साज काज बहुविधि सो कीन्हो ।
देस देस प्रति नृपति सबनि को ... ... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२६१. नेमिचंद्रिका

Opening : देखें, क्र० १२६० ।

Closing : नेम चंद्रिका जे पढ़ै जाको पुन्य प्रकाश ।
आसकरन लघु वीनवै जिनवानी को दास ॥२१६॥

Colophon : इति नेमचंद्रिका संपूरन ।

१२६२. नेमिनाथ बारहमासा

Opening : देखें, क्र० १२३२ ।

Closing : देखें, क्र० १२३२ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ राजुलमती का बारहमासा प्रतीकुनर सपूर्णम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ०

१२६३. नेमिनाथ विवाह

Opening : एक समै जो समुद्र विजै द्वारका मह नेम को व्याह रचो है ।
गावत मगलचार वधू कुल मैं सपके जो उछाह मचो है ।
तेल चढावन को युवति अपने अपने कर थाल सच्यो है ।
नेग करें सब व्याहन को घर मंडप चित्र विचित्र खिंचो है ।

Closing : नेम कुमार ने जोग लियो दिन छप्पन लों छदमस्त रहो है ।
केवलज्ञान भयो प्रभु को तब आठविधु तम दांन मही है ।
सात सै वर्ष विहार कियो उपदेशते धर्म महा मही है ।
निर्वान गये गुनि पांच सै छप्पन लाल विनोदिक ने संग गही है ।

Colophon : इति श्री नेमिनाथ का व्याहुला समाप्तम् ।

देखे रा सू० III, पृ० ८४ ।

१२६४. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का व्याहुला सम्पुर्णम् ।

१२६५. नेमिनाथ विवाह

Opening : देखें, क्र० १२६३ ।

Closing : देखें, क्र० १२६३ ।

Colophon : इति श्री नेमनाथ का ब्याहुला समाप्त ।

१२६६. पखवारा

Opening : पडिवा पथम कला घटि जागी परम प्रतीत रोग रस पागी ।
प्रति प्रतिपदा प्रीत उपजावै वहै प्रतिपदा नाम कहावै ॥१॥

Closing : पून्यो पूरण ब्रह्म विलासी पूरण गुण पूरन परगासी ।
पूरण प्रभुता पूरण वासी कहै जती तुलसी वनवासी ॥

Colophon : इति पखवाराजी समाप्तम् ।

१२६७. परमार्थजकड़ी

Opening : अरहंत चरन चित ल्यावो, फुनि सिद्ध सिव कर ध्यावो ।
वंदौ जिन मुद्राधारी निर्ग्रंथ जती अविकारी ॥१॥

Closing : न अधाय यौं हीरमैं निस दिन ए कछि नहूँ ना चुकै ।
नहि रहै वरज्यो वरजदेख्यो बार बार तहां धुकै ।
श्री जिन सिद्धान्त सरोज सु दर ताहि मध्य लगाईए ।
रामकृष्ण इलाज याकी कीए एही सुख पाईए ॥८॥

Colophon : इति श्री रामकृत जकरी संपूर्णम् ।

देखे, रा० सू III, पृ० १३७ ।

१२६८. पिंगल

Opening : मुरलीधर श्रीधर सुकवि मानि महामन मोद ।
कवि विनोद मो यह कियो उत्तम छंद विनोद ॥१॥

Closing : रूपक घनाक्षरी में गुर लघु नियमन वतिस वरन वर रचिये चरन चारि ।
कीजै विसरामतित आठ आठ अक्षर पैं अंत एक लघु तो नियम करि करि धारि ।
या विधि सरस भाग गुण गुरु सेसनाग कीनो कविराजनि के काज बुद्धि कं विचारी ।।
भाषा सिंधु तरिवेको आधे छंद करिवेको पिंगल वनायो पढियै से सुद्ध कै सुगि ।।

Colophon : इति श्री कवि विनोद मुरलीधर श्रीधर कृतौ वर्नवृत्त परिच्छेदो-नाम पोडसमो विनोद ।

दोहा— धीरगा पत्या पत्य रस रस बसु ससिवामंक ।
सुभ भद्रा सित पक्ष दिण अगारक मतिवक ।।१।।

अपर च — तिथितनिदुभ पुनर्वसुवेला लाभ विराजु ।
राम सहाय लिखितमिद पिंगलग्रंथ सुमाजु ।।२।।
इति श्री पिंगल समाप्तम् । शुभम् अस्तु ।

१२६९. राजुल-पचीसी

Opennig : प्रथम सुमरौ अरिहंत देव ···· सो विनती करी ।।

Closing : यह लाल विनोदी गावै सुनत सब जन गहवरे
राजुलपति श्री नेमि जिन सब संघ कौं मंगल करे ।२६।।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी जी समाप्तम् ।

देखे, रा० सू० III, पृ० ८५, १३१, १४६ ।

१२७०. राजुल-पचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६९ ।

Closing : देखें, क्र० १२६९ ।

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूरन ।

१२७१. राजुल-पचीसी

Opening : सुनु भविजन हो प्रथम ही प्रथम जिनेन्द्र चरन चित ल्याइए ।
सुनु भविजन हो सारद गुरु हि मनाइ जादो राय गाईए ॥१॥

Closing : गावै विनोदीलाल हरषित भविक जनन सुनावई ।
और गावै नर नारी सोउ अमर पद पावई ॥२५॥

Colophon : इति राजुल पचीसी संपूर्णम् ।

१२७२. राजुलपचीसी

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे, क्र० १२६६ ।

Colophon : इति श्री राजुल पचीसी समाप्तम् ।

१२७३. राजुलपचीसी

Opening : वंदी वे प्रथमही ··· राजमति जस गाई सो जीवै ॥

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१२७४. रिस्ता

Opening : कीरो श्रीनायक तीनी हिए व्यापत है ।
तिहारे दर्शन ········· पाप नासत है ॥

Closing : गहे जिननाथ को — जागे है ॥

Colophon इति रेषता समाप्तः ।

१२७५. रिस्ता

Opening : मुझे है चाव दर्शन का निहारोगे तो क्या होगा ।
गही अब तो सरन तेरी उबारोगे तो क्या होगा ।।

Closing : हरो दुख मो समा अबही, लगा जू संग सारा है ।
प्रभु यह अरज चित्त धरियैं नवल वेरा तुम्हारा है ।

Colophon : इति रेषता । इति श्री पूजा जी की पोथी जी समाप्तम् । संवत् १८५३ शाके सत्रै सै अठारै आश्विन सुदी ६ वार बुद्ध कौ लिपकरी नजबगढ मध्ये पूज्य रिषि श्रीश्री पूज्य रिषि महाराज जी पेमारिष जी शिष्य हंसराज जी तत् शिष्य रामसुख लिखापितम् ।

१२७६. रिस्ता

Opening : मेरा मन महावीर सो लगा ।
खडे हाथ जोर के आए, दरस टुक दीजिए हमको ।
सरन है आज जिनवर का ।।१।।

Closing : एक बुरा कुगुर उपदेश सुणै मति माना ।
तेरी अलप उमर खिरि जाय नरक उठ जाना ।।

Colophon : इति समाप्तम् ।

१२७७. रूपचन्दशतक

Opening : अपनो पद न विचारहू, अहो जगत के राय ।
भव बन छाया कहा रहे, सिवपुर सुधि बिसराय ।।१।।

Closing : रूपचंद सद् गुरुनिकी जनु बलिहारी जाई ।
आपुन वे सिवपुरी गए, भव्यन पंथ दिखाई ।।१०७।।

Colophon : इति श्री पाण्डे रूपचंद शतक समाप्तम् ।

१२७८. सतसइया

Opening : श्री गुरनाथ प्रसादतैं होय मनोरथ सिद्ध ।।
— — ज्यौं तरू बेलि दल फूल फलन की वृद्धि ।।

Closing : आई अवधि विवेक की देखी कोन अनयाय ।।
काग कनक कै पीतरै हंस अनादर भाय ।।

Colophon : इतिश्री वृंदावन जी कृत सतसइया चैत्र शुक्ल १५ सवत् १६५३ गुरुवार आठ बजे रात्रि को आरामपुर मे बाबू अजित दास के पुत्र हरीदास ने लिखकर पूर्ण किया ।

विशेष--- डा० नेमिचन्द्र शास्त्री कृत तीर्थङ्कर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा नामक पुस्तक मे वृन्दावन की प्रवचनसार, तीस चौबीसी पाठ, चौबीसी पाठ, छन्दशतक, अर्हत्पाशाकेवली वृन्दावनविलास आदी ग्रथों का उल्लेख है लेकिन सतसइया का कोई उल्लेख नही है ।

१२७९. समकिताधिकार

Opening : श्री ॐकार हियइ धरी लहि सरसति सुपसाय ।
समकित गुण फल वर्णउं इह पर भवि सुखदाय ।।१।।

Closing : विजय दशमी श्री झूठापुर वर सघ सुकल सुखदाई जी ।
वाचक मानव दइ सुखदायक सुणता लील वधाई जी ।।

Colophon : इति समकिताधिकार श्री अरहदास मबन्ध. । सवत् १७०२ वर्षे भाद्रपद मासे शुक्लपक्षे दशम्या दिन गुरुवार लिखितं श्री काला कुन्है ग्रामे । शुभ भवतु न: सदा श्री । श्री ।

१२८०. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री जिनवर के पूजोपद सरस्वति सीस नवाय ।
गनधर मुनि के चरन नमि भाषा कहो बनाय ।।६।।

Closing : ब्यालीस मुनी अनागार । मुक्त गये जग के आधार ।।
पाहि कूट को हरस न करे । कोड उपवास तनो फलभरे ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८१. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : देखें, क्र० १२८२ ।

Closing : समोसरण मैं जायकै वंदे वीर जिनेन्द्र ।
अहो नाथ तुम दरसन तें कटै करम के फंद ।।८४

Colophon : नहीं है ।

१२८२. सम्मेदशिखर माहात्म्य

Opening : श्री संसेवित चरण कमल जुग सब सुख लाइक ।
श्री सिवलोक विलोक ज्ञानमय होत सुनाईक ।
अनमित सुख उद्योत कर्म्म वैरी घनघाइक ।
ज्ञान भान परगास पद सब सुखदाइक ।
ऐसैं महत अरिहंत जिनन्द निमि दिन भावसौ ।
पावौ प्रमाण अविचल सदन वीतराग गुन चावसौ ।।१।।

Closing : वीस हजार वरष बीतंत मानसीक तह असन करत ।
दस दुनि पखवारे गए पंरिमल सहि ... ... ।।

Colophon : Missing.

१२८३. शिखरमाहात्म्य

Opening : पंचगुरु को नमो दोकर सीसनवाय ।
श्री जिन भाषित भारती तांको लायो पाय ।।१।।

Closing : रेवा महर मनोग वसै श्रावग भव्य सव ।
आदित्य ऐश्वर्ययोग तृतीय पहर पूरण भयो ॥३७॥

Colophon : इति श्री सम्मेद शिखरमहात्म्ये लोहाचार्यानुसारेण भट्टारक श्री जगत्कीर्ति तच्छिष्य लालचंद विरचिते सुवरवरकूटवर्णनो नाम एकविंशतिम. सर्गः समाप्त· । सम्पूर्णमिति ।

दोहे — सम्वत् अष्टादश शतक वानवे अधिक सुजान ।
फाल्गुन कृष्ण अष्टमी बुधे पूरण भये गुणखान ॥ ॥
रघुनाथ दूज के लिखे भव्यन के धर्म काम ।
वाचै सुनै सद्‍दहै पावै सर्व सुखधाम ॥

१२८४. शिखरमाहात्म्य

Opening : अजिननाथ सिद्धवर कूट । अस्सी कोडि एक अरब चौवन लाख मुनि सिद्ध भयै बतीस कोटि उपास का फल इस कूट के दर्शन का फल है ।

Closing : पार्श्वनाथ सुवर्णभद्रकूट । सम्मेदशिखर सुवर्ण कूट ते पार्श्वनाथ जिनेंद्रादि मुनि एक करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ व्यालीस मुनि सिद्ध भये इस कूट के दर्शन ते सोरा करोड़ उपास का फल है ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१२८५. सोलहकारणरासा

Opening : वीर जिनेस्वर नमसकरी ··· ·· ··· जहाँ हेमप्रभ धन यसा ॥१॥

Closing : सकलकिरत ए रासा कीयौ ए सोलह कारण ।
पढ़ै गुणै जे संभलै तिण शिव सुहकारण ॥७॥

Colophon : इति सोलहकारण रासा जी समाप्तम् ।

१२८६. श्रुतपंचमीरासा

Opening : वरत अठाई जे करैं ते पावै भवपार प्राणी ।
जंबूद्वीप सुहामणो लष योजन विस्तार प्राणी ॥१॥

Closing : नरनारी जे रास सुणैं, मन वच रुचि गावहि ।
सुख संपति आणंद लहै, वछित फल पावहि ॥१०१॥

Colophon : इति श्रुतपंचमी रासा ।

विशेष—इसके साथ अठाई रासा भी है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५१६ ।

१२८७. श्रीपालदर्शन

Opening : ॐ नमः सिद्धे मनधर संत उदघाटे जुग पाट तुरन्त ।
उघटवार भरम भजि गयो पुण्य फलैं दरसन तुम भयो ॥१॥

Closing : विनुथुलैं सोहै प्रतिबिंब भवि जन प्रीति बाढै अनंद ।
अजघना ... . ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें, रा० सू० III, पृ० १४३ ।

१२८८. सुभाषितावली

Opening : पारात्सारं प्रवक्ष्यामि कथित ग्रथकोटिभिः ।
परोपकाराय पुण्याय पापाय परपीडनम् ॥१॥

Closing : मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत् ।
आत्मवत् सर्वभूतेषु पंडितं तद्विदो विदुः ॥

Colophon नहीं है ।

१२८९. बाहुबलि

Opening : दोऊ सूर महासुभट भरतबाहुबल वीर।
अति साज चले रण लरिबेकौं अतिधीर ।।

Closing : सत्रे सै बलहोत्तरै भादौ सुदि सुभवार।
सुकल पक्ष तेरस भनी गावै मंगल च्यार।

Colophon : इति श्री भरत बाहुबलि भाषा समाप्तम्।

१२९०. विवेक-जकड़ी

Opening : चेतन तेरो बानौ चेतन दानौ चेतन तेरी जाति बेवेही
हाते मति खोई जाति बिगोई रह्यो प्रमादनि भाति बेवेहो ।।

Closing : कुंदकुंद आचारज गुरुवयणहि मूरख बिनन सभालै।
आपन औगुण सहज सुनिर्मल जो जिनदास सुपालै ।।

Clolophon : इति विवेक जकरी।

१२९१. व्यवहारपचीसी

Opening : सम्यग् पदधारी तीनलोक अधिकारी क्रोध लोभ परिहारि ऐसौ महाराज है।
सबकौं समान गिना राग दोष भाव बिना नाही पास तिना सत्र-सी को सिरताज है।
ताही को बखान्यौ धर्म्म सोई सांच सोई पर्म और को कह्यो अधर्म झूठ को समाज है।
सिवपुर बाट के बटाउनि को संबल है सुख को दिवैयो महाकाज माहि नाज है ।।१।।

Closing : चाहत धन सतान ···· आननाहि बहे है ।।२६।।

Colophon : इति श्री व्यवहार पचीसी समाप्तम् ।

१२६२. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेंद्र धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य । यादृक् प्रभादिनकृतः प्रहतान्धकार तादृक्कुतोग्रहगणस्य विकाशनोपि ॥ ॥

Closing : श्री भक्तामरजी की महिमा बहुत भारी है भारी जानना यामे जेति सिद्धि अरु मंत्र है सो संपूर्ण सिद्धि मंत्र उपकार के वास्ते एक एक काव्य के एक-एक मत्र का थोडा-थोडा फल विध सुधा लिखा ऐसा जानना ।

Colophon : इति श्री भक्तामरनामा श्री आदिनाथ स्वामी का स्तोत्र श्री मानतुंगाचार्य विरचित समाप्त ।

१२६३. भक्तामरस्तोत्र-मंत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणामुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् । सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा वालवनं भवजले पतिता जनानाम् ।

Closing : ऋद्धि मंत्र जपिवा यंत्र पूजनात् अष्टोत्तरशत् जाप नित्य कीजै दिन ४९ सर्व वस होवें जिसको नामचिंतै सो वस होवै व्रत कीजै ॥४८॥

Colophon : कुछ नही है ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५५५ ।

१२६४. चौबीस-तीर्थंकर-मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्री चक्रेश्वरी अप्रतिचक्रे फुट विचक्राउरूभेईमवा सर्वशान्ति कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : अमोघ लक्ष्मी मिले ताज संग्राम व्यापार सर्वत्र जय होय
तथा वार ७ नित्य स्मरण करना सर्वकार्य सिद्धि होय ।।

Colophon : इति मंत्र सम्पूर्णम् ।

१२६५. गायत्रीमंत्र

Opening : ॐ भूर्भवः स्व तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमही धीयोयोनः प्रचोदयात् ।

Closing : भूतप्राणानामं प्रवर्तकेन तीर्थङ्करदेवेन वृषभसेनादिगौतमाते गणेशमहर्षिणा गायत्रीछंदसा गायत्रीसमाष्यनाऽनेन दिव्यमत्रेण त आदि ब्रह्माण तुष्टु दुरितिसंक्षेपेण ननु निरूपितः

Colophon : इति गायत्रीव्याख्या सम्पूर्णम् ।

१२६६. घंटाकर्णमंत्र

Opening : ॐ घंटाकर्णो महावीरः सर्वव्याधिविनाशका. ।
विस्फोटकभयं प्राप्ति रक्ष रक्ष महाबलः ।।१।।

Closing : नकाले मरणं तस्य न च सर्पेण डस्यते ।
अग्नि चोरभयं नास्ति ॐ ह्रीं श्री घंटाकर्णो नमोऽस्तुते ।।४।।

Colophon : इति घटाकर्ण मंत्र ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६५ ।

१२६७. घंकाकर्णमंत्र

Opening : देखें, क्र० १२६६ ।

Closing : देखे क्र० १२६६ ।

Colophon : इति घंटाकर्ण मंत्र ।

१२६८. होमविधि

Opening : श्री शांतिनाथममरासुरमर्त्यनाथ
भास्वति किरीटमणिदीधिति पादपद्मम् ।
त्रैलोक्यशांतिकरणं प्रणवं प्रणम्य
होमोत्सवाय कुसुमांजलिमुक्षपामि ॥

Closing : शांतिनाथं नमस्कृत्य सर्वविघ्नोपशांतये ।
सर्वभव्योपशांत्यर्थं होमायमुच्यते ॥

Colophon : इति होमविधानं सम्पूर्णम् ।

१२६९. जैनगायत्री

Opening : आनादिनिधनं मंत्र पचत्रिंशत् तदक्षरम् ।
पत्राक्षरमिति ब्रूयात् चतुर्दशमथापि च ॥३॥

Closing : अनादिनिधनो मंत्रो गायित्रीमंत्रसयुता ।
नित्य च जाप्यते योऽयं महामंगलदायकम् ॥१०॥

Colophon : इति श्री जैनगायित्री सम्पूर्णम् ।

१३००. जैनसंकल्प

Opening : ॐ यजमानाचार्यप्रभृतिभव्यजनानां स धर्मश्रावणाया-
रोग्येश्चार्याभिः वृद्धिरस्तु ··· — ··· ।

Closing : ···· ··· देवोहं अमुकमंत्रस्य सत्यष्टोत्तर ~ ··· अमुक
लाभाय जपं करिष्ये ।

Colophon : नहीं है ।

१३०१. जिनेन्द्र-स्तोत्र

Opening : ततो गंधकुटीमध्ये जिनेन्द्राय हररःमयीम् ।
पूजयामास गंधाद्यै रभिषेकपुरःसरम् ॥

Closing : लक्ष्मीवानभिषेकपूर्वकमसो श्रीवज्रजघो विभुः
द्वात्रिंशमुकुटप्रबंधमहितक्ष्माभृत् सह ··· ।

Colophon : इति स्तोत्र समाप्तम् ।

१३०२. कामदा-यंत्र

Opening : दिवाली के रात को लिखना भोजपत्र पर अष्टगन्ध सो
भुजा मे बाध राखै ।

Closing : अगर मिश्री घी इन सबकी धूप देय ।

Colophon : लिखतं मुन्नीलाल दिल्ली वाले ।

१३०३. क्रियाकाण्डमंत्र

Opening : ॐ भूर्भुवः स्व अर्हं असि आउसा सम्यक्दर्शनज्ञानचारिधारिकेभ्यो
नमः । बार १०८ नित्य जपिये ।

Closing : मध्यम तर्जनीऽनामिका अंगरीनिजीवन स्वाम ।
अगुष्ठासो जपमाल रूचि गुणै एक बहुताम ॥

Colophon : नहीं है ।

विशेष — यह ग्रंथ इतना पुराना एवं सड़ा हुआ है कि पढ़ा नही जा सकता ।

१३०४. महालक्ष्मी

Opening : मंत्र— ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मी सर्वसिद्धि कुरू कुरू
स्वाहा ॥

Closing : दिन २१ तक जप करना, धूप खेवना गुगुल, अगर, तगर, नाग-रमोथा, छरूछड़ीला, कचूर, गिरीदाख, बदाम छोहारा, मिश्री घी, का होम करना लक्ष ।।१२५०००। सर्वसिद्धि होय शत्रुभय मिटे लक्ष्मी मिले ।

Colophon ; कुछ नहीं है ।

१३०५. मंत्र

Opening : ॐ नमो वृषभनाथ मृत्युंजयाय सर्वजीवशरणाय परममंत्राय पुरुषाय चतुर्वेदायतताय ·· ···

···· मम सर्वं कुरु-कुरु स्वाहा. ।।५।।

Closing : ॐ नमो भगवते पार्श्वनाथाय हंसमहाहंस: परमहंस: कोहंस: अर्हंहंस: पक्षिमहाविपक्षि ह्लूं फट् स्वाहा ।

Colophon : इति मत्र सम्पूर्णम् ।

१३०६. मंत्र

Opening : ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीपार्श्वनाथाय धरणेंद्रपद्मावतीसहिताय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल महाग्निस्थभय–२. ॐ क्रो प्रों प्री प्र. ठ: ठ स्वाहा ।

Closing । अभिषेक सुद्धि तिहका नाला तलै न्हावै-उपवास १०० एक भक्त करै जु पाली पाषी देय वें का हाथ को अहार लेणूं नही ।

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१३०७. मंत्रसंग्रह

Opening । ॐ ह्रों ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रं ह्र: असिआउसाय नम. अपराजित मन्त्रोयं विघ्न नासय नासय कुरू कुरू स्वाहा ।

Closing : ॐ छो छो छों छः अस्मिन्पात्रे अवतर अवतर स्वाहाः ।
विधि ।। पेड़ा ३ ।। बार १०८ ।। मंत्रसों पठको आनाही-बोनेता ····: ।

Colophon : नहीं है ।

१३०८. मंत्रयंत्र

Opening : ॐ क्रो क्रौं क्रौ क्रो क्रो मही अमुकी नामान्याः पतत्याः सर्वत्र-जयसौभाग्यं प्रियवल्लभत्व पतिपूजादिसौख्यं ··· ···· — ।

Closing : ···· नीबू को चूहा के बिलमे गाडिये उपर जूती तीन नाम लेके मारिये दिन तीन तांई जूती मारिये नाम लेता जाईये ।

Colophon : इति मत्र यत्र समाप्तम् ।

१३०९. नमोकारमंत्र

Opening : कहा सुर तरु कहा चित्रावलि कामधेनु कहा रसकुप कहा पारस के पाए ते ।
कहा रसपायें औ रसायन कमाये कहा कौन काज होते तेरो लक्ष्मी के आऐ ते ।।

Closing : कान्हबल धाईवेको कान्ह के कमाईवे को कान्हबल लगाइवे को काहु के उधार के ।
कहत विनोदीलाल जपतहों तिहुकाल मेरे है अतुलबल मंत्र नवकार को ।।

Colophon : इति णमोकार मत्र माहात्म्य समाप्तम् ।

१३१०. पद्मावतीदंडक

Opening : ॐ नमो भगवते त्रिभुवन संकरी ।
सर्वाभरणभूषिणि पद्मासने पद्मनयने ।।१।।

Closing : ॐ भे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि ... ... मां रक्ष पद्मे ॥८॥

Colophon : इति पद्मावती दंडक संपूर्णम् ।

१३११. पद्मावतीकल्प

Opening : कमठोपसर्गदलनं त्रिभुवननाथं प्रणम्य पार्श्वजिनम् ।
वक्ष्येभीष्टफलप्रदभैरवपद्मावतीकल्पम् ॥१॥

Closing : अपराजितेकं वा अमुकी मोहय-मोहय स्तम्भिनी ....
मम वश्य कुरु-२ स्वाहा ।

Colophon : नही है ।

१३१२. पद्मावतीकल्प

Opening : ॐ अस्य श्री पद्मावती मंत्रस्य सुरासुरविद्याधर-नागेन्द्र-महाऋषि-पतिर्वृद्धगायत्री छंद श्री पद्मावती देवता कमलबीजं वाग्भवं शक्तिप्रणवकीलकं मम धर्मार्थकाममोक्षार्थं जपे विनियोगः ।

Closing : ॐ भे ह्रीं मोहनीय हिलि हिलि रमणे मर्द मर्द प्रमर्द दुष्टे निकाधिकारे दह दह दहने हेल ... ह्रौं ह्रीं
ह्रौं ह्रः प्रसन्ने-प्रहसित वदने रक्ष मां देवि पद्मे ।

Colophon : इति श्री पद्मावतीपटल पद्मावतीकल्प समाप्तम् ।

१३१३. पद्मावतीकवच

Opening : देखें, क्र० १३१२ ।

Closing : इद कवचं ज्ञात्वा पद्मा या स्तौति यो नरः ।
कल्पकोटि शतेनापि न भवेत्सिद्धिदायिनी ॥१८॥

Colophon : इति पद्मावती कवचम् ।

१३१४. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री पंचमुखी पद्मावतीकवचस्तोत्रस्य श्रीरामचंद्रऋषिकृतं अनुष्टुपछन्दः पंचमुखीपद्मावती देवता ॐ अं मुनिसुव्रति इति बीजं ॐ चिन्तामणिपार्श्वनाथ इति शक्ति ॐ धरणेन्द्र इति कीलकं श्री रामचन्द्र तव प्रसादसिद्धयर्थं सकललोकोपकारार्थे पंचमुखीपद्मावती स्तोत्रं जपे विनियोगः ।

Closing : नववारं पठेन्नित्यं राजभोग समाचरेत् दसवार पठेन्नित्य त्रैलोक्य ज्ञानदर्शनम् ।
एकादश पठेन्नित्य सर्वसिद्धिर्भवेन्नरः कवचस्मरणेनैव महाबल- : भाषितम् ।।

Colophon : इति पंचमुखीपद्मावतीकवच सपूर्णम् ।

१३१५. पद्मावतीकवच

Opening : ॐ अस्य श्री मंत्रराजस्य परमदेवता पद्मावतीचरणाबुजेभ्यो नम ।

Closing : ॐ ह्रीं श्री पद्मावत्यै महाभैरवी नमः ।

Colophon : इति पद्मावतीकवच संपूर्णम् ।

१३१६. पद्मावतीकवच

Opening : देखें—क्र० १३१४ ।

Closing : साक्षात् शिव पद का दाता ये इष्ट मंत्र है, नित्य जपने से सब मंगल होय है ।

Colophon : नहीं है ।

१३१७. पद्मावतीकवच

Opening : देखें, क० १११४ ।
Closing : देखें, क० १११४ ।
Colophon : इति श्रीराजचन्द्रऋषिकृत पंचमुखीपद्मावती कवच समाप्तेम् ।

१३१८. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ णमो जिणाणं ह्री ह्री ह्रौ ह्रूं ह्रौ ह्रः ।
Closing : अथवा मूंगा के जाप दे लाल वस्त्र पहेर लीजे ।
Colophon : इति श्री पद्मावतीदेवी मंत्र संपूर्णम् ।

१३१९. पद्मावतीमंत्र

Opening : ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं पद्मावती देवी ह्रूं क्लीं ह्रीं नमः । जाप्य १००००० कीजे ।
Closing : अत्रसाहत्तनुजनाभवृषभ — कालछया नित्यश ॥
Colophon : इति पद्मावती स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१३२०. पद्मावतीपटल

Opening : ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथधरणेंद्रमहिताय ... त्रैलोक्य संहारिणा चामुंडा ।
Closing : ह्रां ह्रीं प्लीं प्लूं ह्रां ह्रौ ... पद्मावती धरणी धरणींद्र आज्ञापयति स्वाहा ।
Colophon : इति पद्मावती पटल संपूर्णम् ।

१३२१. पन्द्रहयंत्र-विधि

Opening : आद्वतरै की चाल है भर्णों की घोड़े की चाल पहली सु नवकों ढ़ै में भरियै एक अंकसु माड़ कै नव अंक सु माड़ कै नव अंक लिखियै नव को ढ़े में इसकी विशेष विधि कहियै दस वार लिखै तो लोक सर्वमोहित हुवै वीस वेर लिखै तो आर्जण हुवै तीस बार लिखै तो पृथ्वी मैं जय पावै ।

Closing : दग्धामाषनील चैव शर्करावृतसयुतम् ।
कृष्णाष्ठे तु चाष्टम्यां बलि दत्वा संविरके ? ॥८३॥

१३२२. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : श्रीमद्देवेन्द्रवृदामलमुकुटमणिज्योतिषा चक्र ।
········· पार्श्वनाथोत्र नित्यम् ॥

Closing : इत्थ मंत्राक्षरोत्थं वचनमनुपम पार्श्वनाथस्य नित्यम् ।
... ... – स्तौति तस्येष्टसिद्धि. ॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३२३. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : ॐ नमो चन्डोग्र पार्श्वनाथ-तीर्थंकराय धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय ।

Closing : ... – घोरोपसर्गविनाशनाय ह्रूं फट् स्वाहा ।

Colophon : इति चंडोग्रपार्श्वनाथस्तोत्र संपूर्णम् ।

१३२४. पार्श्वनाथस्तोत्र-मंत्र

Opening : पार्श्वं वः पातुवो नित्यं जिनः परमशंकरः ।
नाथः परमशक्तिश्च शरणं सर्वं — ॥

Closing : त्रिसंध्यं यः पठेन्नित्यं नित्यमाप्नोति संश्रियः ।
श्रीपार्श्वपरमात्मे ससेवध्वं भोबुधासुकृत् ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र समाप्तम् ।

१३२५. प्रातगायत्री

Opening : पार्वत्युवाच देवेधिदेव देवाधिदेवदेवश परमेश्वर. पुरातनः वदुरत्नपरयाप्रोत्याविप्राणो संधि वदन मद्भक्तानां हितार्थाय वराण परमेश्वर सन्यासंध्यानयुक्तं च सूर्याध्यादि सुमाधनं ।

Closing : इति महावाक्यं ॐ गायत्री चैकपदी द्विपदी चतुस्पद्यपदसिनहि पद्यसः नमस्तेतुरीयाय पदाय तुसीय पददर्शिताय नमो नमः एव चतुर्थाश्रमेन गृहस्थानां प्रसगेन प्रदर्शित ॥

Colophon : अथ प्रातगायत्री विपये तर्पूर्ण समाप्त. । संवत् १८२५ कार्तिक मासे कृष्ण पक्षे ६ शनिवासरे पुस्तक लिख्यते हरयस मिश्र । कासि जी में लिखी ।

१३२६. सकलीकरणविधान

Opening : स्नानानुस्नानशुद्धोधृतशितसुद्धोऽन्तरीयोत्तरीय,
सकल्पाचम्य प्राणामिति तममृतं परिसेचनं तर्पण च ।
आचम्या तस्य शुद्धि पुनरपि सततं शान्तमंत्रं षडागम्,
दिवस ज ःाग्निव.रं परमजपयुक्त स्तोत्रदिक्षरक्षयमुः ॥

Closing : ॐ णमो अरिहंताणं णमोसिद्धाणं णमो आयरियाण ।
णमोउअज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ।
इति पचपदं जपेत् ।

Colophon . जिनवरदासस्य पठननिमित्ते लिखित टीकारामेन आरानगर मध्ये शुभम्भूयात् लेखक-पाठकयो आयुरारोग्यमस्तु ।

१३२७. सामयिकविधि

Opening : विधिपूर्वक पडिलेहुय उपगरण प्रमार्जित स्यानकइ स्थापनाचार्य थापितई ।

Closing : ज्ञानपचमी तपग्रहण कुजमालाविधिः ॥२७॥ पोसहपडिकमणा वावण विधि. ॥२८॥ इत्यादि ।

Colophon : नही है ।

१३२८. शान्तिनाथ-मंत्र

Opening ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेषदोषकल्मषाय दिव्यतेजोमूर्त्तये,
ॐ नमो शान्तिनाथाय शान्तिकराय सर्व्वपापप्रणाशाय ।

Closing : संपूर्ण जप सख्या अड़तालीस लक्ष प्रमाण निष्ठा मना जपै पश्चाद् सपूर्ण सिद्धि स्वयमेव पावै ।

Colophon : नहीं है ।

१३२९. सरस्वती-मंत्र

Opening : ॐ अर्हन्मुखकमलनिवासिनी पापार्हमक्षयंकरी
... . मम विद्यासिद्धि कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्रीं श्री क्ली महालक्ष्मी नम धारकस्य भाण्डागार ऋद्धि वृद्धिअ धान्यपूर्ण पूरय पूरय प्रताप विजयी कुरु कुरु स्वाहा ।

जाप सवालक्ष १२५००० दशांस होम पंचामृत को करें तो प्रभाव वृद्धि होय ।

Colophon : इति विजयप्रतापमंत्र सम्पूर्णम् ।

१३३०. सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं वाग्वादनी सरस्वती सारदा बुद्धिवर्द्धनी देवी कुरु कुरु स्वाहा ।

Closing : इति । मंत्र अष्टोतर शत नित्य जपेत् विद्या प्रकास होइ ।

Colophon : नहीं है ।

विशेष— इसमें मात्र एक ही मंत्र है ।

१३३१. सरस्वतीमंत्र

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लौं वद वद वाग्वादिनी भगवति सरस्वति परमब्रह्म मुखीद्भूते श्रुतांगिदेवि द्वादशांगियो नम । मम विद्या-प्रमाद कुरु तुभ्यं नम. ॥१॥

Closing : ॐह्रीं अर्हं णमोपादाणुसारिणं ॥८॥
ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्न सोदराणम् ॥६॥

Colophon : नहीं है ।

१३३२. सरस्वतीस्तोत्र

Opening : ॐ ऐं ह्रीं श्रीं मंत्ररूपे विबुधगननुतेदेवदेवेन्द्रवद्ये।
.... — मनसि सदा सारदे तिष्ठदेवी ॥१॥

Closing : ॐ ह्रीं क्लीं क्रूं श्रीं ह्रीं रों नमः लक्ष जापते सिद्धि होय ।

Colophon : इति सारदा स्तुति ।

१३३३. सोलहकारण मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्धये नमः ।

Closing : ॐ ह्रीं प्रवचनवत्सलत्वाय नमः ।

Colophon : संपूर्णम् ।

१३३४. सूतक-विधि

Opening : इम सूतक देव जिनंद कहै, उत्पति विनास द्विभेद लहै ।
जनमै दस वासर को गनिए, मरिहै तव बारह को भनिए ।।१।।

Closing : ग्रथ संस्कृत तैं यहै भाषा कीनीसार ।
जो मन संसय उपजै देखौ मूलाचार ।।२४।।

Colophon : इति श्री मृतक विधि समुच्चय सूतक विधि सपूर्णम् ।

१३३५. तंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ ह्रि ह्रीं ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्यदर्शनज्ञानचारित्रेभ्यो ह्रीं ··· नमः आचार्य श्रीरविसेनकस्य रक्षा दृष्टिदोषनाशं कुरु-कुरु स्वाहा ।

Closing : ॐ ह्रीं एकमुखी रुद्राक्षस्य शिवभांडागारे स्थिताय मम ईप्सितं पूरय पूरय श्री आकर्षय दुष्टारिष्टं निवारय निवारय ॐ ह्रीं नमः पीतपुष्पैर्जाप १०००० पश्चाद् नैवेद्य दसांस होम एकमुमुखी रुक्षास ··· — ।

१३३६. त्रिवर्णाचार मंत्र

Opening : ॐ ह्रां ह्रि ह्रीं ह्रु ह्रू ह्रे ह्रै ह्रं ह्रौं ह्रः असिआउसा सम्यग्दर्शनज्ञानिचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः ।

Closing : लिखे उत्तराभिमुखी पद्मासन बीत पुष्पते पूजे।
७२००० प्रयोग लक्ष्मी के वास्ते।

Colophon : इति कुबेर मंत्र।

१३३७. वशीकरण-अधिकार

Opening : अथात संप्रवक्ष्यामि ˙ प्रशस्यते ॥

Closing : राज्ञां कुले विवादे च जपेन्मस्त्वयत्र मंगय:।
मानोन्नतिर्भवेत्तस्य यत्रराजप्रसादत.।

Colophon : इति।

१३३८. वश्याधिकार

Opening : अत: परं देवि तव ब्रवीमि दौर्भाग्यहृ वृणि च कामिनीनम्।
यंत्राणि सौभाग्यविवर्द्धनानि संमोहनानि प्रियकामुकानाम् ॥

Closing : सुभगारूपसपन्नां पति प्रियवगा भवे।
ललिताख्य महामंत्रं स्त्रीणा सौभाग्यकारकम् ॥

Colophon : इति।

१३३९. व्रत-मंत्र

Opening : ॐ ह्रीं असिआउसा दसपूर्व्वीणं सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा।

Closing : पत्रं नैव करीय दारवटपे दोषो वसंतस्य किम्,
बिंदु नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य किं दूषणम्।
नालोकाय दिपस्यते यदि दिवा सूर्य्यस्य किं दूषणम्।
यत्पत्रं विधुना ललाटलिखते तन्मार्यतंकक्षय: ॥१॥

Colophon : श्रीरस्तुमिदं शुभं भवतु।

१३४०. विसर्जन-मंत्र

Opening : सुभ्राक्षतप्रसवसकुलरत्नदीपैः मानिक्यरत्नमयकांचनभाजनस्थै ।
श्री ज्वालिनीचरणतामरसद्रव्यामे सन्मगलार्त्तिकमहं त्ववतार-
यामि ॥१॥

Closing : जयजय जगदंबे ज्वालिनिस्रष्टर्थिबे गजगमनविलंवे नागयुग्नेंध्र-
नितबे ।
हृतधनुजगदंबे भालखण्डेन्दुबिंबे नतमनुविकरंबे याहिभक्तावलबे ॥

Colophon ; इति विसर्जन संपूर्णम् ।

१३४१. विवाह-विधि

Opening : या सदन गच्छेत् मंडपे तोरणान्विते ।
कन्याया जननी वेगादागत्य पूजयेद्वरम् ।।१॥

Closing : कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।
चपायां वसुपूज्यसज्जिनपते सम्मेद ··· ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३४२. यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : गह्यं हिमनमियुर मदीयनैत्र निवास कुरुचिध्वनेत्रै
गृह्यस्व वन्हि च पूजां ।

Closing : चौदश अदीतवार के दिन मद भाजे मैल जैतो मदपाणी
भवति ।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३४३. यंत्रमंत्रसंग्रह

Opening : ॐ मं म खं खं पिं पि रं रं क्रों क्रां ग्री ग्री अमुकस्यो च्याटय-२
मारय-मारय चूरय-चूरय वुद्धि भृ श कुरु-२ स्वाहा । "

Closing : पद्मपुत्री विसहरी एक सहस्र ·· ··· बार सात पढ़ै तमाचो मारी जै सर्व विष उतरै ।

Colophon : नहीं है ।

१३४४. अष्टांगहृदय

Opening : इति ह्यस्मादगुरात्रेयादयो महर्षय:
जातमात्र विशोध्यो स्वास्वालसैंधसर्पिषा ।
प्रसूतिश्चोशितं चानुबला तैलेन सेचयेत्
अश्मनोर्वादनं चास्य कर्णमूले समाचरेत् ।।

Closing : चिकित्सितं हितं पथ्यं प्रायश्चितं भिषज्जितम् ।
भेषजं शमनं शस्तं पर्यायै स्मृतमौषधम् ।।

Colophon : इति चिकित्सिते द्वाविंशोऽध्याय. । इति वाग्भट्टविरचितायां अष्टांगहृदयसंहितायां चिकित्सास्थान चतुर्थं समाप्तम् ।

देखें, रा० सू० III, पृ० २४६ ।

जि० र० को०, पृ० १६ ।

१३४५ चिकित्साशास्त्र

Opening : जवा होती पुष्पार्क लीजइ । दूधमू पीजइ सर्वरोग जाइ ।।१।।

Closing : बिन्दु आठ कइ द्रोण प्रमाण, दुई द्रौणे इक सूर्य की मान ।
दाई सूर्य की द्रोणी इक लाखी, बिन्दु द्रोणी इक खारी दाखी ।।

Colophon : नहीं है ।

विशेष— इसकी लिपि भिन्न २ लोगों द्वारा लिखी गई है जिससे यह संग्रह ग्रंथ मालूम पड़ता है ।

१३४६. चिकित्सासार

Opening : च्यारिटाकनि लोफर ल्याइ । तीनि पाव जल मैं औटाइ ।।
अरध रहे जल से छिनवाइ । खाड़ टांक चालीस मिलाइ ।।
ताको नरम किमाम बनाइ । घोंट इससों सीसे पाइ ।।
दसरती ली लोफर नित । हर सिर पीर कास ज्वरपित ।।

Closing : सांस की दवा—धतूरा पंचांग कूट के चिलम में पीवें हुक्के की तरह सें सांस जाय हुचकी जाय, पेट दरद जाय ।

Colophon : नही है ।

१३४७. ज्वरहर-यंत्र

Opening : ज्वरेत्यादिना केवलं ज्वरकृतदाहमेव नोपशामयति किस्वपरा ।१।

Closing : इदं ज्वरहरं यंत्रं मया प्रोक्तं तवानघे ।
उपकाराय लोकानां साधूनां च हिताय वै ।
गोप्य त्वया सदा भद्रे साधुभ्या नैव गोपयेत् ।।२२४।।

Colophon : इति ।

१३४८. कुट्टककरण छाया व्यवहार

Opening : भाज्यो ···· दुष्टमुछिष्टमेव ।।१।।

Closing : शुद्धिजौजातौ गुणएवराशित्वेनांगीकृतः ।।१४।।
पचगुणो ।।७० ।। हर ।।६३।। हृतशेष ।।१४।। दशगुणे ।।१४०।। हर ।।६३।। हृतशेष ।।१४।। एवं बहुत्वे गुणनामैक्य भाज्यं अग्राणामैक्यमग्रं प्रकल्प्यसाध्यम् ।।

Colophon : इति भास्कराचार्य विरचितोलीलावायो कुट्टकाध्यायः समाप्ता ।।

१३४६. मदनविनोद निघंटु

Opening : बीजं श्रुतीनां सुधनं मुनीनां बीजं जडानां महदादिकानाम् ।
आग्नेयमस्त्र भवपातकानां किंचिन्महश्यामलमाश्रयामि ।।१।।

Closing : .... यो राजा मुखतिलक: कड्ढारमल्लस्तेन श्रीमदननृपेण निर्मिते च ग्रथेन्मदनविनोदनाम्नि सपूर्णो .... .. प० गुणगणमिश्रकोऽयं ।।

Colophon : इति श्री मदनपाल विरचिते मदनविनोदे निघंटौ मिश्रपवर्गस्त्रयोदश ।।१३।। इति मदनविनोदे निघटौ समाप्तम् ।
संवत् १६१२ का० सु० लिखापित श्री मानसिंघ जी ... —
पठनार्थं लिख्योस्यो लालखाजादन ।।

१३५०. नाड़ीप्रकाश

Opening : नाड़ी तीन प्रकार के है । इगला चद्रमा है सो बाया है । पिंगला सूर्य है सो दाहिना है । दोनो चले सो सुख मन है । कृष्ण पक्ष सूर्य का है । शुक्ल पक्ष चद्रमा का है ।

Closing : दो नव भृकुटी श्वेत श्रवन पाँच तारका जान ।
तीन नाक जीह्वा एके का सभेद पहचान ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३५१. निदान

Opening : प्रणम्य जगदुत्पत्तिस्थितिसंहारकारकम् ।
स्वर्गापवर्गयोद्धारे त्रैलोक्ये शरणं शिवम् ।।१।।

Closing : ग्रहण्यां समधातु. समग्निश्च समशेरमलंक्रिय:
प्रसन्नात्मेंद्रियं मना. स्वस्थामित्यभिधीयते ।।

Colophon : इति निदान ग्र । समाप्त । शुभमस्तु । संवत् २७५६ ।

विशेष— यह ग्रंथ माधव निदान मालूम होता है, जिसके लेखक माधवाचार्य हैं ।

देखें, दि० जि० ग्र० र., पृ० ११८ ।

१३५२. पंचदशविधान

Opening : अथात: सप्रवक्षामि सुन्दरीयत्रमुत्तमम् ।
तदंक तु प्रवक्षामि श्रृणु यत्नेन साम्प्रतम् ॥१॥

Closing : इतगीमुगन करके सो राजा-प्रजा सर्वसकारी सिद्ध होय ।

Colophon : नही है ।

१३५३. रामविनोद

Opening : सिद्धि बुद्धि दायक सकल गवरि पुत्र गणेश ।
विघ्न विनाशन सुखकरन हरखाधारि प्रणमेश ॥

Closing : द्रोनि मनक को चार ... ... राम विनोदी विनोद सौ ॥

Colophon : इति श्री रामविनोद भाषा समाप्तम् । सवत् १९०६ मासोत्तमे मासे वैशाषमासे शुक्लपक्षे द्वितीयाया वार भौमवारे का लिखि के सपूर्ण भई मितन्त गोती सघई लाला छेदीलाल तस्य पुत्र उजागर लाल तस्य पुत्र जेठे रतनलाल लघुपुत्र बदलीदास ने पोथी लिखी पठनार्थ अपने हित हेतवे वंस अग्रवाल का है ।
यादृशं पुस्तक ... ... दीयते ॥१॥
जलं रक्षेत् .... पुस्तकम् ॥२॥

१३५४. रूपमंगल

Opening : जमालगोटा अर मिरच बराबरी आदी का रस मैं गोली करे मिरच प्रमाण संध्या प्रात: खाय ।

Closing : नित्यज्वरवालानै दीजै पाडी का मूत्रसू ते जरावा ताने दीजै तिब-कार ससूं चोथावालाने दीजै इति सर्वज्वर जाय ।

Colophon : इति मंगलरूप संपूर्णम् । शुभं भूयात् ।

१३५५. शारदा-तिलक सटीक

Opening : श्री तीर्थेश जिनाधीशं केवलज्ञानभास्करम् ।
प्रणम्याभ्युदये ध्यात्वा वक्षे मूत्रपरीक्षणम् ॥१ ॥

Closing : पानट २ सुपेदकथटं २ अफीमटं १ इकत्र कर गोली करनी मासे १ प्रमाण तदलोदकेन समीप अतिसार जांहि ।

Clolophon : इति श्री सारदातिलक ग्रंथ समाप्तम् । लिखितमिद नित्यानन्देन नारनौल मध्ये लिखायतं पंडितजी श्री चेतनदास जी-कस्मिन्सम्वत्सरे सवत् १६७६ का० वर्षे कार्तिक शुक्ल २ गुरुवासरे अलिखदिदं पुस्तकं यथा स्यात् तथा । श्रीरस्तु

१३५६. सारंगधर संहिता

Opening : श्रियं सदद्याद्भवतां पुरारिर्यदंगतेज· प्रसरे भवानी ।
विराजते निर्मलचन्द्रिकाया महौषधीव ज्वलिता हिमाद्री ॥१॥

Closing : विविधगदार्ति दरिद्रया ? नाशनं याहग्निमपि चकार वियोगरत्नै। ।
बिलसतु शारंगधरस्य संहिता सा कविहृदयेषु सरोजनिर्मलेषु ॥

Colophon : इति श्री दामोदरसूनुना शारङ्गधरेण विरचितायां संहितायां चिकित्सास्थाने नेत्रप्रसादनकर्मविधिरध्याय: समाप्तोयमुत्तर खंड।

१३५७. वैद्यभूषण

Opening : सिव सुत पद प्रणमित सदा रिद्ध सिद्ध नित देइ ।
कुमति विनासन सुमतकर मदन मुदत करेइ ॥

Closing : वैद्य ग्रंथ प्रमाण सब ढूढ़ लिया तस लोक।
छह से सही सब जरा का आधार ।।

Colophon : इति श्री केशवदासपुत्रेण नयनसुखेन विरचिते वैद्यमहोत्सवे स्त्री पुरुष रोग चिकित्सा सप्तम समुद्देश समाप्ता। संवत् १७६६ वर्षे मिती आषाढ़ सुदि १५ मंगलवार लिखितं पूज्य स्थिविर जी ऋषि श्री गणेश जी तत्शिष्यणी लिखितं आर्यापुस्यालो शुभ भवति।

१३५८. वैद्यमनोत्सव

Opening : प्रणम्य नित्यं शिवसूनुमृद्धिद सिद्धि ददातिवितथानि धिय ।
कुबुद्धिनाश सुमति करोति मुद तथा मंगलमेव कुर्य्यात् ।।१।।

Closing : चतुर्भिराटकै द्रोण कलसोप्यल्वणोमत: ।
उन्मनश्च घटोराशि: द्रोणपर्यायवाचक: ।।६।।

Colophon : इति परिभाषा। इति श्री वैद्यमनोत्सव मन्मिश्रविरचितं वैद्यमनोत्सवं संपूर्णम्। संवत् १६७६ मिति पौष कृष्ण सप्तम्या गुरुवासरे नारनौलमध्ये कायस्थपुरे लिखितमिदं पुस्तकं नित्यानद ब्राह्मणेन लिखायतं पंडित श्री चेतनदास जी। श्रीरस्तु।

१३५९. योगचिंतामणि

Opening : यत्र विश्रासमायांति तेजांसि च तमासि च ।
महीयस्तदयं वंदे चितानंदमयमहम् ।।

Closing : यथा योगप्रदीपोस्ति पूर्वं योगशतं यथा।
तथैवायं विजयतां योगचिन्तामणिश्चिरम् ।।

Colophon : इति श्रीमन्नागपूरीयतपोगणनायक श्रीहर्षकीर्तिसूरि संकलिते वैद्यकसारो श्रीयोगचिंतामणी सार संग्रहे मिश्रिकाध्याया सप्तमा

समाप्ता । इति श्री योगचिंतामणि शास्त्रं समाप्ता ।
सूत्रार्थं मिलिनेन ग्रंथमान ६५०० सवत् रामगणोंदधित् प्रमिते संवत् १७६४ वर्षे मार्गशीर्षमासे कृष्णपक्षे तिथौ एकादश्यां सोमवारे लिखितम् । पूज्य श्री ऋशि स्थिवीर जी श्रीगणेश जी पूज्य आर्या जी श्री राजो जी लिखितम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ५६६ ।

१३६०. यूनानी चिकित्सा

Opennig : त्रिघन विघ्न) विनासन देवकूँ, प्रथम करुं परनाम ॥१॥

Closing : हरताल ३ अरद ८ दिरम सुर्ग ८ दिरम, कहरुवाई ८ दिरम माजू २० दिरम, जंगार ४ दिरम, कुट ३ दिरम, फटकडी ४ दिरम, अकाकिया २॥ दिरम, गुलनार ३ दिरम कूट छान कै बीच सिरके कं गलावै २ हप्ते बीच धूप के रखै बाद कर्श करै ।

Colophon : नहीं है ।

१३६१. आचार्य-भक्ति

Opening : सिद्धगुणस्तुतिनिरता उद्धूतरूशाग्निजालबहुलविशेषान् ।
गुप्तिभिरभिसपूर्णान् मुक्तियुत सत्यवचनलक्षितभावान् ॥

Closing : इच्छामि भंते आयरियभक्तिकाउस्सग्गोकउ तस्सालोचेउ सम्मणाण सम्मदंसणसम्मचरित्त जुताणं, पंचविहाचाण्णं आयरियाग आयारादिसुदणाणो वंदेसियाणं उवझायाणं तिरयणगुण पालणरयाणं सव्वसाहूणं णिच्चकालं अच्चेमि, पुज्जेमि वंदामि ।
सुगइगमणं समाहिम णं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं ॥

Colophon : इति आचार्य भक्ति: ।

देखे, जि० र० को०, पृ० २५ ।
जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०१ ।

१३६२. आदिनाथ स्तुति

Opening : जाके चरनारविंद पूजत सुरिंद इन्द्र देवन के वृंदचंद
सोभाअतिभारी है ।
कहत विनोदीलाल मन वच तिहूं काल ऐसे नाभिनंदन को
वंदना हमारी है ।।१।।

Closing : तुम तो जिनंददेव जगतै ....
.... त्रिभुवननाथ गति मेरि यो बनाई है ।।

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तुति समाप्तम् ।

१३६३. आदिनाथ आरती

Opening : आदिनाथ तुम जगताधार, भवसागर उतारन पार ।
मैं तुम चरन कमल को दास, आदि नाथ मेरी पूरो आस ।।१।।

Closing : तुम अनन्त गुन है प्रभु, कैसे पाऊं पार ।
थोडी कर मानो घरी भैरो कहै बखान ।।७।।

Colophon : इति श्री आदिजिन आरतो समाप्तम् ।

१३६४. आदिनाथस्तोत्र

Opening : आदिनाथं जगन्नाथं पार्श्वं वंदे गुणाकरम् ।।१।।

Closing : तद्गृहे कोटिकल्याणश्रीर्विलसति लालया ।
क्षुद्रोपद्रवभूतादि नश्यते व्याधिवेदना ।।७।।

Colophon : इति श्री आदिनाथ स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४६ ।

१३६५. आदित्यनाथ-आरती

Opening : आदि जिनेश्वर महि परमेश्वर त्रिभुवनपति जिन आदिभयो ।
नाभिराम मरुदेवी नंदन नगर अयोध्या जनम लीयो ।।

Closing : जो जिनवर ध्यावै भावना भावै मन वच काया भाव धरे ।
पाप निकन्दन भवय भंजन मुक्तिवरांगना सो वरए ।।२२।।

Colophon : इति श्री आदिनाथ जी की आरती समाप्तम् ।

१३६६. अम्बिकादेवीस्तोत्र

Opening : ॐ ह्रीं जय जय परमेश्वरी अंबिके अभ्रहस्तेमहासिंहयानस्थिते · सर्वलक्षणलक्षितांगे जिनेन्द्रस्य भक्ते कले निष्कले निर्मले नि प्रपंचे ।

Closing : अबेरंतावलंबरता माहृशो भवतीत्यण:
श्रीधर्मकल्पलतिके प्रसिद्धवरदेत्रिके ।।४।।

Colophon : इति अंबिकादेवी स्तोत्र सम्पूर्णम् शुभमस्तु पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ४ श्री संवत् १६५· ।

१३६७. अंकगर्भषडारचक्र

Opening : सिद्धप्रियै: प्रतिदिनं प्रतिभासमानै·,
जन्मप्रबंधमथनै:प्रतिभासमानै ।
श्रीनाभिराजतनुभूपदवीक्षणेन,
प्रापेजनैर्हितनुपदवीक्षणेन ।।

Closing : तुष्टि देशनया जनस्य मनसे ········ सतामीशिताः ॥

Colophon : इति श्रीदेवनंद्याचार्य कृत चौबीस महाराज ····· काव्य महा-स्तोत्र संपूर्णम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० १।

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२ ।

१३६८. आरती

Opening : जै जै जै श्री आदिजिनेश्वर जुगला धरम निवारण जू ।
नाभिराय मरुदेवी नन्दन संसार सागर तारण जू । जै जै० ॥१॥

Closing : जे पढ़ैं पढ़ावैं मन सुद्ध ध्यावैं इह आरत सू सफल भया ॥५२॥

Colophon : इति श्री निर्म्मल कृत आरती समाप्तम् ॥

१३६९. आरती

Opening : अष्टदरबकरसब एकठा जीमन। आरड़ी मनाहो ।
जिन जी के चरण चढ़ाइ श्री जिन पूजो जो भाव सौं ॥१॥

Closing : इयणर देवे णिय सूयसत्तिय जिणचउवीस विणा भत्तिया
ए जिणवर जो अणुदिणुत्तापइ सो संसारिनपछइ आवइ ॥१॥

Colophon : इति आरती संपूर्णम् ।

१३७०. आरती

Opening : आरती श्री जिनराज तुम्हारी
करम दलन संतन हितकारी ॥ आर० ॥
सुर नर असुर करत तुम सेवा
तुम हो सब देवनि के देवा ॥ ॥१॥ आर० ॥

Closing : छवी इग्यारह प्रतिमाधारी
श्रावक वंदित आणंदकारी । इ० ।
सातमी आरती श्री जिनवाणी
द्यानत स्वर्ग सुगति सुखदाणी ॥४॥ इ० ॥

Colophon : इति आरती संपूर्णम् ।

१३७१. आरती

Opening : आरती श्री जिनवीर की सुनि पीय श्रेणिकराई ।
जनम जनम सुख पाइये दुरित सकल मिटि जाई ॥१॥

Closing : जिन आरती कीजै · ···· गति सहित निकलक ॥

Colophon : इति आरती समाप्तम् ।

१३७२. आरती संग्रह

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनद की ।
सब सुखदायक आनद कंद की ॥ टेक ॥

Closing : जय-जय आरती शांत तुम्हारी ।
तोरे चरन कमल की मैं जाव बलिहारी ॥

Colophon ; इति आरती श्री शांन्तिनाथ की सम्पूर्णम् ।

१३७३. अष्टक

Opening : पद्मतीर्थनिम्नगादि दिव्यमोदजीवनैः
कुंकुमादि गंधसार चंदनादिमिश्रितैः ।
कामधेनुकल्पवृक्षचिंत्यरत्नयंत्रकम्
स्वर्गमोक्ष संपदाम् [illegible] जदे ॥१॥

Closing : इत्थं श्रीजिनराजमार्गविदितं ... ... वासरं प्रत्यहम् ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१३७४. भजन

Opening : सुर तरनी परिदोहि सउरे लाघउ नरभवसा ।
आलइ जनम महारजो काई करजोरे मनमाहि विचारकि ॥१॥

Closing : आरंभ छाडी आतम रे, पीय सजम रस पूरि ।
सिद्ध बधू सउजिम रमउ इम दौलइ रे श्री विजई देवसूर वि ॥
॥ चेतो रे चित प्राणी ।१५॥

Colophon : इति सज्झाय समाप्ता ।
वडे न हुजउ गुन बिना, बिरद बडाई पाई
कहत धतूरै सू कनक, गहनौ गढ्यो न जाई ॥१॥
कनक कनक तै सौगुनौ, मादकता अधिकाई
इति पाइयैं बोराइ जगु उहि खाइ बोराई ॥२॥

१३७५. भजनावली

Opening : अवश्यावश्यानी त्रिजगजननी शान्तिरूपे,
तुही आधारा रासुजस तव जगमें अनूपे
नहि पारावारा गुन सुजस अरू च स्वरूपे ।
तुही कर्त्ता धर्त्ता नृपहि पहर काहि भूपे ॥१॥

Closing : पनकारनि सुखहारनि दुखदुर्गति ग्रहवरने वरना ॥
जसु की माय अजितहू कि तुहि काहि उपजन वरना ॥७३॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१३७६. भजनावली

Opening : ध्यान मे जिनके सभी आराम होना चाहिए ॥
हवस सब अब की दफा सब काम होना चाहिए ॥१॥

Closing : मनमानता बरदान की दातार तु ही है ।
तजिरी सदैव कसीस अजित को नूर ये ही है ॥

Colophon : नहीं है ।

१३७७. भजनावली

Opening : जै जै जै जिन चंद वद दुख दहने वारा,
धीर भयंकर हार सार सुख सपति सारा ।
दीनानाथ अनाथ नाथ सब जिय हितकारी.
असरन सरन सहाय होत जन सुनत पुकारी ॥१॥

Closing : भुजचारि उदार भडार अपार .
मनी सुषसार समस्त भरो वो ।
दरसे परसे पद पंक जई ।
सुखधाम सुदाम ललाम सहो वो ॥

Colophon : नही है ।

१३७८. भजनावली

Opening : करो जी मेहर जिनराज ।

Closing : अज्ञानवंत अनंत चेतन शुद्ध अप्पा जोवही ।
असरान परी क्या कंहू जी ... ॥

Colophon : नहीं है ।

१३७९. भजन

Opening : छल सुज सम हि भाव ही कीरत को नहि अत ।
भागी भारी भीर हरी जहाँ जहाँ सुमिरन्त ॥

Closing : जिनराजदेव कीजिये मुझ दीन पै करूना ।
भवि वृंद कों अब दीजिये यह शील का शरना ।

Colophon . इति श्री शीलमहातम जी भाषा वृन्दावन कृत सम्पूर्ण ।

विशेष— इसमें भजन के अलावा'सील महातम' वृंदावन कृत भी संकलित हैं

१३८०. भक्तामरस्तोत्र

Opening : भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रमाणा-
मुद्योतकं दलितपापतमोवितानम् ।
सम्यक्प्रणम्य जिनपादयुगयुगादा-
वालवनं भवजले पततां जनानाम् ॥१॥

Closing : स्तोत्रस्रज तव जिनेन्द्रगुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रुचिरवर्णविचित्रपुष्पाम् ।
धत्ते जनो य इह कण्ठगतामजस्त्रम् ।
त मानतुंग मवमा समुपैतिलक्ष्मी ॥४८॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७१ ।

१३८१ भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon : इति भक्तामर सम्पूर्णम् ।

१३८२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।

Closing : देखे, क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्रीमानतुंगाचार्य विरचितं भक्तामरस्तवनं समाप्तम् ।

१३८३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य विरचित भक्तामरस्तोत्रसमाप्तम् ।

१३८४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१३८५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् ।

१३८६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति भक्तामरस्तोत्रम् संपूर्णम् ।

१३८७. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें—क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३८८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : भक्तामर टीका सदा पढ़ै सुनै जो कोई ।
हेमराज मित्र सुख लहै तस मनवांछित होई ॥१॥

Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य टीका पंडित श्री रगविमल लिपिकृता सम्पूर्णम् । भादौ सुदि ७ शनिवासरे । संवत् १८४६ ।

१३८९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखें, क्र० १३८० ।

Colophon इति श्री भक्तामर संस्कृत जी समाप्तम् ।

१३९०. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : देखे क्र० १३८० ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्य विरचिते भक्तामर स्तोत्रसंपूर्णम् ।

१३९१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १३८० ।

Closing : अस्मिन् लोके य पुरुष. तां मालां कंठगतां अजस्रं निरंतरं धत्ते धारयति तं पुरुषं मानतुंगं इव सा लक्ष्मी: समुपैति या लक्ष्मी: मानतुंगेन प्राप्ता सा लभते ।

Cloophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्रस्य पंडित शिवचन्द्ररचित बालावबोध टीका समाप्ता ।
मिति फाल्गुन-शुक्लादारभ्य चैत्रकृष्ण द्वितीयाया पंडित शिवचद्रेण कृता इयं संपूर्णम् ।

१३९२. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें, क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तवनं समाप्तम् ।

१३९३. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३८० ।
Closing : देखें क्र० १३८० ।
Colophon : इति श्री भक्तामरस्तोत्र संस्कृत श्रीमानतुंगाचार्य कृत सम्पूर्णम् ।

१३९४. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३९५ ।
Closing : देखें, क्र० १३९५ ।
Colophon : इति श्री भाषा भक्तामर जी समाप्तम् ।

१३९५. भक्तामरस्तोत्र

Opening : आदि पुरुष आदीस जिन, आदि सुविधि करतार
धरमधुरंधर परम गुरु नमो आदि अवतार ॥१॥
Closing : भाषा भक्तामर कियौ हेमराज हित हेत
जे नर पढ़ैं सुभाव सौं ते पावैं शिव खेत ॥४६॥
Colophon : इति श्री भक्तामर स्तोत्रभाषा बंध संपूर्णम् ।

१३९६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३९५ ।

Closing : देखें, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्र संपूर्णम् ।

१३६७. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।
Closing : देखें, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति भाषा भक्तामर जी सम्पूर्णम् ।

१३६८. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।
Closing : देखें, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर की भाषा समाप्ता ।

१३६९. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।
Closing : देखें, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति भक्तामर स्तोत्र भाषा समाप्तम् ।

१४००. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३६५ ।
Closing : देखें, क्र० १३६५ ।
Colophon : इति श्री भक्तामर जी स्तोत्रभाषा समाप्तम् । मिति वैशाख वदि १४ संवत् १९३९, वार आदित्यवार । शुभम् श्री ।

१४०१. भक्तामरस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३९५ ।

Closing : देखें, क्र० १३९५ ।

Colophon : इति श्री भाषा भक्तामरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४०२. भक्तामर वचनिका

Opening : देव जिनेश्वर वंदिकरि वाणी गुर उर लाय ।।
स्तोतर भक्तामरतणी करुं वचनिका भाय ।।
मानतुंग वरसूरतैं रच्यो भक्ति उर धारि ।।
श्री जिनेन्द्र अनुभावतैं बधन धरैं उतारि ।।

Closing : संवत्सर शत अष्टदश सतरि विक्रमराय ।।
कातिक वदि बुद्ध द्वादसी पूरण भई सुभाय ।।

Colophon : इति श्री मानतुंग आचार्यकृत भक्तामर नाम देशभाषामय वचनिका समाप्त ।।

१४०३. भक्तामर वचनिका

Opening : देखे, क्र० १४०२ ।

Closing : देखे, क्र० १४०२ ।

Colophon : इति श्री मानतुंगाचार्यकृत भक्तामरनाम देशभाषामय वचनिका समाप्तम् ।

१४०४. भक्तामरस्तोत्र

विशेष—यह पूर्णत जीर्ण-शीर्ण है ।

१४०५. भक्तामर-टीका

Opening : जो देवनंमृमुगुटि सुभरत्नकांति तीर्तोविकास करि ते जिनपाद दीप्ति।
जो पाप रूप तम घोर समूल छेदी नेदी बुडी भव जली जनहो जुगादि ॥१॥

Closing : म.डगा मनात भरला मुनि शक्र मुर्ति तो स्तोत्र पाठवदला गुरु पुन्यकीर्ति।
मीवोलहा चिनमिले जिनसागराना करी क्षमा नदितो दुध पडिताला ॥५०॥

Colophon : इति श्री देवेन्द्रकीर्ति प्रियशिष्य जिनसागर कृत भक्तामर स्तोत्र महाराष्ट्रभाषा सपूर्णम्।

१४०६. भक्तामरस्तोत्र

Opening : धरासू निकल ता मंदिर जाणो।
जदि रसता माहि उच्चार करणो॥

Closing : देखे, क्र० १३८०।

Colophon : इति श्री मानतुंग नामा आचार्य विरचित आदिनाथ देवाधिदेव भक्तामरस्तोत्र संपूर्णम्।

१४०७. भक्तिसंग्रह

Opening : सिद्धान् उद्धूतकर्मप्रकृतिसमुदयान् ·····भावोपलब्धिः॥

Closing : सुगइ गमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होऊ मज्झं।

Colophon : इति सप्तभक्तयः समाप्ताः।

विशेष — इसमें सिद्धभक्ति, श्रुतभक्ति, चारित्रभक्ति, आचार्यभक्ति, निर्वाणभक्ति, योगभक्ति, नदीश्वर भक्तिया संकलित है।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४०।

१४०८. भैरवाष्टक

Opening : अतितीक्ष्णमहाकाय कल्पांतपवनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं मानभद्रतमोहर ॥

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रं बद्धो मुंचति बंधनात् ।
राज्यचोरभय नैव भैरवाष्टककीर्त्तनात् ॥११॥

Colophon : इति श्री भैरवाष्टकस्तोत्र संपूर्णम् ।
देखे -- जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ६३५ ।

१४०६. भैरवाष्टक

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : चाहै तो १ लाख जाप करै दिन ३ उपवास के पारने चूर, मावा, हलवा, लाल वस्त्र, लाल माला, कनेर का फूल करणा तेज प्रताप आपि करे ।

Colophon : इति भैरवाष्टकम् ।

१४१०. भैरवस्तोत्र

Opening : य य य यक्षरूप दसदिसचरित भूमिक पायमानम्,
स स सं संहारमूर्तिशिरमुकुटजटाशेषर चन्द्रबिम्बम् ।
दं द द दीर्घकाय विकृतनखमुखं उर्ध्वंरोम करालम्,
प प पं पापनाश प्रणमतशतत भैरव क्षेत्रपालम् ॥

Closing : भैरवाष्टकमिदं पुण्यं छः मास पठते नरः ।
स याति परमस्थानं यत्र देवो महेश्वरः ॥६॥

Colophon : इति क्षेत्रपाल स्तोत्र संपूर्णम् ।

१४११. भूपाल-चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : श्रीलीलायतनं महीकुलगृह ········ जिनाघ्रिद्वयम् ॥

Closing : हे देव अद्य मया गम्यते ···· पुन पुन वारं बारं दर्शन भूयात् ।

Colophon ; इति श्री पडित शिवचद्रनिर्म्मापितं भूपालचतुर्विंशतिकायाः बालावबोध टीका सपूर्णम् । मिति फाल्गुन शुक्लादारभ्य चैत्र कृष्ण द्वितीयाया पडित शिवचद्रेण कृता इय पचस्तोत्र टीका सम्पूर्णम् समाप्तम् । श्री । मिति चैत्रकृष्ण सप्तम्यां सोमवासरे सवत्सर १९२७ का सम्पूर्णम् लिखित पडित परमानंदेन पठनार्थम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र I, क्र० ६४२ ।

१४१२. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : दृष्टस्त्व जिनराज ~ ···· ··· भूयात्पुनर्दर्शनम् ॥

Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी समाप्तम् ।

१४१३. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखें, क्र० १४१२ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४१४. भूपाल-चौबीसी

Opening : देखे, क्र० १४११ ।

Closing : देखें, क्र० १४१२ ।

Colophon : इति भूपाल चतुर्विंशतिका ।

१४१५. भूपालस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४११ ।
Closing : उपसम इव मूर्तिललितं – — – चरिष्टमोयस्यघि-
न्वंति वाच: ।।२७।।
Colophon : इति श्री भूपालस्तोत्र समाप्त: ।

१४१६. भूपाल-चौबीसी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४११ ।
Closing : देखें, क्र० १४१२ ।
Colophon : इति श्री भूपालचौबीसी सम्पूर्णम् ।

१४१७. भूपालस्तोत्र

Opening : परमातम सम्यक वरन परमभावना सार ।
श्रीभूपाल वरेस कवि करत सुपर हितकार ।।१।।
Closing : यह विधि श्री जिन विमल करि भूपाल थुति नरिंद ।
जग जीवन जीवन लभ्यौ हीर अवाध अनिंद ।।२७।।
Colophon : इति भूपाल चौवीसी सम्पूर्णम्

१४१८. भूपाल-चौबीसी-भाषा

Opening : देखें, क्र० १४१७ ।
Closing : देखें, क्र० १४१७ ।

Colophon : इति भूपाल चौबीसी भाषा जी समाप्तम् ।

१८१९. बीस विरहमान-आरती

Opening : आरती कीजै बीस जिनंद की, विदेह क्षेत्र थानक सुखकंद की ।
श्रीमंदर जुगमंदर स्वामी, बाहु सुबाहु प्रभु शिवगामी ।।आरती।।

Closing : अजितवीर्य प्रभु है सिरनामी, भैरों सरन चरन तुम स्वामी ।।आरती

Colophon : इति श्री बीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१४२०. ब्रह्म लक्षण

Opening : ब्रह्मचर्यं भवेमूल सर्वेषा ब्रह्मचारिणाम् ।
ब्रह्मचर्यस्य भंगेन व्रतं सर्वनिरर्थकम् ।।

Closing : दृष्टिपूत .... — .... नवम ब्रह्मलक्षणम् ।।

Colophon : नहीं है ।

१४२१. चैत्यालय-स्तोत्र

Opening : इष्ट जिनेन्द्रभवनं भवतापहारी .... प्रकरराजविराजमानम् ।।१।।

Closing : द्रष्टमपाद्य मणिकांचनचित्रतुंग सकलचन्द्रमुनिन्द्रनवम् ।।१०।।

Colophon : इति चैत्यालय स्तोत्रम् ।

१४२२. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : श्रीचक्रेचक्रभीमे ललितवरभुजे लीलया दोलयन्ति,
चक्रं विद्युत्प्रकाशं ज्वलितसतमुखं खखगेंद्राधरूढे ।
तत्वैरुद्भतभावे सकलगुणनिधे त्वं महामंत्रमूर्त्ते
क्रोधोदित्यप्रतापे त्रिभुवनमहिमायाति मां देविचक्रे ।।१।।

Closing : यं स्तोत्र मत्रत्न पठित निजमनो भक्तिपूर्व शृणोति,
त्रैलोक्यं तस्य वस्य भवति बुद्धजने वाक्पटुत्वं च दिव्यम् ।
सौभाग्यं स्त्रीषु मध्ये खगपतिगमने गौरितत्वप्रसादात्,
डाकिन्यो गुह्यगावाद् इह दधति भयं चक्रदेव्यास्तवेन ।।८।।

Colophon : इति चक्रेश्वरी स्तोत्रम् ।

देखे, रा० सू० IV, ३८४, ३८७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १२१ ।

१४२३. चक्रेश्वरी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२२ ।

Closing : देखें, क्र० १४२२ ।

Colophon : इति चक्रेश्वरी स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४२४. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

Opening : प्रभुमव्यराजीवराजीदिनेशं शुभं शंकरं सुन्दरं श्रीनिवेशम् ।
सुरैर्दानवैर्मानवैः लिप्तसेवं जिन नौमि चंद्रप्रभं देवदेवम् ।।

Closing : चन्द्रप्रभं नौमि यदंगकान्ति जोत्स्नेति मत्वा द्रवेतेंदुकांतान्
चकोरयुथंप्पवति ? स्फुटति कुण्टोपि पक्षे किलकैरवनानि ।।

Colophon : इति श्री चंद्रप्रभुस्वामी स्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

१४२५. चन्द्रप्रभ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है ।

१४२६; चारित्र-भक्ति

Opening : येनेंद्रान् भुवनत्रयस्य विलसत्केयूरहारांगदान्,
भास्वन्मौलिमणिप्रभाप्रविसरोत्तु गोत्तमांगान्नतान् ।
स्वेषां पादपयोरुहेषु मुनयश्चक्रु. प्रकामं सदा,
वंदे पंचतपंतमद्यनिगदन्न चाश्मभ्यर्चितम् ।।१।।

Closing : इच्छामि भंते चरित्तभत्तिकाउस्सग्गो काउ तस्सा लाचेउ ···
···· ··· — — जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon : इति आचोना चरित्र भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५१ ।

१४२७. चतुर्विंशति-स्तोत्र

Opening : आदौ नेमिजिनं नौमि सभवं सुविधिं तथा ।
धर्मनाथं महादेवं शांति शांतिकरं सदा ।।१।।

Closing : सकलगुणनिधानं यत्रमेत विशुद्धं,
हृदयकमलकोषे धीमता ध्येयरूपम् ।
जगति विदिततत्वौ यः स्मरेत् शुद्धचित्तौ,
भवति सुखनिधानं मोक्षलक्ष्मीनिवासम् ।।

Colophon : इति चतुर्विंशति-स्तोत्रम् ।

१४२८. चतुर्विंशति स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७ ।

Closing : देखें, क्र० १४२७ ।

Colophon : इति चतुर्विंशतिस्तोत्रम् ।

१४२९. चतुर्विंशतिस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४२७।

Closing : देखें, क्र० १४२७।

Colophon : इति चतुर्विंशतिः स्तोत्रम् ।

१४३०. चतुर्विंशति-जिन-स्तोत्र

Opening : आदिनाथं जगन्नाथं अरनाथं तथानमि ।
अजितं जितमोहारिं पार्श्वं वंदे गुणागरम् ॥१॥

Closing : भवभिसुखमनेकं तस्य यो मानवश्च
विमलमतिमनिद्यं स्तोत्रमेतद्वितद्रः ।
पठति परमभक्त्या प्रातरुत्थाय शश्वत,
मुनिरभिकृतभक्तिर्मेघराजो बभाणः ॥८॥

Colophon इति श्री चतुर्विंशति जिनानं स्तोत्रं समाप्तम् ।

१४३१. चौबीस-तीर्थंकर-पद

Opening : अब मोहि तारो दीनदयाल सब ही मत देखे ।
मैं जित तित तुमही नाम रसाल ॥१॥ अब ॥

Closing : पाठक श्री सिद्धिवर धन सदगुरु विलास,
पाठक तिहि विध सौ श्री जिनराज मन्हार ।५। इहि० ॥

Colophon : इति श्री चौबीस तीर्थंकराणां पदानि सपूर्णम् ।

१४३२. चिन्तामणिस्तोत्र

Opening : किं कर्पूरमयं सुधारसमयं किं चंद्ररोचिर्मयम्,

किं लावण्यमय महामणिमय कारूण्यकेलिमयम् ।
विश्वानंदमयं महोदयमयं शोभामयं चिन्मयम्,
शुक्लाध्यानमयं वपुर्जिनपते भूयाद्भवालवनम् ।।१।।

Closing : इति जिनपति पार्श्वपार्श्वाख्य यक्षम् ।
प्रदलित दुरीतोघ-प्रीणीतं प्राणसंध्यम् ।
त्रिभुवनजिनवाध्य दानचिन्तामणीस,
शिवपदतरुबीज व्याधिबीजं ददातुम् ।।१२।।

Colophon : इति चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१४३३. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्र फणेन्द्र सुरेन्द्र अधीज सतेन्द्र सुपूज्य नमो नायमीस
मुनिन्द्र गणेन्द्र नमो जोरिहाथ नमो देवि चितामणि पार्श्व-
नाथम् ।।

Closing : गणधर इन्द्र न करि सके तुम विनती भगवान ।।
द्यानत प्रीति निहारके कीजे आप समान ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१४३४. चितामणिपार्श्वनाथ–स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४३२ ।

Closing : मदनमदहर. श्री वीरसेनस्य शिष्यैः
सुभगवचनपूरै. राजसेनप्रणुतं ।
जपति पठति नित्यं पार्श्वनाथाष्टकं य ,
स भवति शिवभूम्यां मुक्तिमीमंतिनीशः ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथाष्टकं समाप्तम् ।

१४३५. चौबीस-जिन-आरती

Opening : रिषभ आदि चौबीस जिन लक्षन लेहु विचार ।
जो कछु सुने सु कहत हूँ, भव्य जन लेहु सुधार ।

Closing : लक्षन जिनवर के कहे भव्यजन लेहु सुधार ।
भूला चूका फिर धरौ भैरौं कहै विचार ।।

Clolophon : इति श्री चौबीस जिन लक्षन आरती ।

१४३६. चौबीस-जिन-आरती

Opening : अतिपरमपवित्रं जनितसुचित्रं वरविचित्रमंगलकरणम् ।
प्रणमामि जिनेन्द्रं प्रणतशतेन्द्रं भवसमुद्रतारणतरणम् ।।१।।

Closing : परमजिनेश्वरा भुविपरमेश्वरा कालत्रयकल्याणकरा ।
संघप्रभवतं चरणभजत विस्तरन्तु मंगलमधिरा ।।

Colophon : इति चौबीस जिन त्रिह्न आरती समाप्तम् ।

१४३७. चौबीस–दंडक–विनती

Opening : वंदो वीर सुधीर कों महावीर गंभीर ।
वर्द्धमान सनमत नमों, महादेव अतिधीर ।।१।।

Closing : अंताकरन जो सुद्ध होय जिन धरमी अभिराम ।
भाषा कारन करन कों, भाषो दौलतराम ।।५६।।

Colophon : इति श्री चौबीस दंडक बिनती संपूर्णम् ।

१४३८. दर्शन–ज्ञान–चारित्र–आरती

Opening : सम्यक दरसन ग्यांन व्रत, इन बिन मुकत ना होय ।
अंधपंग अरु आलसी जुदे जलैं दवलोय ।।

Closing : इय अग्घु विधारवि भवभय हारवि,
करि विचित्त सुयमस्स मणु ।
भवि भवियण धण्णउ सुह संपण्णउ
लहइ सग्गु मोक्खविसयलु ॥

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा क्षिमावाणी समाप्तम् ।

१४३९. दर्शन-स्तुति

Opening : देखें, क्र० ११९३ ।

Closing : देखें, क्र० ११९३ ।
शुद्ध भाव ताके मन भयौ सम्यक दृष्टी मुकति हि गयौ ॥

Colophon : इति दर्शन स्तुतिसमाप्तम्

१४४०. दर्शनाष्टक

Opening : अद्याभवत्सफलता नयनद्वयस्य, देव त्वदीय चरणांबुजवीक्षणेन ॥
अद्यस्त्रिलोकतिलकं प्रतिभासतो मे, संसारवारिधिरियं चुलकः प्रमाणम् ॥

Closing : अद्याष्टक पठेद्यस्तु गुणैर्नंदितमाधवः ।
तस्य सर्वार्थसंसिद्धि जिने० ॥११॥

Colophon : इति दर्शनाष्टकम् ।

१४४१. देवस्तवन

Opening : श्रीमद्देवपतिप्रसन्नमुकुट-प्रद्योतरत्नप्रभा,
या सा पातु सदा प्रसन्नवदना पद्मावतीभारती ।
संसारागमदोषविस्तरणतः सेवासमीपस्थित ॥१॥

Closing : इन्द्रमपि भगवति वृत पुष्पालंकारलंकृतम् ।
स्तोत्रं कंठं करोति यश्च दिव्यश्रीस्त ममाश्रयति ।।३६।।

Colophon : इति देवस्तवनम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५७ ।

१४४२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : एकीभाव गत इव मया यः स्वयं कर्मबंधो,
घोर दु.खं भवभवगतोदुर्निवार: करोति ।
तस्याप्यस्य त्वयि जिनरवे भक्तिरुन्मुक्तचेत्,
जेतुं शक्यो भवति न तया कोपरस्तापहेतुः ।।

Closing : वादिराजमनुशाब्दिकलोके, वादिराजमनु तार्किकसिंहः ।
वादिराजमनु काव्यकृतस्ते, वादिराजमनुभव्यसहाय. ।।२६।।

Colophon : इति श्री वादिराज विरचिते श्री एकीभावस्तोत्रसमाप्त ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५८ ।

१४४३. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४४२ ।

Closing : देखे क्र० १४४२ ।

Colophon : इति श्री एकीभावस्तोत्र संपूर्णम् ।

१४४४. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति एकीभावस्तोत्रम् ।

१४४५. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : देखें, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति श्री वादिराजमुनि विरचिते एकीभावस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१४४६. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : देखें, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

१४४७. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : देखें, क्र० १४४२ ।
Colophon : इति श्री एकीभाव स्तोत्रं समाप्तम् ।

१४४८. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।
Closing : धूपैसुगंध कृष्णागरुचंदनोघौ ।
कृत सुगध कृतसारमनोहरानी ।। तीर्थंकरा. ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।
विशेष— एकीभाव के पहले भूपाल चतुर्विंशति करीब १०-११ पत्र में है ।

१४४९. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : देखें, क्र० १४४२ ।

Colophon : इति वादिराजमुनिकृतं एकीभावस्तोत्रं समाप्तम् ।

११५०. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४२ ।

Closing : विद्वांस: अक्षरमात्रापदस्वरहीनं सोध्यतां अल्पज्ञानेन वालोपकाराय केवल मया रचिता न तु ज्ञानगर्वेण ।

Colophon : इति एकीभाव टीका संपूर्णम् ।

१४५१. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : वादिराज मुनिराज कौ वढतो मुहित उद्गार ।
स्वरूप रूप अनुभौ कथा, कहत सुपर हितकार ।।

Closing : वादिराज मुनिराज अनुशाब्दिक तार्किक लोक ।
काव्यकार सहकार जग जीवन हीर सुधोक ।।

Colophon : इति श्री एकीभाव भाषा जी समाप्तम् ।

१४५२. एकीभाव-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४५१ ।

Closing : देखें, क्र० १४५१ ।

Colophon इति श्री एकीभाव संपूर्णम् । श्री ।

१४५३. गणधर-स्तुति

Opening : इति प्रमाणभूतेय वक्तृ श्रोतृ परंपरा ... महाधियम् ।

Closing : स्वश्भ्रुवद्धिरोधेन मुनिवृंदारकं रत्नदा ।
प्रसादितो गणेंद्रोभूद्भक्तिग्राह्या हि योगिनः ।।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४५४. गौतमस्वामी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमस्त्रिजगन्नेतु वीरस्याग्रजसूनवे ।
समग्रलब्धिमाणिक्य रोहणायेंद्रभूतये ।।१।।

Closing : इति श्री गौतमस्तोत्रं तेस्मरतोन्वहम् ।
श्री जिनप्रभसूरिस्त्वं भवसर्वार्थसिद्धये ।।८।।

Colophon : इति श्री गौतमस्वामिस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४५५. घंटाकर्ण-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १२९६ ।

Closing : देखें, क्र० १२९६ ।

Colophon : इति घंटाकर्ण स्तोत्रम् ।

संदर्भ के लिए भी देखें, क्र० १२९६ ।

१४५६. गुरुभक्ति

Opening : वंदो दिगंबर गुरु चरन जग तरन तारन जानी ।

जे भरम भारी रोग को है राजवैद्य समान ।।
जिनके अनुग्रह विन कहुं नही कटै करम जंजीर ।
ते साधु मेरे उर वसौ मेरी हरौ पातक पीर ।।

Closing : करजोरी भूधर विनवैं कब मीलेवैं मुनीराज ।
आस मन की तव पुरैं मेरे सरे-सगले काज ।।
ससार विषम विदेह मैं विना कारन वीर ।
ते साधु मेरे मन वसौ मेरी हरौ पातक पीर ।।८।।

Colophon : इति गुरु भगती संपूरन ।

१४५७. गुरुभक्ति

Opening : ते गुरु मेरे उर वसैं ते भव जलधि जिहाजु ।
आप तिरैं पर तारहिं, अैसे श्री ऋषिराज । ते गुरु ।।

Closing : देखें, क्र० १४५६ ।

Cloophon । इति गुरुस्तुति संपूर्णम् ।

१४५८. गुरुविनती

Opening : देखें, क्र० १४५७ ।

Closing : वे गुर चरन जहां धरैं जग मैं तीरथ होय ।
सो रज मम माथे लगे भूधर मांगै एह ।।१४।।

Colophon : इनि विनती सम्पूर्णम् ।

१४५९. गुणावलि

Opening . श्री अरिहत अणत गुण, सेवइ सुरनर इंद ।
पाय कमल जसु प्रणमतां, लहीयै परमाणंद ॥१॥

Closing । श्रीखेम साखै सोभता वा शांति हरख मुणिंद,
तसु सीस कहै जिन हर्ष मुनि गुरु नामै हो दिन-२ आणद ॥

Colophon : इति श्री गुणावली चौपई सम्पूर्णम् ।

१४६०. गुणाष्टक

Opening : गुणाधीश योगी मुनि ··· सकल जन के काम शरते ॥

Closing : मुनो गामै धाते ·················· आदि परमा ॥

Colophon : इति परमानन्द कृत गुणाष्टक सम्पूर्णम् ।

विशेष— गुणाष्टक के बाद कुछ फुटकर श्लोक संकलित हैं ।

१४६१. जैनपदसंग्रह

Opening : णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाण ।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूण ॥
एसो पंच णमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलम् ॥

Closing : ये रे सांवलिया तेरा नाम जप छुट जात भव भांवरिया ।
— — जो भवसागर से तरिया । येरे ॥

Colophon : नहीं है ।

१४६२. जिनचैत्य-नमस्कार

Opening : सद्भक्त्या देवलोके रविशशिभुवने व्यन्तराणां निकाये,

नक्षत्राणां निवासे ग्रहगणपटले तारकाणा विमाने ।
पाताले पन्नगेन्द्रस्फुटमणिकिरणे ध्वस्तसांद्रांधकारे,
श्रीमतत्तीर्थ कराणां प्रतिदिवसमहं तत्र चैत्यानि वदे ।।१।।

Closing : इन्द्रं श्री जैन चैत्य स्तवमिदमनिशं ·· ··· प्रणमतां चित्त-मानदकारी ।।

Colophon : इति श्री जिनचैत्यनमस्कार समाप्तः ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३२

१४६३. जिनदेव स्तुति

Opening : जिनराजदेव कीजिये मुक्त दीन पै करुना ।
भविवृंद को अब दीजिये यह शील का शरना ।। टेक ।।
सुचिशील के धारा में जो स्नान करे है ।
मत्र कर्म को गो धोय के सिवनार वरे है ।। टेक ।।
व्रतराज सो वेताल व्याल काल डरे है,
उपसर्ग वर्ग घोर कोट कष्ट टरे है ।। जिनराज ।।१।।

Closing : जस सील का कहने में थका सहस वदन है ।।
इस सील से भव पाय भगाकर मदन है ।
यह सील ही भविवृंद को कल्यान प्रदन है
दस पैंड ही इस पैंड से निर्वान सदन है ।।१४।। टेक ।।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१४६४. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः । ॐ ह्रीं श्री अर्हं सिद्धेपोयो नमो नम । ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं आचार्य्येभ्यो नमो

नमः। ॐ ह्री श्रीं अर्हं उपाध्यायेभ्यो नमो नमः। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं श्री गौतमस्वामि प्रमुख सर्वसाधुभ्यो नमो नम ।।१।।

Closing : श्री रुद्रपल्लीय वरेण्य गच्छे देवप्रभाचार्यपदाब्जहस. ।
वादीन्द्रचूडामणिरेव जैन. जीयादसौ श्रीकमल प्रभाख्य ।।

Colophon : इति जिनपजर स्तोत्र समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।

१४६५. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६४ ।

Closing : वात सञ्जुच्छ प ··· मनोवंछितपूर्णाय ।।२४।।

Colophon : इति जिनपंजरस्तोत्र सम्पूर्णम् । पंडित अजयचन्द्र ।

१४६६. जिनपंजर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६४ ।

Closing : अस्पष्ट ।

Colophon . इति वज्रपिंजरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४६७. जिनरक्षा-स्तवन

Opening : श्रीजिनं भक्तितो नत्वा त्रैलोक्याह्लाददायकम् ।
जैनरक्षामहं वक्ष्ये देहिनां देहरक्षकम् ।।१।।

Closing : राकायां ? तु विधातव्यामुद्यापनमहोत्सवम् ।
पूजाविधि समायुक्तं कर्त्तव्य सज्जनैर्ज्जनै. ।।२१।।

Colophon : इति जिनरक्षा स्तवनम् ।

१४६८. जिनसहस्त्रनाम

Opening : पच परम गुरु को नमों उरधरि परम सु प्रीति ।
तीरथराज जिनंद जी चौबीसों धरि चित ।

Closing : सिखिरचंद कृत पाठ यह, बन्यौ अनुपम रास ।
जो पढसी मन लायके, पासी सौख्य सुवास ।।

Colophon : इति श्री जिनसहस्त्रनाम पूजा पाठ भाषा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु ।
मकरमासे शुक्लपक्षे तिथौ-२ चंद्रवासरे ... . ।
सूबा औधदेश मुल्क हिन्दुस्तान मे प्रसिद्ध जिला है नवावगंज बाराबंकी नाम है ।
टिकइत नगर सुथाना डाकखाना जानो तासु डिग पूरब सरैयां-भलो ग्राम है ।
वास स्थान लेखक सु भगवान दीन नाम अंन्नजल के स्ववस आयो यहि ठाम है ।
भोज नृप देश जिले शाहाबाद आरा नग्र राय जी बुलाकचंद-मदिर मुकाम है ।।१।।
श्री सहस्त्रनाम पाठ जी को चढाया श्री चंद्रप्रभु स्वामी जी के मंदिल मे व्रत उद्यापन का मुमम्मात .... कुंअर भार्य्या बाबू रामा प्रसाद अग्रवाल श्रावक दिगम्बर आम्नाय धारक आरामपुर नग्रनिवासी मिति भादौं सुदी ८ संवत् १९५९ ।

१४६९. जिनेन्द्रदर्शन स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४४० ।

Closing : जन्मजन्मकृतं पापं जन्मकोटिसमर्जितम् ।
जन्ममृत्युजरान्तक हन्यते जिनदर्शनात् ।।१४।।

Colophon : इति जिनदर्शन संस्कृत सम्पूर्णम् ।

१४७०. जिनदर्शन

Opening : प्रभु पतितपावन मैं अपावन चरन आयो शरण जी,
यों विरद आप निहार स्वामी मेंट जामन मरण जी ।

Closing : या श्रद्धा मोही उर भई, कीजे तुम पद सेव ।
नवल नवल गुण गाय कै जै जै जै जिनदेव ।।

Colophon : इति श्री नवलकृत जिनस्तुति भाषा सम्पूर्णम् ।

विशेष— प्रारम्भिक स्तुति कविवर बुधजन कृत है ।

१४७१. जिनदर्शन

Opening : देखे, क्र० १४७० ।

Closing : जाँचो नही सुरवास ... दीजीए शिवनाथ जी ।।

Colophon : इति श्री भाषा जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१४७२. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : ॐ नमोभगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकशंखगोक्षीरहारधवल । गोत्राय घातिकर्मनिर्मलोछेदनाय जाति जरामरणविनाशनाय ।

Closing : ओं क्रौं क्षं क्ष क्षौं क्षः ज्वालामालिनी ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति श्री चंद्रप्रभतीर्थंकर की ज्वालामालिनि शासनदेवी सकल दुःखहरन मंगलकर विजयकर स्तोत्र सपूर्णम् ।

विशेष— इसके आगे एक मंत्र भी दिया गया है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६७६ ।
रा० सू० III, पृ० २३६ ।

१४७३. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७२ ।

Closing : भृंगारतांगेलवरदर्प्पणे चामराणी श्रकचंदनादिनवरत्नविभूषितागे दैत्यास्तितापरिजने करकंजयुग्मे ॥६॥

Colophon ; अनुपलब्ध ।

१४७४. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : दहदह पच पच छिद छिद भिद भिद ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रुं फुट स्वाहा । अनेन मत्रेण होम कुर्यात् सहस्र १२००० अनेन मत्रेण गजेन्द्र नरेन्द्रं सर्वशत्रू वशीकरण पूर्वमत्र स्मरणोति

Colophon : इति श्री ज्वालामालिनी स्तोत्रमत्रविधि कल्प सम्पूर्णम् ।

१४७५. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७२ ।

Closing : चद्रहास्य खड्गेन छेदय छेदय, भेदय भेदय डरु डरु छरु छरु स्फुट घ्रं द्रां ओं क्रों क्षी क्षूं क्षीं ज्वालामालिनि ज्ञापयते स्वाहा ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र संपूर्णम् ।

१४७६. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

विशेष— पूर्णत जीर्ण-शीर्ण ।

१४७७. ज्वालामालिनी-स्तोत्र

Opening : देखें, क० १४७२ ।

Closing : .... तस्याभरणं पीतवर्णं खड्गत्रिशुलपाससरासनायुधं उत्तमासनेन स्थापितं तस्याग्रे जाप्यं रक्तपीतउज्वलफलानि मध्यरात्रे — — ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१४७८. ज्वालामालिनी

Opening : स्नेहाच्छरणं प्रयाति भगवन् पादद्वयं ते प्रजा,
हेतुस्तत्र विचित्रदुःखनिचय संसारघोरार्णव ।
छायानुरागं रवि ॥१॥

Closing : छेदय छेदय भेदय भेदय डरू डरू छरू छरू
हरू हरू स्फुट स्फुट घे घे ... .
— ... ज्वालामालिन्यां ज्ञापयते स्तोत्र ।

Colophon : इति ज्वालामालिनी स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

विशेष— इसमें शान्त्याष्टक भी गर्भित है ।

१४७९. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदमनिंदितमङिघ्रपद्मम् ।
संसारसागरनिमज्जदशेषजन्तु पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य १॥

Closing : जननयनकुमुदचंद्र प्रभासुराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा ।
ते विगलितमलनिचया अचिरात्मोक्षं प्रपद्यन्ते ॥

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर संस्कृत समाप्तम् ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, ६५२ ।

१४८०. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर जी संस्कृत समाप्तम् ।

१४८१. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर स्तोत्र जी सम्पूर्णम् । श्रीरस्तु ।

१४८२. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८३. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।
Colophon : इति कल्याणमंदिर सम्पूर्णम् ।

१४८४. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।
Closing : देखें, क्र० १४७६ ।

Col phon : इति श्री कुमुदचद्राचार्य्यविरचित श्री कल्याणमंदिरस्तोत्र समाप्तम् ।

१४८५. कल्याणमंदिर-स्तोत्र (सटीक)

Opening : देखें, क्र० १४७६ ।

Closing : अस्मिन् श्लोके स्तोत्रकर्त्ता कुमुदचंद्राचार्यस्य नामोऽपि प्रकटो जात. ।

Colophon : इति कुमुदचंद्राचार्यकृत कल्याणमदिरस्य अर्थावबोध टीका पडित शिवचद्र निर्म्मापिता अलमगमन् ।

१४८६. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : परमजोति परमातमा परमज्ञान परवीन ।
वदौ परमानन्द मैं सो घट-घट अंतरलीन ।।

Closing : यह कल्याणमदिर कियौ, कुमुदचद्र की बुद्धि ।
भाषा कियो बनारसी, कारण समकित शुद्ध ।।

Colophon : इति कल्याणमदिर पूरन ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६१ ।

१४८७. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : श्री नवकार जपो मन रंगे श्री जिनशासन सार री माई ।
सर्व मंगल मैं पहिलो मंगल जपतां जय जयकार री माई ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याणमंदिर भाषा संपूर्णम् ।

१४८८. कल्याणमंदिर-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४८६ ।

Closing : देखें, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मंदिर स्तोत्रभाषा संपूर्णम् ।

१४८९. कल्याणमंदिर

Opening : देखें, क्र० १४८६ ।

Closing : देखे, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री भाषा कल्याणमन्दिर जी समाप्तम् ।

१४९०. कल्याणमंदिर

Opening : देखे क्र० १४८६ ।

Closing : देखे, क्र० १४८६ ।

Colophon : इति श्री कल्याण मंदिर की भाषा संपूर्नम् ।

१४९१. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : श्रीमत्सर्वज्ञदेवनिजमुकुटतटाभ्यंतरे संदधानम्,
चञ्चच्चामीकराभ खचितमणिशतैः भूषणैर्भूषितांगम् ।
स्फूर्जत्काम्याभिलासप्रदममलतरं वेत्रयष्टिदधानम्,
स्तोष्ये श्री क्षेत्रपालं जिननिलयगतं विघ्नविध्वंसदक्षम् ।।

Closing : ॐ आं क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णसर्वलक्षणसंपूर्णस्वायुधवाहनवधू चिह्न-
सपरिवारसहितमो क्षेत्रपाल येहि तिष्ट तिष्ठ ठः ठः मम सन्नि-
हितो भव भव वषट् स्वाहा, इति ठः ठ स्वस्थान गच्छतु स्वाहा।

Colophon : संपूर्णम् ।

१४६२. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १४६१ ।

Closing : इम स्तवं यो मतिमानधीते श्रीक्षेत्रपालस्य गरिष्टमूर्त्ते,
भक्त्यातिकाल सतत पवित्रं भवत्यसौ सारदचन्द्रकीर्तिः ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६३. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १४०८ ।

Closing : भैरवाष्टकमिद - - भैरवाष्टककीर्तिनात् ॥

Colophon : इति क्षेत्रपालस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१४६४. क्षेत्रपाल-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री नमो भगवति पद्मावती ह्रा ह्रा कात्यायनी ह्रू ह्रू योगिनी
नवकुलनागवधिनी अवतर-२ आगच्छ-२ - ... .. ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुञ्चति बंधनात् ।
त्रिसंध्य पठते यस्तु सर्वसिद्धिमवाप्नुयाद् ॥१६॥

Colophon : इति श्री क्षेत्रपालस्तोत्रम् ।

१४६५. लघुसहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नम. तुभ्यमुत्पाद्यात्मानमात्मनि ।
स्वात्मनैव तथोद्भूत वृत्तयेऽचिन्त्यवृत्तये ॥१॥

Closing : नामाष्टकसहस्राणां ये पठंति पुनः पुनः ।
ते निर्व्वाणपदं यान्ति निश्चयेननात्रसंसय ॥

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी सम्पूर्णम् ।

१४६६. लघुसहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १४६५ ।

Closing : देखें, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१४६७. लघुसहस्रनाम

Opening : देखे, क्र० १४६८ ।

Closing : देखे, क्र० १४६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम स्तोत्रं सपूर्णम् ।
संवत् १८४२ वर्षे शा० १७०७ प्रवर्त्तमाने श्रावण वदि ३० गुरौ ।

१४६८. लघुसहस्रनाम

Opening : नमः त्रैलोक्यनाथाय सर्वज्ञायमात्मने ।
वक्ष्ये तस्यैव नामानि मोक्षसौख्याभिलाषया ॥१॥

Closing : देखें क्र० १५६५ ।

Colophon : इति श्री लघुसहस्रनाम समाप्तम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७० ।

१४६९. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : लक्ष्मीमहस्तुल्य सती सती सती ।
प्रवृद्धकालो विरतो रतो रतो ।

जगारुजा जन्महृता हृता हृता ।
पार्श्वं फणे रामगिरौ गिरौ गिरौ ।।१।।

Closing : तर्के व्याकरणे च नाटकचये काव्याकुले कौसले,
विख्यातो भुवि पद्मनंदिसुधियस्तत्वस्य कोशं निधिः ।
गंभीरं यमकाष्टकं भणति यः संभूयसा लभ्यते ।
श्री पद्मप्रभुदेवनिर्मितमिदं स्तोत्रं जगन्मङ्गलम् ।।

Colophon : इति श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० , क्र० ७३७ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४०-१४१ ।
जि० र० को०, पृ० ३३८ ।

१५००. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४९९ ।
Closing : देखें, क्र० १४९९ ।
Colophon : इति लक्ष्मीस्तोत्रम् ।

१५०१. लक्ष्मीस्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४९९ ।
Closing : देखे, क्र० १४९९ ।
Colophon : इति श्री लक्ष्मीपार्श्वनाथस्तवनम् ।

१५०२. महावीर आरती

Opening : आरती करो जिनवीर की, सुत पिया सैनिकराय ।
जन्म-जन्म सुख पाईए, दुरित सकल मिटि जाय ।।१।।

Closing : जिन आरती कीजै सुख लहीजे छीजै कर्म कलंक ।
सीवपुर पाई जै सो नर पूजि जै भक्ति सहित निकलक ।।

Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१५०३. मंडलोद्धार-स्तोत्र

Opening : संपूर्व्वं सूरिभिराम्नातं क्षेत्रपालसपर्यंता ।
तथाहं मंडम वक्ष्ये सर्वविघ्नोपशांतये ।।१।।

Closing : यथापूर्व्वं मया श्रुत्वा तथा एव मया कृतम् ।
क्षेत्रपालविधि दिव्यां विघ्नदुखप्रणाशकम् ।

Colophon : इति मण्डलोद्धार स्तोत्रम् ।

१५०४. मंगल आरती

Opening : मगल आरती कीजे भोर विघन हरन सुभ करन किशोर । टेक ।
अरहत सिद्ध सूर उवझाय साधु नाम जपिये सुखदाय ।।१।।

Closing : कहे कहाँ लो तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।
करो आरती वर्द्धमान की, पावापुर निर्वाण स्थान की ।।करो ।।

Colophon : इति आरती महावीर जी की सम्पूर्णम् ।

१५०५. मणिभद्र-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४०८ ।

Closing : जाप एक लाख पचीस हजार करे १२५००० दिन तीन मे जब
उपवास के साने चरमो बनाये या लाल वस्त्र जाप माला कनेर
फूल .... ।

Colophon : नही है ।

१५०६. मंगलाष्टक

Opening : श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुट · ····कुर्वंतु ते मंगलम् ॥१॥

Closing : इत्थं श्रीजिनमगलाष्टकमिदं ·· ···· कुर्वंतु मंगलम् ॥१०॥

Colophon : इति मंगलाष्टकं मपूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७०५ ।

१५०७. मंगलजिन-दर्शन

Opening : जै जै जिनदेव के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलपमति मेरी ॥

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी बड़े भागन पाइए ।
रूपचंद चिंता कहा जिन चरण सरणनि आइए ॥

Colophon : इति रूपचंद कृत जिनगुण विनती सम्पूर्णम् ।

१५०८. मुनीश्वर विनती

Opening : वदौ दिगम्बर गुरु चरण जग तरण तारण जान,
जे भरम भारा रोग को है राजवैद्य महान ।
जिनके अनुग्रह बिन कवि नहि करे कर्म जजीर,
ते साधु मेर उर बसे मेरी हरो पातक पीर ॥१॥

Closing : कर जोड़ भूधर वीनमैं वे मिलें कब मुनि राय ।
इह आस मन की कब फलैं मेरे सरे सगने काज ।
ससार विषम विदेस मे जे बिना कारण वीर ॥ ते साधु० ॥८॥

Colophon : इति साधु विनती सम्पूर्णम् ।

१५०६. नमस्कार

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।

Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल का नमस्कार समाप्तम् ।

१५१०. नमस्कार

Opening : देखे, क्र० १२८७ ।

Closing : देखे, क्र० १५०६ ।

Colophon : इति श्रीपालजी कृत नमस्कार समाप्तम् ।

१५११. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : त्रिदशपतिमुकुटतटगतमणि ··· विरहित-निलयान् ॥१॥

Closing : अन्यच्च स्वपन् जाग्रन् तिष्टन्नपि पथि चलन् ··· ·· स्तोत्रं सुकृती ॥११॥

Colophon : इति संपूर्णा ।

देखें —जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७०८ ।

१५१२. नंदीश्वर-भक्ति

Opening : देखे, क्र० १५११ ।

Closing : ··· ···· दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बोहिलाओ सुगइ गमणं समाहि-मरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति नंदीश्वरभक्ति समाप्ता । इति गप्तभक्तय: समाप्ता ।

१५१३. नरक-विनती

Opening : आदि जिनद जु हारीयैं मन धरि अधिक उल्हासो जी ।
मन वच काया शुद्ध सुकीजै निज अरदासो प्रभु नरकतना
दुःख दोहिल ।।१।।

Closing : प्रभु पतितपावन करण भावन श्री गुणसागर भाइयैं ।
इह लोक सुख परलोक शिवपद स्वामि सुमिरण पाइयैं ।।

Colophon : इति श्री नरक विनति स्तवनं सम्पूर्णम् ।

१५१४. नारायणलक्ष्मी-स्तोत्र

Opening : ॐ अस्य श्री नारायणहृदयस्तोत्रमन्त्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टुप् छन्दः
श्रीमन्नारायणो देवता श्रीमन्नारायण प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे
विनियोगः ।

Closing : श्रीध्यायेत्वा प्रहसितमुखी कोटिबालार्कभासम्,
विद्युद्वर्णां वरवरधरा भूषणाढ्यां सुशोभाम् ।
बीजापुरं सरसिजयुग विभ्रती स्वर्णपात्रम्,
भर्त्रायुक्तां मुहुरभयदा महामय्यच्युतश्रीः ।।१०५।।

Colophon : इति श्री अथर्वणा रहस्ये उत्तरभागे श्री महालक्ष्मीहृदयं संपूर्णम् ।

१५१५. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : जगद्गुरुं नमस्कृत्य श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् ।
ग्रहशांति प्रवक्षामि लोकानां सुखहेतवे ।।

Closing : भद्रबाहु. महाश्चैव पचमश्रुतकेवली ।
तेन विद्यानवादार्च ग्रहशांतिरूदीरितः ।।२१

Colophon : इति नवग्रह स्तोत्रम् ।

देखें, जि० र० को०, पृ० २०६ ।

१५१६. नवग्रह-स्तोत्र

Opening : अर्कचन्द्रकुजसौम्य — — ... जिनपूजनात् ॥१॥
Closing : भद्रबाहुरूवाचेदं पचमश्रुतकेवली ।
विद्याप्रवादत: पूर्वाद्ग्रहशांति: विधि श्रुता ॥११॥
Colophon : इति नवग्रह शांति स्तोत्रम् ।

१५१७. नवकारढाल

Opening : पहिलो लोक अलोक ए ढाल छै समरो श्री नवकार
सार पूरव तणो नव निध सिद्ध आणै सदा ए ।
महिमा मोयी जास सकट सवि टलै मिजय मनोरथ सपदा ए ॥
Closing : दिन-२ अधिकी संपदा ए मनवछित सुखयाय । नमु न० ।
दया कुशल वाचक बदै धर्ममदिर गुण गाय ॥२३। नम न० ॥
Colophon : इति श्री नवकार चउढालीयो सम्पूर्णम् ।

१५१८. नवकार-स्तोत्र

Opening : हस्तावल वोर्हता पापाद्वा मचराचरस्य जगत: ।
मजीवन मत्रराट् .... ॥१॥
Closing : अन्यच्च ... सुकृति ॥१२॥
Colophon : इति पत्र नमस्कार स्तोत्रम् ।

१५१९. नवकारमंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ परमेष्ठी नमस्कारं सारं नवपदात्मकम् ।
आत्मरक्षाकरं वज्रं पजराभि स्मराम्यहम् ॥१॥

Closing : यश्चैनां कुरूते रक्षां परमेष्ठिपदैः सदा ।
तस्य न स्याद्भवं व्याधिरधिश्चापि कदाचन ॥८॥

Colophon : इति नवकार मंत्र स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७ ६ ।

१५२०. नेमिनाथ आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी नेम जिनंद की ।
सब सुखदायक आनंद कंद की ॥ आरती० ॥१॥

Closing : भैरो सरन चरन तुम आयो ।
भव भव मैं प्रभु होइ सहायो ॥ आरती ॥६॥

Colophon : इति भैरोजी कृत आरती ।

१५२१. नेमिनाथ-स्तोत्र

विशेष — यह पूर्णतया जीर्ण है ।

१५२२. निजामणि

Opening : सकल जिनेश्वर देव हुमन पाये करिने सेव ।
निजामणि कहु सार जिन क्षपक तरे ससार ॥१॥

Closing : श्री सकलकीर्ति गुरु ध्याउ, मुनि भुवनकीर्ति गुणगाउ ।
ब्रह्म जिनदास भणे सार ए निजामणी भवतार ॥५८॥

Clolophon : इति श्री ब्रह्मचारी जिनदास विरचिते क्षपक निजामणि संपूर्णम् ।

१५२३. निर्वाण-भक्ति

Opening : विबुधपतिखगपनरपति धनदोरगभूत यक्षपतिमहितम् ।
अतुलसुखविमलनिरूपमशिवमचलमनामय प्राप्तम् ।

Closing : देखे, क्र० १५१२ ।

Colophon : इति निर्वाणभक्तिः ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१७ ।

जि० र० को०, पृ० २१४ ।

१५२४. निर्वाणकाण्ड

Opening : वीतराग वंदौ सदा, भाव सहित सिरनाई ।

कहुँ कांड निर्वाण की भाषा विविध बनाई ।

Closing : सवत् सत्रहसै इक तास आश्विन सुदि दशमी सुविशाल ।

भैया वदन करै त्रिकाल, जय निर्वाणकाण्ड गुणमाल ॥

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड समाप्ता ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७१५ ।

१५२५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।

Closing : देखें, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड भाषा संपूर्णम् ।

१५२६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५२४ ।

Closing : देखें, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति श्री भाषा निर्वाणकाण्ड सम्पूर्णम् ।

१५२७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५२४।
Closing : देखें, क्र० १५२४।
Colophon : इति श्री निर्वाणकांड भाषा सम्पूर्णम् ।

१५२८. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५२४।
Closing : देखे, क्र० १५२४।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा समाप्तम् ।

१५२९. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे. क्र० १५२४।
Closing : देखे, क्र० १५२४।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड समाप्तम ।

१५३०. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५२४।
Closing : तीन लोक के तीर्थ जहाँ, नित प्रति वंदन कीजै तहाँ।
मन वच काय भाव सिरनाई वदन करो भविक सिरनाई ।।
Colophon : इति श्री निर्वाणकाण्ड भाषा संपूर्णम् ।

१५३१. निर्वाणकाण्ड

Opening : अट्ठावयम्मि उसहो चंपाएवासुपुज्ज जिण-णाहो ।
उज्जंते णेमिजिणो पावाए णिव्वुदो महावीरो । १।।

Closing : जो पढइ तियालं णिव्वुइ कंडंपि भाव सुद्धीए ।
भुजदि णरसुरसुक्ख पच्छा सो लहइ णिव्वाणं ॥

Colophon : इति निर्वाणकांड समाप्तम् ।

देखें, जै० मि० भ० प्र० I, क्र० ७१४ ।

१५३२. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति श्री णिव्वाणकांड की गाथा संपूर्णम् ।

१५३३. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकांड समाप्तम् ।

१५३४. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखें, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड संपूर्णम् ।

१५३५. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखें, क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णम् ।

१५३६. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखें, क्र० १५३१ ।

Closing : देखे क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निव्र्वाणकाड प्राकृत संपूर्णम् ।

१५३७. निर्वाणकाण्ड

Opening : देखे, क्र० १५३१ ।

Closing : देखें क्र० १५३१ ।

Colophon : इति निर्वाणकाण्ड गाथा समाप्ता ।

१५३८. निर्वाणकाण्ड

Opening : श्री अर्हंत अनत गुन सिद्ध सूर उवझाय ।
सर्वसाधु के चरण जुग वदो मन वचकाय ।।१।।

Closing : देखे, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकांड भाषा समाप्तम् ।

१५३९. निर्वाणकाण्ड

Opening : रावण के सुत आदिकुमार,
गुक्त गये रेवा तट सार ।
कोडि पाच अरु लाख पचास,
ते वदौ .... ।।

Closing : देखें, क्र० १५२४ ।

Colophon : इति निर्वाणकांड सम्पूर्णः ।

१५४०. ॐकार स्तुति

Opening : ॐकारं विस्फुरच्चन्द्रकलाबिंदुमहोज्वलम् ।
नामाग्राक्षरनिस्पन्न पचाना परमेष्ठिनाम् ।।
धर्मार्थकाममोक्षाणां दातार विश्वपूजितम् ।
हृत्कजकर्णिकासीन ध्यायेत् ध्यानी शिवाप्तये ।।

Closing : सर्वावस्थासु सर्वत्र मङ्गमत्र जिवार्थिभिः .... ।
... सहस्त्रनत्रकोटिभिः ।।

Colophon : नही है ।

१५४१. पद

Opening : मोह यानी हिरदै नाम श्री जिनराज को ।
जा वानी तै सब सुख उपजै, सोई हमै सुहाय ।। श्रीजि० ।।

Closing : सेवक जान दया कर स्वामी, फिर न फिरौ भव फेरी ।।प्रभु०

Colophon : इति पद ।

१५४२. पद

Opening : अब चल संग हमारे, तोहे बहुत जतन कर राखो रे काया ।। टेक
निस दिन पल पल रहे है एकठे अब क्यूं नेह निवारे रेकाया।।१।।

Closing : जिनवर नाम सार भज अंतम काया भरम संसारे ।
सुगुर वचन परतीत धरत शुभ आनंद भए हैं हमारे रीकाया
।। अब चल ।।

Colophon : इति पद चेतावनी सम्पूर्णम् ।

१५४३. पद

Opening : आज गई थी समवसरण मां जिनवचनामृत पीवा रे।
आवा श्री परमेसर वदन कमल छवि हरषे निरखेवा रे
॥आवा. ॥१॥

Closing : परम दयाल कृपाल कृपानिधि इतनी अरज सुणीजै
परम भगति जिनराज तुहारी अपणी कर जाणीजै ।३॥ कु० ।

Colophon : इति श्री जिन कुसलसूरि जी गीतम् ।

१५४४. पद

Opening : मिल जाओ ·· ··· गुरु के वचन मोती कान में ।

Closing : सात विसन आगे आवागमन निवारो ॥ वृ० ॥

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१५४५. पद

Opening : विना प्रभु पार्श्व के देखे मेरा दिल बेकरारी है ॥ विना ॥
चौरासिलाख मे भटको बहुत सी देहधारी है ।
मुसीबत जो पडी मुझपै प्रभु को खुद निहारी है॥ विना ॥ ॥१॥

Closing : देव त्वदीय ·· ·· ·· ·· तव दिव्यघोषम् ॥८॥

Colophon : इति काव्य संपूर्णम् ।

१५४६. पद

Opening : देखो मतलब का ससारा, देखो मतलब का ससारा ॥ टेक ॥

Closing : भांग चदमा चंद या प्रकार जीव लहै सुख अपार याको निहार
स्याद्वाद की उचरनी
परनति सब जीवन की तीन भांत वरनी ॥ परनति० ॥४॥

Colophon : इति पद सम्पूर्णम् । मिति भादव बदी ३ वार सनिश्चरवार सम्वत् १६४८ का । लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम मध्ये ।

१५४७ पद

Opening : तुम भजौ निरंजन नाव मुक्ति पद पाई ।
ये अचल अखंडित जोति सदा सुखदाई ।। टेक ।।

Closing : अब जैनधर्म हितकार सदा मै चाहूँ ।
अब लख चौरासी माहि फेरि नही आऊँ ।।
कोई जिनवें यू तिणदास भावनी गाई ।। तुम भजौ ।।

Colophon : इति पद मरहटी समाप्तम् । शुभं भूयात् मिति भादव सुदी ११ वार सोमवार सवत् १६४८ लिख्यत अमीचद श्रावक पालमग्राम का वासी ।

१५४८. पद

Opening : दिन वारन बोल दुनिया मीनष जमारोपाय जी ।।

Closing : पतरी मारग जावतार साम मिल गया चोर,
पतरी बाण भया .... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१५४९. पद

Opening : नेमि सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।
संतु खग दिवारि सील जो न किया जोर जुगती मो तारी लगीहो।

Closing : … नेम सावरो से म्हारि प्रीत लगी हो ।

Colophon : पद संपूर्णम् । सवत् १९१६ मिति चैत्र वदी १५ । बाबू हरलाल जी अग्रवाल गांगिलगोत्रस्य पुत्र बाबू वधनलाल जी तस्य पुत्र बाबू लक्ष्मीनारायन जी भार्या मधुवन बीवी पुस्तक लिखापित आरे मध्ये संपूर्णम् ।

१५५०. पद

Opening : मुझे है चाव दर्शन का …… उबारोगे तो क्या होगा ।।

Closing : अधम उद्धार पूरन के ‥ ……नीकारोगे तो क्या होगा ।।

Colophon : इति पूर्णम् ।

१५५१. पद

Opening : शरण पिया जैसो होगी रघुवीर ।।

Closing : ‥ मेरो वार क्यो विलम्ब करो रे ।।

Colophon : नही है ।

१५५२. पद

Opening : तारण वाला न कोई ए जी का ।
आप तरे आप ही ग तोरे देखो चित में जोई ।
लाख बात की बात है चेत न जाने सिवसुख होइ ।।ए जी का ।।१।।

Closing : वादि न क्यो न विचारी चेतन अबहु होहु खरे ।
जब सुध आवे चेतन प्यारे की तब सब काज सरे ।। ए चेतन ।।

Colophon : नहीं है ।

१५५३. पद

Opening : किये आराधना तेरी हिये आनंद व्यापत है ।
तिहारे दर्शन देखे सकल ही पाप नाशत है ।।१।।

Closing : दुर्लभ है नर अवतार नहि बार बार श्रावक — ···
— ··· सब साधुन ने भाई ।।१२।।

Cloophon : इति द्वादशानुप्रेक्षा समाप्तम् ।

विशेष— पद के साथ ही द्वादशानुप्रेक्षा भी संकलित है ।

१५५४. पद

Opening : जाके वंदन पइयत है री मुक्ति महासुख खानि ।। माधुरी ।।

Closing : सबही चाहै भोग सजोग, तैं मिल तैं तजि लीनौ जोग ।
सील वरत चित्त मैं दृढ़ राखि, जग भाषौ तेरी उत्तम साखि ।

Colophon : इति ।

१५५५. पद

Opening : कर जोड़ी माथ नाए नमो मैं बेरी बेरी ।
हे वीर पीर हरिये सिताबी से अब मेरी ।। टेक ।।

Closing : प्रभु जी तुम तीन ज्ञानधारी,
सच्चे होगे ब्रह्मचारी,
तजी तुम राजुल सी नारी,
भए हो गिर के तपधारी,
धर्मचदनी रामचद गावै जिन शरण लिया,
हम को छाँडि चले सखी री साजना ।।५।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१५५६. पद

Opening : प्रात भयो सुमिरि सुमिरि देव पुण्यकाल जात रे
चूकत जे औसर ते पीछै पछितात रे ।। प्रा० ।।

Closirg : माधुरी जिनवानि चलो री सुनिह,
विपुलाचल परि बाजै वाजैत भुनक परी मेरे कान।
वर्द्धमान तीर्थङ्कर आयेरी, वदे निज गुर जानि ॥

Colophon : नहीं है।

१५५७. पद

Opening : सिद्धचक्र की सेवा कीजे, नवपद महीमा धारी है।
अरीहंत सिद्ध श्री उवझाया सकल साधु गुन भारी है।।

Closing : अरज सुना वेहरमान वदो नितमेव रे
चेतन को तार लेव मत वीसारो टेव रे ।। प्र० ।।

Colophon : इति पद सम्पूर्णम्।

१५५८. पद

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतनं दुखहरण तुम्हारानाना है।
मत मेरी वार अवार करो मोही देहु विमल कल्याना है ।। टेक ।।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हित जन दीन अनाथ पुकारी है,
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोही विथा विस्तारी है,
ज्यों आप अवर भवि जीवन की तत्काल विथा निरवारी है,
त्यो वृदावन कर जोर कहै प्रभु आज हमारी ही बारी है ।।टेक।

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम्।

१५५९. पद

Opening : मोह नीद में ी उर भ है, भोत दीना ं जाया । जीन ।।१।

Closing : अस्पष्ट।

Colophon : नहीं है।

१५६०. पदसंग्रह

Opening : किये आराधना तेरी, हिये आनंद वियापत है।
तिहारे दरस के देखे सकल ही पाप नासत हैं।।१।।

Closing : केवल मैं सुकल मैं अचल सो मैं अचल मैं हूं।
जिनद वकस रिधि सिधि मैं मिलि अटल रहूँ।

Colophon : इति पदसम्पूर्णम्। मितिमाघ वदी १।

१५६१. पदसंग्रह

Opening : भजन तो बनता नही, ध्यान तो लगता नही मन तो सैलानी ।।
खाने को तो अच्छा चाहिये, और ठंडा पानी
चावने को पान बीड़ा और पीकदानी
ऊँचे नीचे महल चाहिये ताजु आसमानी ।।

Closing : तीन खंड के नाथ धनी तुम हरि ल्याये जो परनारी।
यह कैसे छूटे लगा कलक कुल मे भारी ।।

Colophon : अनुपलब्ध।

१५६२ पद-विनती

Opening : सुमरण ही मैं तारे प्रभु तो ।। सु० ।।

Closing : जिनराज छवि मनमोह लियो
महाराज सबी मन मोह लियो ।। टेक ।।

Colophon . अनुपलब्ध।

१५६३. पद-हजूरी

Opening : धरी घन आज की आई सरे सर काज मो मन के ··· ।।

Closing : तीन लोक को रावन अधिपति लक्ष्मन हाथ मरौ ।
द्यानत की अर्ज वीनती जामन मरन हरौ ॥

Colophon : पद संपूर्णम् ।

१५६४. पद होली

Opening : सम्मेद शिखर सुखदाई री मोको सम्मेद शिखर सुखदाई ॥ टेक ॥
वीसतीर्थंकर वीस कूट में कर्म काटि सिद्ध पाई ।
तिनके चरण कमल नित वंदौ मन वच तन लवलाई,
पाप सब जाई पलाई ॥ १ ॥

Closing : चेत चेतन चेचेन तुम्हें बार बार समझाई ।
कहत शिखर मन वच तन सेती भज ल श्री जिनराई ।
याहि ते शिव सुख पाई ।
ऐ चेतन तुम्हे चेत न आई ॥ ६ ॥

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१५६५ पद्मावती अष्टोत्तर शतनाम

Opening : नमोनेकांतदुर्ध्वांमारप्टतद्रुणभानुवे ।
जिनाय सकलाभीष्ट ध्यायनि:कामधेनवे ।

Closing : दिव्यं स्तोत्रमिद महासुखकर आरोग्यसंपत्करम्,
भूतप्रेतपिशाचराक्षसभयं विध्वंसनिर्णाशनम् ।
आनरसते ? वांछित सुनिलय सर्वेपि मृत्युंजयः,
दिव्य व्याप्तकरं कविं च जनकं स्तोत्र जगन्मगलम् ।

Colophon : इति पद्मावती अष्टोतरशतनामावली सपूर्णम् ।

१५६६ पद्मावती स्तोत्र

Opening : श्रीमद्गीर्वाणचक्रं स्फुटमुकुटतटीदिव्यमाणिक्यमाला,
ज्योतिर्ज्वालाकराला स्फुरति मुकुटिकाघृष्टपादरविंदे ।

व्याघ्रोरुल्का सहस्रज्वलदलनशिखा-लोलपाशांकुशासम्,
आं क्रों ह्रीं मत्ररूपे क्षयितदलमरे रक्ष मा देवि पद्मे ॥१॥

Closing : आह्वान न जानामि न जानामि विमर्जनम् ।
पूजां अर्च्चां न जानामि मम क्षमस्व परमेश्वरी ॥३३॥

Colophon : इति श्री पद्मावती स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२२ ।
जि० र० को०, पृ० २३८ ।
Catg. of Skt. & Pkt Ms, P. 663.

१५६७. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५६६ ।

Closing : ... न मस्मरणाद् व्रजति नितरां ... दुर्भिक्षदावानलम् ॥

Colophon ; इति श्री पद्मावती स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५६८. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing : आयुर्वृद्धिकरी जयामयकरी सर्वार्थसिद्धिप्रदा:,
सद्य प्रत्ययकारिणी भगवती पद्मावती ता स्तुवे ॥३६॥

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रं समाप्तम् ।

१५६९. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५६६ ।

Closing : पठितं भणितं गुणितं जयविजयरम-निबन्धन परमम्
सर्वव्याधिहरस्तोत्र त्रिजगत. पद्मावतीस्तोत्रम् ॥३३ ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्रम् ।

सन्दर्भ के लिए देखें, क्र० १५६६ ।

१५७०. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : चवच्चारूगशाकपूर्णवदना ... संयोज्य हस्तद्वयम् ॥१॥

Closing : लक्ष्मीवृद्धिकरा जगत्सुखकरा ... पद्मावती पातु व ॥

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सपर्णम् ।

१५७१. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : ॐ जयतीभद्रमाताङ्गी सर्वपापप्रणाशनी ।

सर्वदु:खक्षयंकारी महापद्मे नमोनम ॥१॥

Closing : अपुत्रो लभते पुत्र धनार्थ लभते धनम् ।

विद्यार्थी लभते विद्या सुखार्थी लभते सुखम् ।

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५७२. पद्मावती -स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १५६६ ।

Closing : भव्या: कुर्वन्ति मा पूजा सद्भक्त्याभीष्टसिद्धये ।

एवं पूजाविधिर्लोके जीयादाऽऽचंद्रतारकम् ॥

Colophon : इति इष्टप्रार्थना पुष्पांजलि इति पद्मावतीपूजा समाप्तम् ।

१५७३. पद्मावती-स्तोत्र

Opening : जिनसासनी हंसासनी पदमासनी माता ।
भुजचारते फलचारदे पद्मावती माता ॥

Closing : जिनधर्म्म से डिगने का कही आपरे कारन
तो लीजियो उबार मुझे भक्ति उदारन ।
न कर्म के सजोग सो जिस जोनि मे जावो ।
तहां दीजियो सम्यक जो शिवग्राम को पावो ॥

Colophon : इति पद्मावती-स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२१ ।

१५७४. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : प्रणम्य परमा भक्त्या देव्याः पादाब्जमस्तिद्या ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये तद्भक्तिसिद्धये ॥१॥

Closing : भो ? देवि ! भो मात ·····मंक्ष्यम्यति प्रीतिफलाप्नोति॥१३५॥

Colophon : इति पद्मावतीस्तोत्र सहस्रनामस्तवनं सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४२ ।

१५७५. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४ ।

Closing : भो देवी भीमा · न क्षम्यति प्रीतिपलायने किम् ।

Colophon : इति श्री पद्मावती सहस्रनाम सम्पूर्णम् ।

१५७६. पद्मावती सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४ ।

Closing : देखे, क्र० १५७४ ।

Colophon : नही है ।

१५७७. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : श्रीमत्पार्श्वेशमानम्य पद्मावत्यामहाश्रिया ।
नामान्यष्टसहस्राणि वक्ष्ये भक्त्या मनोमुदा ।।१।।

Closing : भक्त्या पठन्तिवद स्तोत्र हितोपकृतमुत्तमम्,
आचन्द्रतार्क जीयात्सङ्घव्यसुखहेतवे ।।३४।।

Colophon : इति पद्मावती सहस्रनाम समाप्त: ।

१५७८. पद्मावती-सहस्रनाम

Opening : देखें, क्र० १५७४ ।

Closing : जयना पूजिता पूज्या पद्मावतीसमन्विता ।
ते जना सुखमाप्नोति यावत्मेरुजिनालय ।।१४।।

Colophon : इति पद्मावती उद्यापन पचाग पूजा समाप्तम् ।
लिखित पडित सेवाराम, सवत् १८२७ कुवार कृष्णपक्षे नौमि
शुक्रदिने लक्ष्मणपुरनगरे कौशलदेशे ।

१५७९. पद्मावती-विनती

Opening : देखे, क्र० १५७३ ।

Closing : देखें, क्र० १५७३ ।

Colophon : इति श्री पद्मावती जी की वीनती संपूर्णम् ।

१५८०. पद्मावती-विनती

Opening : देखें, क्र० १५७३ ।
Closing : देखे, क्र० १५७३ ।
Colophon : इति पद्मावती जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१५८१. पद्मनंदिपंचविंशितिका

Opening : हृदय भुवि ... ... सुभव्यम् ॥
Closing : ताते धर्मकुं धारणकर पुण्य का संचय करो ।
Colophon : नहीं है ।

१५८२. पंचनमस्कार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४७८ ।
Closing : देखें, क्र० १५१८ ।
Colophon : इति पंचनमस्कार-स्तोत्रम् ।

१५८३. पंचनमस्कार

Opening : ॐ नम: सिद्धेभ्य। । अथ कतिपय पंचपरमेष्ठिनां सप्रादाया- ... ... लिख्यते पंचनामादि पदानां पंचपरमेष्ठं ... ... ।
Closing : अस्पष्ट ।
Colophon : नहीं है ।

१५८४. परमेष्ठीस्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५१६ ।
Closing : देखें, क्र० १५१६ ।
Colophon : इति श्री परमेष्टीस्तोत्रम् ।

१५८५. परमानन्द-स्तोत्र

Opening : परमानंदसंयुक्तं निर्विकारं निरामयम् ।
ध्यानहीना न पश्यन्ति निजदेहे व्यवस्थितम् ।
Closing : काष्टमध्ये यथा वह्निः शक्तिरूपेण तिष्ठति ।
अयमात्मा शरीरेषु यो जानाति स पंडितः ।
Colophon : इति श्री परमाणद स्तोत्र समाप्त. ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७२६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १४४ ।
Catg. of Skt, & Pkt Ms. P. 665.

१५८६. परमानंद-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५८५ ।
Closing : देखें, क्र० १५८५ ।
Colophon : इति श्री परमानंद स्तोत्रं समाप्तम् ।

१५८७. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३२२ ।
Closing : देखें, क्र० १३२२ ।
Colophon : इति पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५८८. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : अजरअमरपारं वारदुर्वारिवारं गलितवहलस्वेद सर्वतत्वानुवेदम् ।
कमठमदविदारं भूरीसिद्धान्तसार विगतवृजनयूथं नौमि य पार्श्वनाथम् ॥१॥

Closing : तीरथपति पारसनाथतिलो भणतां यसबासरवासभलो
मर्नामित्र सुकोमल होइ मिलो अमची प्रभुपारस आसफलो ॥१४॥

Colophon : इति पार्श्वनाथ चिंतामणि स्तोत्रम् ।

१५८९. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

विशेष— यह पूर्णतः जीर्ण-शीर्ण है ।

१५९०. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : श्यामो वर्णविराजतेतिविमले श्यामोपिसर्पोस्मृत.,
श्यामो मेघ निर्घरोपि च घटाश्याम चराग्निखिलम् ।
वर्षामूसलधार-वीरमखिल कायोत्सर्गे नता,
धरणेंद्रो पद्मावती युगस्वर श्री पार्श्वनाथं नम ॥१॥

Closing : इद स्तोत्र पटेनित्य त्रिसध्य च विशेपतः,
ग्रहे भवति कल्याणं पार्श्वतीर्थं स्तवंन च ॥८॥

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्रम् ।

१५९१. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १३२२ ।

Closing : देखें, क्र० १३२२ ।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५९२. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : नरेन्द्रं फणीन्द्रं सुरेन्द्रं अधीसं सतेन्द्रं सुपूज्य नमो नायशीशम् ।
मुनीद्रं गणेन्द्रं नमो जोरि हाथं नमो देवचिन्तामणि पार्श्व-नाथम् ।।

Closing : गणधर इद्र न कर सकै तुम विनती भगवान ।
द्यानत प्रीत निहारिकै कीजै आप समान ।।१०।।

Colophon इति पार्श्वनाथस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१५९३. पार्श्वनाथ-स्तुति

Opening : जाकी देह मरकतमनि सो उद्योत अति आनन पे कोटि काम-देव छवि हटकी ।
अंबुज के पत्र सो विशाल दृग लाज भरे सीस पे सरपफन सोभा है मुकुट की ।।

Closing : तुम तो करुना निधि नायक हो मेरी पीर हरो दुखददन की,
कर जोरि के लालविनोदी कहे वलि जाऊँ में वामा के नंदन की ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ जी की स्तुति समाप्तम् ।

१५९४. पार्श्वनाथ-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री मात श्री पद्मावते नमः, ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्री धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय ।

Closing : जो निय कंठे धारइ कम्पमिमं कप्परुख सारित्थं ।
अविकप्प सोकामिय कप्पण कप्पद्दुमो सुहई ।।२३।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ मंत्र सहित स्तोत्रम् ।

१५९५. थार्श्वनाथाष्टक

Opening : खीरजलनिधिनीरनिर्मलमिश्रदिमकरवासयम्,
धारात्रयं भृंगारभरिकरीजन्ममरणविनासनम् ।
पूज्यभवजीवसौख्यदायक दुरितकल्मषखडनम्,
श्रीपार्वनाथ सुदेवजिनवर मूलनायक वंदनम् ।

Closing : नीरचन्दन ··· ·· मूलनायकवंदनम् ।

Colophon : इति पार्श्वनाथाष्टकम् समाप्तम् ।

१५९६. पार्श्वनाथाष्टक

Opening : क्षीर पयोनिधि को जल उज्वल निर्मल सीतल सू भरिझारी ।
पाप मिटे जिन मत्रह के सुधि जिनाम्र पदांबुजधारकरी ॥
अति सुंदर देउ लगाव मनोहर श्रीमूलनायक पार्श्वभरम् ।
शत इंद्र समर्चित पादयुगं सुभवांबुधि तारन पापहरम् ॥

Closing : दशावतारो भुवनैकमल्लो गोपांगना सेवित पादपद्मम् ।
श्रीपार्श्वनाथो पुरुषोत्तमो य ददातु सर्वं समीहितानि ॥१६॥

Colophon : इत्याष्टक जयमाला समाप्त ।

१५९७. पार्श्वजिन आरती

Opening : स्वामी पार्श्वकुमार हूं करुं वीनती आगीए ।
तुम त्रिभुवन पतिधार मै तुम सरन चरन गहिए ॥१॥

Closing : श्री जिनधर्म प्रभाव मनवंछित फल पावई ए ।
भैरो पर होय सहाय अपनी उंड ? निवाहगयै ए ॥

Colophon : इति श्री पार्श्वजिन आरती।

१५९८. प्रत्यंगिरा सिद्धि-मंत्र-स्तोत्र

Opening : ॐ ह्री यां कल्पयंतिनो अवधं ···· ·· ब्रह्मणा अतिनिर्णय:····· ।

Closing : यस्य देवे च मंत्रे च गुरौ च त्रिषु निर्मला,
न व्यवछिद्यंते भक्तिस्तस्य सिद्धिरदूरत: ।।

Colophon : इति श्री रूद्रजामले पार्वती स्वरसंवादे छराजोगमूलपाणि तत्र विनिर्गते प्रत्यगिरा सिद्धमंत्रस्तोत्रं संपूर्णम् ।

१५९९. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : आद्यताक्षरसंलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत् स्थितम् ।
अग्निज्वालासमंनाद् बिन्दुरेखासमन्वितम् ।।१।।

Closing : इति स्तोत्र महास्तोत्र स्तुतीनामुत्तमं परम्,
पठनात्स्मरणाज्जापाल्लभते पदमव्ययम् ।।६३।।

Colophon : इति ऋषिमंडल स्तोत्रम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ७४६ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।
Cagt, of Skt & Pkt. Ms P. 629

१६००. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १५९९ ।

Closing : देखे, क्र० १५९९ ।

Colophon : इति ऋषिमंडलस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६०१. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opennig : देखें, क्र० १५६६ ।
Closing : देखें, क्र० १५६६ ।
Colophon : इति श्री ऋषिमडलस्तोत्र समाप्तम् ।

१६०२. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : देखे क्र० १५६६ ।
Closing : दृष्टेशासर्हतेबिंबे भवेत्सप्तमके ध्रुवः ।
पदमाप्नोति विश्वस्त परमानंदसंपदा ।।
Colophon : इति रिषीमंडल स्तोत्र संपूर्णम् ।
विशेष — इसके साथ एक मंत्र भी लिखा है ।

१६०३. ऋषिमंडल-स्तोत्र

Opening : आद्य पद शिरोरक्षेत्पर रक्षतु मस्तकम् ।
तृतीयं रक्षेन्नेत्रे चतुर्थं रक्षेच्च नासिकाम् ।।६।।
Closing : यावच्चद्रार्य्यमा च .... .. सद्विमानाकुलागाः ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१६०४. साधु वंदना

Opening : श्री जिन भाषित भारती सुमिरि आनि मुखराग ।
कहों मूलगुन साधु के परमिति विंशति आठ ।।
Closing : अट्ठाईस मूलगुन जो पाले निरदोष ।
सो मुनि कहत बनारसि पावै अविचल मोक्ष ।।
Colophon : इति साधु वंदना समाप्ता ।

१६०५. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : वागटी जिनसेनेन जिननामानि सार्थकम्,
अष्टाधिकसहस्राणि सर्वाभीष्टकराणि च ।।११।।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचितं युगादिवाष्टोत्तरसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १३४ ।

१६०६. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचित युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् । संवत् १६८६ का मिति कुवार सुदी लिपीकृतं वृजीरामेण आरा मध्ये । श्रीरस्तु ।

१६०७. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १४६५ ।

Closing : देखे, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यविरचितं युगादिदेवाष्टोत्तरसहस्रनाम स्तोत्र समाप्तम् ।

१६०८. सहस्रनाम-स्तवन

Opening : प्रभो भवांगभोगेषु .... शरण्यं करुणार्णवम् ।

Closing : एतेषामेकमप्यर्हन्नाम्नामुच्चा ..... जिनायातः ।।

Colophon : इत्याशाधरसूरिकृतं जिनसहस्रनामस्तवनं समाप्तम् ।

१६०९. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : श्रीमान् स्वयंभूर्वृषभ. शम्भवः शंभुरात्मभूः ।
स्वयंप्रभ प्रभुर्भोक्तिविश्वभूरिपुनर्भव ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १६०५ ।

Colophon : इति श्री जिनसेनाचार्यप्रणीतं जिनसहस्रनामस्तवनं सम्पूर्णम् । सवत् १८४२ वर्षे मीति आसाढ़ सुदी ४ मथेनभाउ परताप-गढ़ मध्ये लिखतम् ।

१६१०. सहस्रनाम-स्तोत्र

Opening : परम देव परनाम करि, गुरुको करो प्रणाम ।
बुद्धि बल वरनो ब्रह्म के सहस अठोतरनाम ॥

Closing : सगुन विभूति वैभवी सेसुखी ससंबुद्ध ।
सकल विश्वकर्मा ········· विश्वलोचन शुद्ध ॥

Colophon . इति श्री दुर्गतिदलन नाम नवम सतक संपूर्णम् ।

१६११. सहस्रनाम

Opening : तुम स्वयंभू अनादि सिद्ध अजन्मा सो तिहारे ताई नमस्कार होहु । त्वम आपकूं आप करि आप विषै उपजाय प्रगट भये हो । उपजी है आत्मवृत्ति जिनकै अर अचिंत्य है वृत्ति जिनकी ।

Closing : भगवान स्वयंभू समस्त नरमुनि के स्वामी जगतपति विहार करै ही तिनकूं इन्द्र के मुख तें ए प्रार्थना के वचन नीसरे ते पुनरुक्त समान होते भये । २६ ।

Colophon : इति श्री भाषा सहस्रनाम संपूर्णम् ।

१६१२. समन्तभद्र-स्तोत्र

Opening : नताखंडलमौलीना यत्पादनखमंडलम् ।
खडेन्दुशेखरीभूतं नमस्तस्मै स्वयभुवे ॥

Closing : अर्हं सिद्धाचार्य उपाध्याय सर्वसाधूनिह ।
पंचनमस्कारो भवभवे मम सुहं धंतु ॥ ॥

Colophon ; इति समंतभद्रस्तोत्र सपूर्णम् ।

१६१३. सम्मेदशिखर-स्तुति

Opening : मैं आयो सरणते तेरे ।

Closing : मो करणी पे नजर न कीजे छीमा करो प्रभु मेरे ।
दीनबन्धु तुम पतित उधारण सेवक चरण गहो रे ।.मैं आयो० ॥

Colophon । इति सम्मेदशिखर की पद सपूर्णम् ।

१६१४. सम्मेदाचल-स्तोत्र

Opening । सम्मेदशैल ·· भक्तिभरेण नौमि ॥१॥

Closing : तीर्थानामुत्तम तीर्थ निर्वाणपदमग्रिमम् ।
स्थानानामुत्तम स्थान सम्मेताद्रे सम नहि ॥२३॥

Colophon : इति सम्मेदाचलमहात्मस्तोत्र समाप्तम् । श्रीरस्तु सवत् १८२८ वर्षे आषाढ़ द्वितीय वदि अष्टम्यां आदित्यवारे लिखतं लक्ष्मणपुर-मध्ये श्रीपार्श्वनाथचैत्यालये । शुभ भवतु ।

१६१५. सन्ध्या

Opening : वामे बहुत कुशान् प्रणव गायत्र्यां रात्रा कुर्यात् ।

Closing : .... — ततः प्रणिपत्य विसर्जयेत् ।

Colophon : इति संध्या समाप्ता ।

१६१६. शांतिजिन-आरती

Opening : आरती कीजै स्वामी शांत जिनंद की ।
सब सुखदायक आनंद कंद की ॥
विश्वसैन राजा जी के नंदन ।
दरसन करत मिटै भवफंदन ॥

Closing : भैरौं जे नर आरती गावै ।
मन वंछित फल सोई पावै ॥ आरती० ॥

Colophon : इति श्री शांति जिन आरती समाप्तम् ।

१६१७. शांति-स्तुति

Opening : जय जिनवर गुन रतन निधाना, परमपूज संसै तम भाना ।
मोह महागिर वज्र सुयेवा, सुर नर असुर करै तुम सेवा ॥

Closing : हे जिनवर मैं जायो ये ही होहु सकल कल्यान अछेही ।
मै निज आतमीक गुन पावो सिधालै में सिध सु जावें ॥

Colophon : इति शांति जी पूर्ण भई ।

१६१८. शांतिनाथाष्टक

Opening : सकलगुणनिधानं सर्वसत्वे समानं मदनमदविनाशं मुक्तिकान्ता निवास
सरुजकमलमित्र सर्वविघ्नपवित्र: अनुपमसुख लक्ष्मी वर्द्धतां
शांतिनाथः ॥१॥

Closing : शांत्याष्टकं सुरनरेण सेव्यमानम्,
भव्येषु ये परिपठन्ति समस्तनीयम् ।
ते स्वर्गसौख्यमनुभूय मनुष्यलोके,
धर्मार्थकाम-समसा-वहीयात्तिमान: ॥

Colophon : इति शांतिनाथाष्टकम् ।

१६१६. शारदाष्टक

Opening : ॐकार धुनि सुनि सुनि अरथ गनधर विचारैं ।
रचि आगम उपदिसैं भविक अब तासैं निवारैं ॥
सो सत्यारथ सारदा तासु भगति उर आनि ।
छद भुजग प्रयातमैं अष्ट कहो बखानि ॥१॥

Closing : जे हित हेतु बनारसी देहि धर्म उपदेश ।
ते सब पावहि परम सुख तजि संसार कलेस ॥८॥

Colophon : इति श्री शारदाष्टक समाप्त ।

१६२०. शारदा-स्तुति

Opening : देवी श्रीश्रुतदेवते भगवति त्वत्पादपंकेरुहा· सपूजयामीधुना ॥

Closing : अरिहंत भासिय · णमहोमिहं सिरसा ॥

Colophon : इति सारदा-स्तुति अष्टक-जयमाल समाप्तम् ।

१६२१. सरस्वती स्तुति

Opening : जन्ममृत्युजराक्षयकारणं · समयसारमहं परिपूजये ॥१॥

Closing : मनयकीर्तितान्विमस्तुति पठति य. सतत मतिमान्नर: ।
विजयकीर्तिगुरो कृतमादरात्सुमतिकल्पलता फलमश्नुते ॥६॥

Colophon : इति सरस्वतिस्तुति ।

१६२२. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : नमस्ते सारदा देवीं जिनास्यांबुजवासिनीम् ।
त्वामहं प्रार्थये नाथे विद्यादान प्रदेहि मे ॥१॥

Closing : सरस्वती मया दृष्टे देवी कमललोचना ।
हंस स्कंध समारुढ़ा वीणापुस्तकधारणी ॥१२॥

Clolophon : इति सरस्वति-स्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७६८ ।

१६२३. सरस्वती-स्तोत्र

Opening : जयत्यशेषामरमौलिलालितं सरस्वतित्वत्पदपंकजद्वयम् ।
हृदिस्थितं यज्जनजाड्यनाशनं रजो विमुक्तं श्रयतीत्यपूर्वताम् ॥

Closing : कुंठास्तेपि बृहस्पतिप्रभृतयो यस्मिन् भवंति ध्रुवम्,
तस्मिन् देवि तव स्तुतिव्यतिकरे मंदानराके वयम् ।
तद्वाक-चापले मे तदा श्रुतवतामस्माकमेव त्वया,
क्षतव्यं मुखरत्वकारमगौ येनाति भक्तिग्रहः ॥३१॥

Colophon : इति श्री सपूर्णम् ।

१६२४. शास्त्र-वनती

Opening : वंदों तु शास्त्र जिनेस भाषित महासुर्ग निधान ।
जा सुनत सब अज्ञान भाजत होत ज्ञान महान ॥

Closing : ते शास्त्र जी मेरे मन वसो, मेरी हरौ भौ भव भीर ॥६।

Colophon : इति शास्त्र की विनती संपूर्णम् ।

१६२५· सिद्धि-भक्ति

Opening : सिद्धानुद्धूतकर्म्मप्रकृति-समुदयान् साधितात्मस्वभावान्
वंदे सिद्धिप्रसिद्धै तदनुपमगुणप्रगटाकृतितुष्ट: ।
सिद्धि: स्वात्मोपलब्धिः प्रगुणगुणगणो छादिदोपापहागाद्योग्यो-
पादान् युक्त्या दृषद इह यथा हेमभावोपलब्धि ॥१॥

Closing : ······ सुगइगमणं समाहिमरण जिनगुणसम्पत्ति होउ मज्झ ॥

Colophon : इति सिद्धभक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७० ।
जि० र० को०, पृ० ८३८ ।

१६२६· सीता-विनती

Opening : प्राणी डारे अरहंत का गुणगाय अरे प्राणी,
जब लग सास शरीर में जी ॥१॥

Closing : रामचंद्र मुकति पद्यास्यातौ सीता सुरपति थाय जी
जो नरनारी ए गुण गावै तौ देव ब्रह्म पदपाय जी ।

Colophon : इति सीता जी की विनती सम्पूर्णम् ।

१६२७. श्रीपाल-विनती

Opening : देखें, क्र० ११६३ ।
Clos gn : देखे, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपालविनती संपूर्णम् ।

१६२८. श्रीपाल-विनती

Opening : देखे, क्र० ११६३ ।
Closing : देखें, क्र० ११६३ ।

Colophon : इति श्रीपाल राजा की विनती सम्पूर्ण ।

१६२६. श्रुतभक्ति

Opening : स्तोष्ये संज्ञानानि परोक्षप्रत्यक्षभेदभिन्नानि ।
लोकालोकविलोकन लोलितसल्लोकघनानि सदा ।।१।।

Closing : सुगइ गमणं समाहिमरणं जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झ ।।

Colophon : इति श्रुतज्ञान भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७७३ ।

१६३०. स्तोत्र

Opening : प्रभुनम्यराजी ···· ···· चन्द्रप्रभं देवदेवम् ।।

Closing : सर्वपापविनिर्मुक्ति. सुभगोलोकविश्रुतः ।
वाछितं फलमाप्नोति लोकेस्मिन्नात्र संशयः ।।

Colophon : इति श्री शारदायास्तोत्रम् ।

१६३१. स्थापना आरती

Opening : सुखयसयलमण्टि जिमजिणवर सुरणरकगपति सेविय ।
तिम चारित्रसयलधम्मदपर सामय पदवरसेविय ।।१।।

Closing : इह भविय णमावहो जिवमुहयावहो चारित्रहजयमालवरा,
इह भवि उहहरहो परभवसुनहो नामद कम्मट्ठ नियरा
।।२५।।

Colophon : इति श्री तेरह प्रकार आरती समाप्तम् ।

१६३२. स्तुति

Opening : हरु प्रभात सुनें नित उठत है, दर्शन प्रभु चरनन चित चहत है।
वारवकि भई छार रहेष के चाव दर्शन प्रचिभूत में धरे ॥१॥

Closing : यह भजन भये संपूर्ण सीता के वनवास की।
हरि कही धरी प्रीत प्रभुचरन ए चित लाई के ॥

Colophon : इति श्रावण शुक्ल सं० १९६५ शनिवार हरीदास ने आरा में लिखे है।

१६३३. सुप्रभात-स्तोत्र

Opening : श्री नाभिनंदन जिनोजितसंभवेसं देवोभिनंदन जिनो सुमति जिनेन्द्रः।
पद्मप्रभो प्रणतदेव-सुपार्श्वनाथं चद्रप्रभोस्तु सतत मम सुप्रभातम् ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपरमार्थविदाम्वरेण ···· ··· कैवल्य वस्तुविशदं जिन सुप्रभातम् ॥४॥

Colophon : इति सुप्रभातस्तोत्रम्।

१६३४. सूर्यसहस्रनाम

Opening : तुहिण किरण विषं पोसयत्यसुमाली,
जयति कमललक्ष्मी भाषयत्यसुमाली।
रजतविरद भीतिमोदयन् कोकवृंदम्,
मुखरनरनागे सर्वदा वंदनीये ॥

Closing : तेजोनिधिवृहतेहा वृहत्कीर्त्तिवृहस्पति।
अहिमान् श्रीमान् श्री सूर्यदेवं नमोस्तुते ॥

Colophon : इति श्री सूर्यसहस्रनाम सम्पूर्णम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १५२ ।
जि० र० को, पृ० ४५२ ।

१६३५. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : येन स्वयंबोधमयेन लोका आस्वासिता केचन वित्तकार्ये ।
प्रबोधिता केचन मोक्षमार्गे तमादिनाथं प्रणमामि नित्यम् ॥१॥

Closing : यो धर्म्मं दशधा करोति पुरुष स्त्रीवाकृतपरस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापारशुध्यानिशम् ।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलिंदापयन्,
नित्यं संश्रियमातनोमि शकल: स्वर्गापवर्गस्थिते: ॥

Colophon : इति श्री स्वयभू समाप्तम् ।

देखें, जै० मि० भ० ग्र० , क्र० ७८३ ।

१६३६. स्वम्भू-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६३५ ।

Closing : देखें, क्र० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयंभू समाप्त: ।

१६३७. स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३५ ।

Closing : देखें, क्र० १६३५ ।

Colophon : इति स्वयभू संस्कृत सम्पूर्णम् ।

१६३८. स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : मानस्तम्भासरांसि ... पीठिकाग्रे स्वयम्भूः ।।
Closing : ये संस्तुता विविधभक्तिः ... विमला कमला जिनेन्द्रा ।।
Colophon : अनुपलब्ध ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I क्र० ७८४ ।

१६३९. विनती

Opening : करुना ले जिनराज हमारी करुना ले महाराज । टेक ।
Closing : इति जितमाला अमल रसाला जो भव्य जन कंठ धरइ ।
.. .. सुर शिव सुन्दर वरइ ।।
Colophon : इति पूजन समाप्ता: ।
विशेष — ग्रन्थ में पूजा भी संकलित है ।

१६४०. विनती

Opening : हो दीन बंधु श्रीपति करुनानिधान जी ।
यह मेरी विथा क्यो न हरो बार क्या लगी ।।१।।
Closing : करुना निधानवान को अब क्यों न निहारे ।
दानी अनंतदान के दाता हो सम्हारो ।।
वृषवदनदवृंद को उपसर्ग निवारो ।
संसार विषमसार से अवपार उतारो ।।
Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४१. विनती

Opening : देखें, क्र० १६४० ।

Closing : देखें, क्र० १६४० ।

Colophon : इति श्री विनती सम्पूर्णम् ।

१६४२. विनती

Opening : त्रिभुवनपति स्वामी जी करूनानिधानामी जी,
सुनो अंतरजामी मेरी विनती जी ॥१॥

Closing : दुष्टन देहु निकास साधन को रख लीजै ।
विनवै भूदरदास ए प्रभु ढील न कीजै ॥१२॥

Colophon : इति संपूर्णम् ।

१६४३. विनती

Opening : तारि तारि जिनराज मनवच तन विनती करो ।
मैं जग बहु दुःख पाय सुख ते किम बरनन करो ॥१॥

Closing : ज्यों जानै त्यो तारि विरद आपनो जान कै ।
हम कितना हि निहार टेक पकर तारो सही ॥१०॥

Colophon : इति विनती सोरठा सम्पूर्णम् ।

१६४४. विनती

Opening : भवविघन विनासनो दुरीय नरासनो अवसानै सरण तुं ही ।
जिन सासन जान्यो इन्द्रज मान्यो पहिलै पूज तुमरि करो ॥

Closing : सदा जिनविंव धरै निज भाल सदा जिन सेर्णकतरिर्महात्मा ।
संज्ञानसागर त्रिवर्द्धनचन्द्रमूर्ति जीय।जिनेंद्रवरक प्रविराजमान ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६४५. विनती

Opening : श्रीपतिजिनवर करुणायतनं दु.खहरण तुम्हारा वाना है।
मत मेरी बार अवार करो, मोहि देहु विमल कल्याना है ॥

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हि ·· · प्रभु आज हमारी वारी है।
॥ टेक ॥

Colophon : इति विनती सम्पूर्णम् ।

१६४६. विनती

Opening : चलो रे मनवा मांगीतुंगी दर्शनकरस्या प्रभु जी का।
सिद्धक्षेत्र की करो वदना दुख टलि जावैं दुरगति का ॥
विषम घाट पहाड़ विच परवत ऊँचा मांगीतुंगी का।
इन पर मुनिवर मुक्ति गया है कोड निन्यानव गिनती का
॥ चलो रे ॥

Closing : उगणीसै की साल जेठ सुदि करी जातरा पंचसका।
हरषकीर्त्ति कहै सुद्ध भाव सो मैरो चरण जिनेश्वर का । चलो।
॥१३॥

Colophon : इति मांगीतुंगी की विनती संपूर्णम् ।

१६४७. विनती

Opening : तुम तरणतारण भवनिवारण भविक मन आनन्दनम्।
श्री नाभिनदन जगत वंदन आदिनाथ निरंजनम् ॥

Closing : मैं अधीन परवस परैं विकै तुम्हारे हाथ।
इतनो करिको जानियै लाख बात की बात ॥

Colophon : इति श्री विनती सपूर्णम् ।

१६४८. विनती

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : भव भव सुख पावै जी, प्रभु हो हूँ सहाइ जी ।
पार उतारी वो जी ।।

Colodhon : विनती सम्पूर्णम् ।

१६४९. विनती

Opening : हो दीनबन्धु श्रीपती करुना निधान जी
यह मेरी वोथा क्यों न हरो ········· ।। टेक ।।

Closing : करुनानिधानवान को — अब पार उतारो ।। टेक ।।

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५०. विनती

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : देखे, क्र० १६४२ ।

Colophon : इति भूदरदास कृत विनती समाप्तम् ।

१६५१. विनती

Opening : देखे, क्र० १६४० ।

Closing : तेरे दास बिहारै नीरमै कीजिए जी नर नारी गावै जी ।
भव-भव सुख पावै जी, प्रभु होउ सहाई पार उतारीए जी ।

Colophon ; इति विनती संपूर्णम् ।

१६५२. विनती त्रिभुवन स्वामी

Opening : देखें, क्र० १६४२ ।

Closing : नर नारी गावें जी, भव भव सुखपावे जी ।
प्रभु होहु सहाई जी, पार उतारिए जी ॥ १६ ॥

Colophon : इति विनती सपूर्णम् ।

१६५३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : स्वात्मस्थित सर्वगत. समस्त व्यापारवेदीविनिवृत्तसंग: ।
प्रवृद्धकालोप्यजरोवरेण्य. पायादपायात्पुरुष पुराण: ॥

Closing : वितरति विहितार्था - सुखानियशो धनजय च ॥

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८५ ।

१६५४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनजयविरचिते श्री विषापहारस्तोत्र समाप्त ।

१६५५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५६· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : नि:शेषत्रिदशेंद्रशेखरशिखा रत्नप्रदीपावली,
सांद्रीभूतमृगेन्द्रविष्टरतटी माणिक्य दीपावली ।
भवेय श्री क्वचनिस्पृहत्वमिदमिखानि यशो धनंजयं च ।।४०

Colophon : इति श्री धनंजयकृतं विषापहारस्तोत्र समाप्तम् ।

१६५७ विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : — येन तेन प्रकारेण विहिता पुन: त्वयि विपये
नुति विषया नमस्कारपूर्वकस्तुति युक्ता: च भक्ति: विद्यते ।४०।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्रस्य बालावबोध टीका संपूर्णम् ।

१६५८. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति श्री धनंजयसूरि विरचितं विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६५९· विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखें, क्र० १६५३

Colophon : इति विषापहार: ।

१६६०. विषापहार स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६५३ ।

Closing : देखे, क्र० १६५३ ।

Colophon : इति विषापहार स्तवनं समाप्तम् ।

१६६१. विषापहार-स्तोत्र

Opening : विश्वनाथ विमल गुन विरहमान वंदौ गुनबीस ।
ब्रह्मा विस्नु गनपति सुन्दरी वरु दानी देहूँ मोहि वागेसुरी ॥

Closing : भय मजन रंजन जगत विषापहार अभिराम ।
संसै तजि सुमिरौ सदा सासी जिनेश्वर नाम ॥

Colophon : इति विषापहार सपूर्णम् ।

१६६२. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार भाषा समाप्तम् ।

१६६३. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखे, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तुति संपूर्णम् ।

१६६४. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखें, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति श्री बिषापहार स्तोत्र भाषा सम्पूर्णम् ।

१६६५. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६१ ।

Closing : देखे, क्र० १६६१ ।

Colophon : इति विषापहार स्तोत्र भाषा संपूर्णम् ।

१६६६. विषापहार-स्तोत्र

Opening : आतमलीन अनंत गुन, स्वामी परमानंद ।।
सुर नर पूजित तासु पद वंदो ऋषभजिनंद ।।

Closing : भयभंजन गंजन दुरित विषापहार सुभाव ।
वैरिन में सुमिरो सदा श्री जिनवर के नाम ।।

Colophon : इति श्री विषापहार स्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६७. विषापहार-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखे, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति विषापहारस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६६८. वृहत्सहस्रनाम

Opening : स्वयंभुवे नमः ········· ··· चित्तवृतये ।।

Closing : इतिप्रबुद्धतत्त्वस्य स्वयंमतुं जिगीयत: ।
पुनरूक्ततरावाच प्रादुरासन जितक्रमो ॥

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम जी समाप्तम् ।

१६६९. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : ... अनादि के कर्म कलंक पंक धाई चिह्लिायकों
अपुनर्भव की लक्ष्मी देह इह प्रार्थना हमारी सफल करो ।

Colophon : इति श्री स्वामी समंत भद्र पर्माहिताचार्य विरचित वृहत् स्वयंभू सम्पूर्णम् ।

१६७०. वृहत्स्वयंभू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : देखें, क्र० १६६९ ।

Colophon : इति श्री स्वामी समंतभद्र पर्माहिताचार्य विरचित वृहत्स्वयंभूस्तोत्र सम्पूर्णम् ।

१६७१. वृहत्-स्वयम्भू-स्तोत्र

Opening : देखें, क्र० १६३८ ।

Closing : ये संस्तुताविविधभक्तिसमंतभद्रै रिंद्रा दिभिविनतमौलि मणिप्रभाभि। ।
उद्योतिताघ्रियुगलं सकलप्रबोधास्तैनोदशंतु विमला कमला-
जिनेन्द्रा: ॥

Colophon : इति स्वयम्भु बडा समंतभद्र कृत समाप्ता: ।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ७८४ ।

१६७२. योग-भक्ति

Opening : थोसामि गणधरराणं अणयोगाणं गुणेहिं तच्चेहिं ।
अंजलि मउ लिय हथो अभिवंदंतो सविभवेण ॥१॥

Closing : इछामि भंते जोगभत्ति काउ सग्गो ... ... सम्पत्ति होउ मज्झं ।

Colophon : इति योग-भक्ति ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०० ।

१६७३. अभिषेक विधि

Opening : श्रीमन् मंदिरसुन्दरे शुचिजलैर्धौते च दर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितंत्वत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोहं निजभूषनार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्राकंकणसेषराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

Closing : वरुनदेवमाह्वानयामहे स्वाहा ॥५॥ पवन .. .. ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६७४. आदिनाथ-पूजा

Opening : परमपूज्यवृषभेस स्वयंभूदेवजू,
पिता नाभि मरुदेवि करै सुर सेवजू ।
कनक वरन तन तुंग धनुष पन सत तनो,
कृपा सिंधु इत आइ तिष्ठ मम दुख हनो ।

Closing : इत्थं श्री जिनराजकर्ममहिमास्तोत्रं पठेद्यः पुमान्,
प्रातः प्रातरुदात्तभावसहितः सम्यक्तशुध्याश्रितः ।
भोगीदैश्चिरकाल तस्सतपसा यत्प्राप्यते तत्सुखम्,

तत्प्राप्नोति पर पदं समतिमानानंदमुद्रांकित: ।।

Colophon । इति चमत्कार आदिनाथ स्वामी पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७५. आदिनाथ-पूजा

Opening । सुषमदुषमतिथि मेटि कर्म प्रभु थापहि, नृप पद तजि वैराग्य भये प्रभु आपही ।
ऐसो आदि जिनेश आदि तीर्थ करा, आह्वाहन विधि करु त्रिविध नमके परा ।।

Closing : यह निज सार अपारं जो भविजन कंठधरिई ।
तेनिजर मरणावलि नासि भवावलि रामचंद्र सिव तियपाई ।।

Colophon: इति श्री आदिनाथ जी की पूजा समाप्तम् ।

१६७६. आदित्यवार-पूजा

Opening । इक्ष्वाकुबंसकुल मडणअश्वसेनो तद्वल्लभ: प्रतिवताजिनवामदेवी ।
तस्या जिन विमलभूति सुरेन्द्रवद्य त्रैलोक्यनाथ जिनपार्श्वपद नमामि ।।१।।

Closing । इति रवि व्रत पूजा सुरपद पूजा जे करते नव वर्ष सही ।
मनवचक्रमधावहि सो सुरपद पावही पार्श्वनाथ फल देतसही ।।

Colophon । इति रविव्रत पूजा समाप्तम् ।

१६७७. आदित्यवार-उद्यापन

Opening : श्री पार्श्वनाथं प्रणमामि नित्यं, सुरसुरै: पूजितपीठबंधम् ।
रविव्रतोद्यापनकं प्रवक्ष्ये भव्याय नून महतादरेण ।।१।।

Closing : रविव्रतमहापूजाश्लोकपिंडीकृताधुना ।
पंचात्माविने मया विप्रं लेषकं चित्ततर्पका: ।।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषणविरचिते । आदित्यवार-व्रत उद्यापन विधि पूजा समाप्ता ।

१६७८. अकृत्रिम-चैत्यायल आरती

Opening : सकल सुहकारणं दुग.वारणं ·· ···· सुरसुन्दरम् ।

Closing : इह णंदीसर भावऊ- पूज्य सुहावऊ · ··· चंद्रकीर्त्ति सुहावऊ ।।

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालय जयमाल समाप्तम् ।

१६७९. अकृत्रिम चैत्यालय अर्घ्य

Opening : वर्षेषु वर्षांतरपर्वतेषु नंदीश्वरे यानि च मदिरेषु ।
यावन्ति चैत्याययतनानिलोके, सर्वानि वंदे जिनपुंगवानाम् ।
अवनितलगतानां कृत्तिमाकृत्तिमानां,वनभवनगतानां दिव्यवैमानिकानण
इहमनुजकृतानां देवाराजार्चितानां जिनवरमिलयानां भावतोहं स्मरामि ।।१।।

Closing : द्यौ कुन्देन्दु ··· ·· — प्रयछंतुनः ।।५।।

Colophon : इति अकृत्तिमचैत्यालय जयमाल सम्पूर्णम् ।।

१६८०. अकृत्रिम-चैत्यालय-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६७९ ।

Closing : भव णालय चालीसा वंतरदेवाणहुंति वत्तीसा ।
कप्पामरचउवीसा चंदो सूरो णरो तिरिओ ।।

Colophon : इति अकृत्रिम चैत्यालये जिनविंबेभ्यो नमः ।

१६८१. अनन्तजिन-पूजा

Opening । क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्न ······ विघ्नविनाशनम् ।।
Closing । भगतन की प्रतिपाल करै सबैजीवन कौं काज सरैया ।
नरनारी पूजित क्षेत्रपाल सदा मनवांछित आस भरैया ।।
Colophon । इति कवित ।

१६८२. अनन्तपूजा-विधि

Opening । एकादशी कै दिन पूजन कर व्रत थापन करै
तथा आचमन करै तथा द्वादशी के दिन ऐसे ही करै ।
Closing : जीव समासा ।१४।। अजीव ।।१४।। गुणस्थान ।।१४।। मार्ग ।१४।
भूत ।।१४।। रज्जू ।।१४।। पूर्व ।।१४।। प्रकीर्णक ।।१४।।
मल ।।१४।। ग्रंथ ।।१४।। कुलकर ।।१४।। नदी ।।१४।।
प्रकृत ।।१४।। रत्न ।।१४।। चतुर्थदश पदार्थ चिंतन व्यौरा ।
Colophon : इति अनंतपूजन विधि ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८०४ ।

१६८३. अनंत पूजा विधि

Opening : भाद्रपद शुद्ध त्रयोदशी से रात्रि अनंतव्रतद्वेइजे, मायास्नान
करावे, शुभ्रवस्त्रनेसावै ···· ···· ···· अष्टदलकमलकरावे ।
Closing : ॐ ह्री श्रीं यसमस्मैददत्तानंतफल ····" नित्य चेयाचं मंत्र ।
Colophon : इति अनंतपूजनविधि सम्पूर्णम् ।
विशेष— ५१।२३ में यज्ञोपवीत मंत्र है, जो इसीका अंग है ।

१६८४. अरिहंत-दक्षिणी

Opening । गंगा सिन्धु के निर्मल नीरा स्वर्णभृंगार धरविहीरा ।
जन्म मृत्यु जराकृत दूर ···· ···· ···· ।।

Closing : अस्पष्ठ—(जीर्ण)

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८५. अष्टवीजाक्षर-पूजा

Opening : पूर्वपत्रे ऐं दक्षिणपत्रे श्रीं पश्चिमपत्रे ह्रीं उत्तरपत्रे क्लीं ईशानपत्रे क्रौं अग्नियपत्रे ड्रौं नैऋत्यपत्रे क्रौ पवनपत्रे ज्रौं कुबेरपत्रे यं इत्यादि अष्टवीजाक्षरस्थापनम् ।

Closing : विद्यादेव्या इमां ·· ··· कामान् कुरुध्वं परान् ।।१०।।

Colophon : इति पूर्णार्घं वृहत् द्रव्येन अर्घं ददात् ।
इति षोडशविद्यादेवता पूजनविधानम् ।

१६८६. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : संवौषडाहूय ··· ··· प्रतिमा समस्ताः ।।

Closing : यावंति जिनचैत्यानि विद्यंते भुवनत्रये ।
तावंति सततं भक्त्या त्रिः परीत्य न माम्यहम् ।।१८।।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा समाप्ता ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६० ।
जि० र० को०, पृ० २० ।

१६८७. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६८६ ।

Closing : देखें, क्र० १६८६ ।

Colophon : इति अष्टान्हिका पूजा संपूर्णम् ।

१६८८. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : आहूय संवौषडिति प्रणीत्वा ताम्यां प्रतिष्ठाप्य सुनिष्ठितार्थान् ।
वषट् पदेनैव च सन्निधाय नंदीश्वरद्वीपजिनान्समर्च्चे ।।१।।

Closing : आरतिय जोवइ कम्मइ धोवइ सग्गाववग्गह लहु लहइ ।
जं जंमण भावइ तं सुह पावइ दीणु विकासुण भासुइ ।।१८।।

Colophon : इति अष्टान्हिकाया पूजा समाप्ताः ।

देखें दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६१ ।

१६८९. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : मध्ये मंडपमालिख्येद्वरतरे — ·· तदर्च्चा तत: ।।१।।

Closing : आयुर्दैर्ध्यकरीवपूर्व ··· भवतां देषाईतामर्हता ।।

Colophon : इति श्री नंदिश्वर पंक्तिबंध पूजा समाप्ता ।

१६९०. अष्टान्हिका-पूजा

Opening : तीर्थोदकैः भणिसुवर्णघटोऽपिनीतैः,
पीठे पवित्रवपुषे. प्रविकल्पितीयैः ।
लक्ष्मीसुता गहनवीजविदर्पगर्भैः,
संस्थापयामि भुवनाधिपतिं जिनेन्द्रम् ।।

Closing : नंदीश्वर जिन धाम प्रतिमा महिमा को कहै ।
द्यानत लीन्हो नाम यहीभक्ति शिव सुख करै ।।१०।।

Colophon : इति नंदीश्वर द्वीप अष्टान्हिका जी की पूजा जयमाला भाषा संस्कृत सहित सम्पूर्णम् ।

१६९१. अठाईपूजा

Opening : सरब पख मैं बड़ो अठाई परब है,

नंदीश्वर सुर जांहि लेयबहु दरब हैं।
हमें सकति सो नांहि इहां कर थापना।
पूजे जिण ग्रह प्रतिमा है हित आपना ॥

Closing : नंदीश्वरजिनधाम प्रतिमा महिमा को कहे।
द्यानत लीनौ नाम यही भगत सब सुख करै ॥१६॥

Colophon : इति श्री अढाई पूजा जी समाप्तम्।

१६६२. बाहुबलि-पूजा

Opening : बाहुमान जो षडबली चक्रेन की,
लखी अनित संसार सबे विच्छेद की।
धरो दिगंबर भेष शान्तमुद्रा वरी,
घातअघात जेहान ठय थिर लक्ष्मीवरी ॥

Closing : पूजन पचकुमार तणी जे नरकरै,
हरमत हरवलचक्रसक्रपद ते धरे।
सुरगादिक सुखभोग तिरथपद पायही,
धर्म अर्थलहिकाम मोक्ष सुरपायही ॥

Colophon : इति श्री पंचकुमार की पूजन सम्पन्नम्।

विशेष— इसमें बाहुबलि पूजन और पंचकुमार पूजन दोनों हैं।

१६६३. बाहुबलि-मुनि-पूजा

Opennig : देखें, क्र० १६६२।

Closing : जे नर पढ़े विसाल मनोरत सुद्धसों।
ते पावै थिर वास छूटै संसार सों ॥
ऐसो जान महान जैन जिन धर्म कौ।
देय अक्षै भंडार ध्याऊं अलख ध्यान कौ ॥२४॥

Colophon : इति श्री बाहुवल मुनी की पूजा सम्पूर्णम्।

१६६४. भैरो-राग

Opening : भली कीनी भौर भयै ।
आए हो भवन हमारे, भली कीनी ये ।।

Closing : आस करै उरगदास, नाथ चरण तुम्हारे ।। भली० ।।

Colophon : इति भैरो ।

१६६५. बीस-तीर्थंकर-अर्घ्य

Opening : श्री मदिर आदि जिनद बीसों सुखकारी ।
सुविदेह माँहि अभिनद पूजत नरनारी ।।
थिति समवसरन के माँहि त्रिभुवन जन तारक ;
हम पूज अर्ध चढाय आनन्द के कारक ।।

Closing : इह वर्त्तमान सुखकर दक्षिण देस महा,
तह श्री गुर सुगुन भंडार राजन हे सुमहा ।
वसुदेव जयो चितल्याय है त्रिभुवन स्वामी,
हय पूजन पद सिरनाय कीजे सिवगामी ।।१।।

Colophon : इति ।

१६६६. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : पूर्वापर विदेहेषु विद्यमानजिनेश्वरा: ।
स्थापयामि अहमत्र सुद्ध सम्यक्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्रीमंदिरा दिपं देवमजितवीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्यसतां सौख्यं स्वर्गमुक्तिसुखप्रदम् ।।

Colophon : इति श्री बीसविरहमान पूजा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१६६७. वीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति श्री वीरहमान पूजा समाप्तम् ।

१६६८. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखे क्र० १६६६ ।

Closing : ये वीस तीर्थंकरन की सेव तुम्हारी कीजिये ।
कर जोरि सेवक विनवै मुक्ति श्रीफल लीजिए ।।

Colophon : इति श्री वीस विरहमान पूवा समाप्ता ।

१६६९. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें क्र० १६६६ ।

Closing : देखें, क्र० १६६६ ।

Colophon : इति श्री वीस विरहमान पूजा संपूर्णम् ।

१७००. बीस-विरहमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६६६ ।

Closing : तुमकौं पूजा वंदना करै धन्य नर सोय ।
सारदा हिरदै जो धरै सो भी धरमी होय ।।६।।

Colophon : इति श्रीबीसविरहमान पूजा जी समाप्तम् ।

१७०१. बीस-विद्यमान-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६९९ ।

Closing : देखे, क्र० १६९६ ।

Colophon : इति श्री बीसविरहमान पूजा समाप्तम् ।

१७०२. बीस-तीर्थंकर-जकड़ी

Opening : श्री मंदरजिण वंदस्यां जग सारहो, पुंडरीकजिणराय ।
जबूदीप विदेह मैं जगसार हो मेरि पूरबदिसिभाय ।।

Closing : सातमा जिन समयगामी मोरिव जेसु दिगंबरा ।
भावना भावैं हरष सेती होइ मुक्ति स्वयंवरा ।।

Colophon : इति बीस विरहमान की जखड़ी सम्पूर्णम् ।

१७०३. बीस-विरहमान-आरती

Opening : प्रथम श्रीमंदर स्वामी जुगमंधर त्रिभुवण धारिए ।।१।।

Closing : इम बीस जिनवर संघ सुखकर सेव तुम्हारी कीजियै ।
करि जोर सेवक वीनवैं प्रभु मणवंछित फल दीजियै ।।

Colophon : इति वीस विरहमान जी की आरती समाप्तम् ।

१७०४. बीसतीर्थंकर-जयमाला

Opening : देखे, क्र० १७०३ ।

Closing : प्रभुजी आनंद संदेस ल्यावो शिव सुख पाइये ।
एवीस जिने सुर संग जिनकी सेव नित प्रति कीजिये ।।१।।
करि जोर शंसी करे विनती मुक्तिफल पाइरे ।।

Colophon : इति वीस तीर्थङ्कर की जयमाल संपूर्णम् ।

१७०५. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : सुभ अतिसय चउतीस प्रतिहारज अधिकाहीं ।
अनंतचतुष्टययुक्त दोष अष्टादस नाहीं ।।
अह्लानन विधि कहूँ नाय सिघ सुध करि मनहीं ।
लोक मोह तम हरत दींप अद्भुत ससि जिनहीं ।।

Closing : वसुद्रव्य लै सुधभावतैं जजूं तिहारे पाय ।
देहु देव शिव मुझ अबै अही चंददुतिराय ।।१४।।

Clolophon : इति श्री चंद्रप्रभु जी की पूजा सम्पूर्णम् ।

१७०६. चन्द्रप्रभुपूजा

Opening : वरचरित चार गुन अकलधार भवपार वसे हैं ।।
हे त्रिजगतार सहज ही उदार शिवनार रसै हैं ।।

Closing : चंद जिनन्द जजन्त तन्त सुख सेवति होई ।
चंद जिनन्द जजन्त निराकुल दंद न कोई ।।
चंद जिनन्द जजन्त चहन्त सबै मिलि जावै ।
चंद जिनन्द जजन्त अजित नित हर्ष वढ़ावै ।।

Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभोजिनदेव की पूजा सम्पूर्णं ।

१७०७. चारित्रपूजा

Opening : देवश्रुतगुरुनत्वा कृत्वा शुद्धिमिहात्मनः ।
सम्यक्-चारित्र-रत्नस्य वक्ष्ये संक्षेपतोर्चनम् ।।

Closing : अंधउ आलस्सउ पंगुल वि जिणवर भासियय ।
तिण तई विणु मुत्ति ण भणइ जणिपु ।।

Colophon : इति चारित्रपूजा ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६३ ।

१७०८. चारित्रपूजा

Opening : देखें, क० १७०७ ।

Closing : विरम-विरम संगान्मुंच मुंच प्रपंचम ।
विसृजमोहंसृजत्र विद्धि विद्धि स्वतत्वम् ।
कलय कलय वृत्तं पश्य पश्य स्वरूपम्,
कुरु कुरु पुरुषार्थं निवृतानंदहेतुः ।।१४।।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते चारित्रपूजा समाप्ता ।

१७०९. चारित्रपूजा

Opening : देखें, क० १७०७ ।

Closing : देखें, क० १७०७ ।

Colophon : इति श्री पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते । रत्नत्रयपूजा जी समाप्तम् ।

१७१०. चतुर्विंशति-यक्षिणी-पूजा

Opening : चतुर्विंशतियक्षेशान् पूज्यामि सदादरात् ।
आह्वानयामि तिष्ठेत्र जिनयज्ञे स्थिरा भवेत् ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं चतुर्विंशतिकुलदेव्याय जिनसासने सर्व्वविघ्नोपशांत्यर्थं जिनयज्ञविधाने पूर्णार्घं दद्यात् ।

Colophon : इति चतुर्विंशतियक्षिणी पूजा ।

१७११. चतुर्विंशति मातृका पूजा

Opening : आद्यं तीर्थकृतां सर्वां सर्वविघ्नप्रशांतये,
प्रणम्य शिरसा जैन स्थापना प्रवदाम्यहम् ॥१॥

Closing : दिव्यै नीरैश्चंदनैरक्षतैस्तै ··· ···· कृतोय सुभोघै. ॥

Colophon : इति चतुर्विंशतिजिनमातृका पूजनविधानम् ।

१७१२. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : सुभिरमत्रभवेभवतः पदांबुजनताजनताजनताम्पति ।
इति नतोस्मि भवत्यहमन्वह ···· ···· दिने ॥

Closing : ॐ ह्रीं अर्हं श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथाय धरनेन्द्रपद्मावती सहितअतुलबलवीर्यपराक्रमाय दुष्टोपसर्गविनाशनाय इदं जल गंधं पुष्प अक्षत नैवेद्यं दीपं धूपं फलं अर्घं महाअर्घं निर्पयामि ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७१३. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : वृषम आदि अंतवीर चतुर्विंशति जिना,
ध्यान षड्ग गही हने कर्म वसु दुर्जना ।
वसुगुण जुत तसुधराव ये नव छारिकै,
अह्वानन विधि करूँ गुणौघ उचारिकैं ॥१॥

Closing : जो को इह व्रत भावो करो, ते नर मुकत पथह वरो ।
श्री भूषन पद प्रनमी सही कथा ग्यानसागर मुनी कही ॥

Colophon : इति श्री अनंतव्रत कथा समाप्तो। रामचन्द्रेण लिपि कृतं आरामध्ये लाला बिजन लाल जी लिखापितम्। लेखकपाठकयो शुभं भवतु।

विशेष— इसमें कई पूजाएँ सग्रहीत है।

१७१४. चतुर्विंशतितीर्थंकर-पूजा

Opening : रीषभ अजित संभव .... - पूज्य पूजत सुरराय ॥

Closign : भुक्ति-मुक्ति दातार चौवीसों जिनराजवर।
तिन पद मन वच धार जो पूजे सो शिव लहै ॥

Colophon : इत्याशीर्वाद: इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा सपूर्णम्
सं० १९५० ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८१६ ।

१७१५. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७१४ ।

Closing : देखें, क्र० १७१४ ।

Colophon : इति श्री समुच्चय चतुर्विशति पूजा समाप्तम् ।

१७१६. चतुर्विंशति-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देशकालादिभावज्ञो निर्म्मम: शुद्धिमान्वर ।
साच्दारायादिगुणोपेत: पूजक: सोत्रशस्यते ॥

Closing : यावच्चंद्रदिवाकर ---- .... कल्याणकोटिप्रदम् ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विशति तीर्थङ्कराणा संस्कृत पूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ११६ ।

१७१७. चतुर्विंशतिजिन जयमाला

Opening : वंदितानमर ... — .... पूरा इव ॥१॥
Closing : अनणुगुणनिवद्धा .... लक्ष्मीवधूनाम् ॥
Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन जयमाला समाप्ता । संवत् १६३२ वर्षे चैत्र शुदि ११ शनौ ।

१७१८. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७१३ ।
Closing : ए नाम जिनेश्वर दुरितक्षयंकरि जो भविजनकं वि धरई ।
हुये दिव्य अमरेश्वर पुहिमे नरेश्वर रामचंद्र शिवतिय वरई ।।२५।।
Colophon : इति श्री चौवीसतीर्थङ्कर पूजा समाप्तम् ।

१७१९. चौबीस-तीर्थंकर–पूजा

Opening : श्री वृषभादि विरांतिमा चौवीसह जिनराय ।
आह्वानन ठांडै करू, तिन बेर गुणगाय ॥१॥
Closing : जे जिव कुट्टक पट्ट तजि सुभभावन तैं जिन पूज्य रच्चावै ।
ते जिव ह्वै धरणेन्द्र खगेन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र तणो पद पावै ॥
Colophon : समाप्तः ।

१७२०. चौबीस-तीर्थंकर–पूजा

Opening : सिद्ध बुद्धि दायक — · पदकंज ॥
Closing : वृषभ आदि चौबीस जिनेश्वर ध्यावही ॥
इ.ष करै गुणगाय सुर बजावही ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पूजा सम्पूर्णम् ।।

१७२१. चौबीस-तीर्थंकर-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७२० ।

Closing : देखें, क्र० १७२० ।

Colophon : इति श्री चउवीस तीर्थङ्कर जी की पूजा संपूर्णम् । चौधरी रामचंद्र जी कृत । संवत् १८३१ वर्षे श्रावणमासे शुक्लपक्षे तिथौ पंचम्यां । शुभम् ।

१७२२. चौबीसी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७१४ ।

Closing : देखे, क्र० १७१४ ।

Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा सम्पूर्णम् ।
इह पुजन जी की पोथी श्री व्रतजी के उद्यापन मे बाबू परमेसरी सहाय जी की भार्या बनसी कुँअर ने चढाया गागील गोत्र मीति फाल्गुन वदी १२ सन् २२८३ साल?

१७२३. चतुर्विंशति तीर्थंकर पद

Opening : आदिदेव रिषभ जीनराज ······ त्याची सेव ।।

Closing : चौवीसवां श्रीमहावीर — गौतम शीर ।।

Colophon : इति चतुर्विशति पद सपूर्णम् ।

१७२४. चिन्तामणि-पूजा

Opening : जगद्गुरुं जगद्देव जगदानंददायकम् ।
जगद्वंद्यं जगन्नाथं श्री-पार्श्वं संस्तुवे जिनम् ।।

Closing : दीर्घायु सुभपुत्रवनिता आरोग्यसत्संपदम्,
प्राज्यक्षमा पतिसज्यभोगसुरता: सद्गेहभूषादय: ।
भूयासुर्भवता गजाश्वानगर ग्रामप्रभुत्वादय:,
श्री चितामणिपार्श्वनाथवररतो मांगल्यमोक्षोद्यता ॥

Colophon : इति इति श्री चितामणि पूजाव्रत समाप्तम् । लिखितं संभूनाथ अयोध्यामध्ये सहादति ग्वा० मूबाके लसगरमध्ये सं० १७९३ मगसिर सुदि १३, शनिवार ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८२७ ।

जि० र० को०, पृ० १२३ ।

१७२५. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७२४ ।

Closing : देखें, क्र० १७२४ ।

Colophon : इति श्री चितामणि पार्श्वनाथ वृहत्पूजा विधान विधि समाप्ता । सवत् १८१९ माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पंचम्या बुधवासरे लिखित ज्ञानसागर पठनार्थ फकीरचदजी । पोथी लीखी सहजादपुर मध्ये लिषीतोय शुभ भूयात् । श्रीरस्तु ।

१७२६. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, क्र० १७२४ ।

Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लि ·· श्रीपार्श्वचितामणि ॥

Colophon : इति श्री चितामणि पार्श्वनाथपूजा सम्पूर्णम् ।

१७२७. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखे, १७२४ ।

Closing : इति जिनपतिदिव्य। स्तोत्रलक्षांतरेण ··· ··· सर्व्वदाम्वेषनीयम् ।।

Colophon : इति श्री चिन्तामणिपार्श्वनाथ पूजनविधाने पीठिका स्तवन समाप्तम् ।

१७२८. चिन्तामणि-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : शान्त विदुध्वरेफं ···· ··· संजायते पूजयेद्य। ।।१।।

Closing : इह वर जयमाला पास-जिन-गुण-विशाला — वंछिय बहुपयारम् ।।१२।।

Colophon : इति चितामणि पार्श्वनाथपूजा ।

१७२६. चिन्तामणि-जयमाल

Opening : तिहुयण चूडामणे भविय कमल दिनेस ······ जिणेसरहम् ।

Closing : अस्याग्रे पुण्याहवाचना वाचनीय पुनर्शान्तिजिनं ससिनिर्मलवक्र-मित्यादिपठनीयम् ।

Colophon : इति वृहद् चितामणि पार्श्वनाथ पूजा समाप्त। । सवत् १८२५, पुषमासे शुक्लपक्षे तिथि त्रयोदश्यां शुक्रदिने लिखित पडित सेवाराम कौशलदेशे तिलोकपुरनगरे श्री पार्श्वनाथ चैत्यालये । श्रीपार्श्वनाथ के भडार की पोथी परसौ लिखी निज पठनार्थं वा भव्य जीवस्य वाचनार्थं वधितां जिनशासन शुभ भूयात् लेखकपाठकयो ।

अनित्यं जीवितं लोके अनित्यं धनयौवनम् ।
अनित्य पुत्रदाराश्च धर्मकीर्त्तियसस्थिर: ।।

१७३०. दर्शनपाठ

Opening : दर्शनं देवदेवस्य दर्शनं पापनाशनम्,
दर्शनं स्वर्गसोपान दर्शनं मोक्ष साधनम् ।।

Closing : जन्म-जन्मकृतं पाप, जन्म कोटिमुपार्जितम् ।
जन्ममृत्युजरांतकां, हन्यते जिन दर्शनात् ।।१२।।

Colophon : इति श्री दर्शनं सम्पूर्णम् ।

१७३१. दर्शनपाठ

Opening : देखे, क्र० ७१३० ।

Closing : देखें, क्र० १७३० ।

Colophon : इति दर्शनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

१७३२. दर्शनपाठ

Opening : देखें, क्र० १७३० ।

Closing : देखें, क्र० १७३० ।

Colophon : इति जिनदर्शन सम्पूर्णम् ।

१७३३. दर्शनपूजा

Openign : चहुं गति फन विषहर नमन, दुख पावक जलधार ।
शिव सुख सदा सरोवरी, सम्यक् त्रयी निहार ।।१।।

Closing : सम्यक् दरसन रतन गहीजै ··· इहा फेरि न आवना ।।२३।।

Colophon : इति दरसन पूजा ।

१७३४. दर्शनपूजा

Opening : परस्याभिमुखीश्रद्वा सुद्धचैतन्यरूपत ।
दर्शनं व्यवहारेण निश्चयेनात्मन· पुन ।।

Closing : अतुलसुखनिधानं सर्बकल्याणबीजम्,
जननजलधिपोतं भव्यसत्वैकपात्रम् ।
दुरिततरुकुठार पुण्यतीर्थं प्रधानम् ।
पिबत् जितुविपक्षं दर्शनाख्य सुधांशु ।।

Colophon : दर्शनपूजा ।

१७३५. दर्शनपूजा

Opening : देखे. क्र० १७३४ ।

Closing : देखें, क्र० १७३४ ।

Colophon : इति पडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेनविरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१७३६. दसलाक्षणी-पूजा

Opening : उत्तमक्षान्तिमाद्यन्त ब्रह्मचर्यसुलक्षणम् ।
स्थापयेत्दशधाधर्ममुतमं जिनभाषितम् ।।

Closing : करै कर्म की निर्जरा भव पीजरा विनास ।
अजर अमर पद को लहै द्यानत सुख की रास ।।

Colophon : इति श्री दसलाक्षनी जी की भाषा जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७३७. दशलाक्षणी-पजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing : देखें, क्र० १७३६ ।

Celophon : इति श्री दसलाक्षणी पूजा जी समाप्तम् ।

१७३८. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६ ।

Closing : पाप तिमिरहर धर्मदिवाकर पढ़े गणे जे धर्म धनी।
ब्रह्म जिणदास भासे दशधर्मप्रकाशे मन वांछित फल वुधि घनी ॥

Colodhon : इति दशलाक्षणिक लघु अंग पूजा समाप्तम्।

१७३९. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६।

Closing : यो धर्मं दशधा करोति पुरुष. स्त्रीवाकृतोपस्कृतम्,
सर्वज्ञ ध्वनिसभव त्रिकरण व्यापार-शुध्यानिशम्।
भव्यानां जयमालया विमलया पुष्पांजलि दापयन्,
नित्य सश्रियमातनोति सकल स्वर्गापवर्गास्थिते ॥

Colophon ; इति श्रीदशलाक्षणी पूजा समाप्ता।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० १६५।
जि० र० को०, पृ० १६८।

१७४०. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : उतमक्षमा मारदव अरजव भाव है, सत्य सौच सयमतप त्याग उपाव है।
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दस सार है, चहु गति दुखतै काढ़ मुकति करतार हैं। ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १७३६।

Colophon : इति दशलाक्षणी पूजा।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२।

१७४१. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६।

Closing : कोहाणलु चुक्कउ होऊ गुरुक्कउ जाइ रिसिदहिं सिट्ठइं।
जगताइ सुहकरु धम्ममहातरु देइ फलाइ सुमिट्ठइ ॥

Colophon : इति दसलाक्षणी पूजा।

देखें, जै० सि० भ० ग्र०, I, क्र० ८३३।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६५।

१७४२. दशलाक्षणी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७३६।

Clsoing : देखे, क्र० १७४१।।

Colophon : इति दसलाक्षण पूजा संपूर्णम्।

१७४३. दशलाक्षणी जयमाला

Opening : पयकमलजिणंदहि तिहुवणचंदह पणवमि भावे गणहरह।
पुण सरसइ वाणी धम्मपहाणी धम्मकहमि जह मुणिवरह ॥

Closing : मूलसंघपट्टधरो धम्मचन्दगुरो सांतिदासुब्रह्म भणइ जिस।
जिणदास हणदणु दहलक्षणगुणु सूरदास तुम करहु थिस ॥

Colophon : इति दसलाक्षणीक गुण जैमाल समाप्त:।

१७४४. दशलाक्षणी व्रतोद्यापन

Opening : विमलगुणसमृद्धं ज्ञानविज्ञानशुद्धं,
अभयवनसमुद्रं चिन्मयूख- प्रचण्डम्।
दत दस विधिमारं संजजे श्रीविपारं,
प्रथम जिन विदक्ष्यं शुद्धताढ्यं जिनेसम् ॥

Closing : श्री कैलासनिवासदेववृषमं ········ जिन देव सा निधिकरि कल्यानकारी सदा ॥८॥

Colophon : इति श्री दसलाक्षणी व्रतोद्यापन समाप्ता । श्रीरस्तु कल्याण-मस्तु । शुभं अस्तु ।

विशेष — इसके नीचे पूजा सामग्री का विवरण दिया हुआ है ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

जि० र० को, पृ० १६८ ।

रा० सू ॥, पृ० ६० ।

रा० सू० ॥।, पृ० ५४ ।

रा० सू० IV, ६६५ ।

जै० ग्र० प्र० सं० ।, पृ० ८७ ।

१७४५. दिग्पालार्चन

Opening : दिग्गीसासं ··· ··· ···· प्रत्येकमादरात् ॥१॥

Closing : ॐ दसदिशा दिग्पालाय पूर्णार्घं ।

Colophon : इति दिग्पालार्चन विधाण समाप्तम् ।

१७४६. देवपूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।
········· ··· णमो लोए सब्वसाहूणं ।

Closing : इय जाणिय णामहिं दुरिय विरामहिं पणहविणामिय सुरावलिहिं ।
जे अणिहऊ णाइहिं समयकुवा हिं पणविवि अरहंतावलिहिं ।

Colophon : इति देवपूजाष्टकम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६७ ।

१७४७. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : ... ... ।

यतीन्द्रसामान्यतपोधराणां भगवान जितेन्द्र ।।

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७४८. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : कीजै सकल समान विन सकते सरधा धरो ।

द्यानत सरधावान अजर अमर सुख भोगवै ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३७ ।

१७४९. देवपूजा

Opening : जय ।३। जयवत प्रवर्त्तो ।।३।। नमोस्तु ।३। नमस्कार होऊ ।३। णमो अरहंताण । अरहंतनि के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो सिद्धाण । सिद्धन के निमित्त नमस्कार होऊ । णमो आयरिआण। आचार्य्यणि के अर्थि नमस्कार होऊ । ... ... ।

Closing : मेरे अंमै प्रभात समय मध्यान्ह समय सध्या समये विषें पूजा करए। सकल कर्म्म का छय निमित्त भावपूजा वदना स्तुत अर्हंत भक्ति प्रतमा भक्ति पंचमहागुर भक्ति करिये कायोत्सर्ग कर कीये ऊवे पाप है तिनकूं त्यागिए ।

Colophon : इति श्री देवपूजा अर्थ सयुक्त सम्पूर्णम् ।

१७५०. देवपूजा

Opening : सौगन्ध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन,
सौवर्णमानमिव गधमनिद्यमादौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरवृंदवंद्यम्,
पादारविंदमभिवंद्यजिनोत्तमानाम् ।।

Closing : ये पूजेजिनशास्त्रयमिना भक्तया सदा कुर्वंते,
त्रिसंध्याणविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयतो नरा. ।
पुण्याढ्यामुनिराजकिर्तिसहिता भूतास्तपो भूषणा-,
स्तेभव्या. सकलविबोधरुरिर सिद्धि लभंते परा: ।।

Colophon : इति श्री देवपूजा संपूर्णम् ।

१७५१. देवपूजा

Opening : देखें, क० १७४६ ।

Closing : अपराजित मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः ।
मगलेषु च सर्वेषु प्रथम मगलं मत ।।

Colophon : कुछ नहीं है ।

१७५२ देवपूजा

Opening : देखे, क० १७४६ ।

Closing : देखें, क० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवतापूजा सम्पूर्णम् ।

१७५३. देवपूजा

Opening : देखे, क० १७४६ ।

Closing : गुरोभक्तिः गुरोभक्तिः गुरोभक्ति. सदास्तु मे ।
चारित्रमेव संसारवारण मोक्षकारणम् ।।२५।।

Colophon : नहीं है ।

१७५४. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : ॐ ह्री नैर्म्मलयमतिज्ञानप्राप्तेभ्यो अर्घम् ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष — इसमें चन्द्रप्रभु पूजा मतिज्ञान पूजा के अधूरे पत्र भी हैं ।

१७५५. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : मिथ्यात तपन निवारण (न) चंद समान हो ।
अज्ञान तिमिर कारण भान हो ।
काल कषायन मिटावन मेघ मुनीस हो ।
द्यानत सम्यक् रतन त्रैगुन ईश हो ।।१४।।

Colophon : इति बियालीस बोल आरती समाप्तम् ।

१७५६. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : अणादि काल के जे कुवादि तिन के मिथ्यात कू दूरि करने वाले
चउबीस तीर्थंकर हैं तिनहि पूज हू ।

Colophon : इति श्री चतुर्विशति तीर्थंकर जयमाल । ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि वर्द्धमाने नमः ।

१५७. देवपूजा

Opening : देखे, क्र० १७४६ ।

Closing : देखें, क्र० १७४६ ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५८. देवपूजा

Opening : ॐ ह्री क्ष्वीं स्नानस्थानभू: शुध्यतु स्वाहा इति स्नानस्थानं शुचि-जलेन सिंचेत् ।

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवंद्य विशुद्धहस्त ईर्यापथस्य परिशुद्धविधि विधाय ।
स वज्रपंजरगताकृतसिद्धभक्तिः ... ... — ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१७५९. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : देखे, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा समाप्तम् ।

१७६०. देवपूजा

Opening : सर्वारिष्टप्रणासाय सर्वमिष्टार्थदायिने ।
सर्वलब्धिविधानाय श्री गौतमस्वामिने ॥

Closing : देखें, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा समाप्तम् ।

१७६१. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : देखें, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति श्री जयमाल संपूर्णम् ।

१७६२. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १६४६ ।

Closing : देखें, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति श्री जयमाल संपूर्णम् ।

१७६३. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : देखें, क्र० १७४६ ।

Colophon : इति देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६४. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : देखें, क्र० १७५० ।

Colophon : इति श्री देवपूजा सम्पूर्णम् ।

१७६५. देवपूजा

Opening : देखें, क्र० १७४६ ।

Closing : जे तपसूरा संजमधीरा सिद्धवधू अणुरईया ।
रयणत्तय रंजिय कम्मह गंजिय ते रिसिवर मइ झाईया ॥

Colophon : इति देवपूजा ।

देखें जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८४१ ।
दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६६ ।

१७६६. देवजयमाला

Opening : वत्ताणुठ्ठाणे .... परमपउ ॥
Closing : देखे, क्र० १७४६ ।
Colophon : इति चतुर्विंशति तीर्थङ्कर जयमाल संपूर्णम् ।

१७६७. देवप्रतिष्ठा विधि

Opening : प्रतिमाबीजमंत्र प्रसिद्ध नंदुमिसुरामकृतहरिने रूप .... ।
Closing : ... . सुरमंत्रजिनप्रभा ।
Colophon : इति सुरमंत्र समाप्त: ।

१७६८. धरणेन्द्रपूजा

Opening : पातालवासं वरनीलवर्णं फणासहस्रान्वितनागराजम् ।
तमाह्वये सत्कमठासन च सस्थापये भूमिधरं सुभक्त्या ॥

विशुष— गंथ इतना पुराना है कि सभी पत्र आपस मे सटे हुए है । अलग करने पर फट जाते है, जिससे Closing और Colophon का पता नहीं चलता ।

१७६९. धरणेन्द्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७० ।

Closing : भक्तिर्जिनेश्वरे यस्य ... तस्यैतत्सकलं भवेत् ॥३५॥

Colophon : इति नागेन्द्र स्तोत्रम् ।

१७७०. धरणेन्द्रपूजा

Opening : धरणयक्षविलक्षणसहमैं क्षितिधरोन्नतकच्छप्रवाहनैः ।
त्रिदशवंदितपार्श्वजिनक्रम प्रणितमौलिमणीसदलं श्रियै; ॥१॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपंकजसेव्यमान पद्मावतीभजतिवाङ्मनवामभागम् :
घोपगोपमर्गहननं निजमाणदक्ष तं देवशुद्धिमतिगं प्रभजामि नित्यम्

Colophon : इति पुष्पांजली धरणेन्द्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१७७१. गर्भ कल्याणक

Opening : पणविवि पंच परमगुरु गुरु जिनशासन,
सकल सिद्ध दातार सुविघन विनाशन ।
सारद अरु गुरु गौतम सुमति प्रकाशन ॥
मगल करि चौसघह पाप पनासन ।

Closing : भासियो सुफल सुणि चित्त दंपति परम आनंदित भये,
छह मास परि नवमास बीते रयण दिन सुखसो गये ।
गर्भावतार महत महिमा सुनत सब सुख पाईये,
भणि रूमचद सुदेव जिनवर जगत मगल गाईये ॥८॥

Colophon : इति श्री गर्भकल्याणक भाषा समाप्तम् ।

१७७२. गिरनारपूजा

Opening : श्री गिरनार सिषर पर्वत पर दक्षिणा दिस में सोहै
नेमनाथ जिन मुक्तधाम सब जन मोहै
कोड बहत्तर सात सतक मुनि शिव पद पायो
ता थल पूजन काज भव्य मन अति हरषायो
तिस तीरथ राज सुक्षेत्र को आह्वान विधि ठानि कर
पूजा त्रिजोग मन वच तन सुश्रावक जन गुण जानकर ॥

Closing : तिहुं जग भीतर श्री जिन मंदिर बनै अकीर्तम महासुखदाय,
नर सुर खग कर वंदनीक जे तिनको भवि जन पाठ कराय ।
धन धन्यादिक संपति तिनकै पुत्र पौत्र सुमोहन भलाय
चक्री सुरखग इन्द्र होय कै करमना स सिवपुर सुषथाय ।

Colophon : इति श्री तीन लोक संबंधी पूजा संपूर्णम् ।

विशेष—इसमें सेठसुदर्शन पूजा तथा तीन लोक संबधी पूजा भी सकलित हैं ।

१७७३. गिरनारपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७२ ।

Closing : जैसवाल वर नित नैन सुख श्रावग ग्यानी ।
रामरतन सुपुत्र भयो धर्मामृत पानी ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा संपूर्णम् । मीति फाल्गुन सुदी ३ । मंदवासरे । लीखितं जूनागढ़ श्री मंदिर जी कार्षेया आनंद जी ।

१७७४. गिरनारपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७२ ।

Closing : जे नर वंदत भाव धर सिद्धक्षेत्र गिरनार ।
पुत्र पौत्र सपति लहि पूरन पुण्य भडार ।।

Colophon : इति श्री गिरनार जी की पूजा सम्पूर्णम् । मिति आषाढ सुदी ७ चित्रा नक्षत्र पहला पहर रात्रि विषै ५३३ ।। मुनि के साथ श्री नेमनाथ जो उर्जयत टोक से जा जूनागढ़ गिरनार परवत पर है, सोरठ देश गुजरात में मुक्त पधारे । नेमपुराण से देखना ।

विशेष—इसमें नीचे चार-पाँच सोरठे भी लिखे गये हैं ।

१७७५. गुरुजयमाला

Opening : भवियभवतारण ··· — ···· पचमहाव्वयह ।।१।।

Closing : ॐ ह्रीं पुलाकवकुसकुमीलनिर्ग्रं थस्नातकेभ्यो नमः ।

Colophon : इति गुरुजयमाल संपूर्णम् ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : सपूजयामि पूजस्य पादपद्म युगं गुरो ।
तपः प्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मने ।।

Closing : तेजस्तिग्मजमम्भितचन्द्रमचमत्कारैकसवारिकम्,
कित्तिसारदशुभ्रमानधवला निरमेपदिव्यापिनी ।
आयुर्दीर्घतर निरामधवपु. लीलाघमणीकृत.,
श्रीद श्रीनिकरं करोतु भवतामाचार्यभवितः सताम् ।।१०।।

Colophon : इति श्री गुरुपूजा सपूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७२ ।

१७७७. गुरुपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७६ ।

Closing : पावै अमरपद होइ चक्री कामदेव समानिया,
इन्द्र चन्द्र धरनेन्द्र चक्री मन प्रतीन जु आनिया ।।
जै सकल पद सीव सौख्यदाता इनहि छिन न भुलाइये,
कहत लालविनोदी मन वच मनहि वछित पाईया ।।

Colophon : इति श्री जिनगुन जयमाल सम्पूर्णम् ।

१७७८. गुरुपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७६ ।

Closing : देखें, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा समाप्ता ।

१७७६. गुरुपूजा

Opening : देखें क्र० १७७६ ।
Closing : देखें, क्र० १७६५ ।
Colophon : संपूर्णम् ।

१७८०. गुरुपूजा

Opening : देखें, क्र० १७७६ ।
Closing : देखें, क्र० १७६५ ।
Colophon : इति गुरुपूजा ।

१७८१. गुरुपूजा

Opening : दिव्यमडलके रम्यः चतुष्नोपसोभीते. ।
स्थापयामि गुरो पादौ स्व स्व स्थान सिद्धये ॥१॥

Closing : निसंगविरागाय ··· ··· प्रणमाम्यहम् ॥

Colophon : गुरुपूजा सपूर्णम् ।

१७८२. गुरुपूजा

Opening : काव्यं सकलगुण – ··· सूरो स्थापयाम्यत्रपीठे ॥१॥

Closing : भाव सुद्ध पूजा करो सेवो गुरुचित्त लाय ।
तीन काल आरति करो रिद्धि सिद्धि सुखदाय ॥१७॥

Colophon : इति दादा श्री जिनसकलसूरि जी की पूजा सम्पूर्णत् ।

१७८३. गुरुपूजा

Opening : सिद्धान्तसूत्रसंकीर्णश्रुतस्कंधवने यने ।
आचार्यनां प्रपन्नस्य पादावभ्यर्चयेन्मुने ।।

Closing : मुनिवर स्वामीनमूं सिरनामी दोए करजोडी विनय करूं ।
दीक्षा अति निर्मलो द्योमुक्तउज्वली, ब्रह्मजिणदास भणि कृपाकरी।

Colophon : इति गुरुपूजाजयमाल सम्पूर्णम् ।

१७८४. गुरुपूजा

Opening : देखे, क्र० १७८३ ।

Closing : कहो कहाँ लो भेद मैं बुध थोरी गुनभूर ।
हेमराज सेवक हिये भक्ति भरो भरपूर ।।११।।

Colophon : इति श्री गुरुमहाराज की भाषा आरती सम्पूर्नम् ।

१७८५. होमविधि

Opening : तद्यथा ॐ ह्री क्ष्वीं भू स्वाहा । पुष्पांजली. ।
ॐ ह्री अत्रस्थ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।। क्षेत्रपाल विधि: ।।

Closing : इति होमविधि ज्ञात्वा तत्रस्था जिनं प्रतिमा सिद्धायतन यंत्रानि पूर्वनिर्मापितजिनग्रहाभ्यतरे सस्थाप्य पुन पुन. नमस्कार कृत्वा नित्यव्रत गृहीत्वा देवान् विसर्जयेत् ।

Colophon : इति होम सपूर्णम् ।

१७८६. जलयात्रा विधि

Opening : प्रथमतडागे गत्वा जलसमीपे ... ... पाछै पूजा कीजइ ।।१।।

Closing : पश्चात स्त्रीनि को षोडसाभर्ण दीजै पाछै घट दीजै पाछे छपैया पढत ईसान बेदी मध्य कलश थापी जइ तिसकी विधि आगै विशेष है।

Colophon : इति जलयात्रा विधि संपूर्णम्। सवोत्तर जलइ सविधि पूर्व लाइयै। श्रीरस्तु। शुभमस्तु।

१७८७. जिनयज्ञविधान

Opening : नमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं णमो लोए सव्वसाहूणं ·· — ···।

Closing : ॐ ह्रीं सुद्धदृष्ट्ये नमः। ॐ ह्रीं सुधावलोकिने नमः।

Colophon : अनुपलब्ध।

१७८८. जिनवर विनती

Opening : श्रीपति जिनवर करुनायतन दुखहरन तुमारा ··· — ···।

Closing : हो दीनानाथ अनाथ हितजन दीन अनाथ पुकारी है।
उदयागत कर्म विपाक हलाहल मोहि विथा विस्तारी है॥

Colophon : बिनती सम्पूर्णम्।

१७८९. जिनगुण-सम्पत्तिपूजा

Opening : वंदे श्रीवृषभं देवं वृषांकं वृषदायकम्।
षट्धर्मप्रणेतारं कर्मभूभृतवज्रकम्॥

Closing : ये हस्तिनागे पुरिकौरवंशो यश्चक्रिणायस्य स्तुति चकार।
दानेश्वरत्व जिनपुंगवाय पुन स्तुवः श्रेयगणाजिनानाम्॥

Colophon : इति जिन गुण-सपति-पूजा सम्पूर्णम्।

देखें, जि० र० को०, पृ० १३५।
रा० सू० III, पृ० २०५. ३०८।

१७६०. जिनवाणी-पूजा

Opening : प्रकटति परमार्थं सूत्रसिद्धान्तसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारदासंदधानम् ।
जगति समयसार: कीर्तितः श्रीमुनिंद्रैः,
स वसतु मम चित्ते सश्रुतज्ञानरूपः ।
जगति समयसारं ते परं ज्योतिरूपैः,
सुवृतमति विद्यते ज्ञानरूपं स्वरूपम् । १।।

Closing : अग्यानतिमिरहर ज्ञानदिवाकर पढ़ै गुनै जो ग्यानधनी ।
ब्रह्म जिनदास भासै विवुध प्रकासै मनवांछित फल वुध धनी ।।

Clolophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी जी की पूजा जयमाल भाषा सस्कृत सम्पूर्णम् ।

१७६१. जंबूस्वामी-पूजा

Opening : चौबीसों जिनपाय पंच परमगुरु वंदिके ।
पूज रचो सुखदाय विघ्न हरो मंगल करो ।।

Closing : ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं सिद्धपरमेष्ठिन् श्रीमज्जंबूस्वामिन् सकलगुण-विराजमान् जलं चंदनं अक्षतं पुष्पं नैवेद्यं दीपं धूप फलं अर्घं महार्घं निर्वपामिति स्वाहा ।

Colophon : इति श्री इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६२. जम्बूस्वामी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७६१ ।

Closing : देखें, क्र० १७६१ ।

Colophon : इति श्री जंबूस्वामी पूजा समाप्तम् ।

१७६३. जयमालिकापूजा

Opening : उच्चलिया सुरसल्लिया पुणभत्तिय कुसुमजलि
अमरिदहं सुरिंदहं णिहय दुरिय ज्वाला
पढ़मविय सुरायणं भुवणसामिणा भोमहि पत्ता,
— — — ॥

Closing : तिण्यरहं सुहसुयरहं पय पंकयाणि खत्तिए ।
निरूभत्तिए विहिज्वातीए चउवीसह सुपविसिए ॥

Colophon : इति जयमालिका पूजा समाप्ता ।

१७६४. ज्ञानपूजा

Opening : प्रणम्य श्रीजिनाधीशमधीश सर्वसंपदाम् ।
सम्यग् ज्ञानमहारत्नपूजां वक्षे विधानतः ॥१॥

Closing : दुरिततिमिरहसं मोक्षलक्ष्मीसरोजम्,
व्यसनघनसमीरं विश्वतत्वप्रदीपम् ।
मदनभुजगमंत्रं चितमात्तंगसिंहम्,
विषयसफरजाल ज्ञानमाराधयत्वम् ॥

Colophon : इति श्री ज्ञानपूजा जी समाप्तम् ।

१७६५. ज्ञानपूजा

Opening : देखें, क्र० १७६४ ।

Closing : देखें, क्र० १७६४ ।

Colophon : इति पंडिताचार्य श्रीनरेन्द्रसेन विरचिता सम्यग्ज्ञान पूजा समाप्ता ।

१७६६. ज्ञानपूजा

Opening : देखे, क्र० १७६४ ।
Closing : देखें, क्र० १७६४ ।
Colophon : इति ज्ञानपूजा ।

१७६७. ज्वालामालिनी-पूजा

Opennig : जय ! ज्वाला जगज्योति होति आनन्द विधाई ।
जय ! ज्वाला हर त्रिधा विघन मोद मगल दाई ।।
जय ज्वाला वर अमित शक्ति श्रुति सारद गावे ।
जय ज्वाला पद सुर मुनिन्द्र मति चिन्तित पावे ।।
Closing : पूजन मख्या छन्द की ...... — ।
Colophon : इति श्री चन्द्रप्रभु जिनदेव वा श्यामल यक्ष तथा ज्वालामालिनी महादेवी जी की पूजन स्तुति समाप्तम् ।

१७६८. ज्वालामालिनीपूजा

Opening : श्रीग्लौ प्रमेशजिनपकजसेवकिन्या,
श्यामाख्यां यक्षिसुवचोपादपद्मयुग्मम् ।
चक्राधिपादिमनुजैं खलवन्द्यमाना,
माह्या नामादिविधिनात्रसमर्थयेऽहम् ।।
Closing : वरमहिषवाहिनि .... शतचूडग ।।जय०।४५ ।
Colophon : इति आरती सम्पूर्णम् ।

१७६९. ज्वालामालिनी-पूजा

Opening : देखें, क्र० १७६८ ।

Closing : राकेंदुविम्बरुचिशोमितदीव्यगात्रे राजीवपत्रनिभपादसुरांग ...... ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८००. ज्येष्ठजिनवर-पूजा

Opening : नाभिरायकुलमंडन .... क्षीर समुद्र भणी ॥१॥

Closing : यावंति जिन चैत्यानि विद्यन्ते भुवनत्रये,
तावंति सततं भक्त्या त्रिपरीत्य नमाम्यहम् ॥३०॥

Colophon : इति ज्येष्ठ जिनवर पूजा ।

१८०१. कलशाभिषेक

Opening : सौगंध्यसंगतमधुव्रतझंकृतेन .... जिनोत्तमानाम् ॥१॥

Closing : मुक्ति श्री वनिताकरोदकमिदं पुन्यकरोत्पादकम् ।
जिन गंधोदकं वंदे ह्यष्टकर्म निवारणम् ॥

Colophon : इति लघु जिन कलशाभिषेक संपूर्णम् ।

१८०२. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : चंद्रावदातै. सरलैसुगंधैरनिघपात्रैर्वरसालिपुंजै ॥ दुष्टो० ॥

Closing : वरखगिन्दु ... उवसग्गुतिहं ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा समाप्तम् ।

१८०३. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : ह्रूंकारं ब्रह्मरुद्रं सुरपरिकलितं ...... विनाशं प्रयुक्तम् ॥

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति श्री कलिकुंड पूजा जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० 1 क्र० ८६१ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १७५ ।

जि० र० को०, पृ० ७४ ।

१८०४. कलिकुण्ड-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : देखें, क्र० १८०२ ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा ।

१८०५. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०३ ।

Closing : सर्पत्सर्पेशदर्पो ... राजहमोवनाह ॥१३॥

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा जयमाल समाप्त ।

१८०६. कलिकुण्ड-पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रूंकारं ब्रह्मारुद्रं ... विद्याविनाशनम् ।

Closing : नव विघ्नविनाशन भयहर ... मव भयार्ति ०००म् ।

Colophon : इति श्री कलिकुण्ड पूजा समाप्ता । श्री ०स्तु ।

१८०७. कलिकुण्ड पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८०६ ।

Closing : देखें, क्र० १८०६ ।

Colophon : इति कलिकुण्ड पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८०८. कंजिका-व्रतोद्यापन

Openign : चिद्रूपं चिदानन्दं अपरं निर्जरं परम् ।
शान्तं कर्म्मातिगं पूतं पुराणं पुरुषोत्तमम् ।।

Closing : अतुलगुणसमग्रं स्वर्गमोक्षापवर्गम्,
त्रिभुवनपरिरिद्धिः प्राप्तसर्वे प्रसिद्धिः ।
समति सुजसकीति कोमलाकीर्त्य-कीर्तिः,
रतनविबुधसातं पातु व मुक्तिकातं ।।७७।।

Colophon : इति कजिकाव्रतोद्यापन समाप्ता श्रीरस्तु । शुभं अस्तु ।

विशेष— इसके आगे पूजा सामग्री विवरणिका भी है ।

१८०९. कर्मदहनपूजा

Opening : लोक सिखर तनछाडि अमूरत ह्वे रहे,
चेतन ग्यान सुभाव गेयते भिन महे ।
लोकालोक सो काल तीन सबविधि धरी ,
आनि सो सिद्ध इव जजौ हुअनि अनी ।।

Closing : पुत्र प्राप्त करि कांन्ति सुन्दरी रोगाग्निधाराधरी,
पापातापहरि प्रबोध सुचरी वश्रीन्द्रभूसोदनी ।
आनन्दादभुत धन्य धाम नगरी मायामय मारी,
चक्रामाभवतो शिवस्य भवतु श्रेयस्करी शकरी ।।

Colophon : इति श्री कर्मदहनपूजा समाप्तम् ।

१८१०. क्षमावणी पूजा

Opening : देवश्रुतगुरुन्नत्वा स्नापयित्वा महोत्सवे ।
ततश्चाष्टविधापूजा कुर्याद्व्रतविधायक. ।।

Closign : यश्चैतत्यमचित्यमद्भुतगुणाः श्रद्धानमंतः स्फुरन्,
ज्ञान पंचसमस्ततत्वविषयं स्वात्मावबोधद्युतिः ।
तच्चारित्रमनंतरगत व्यापारपारंगता ,
वदे तत्रितयं त्रिधापतिणत यन्निश्चयान्निश्चितम् ।।१२।।

Colophon : इति क्षमावणी अर्घं सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०' पृ० १७७ ।

१८११. क्षेत्रपाल पूजा

Opening : युगादिदेव प्रयजे स्वहव्यैः इक्ष्वाकुवंशोधरधर्मवेदी ।
चामीकराभाद्युतिकोटिभानु. प्रह्लाकृता घातकर्तुर्यभागम् ।।१।।

Closing : श्रीमच्छ्रीकाष्टासंघे यतिपति तिलके ··· ·· क्षेत्रपानां शिवाय ।।२७।।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता भगवति क्षेत्रपाल पूजा सपूर्णम् । कातिकमासे शुक्लपक्षे तिथौ पौर्णमास्या भृगुवासरे । श्रीसवत्-१६५३

१८१२. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : क्षेत्रपालाय यज्ञेस्मिन्नत्रक्षेत्राधिरक्षणे ।
बलिं ददामि दिश्यग्ने वेद्या विघ्नविनाशने ।।१।।

Closing : आठ्ठो छंद गानुं मैं जो रंज्यो क्षेत्र को ।
मुनिसुभचद्र गावो छंद भैरूंलाल को ।।
जैन को उद्योत भैरू समकित धारी ।।१२।।

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१८१३. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अपुत्रो लभते पुत्रान् ·· ···· सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ।।

Colophon : इति क्षेत्रपाल पूजनविधानम् ।

१८१४ क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : वंदेहं सन्मति देवं सन्मति मतिदायकम् ।
क्षेत्रपानां विधि वक्ष्ये भव्यानां विघ्नहानये ।।१।।

Closing : सर्वविघ्नहरायक्षा दक्षान्नगुणान्विता. ।
एते पिंडीकृता यक्षाः कारधर्मिना मया ।।२६।।

Colophon : इति क्षेत्रपालानां नामांकित स्तोत्र सपूर्णम् ।

देखे, जि० र० को०, पृ० ६८ ।

१८१५. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें क्र० १८१४ ।

Closing : शांतिधारात्रय ···· ··· ·· क्षेत्रपानां शिवाय ।।२७।।

Colophon : इति श्री विश्वसेनकृता षणवति क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१६. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८१२ ।

Closing : अवसाने राखहु पाप नासहु पहिली पूजा तुम्हरी कही ।
करि पूजा जिनंद ही, कमलानंद ही विजैपाल बहु सिरनवै ।।

Celophon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा संपूर्णम् ।

१८१७. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : देखें, क० १८१२ ।

Closing : इति प्रवुद्धातत्त्वस्य स्वयं - प्रादुरासनजितकर्मी ।

Colophon : इति श्री वृहत् सहस्रनाम समाप्तम् ।

विशेष— इसमें क्षेत्रपालपूजा और वृहत्सहस्रनाम दोनो हैं। बीच के बहुत से पत्र नहीं हैं ।

१८१८. क्षेत्रपाल-पूजा

Opening : प्रणम्य श्री जिनेशानां वर्द्धमानं जिनेश्वरम् ।
पूजा श्रीक्षेत्रपालानां वक्ष्ये विघ्नविहानये ।।१।।

Closing : लक्ष्मीप्राप्तकरी कलत्रसुखकरी चौरादि शत्रूहरि,
शाकिन्यादिहरी प्रशर्मसुचरी राज्यादिनिवर्द्धनी ।
विद्यानंदघनौघनामनगरी विघ्नौघनिर्णाशनी,
पूजा श्री जिनक्षेत्रस्य भवतु सपत्करी चित्करी ।।

Colodhon : इति श्री क्षेत्रपाल पूजा सम्पूर्णम् ।

१८१९. लब्धिविधान-पूजा

Opening : श्रीवर्द्धमानजिनचंद्र ... .. सततं शुभवत्या ।।१।।

Closing : जिणगुणरयणयरू हियै देवायरू केवलणाणलहैवि चिरू ।
हुय सिद्ध निरजणु भवभयवंचणु अगिणिय रिसिपुंगमुजिचिरू ।८।

Colophon : इति लब्धविधान पूजा ।

१८२०. लघुकर्मदहन-पूजा

Opening : तीर्थंकर जिनको नमत सुर नर संत ।
जे वंदौ वरतौ सवा येसे सिद्ध महंत ।।

Closing : मैं मत हीन विवेक नहीं अर प्रसाद में लीन ।
थिरता लघु जग जानककर लघु मत स्व नवीन ।।

Colophon ; इति लघु कर्महन विधान संपूर्णम् । मिति अघन सुदी २ सवद् उनैसै अठाईस दसकत परमानद के मुकाम जवलपुर। ठीकाना हनुमान तलाव श्री मदर बड़े दिवाले के पक्षवाड़े मुना-लाल ।

विशेष — इसके बाद कुछ भजन भी हैं ।

१८२१. लघुपंचकल्याणक विधान

Opening : वंदौ श्री अरहंत पद मन वच तन चितधार ।
मंगलमय जग मैं प्रगट पार उतारनहार ।।

Closing : तुम दयाल जगतपति सिवदरसी भगवान ।
सिव सेवा फल दीजिये तारापति नित जान ।
सवत् येक पदार्थ ससगत मिलाय कर ठीक ।
पूरन पाठ भयो सो तब भद्र कृष्न नवमीस ।।

Colophon : इति लघु पंचकल्याणक विधान सम्पूर्णम् ।

१८२२. महावीर अर्घ्य

Opening : दिन दिन गुनकर करी सदा बहुत जान जिनचन्द ।
वर्द्धमान कही हरी जज्यो मैं पूजों सुखकंद ।।

Closing : ॐ ह्रीं अतिवीरनामेभ्यो अर्घम् ।

Colophon : सम्पूर्णम् ।

१८२३. मंगल

Opening : पणविवि पच ··· ··· ·· जगत मगल गावई ॥१॥

Closing : वदन उदर अवगाह कलस गति जानिए ···· · जगत मंगल गाईए ॥

Colophon : इति तुतीय मंगल सम्पूर्ण ।

१८२४. मंत्रविधि

Opening : ते चतुर्दशी पुष्पार्क होवै त्यागिता दिने उपवास कृत्वा जाप्य १२००० त्रिमध्य अर्द्ध रात्रौ । व ४८००० ।

Closing : अनेन मत्रेण होमं कुर्यात् सहस्र ०२००० । शत्रुनाश भवति । अनेन मत्रेण गजेन्द्रनरेन्द्र सर्वशत्रुवशीकरण पूर्वम स्मरणीयम् ।

Colophon : इति विधि सम्पूर्णम् ।

१८२५. मोक्षपैंडी

Opening : इक्क समै रूचिवत नौ गुरुवरकै सुनु मल्ल ।
जो उफ अंदर चेतना वहै उसाडी अल्ल ॥

Closing : भव थिति जिन्ह की छूटि गई तिन्ह को यह उपदेश ।
कहत बनारसीदास यौं मूढ़ न समुझै लेस ॥

Clolophon : इति मोक्षपैंड़ी समाप्तम् ।

१८२६. नंदीश्वर-पूजा

Opening : नंदीश्वर पूरब दिसा तेरह श्री जिन गेह ।
आह्वानन तिनका करूँ मन वच तन धरि नेह ॥१॥

Closing : मध्यलोक जिन भवन अकित्रिम ताके पाठपढ़े मनलाई ।
जाके पुण्य तनी अति महिमा वरनन को करि सकै बनाई ॥
ताके पुत्र पौत्र अरू सपति बाढ़ै अधिक सरस सुखदाई ।
इह भव जस परभव सुखदाई सुरनर पदलहि शिवपुर जाई ॥

Colophon : इति नंदीश्वर पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८७६ ।

१८२७. नंदीश्वर-पूजा

Opening : मध्येमडपमालिखेद्वर्नरे नदीश्वरं मण्डलम् ।
वर्णे पञ्चभिरानत गुणगुरु शक्र सतां सम्मत ।
तन्मध्ये चतुराननं जिनवरं बिम्वस्य सातास्पदं ।
दिव्यैरष्टभिरिष्ट-सौख्य-जनकैः कुर्यात्तदर्च्चा ततः ॥१॥

Closing : आयु ··· देवार्हतामर्हणा ॥११॥

Colophon : इति श्री नदीश्वरपूजा समाप्त ॥

१८२८. नंदीश्वरद्वीप-पूजा

Opening : कर्पूरपूरपरिपूरितभूरिनीरः धाराभिराभिराभितः श्रीतहारिणीभिः
नदीश्वरेष्टदिवसानि जिनाधिपानां आनंदतः प्रतिकृतिः
परिपूजयामि ॥

Closing : इयथुणि वि जिणेसरू महिपरमेसरू ···· ···· सुक्ख सो पावई ॥

Colophon : इति श्री नंदीश्वर द्वीप पूजा जयमाल समाप्तः । लेखकपाठक-
वाचमश्रोतृणां समस्तु शुभं भवतु ।

१८२९. नवग्रहपूजा

Opening : अर्कश्चंद्रकुजसौम्यगुरुशुक्रशनिश्चरः ।
राहुकेतुग्रहारिष्टनाशनं जिनपूजनात् ।।१।।

Closing : मन वंछित दाईक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरै ।
ग्रह दुख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौबीसी पूजन करै ।।

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८१ ।

१८३०. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें क्र० १८२९ ।

Closing : देखें, क्र० १८२९ ।

Colophon : इति श्री केतुअरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मंगलमस्तु । श्री वीतराग जी सदा सहाय । इति नवग्रहारिष्टनिवारक चतुर्विंशति जिनपूजा सम्पूर्णम् । नवग्रहशान्ति हेतु चतुर्विंशति जिनेन्द्र पूजन मन शुद्ध सागर जी कृत श्री । शुभ सम्वत् १९१३ फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे सोमवारे ।

१८३१. नवग्रह-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८२९ ।

Closing : देखें, क्र० १८२९ ।

Colophon : इति श्री नवग्रह अरिष्ट निवारन पूजा सम्पूर्णम् ।

१८३२. नवग्रह-पूजा

Opening : श्रीनाभिसूनो पदपद्मयुग्मं नरवासुखाणि ? प्रथमं तु तेव,
समग्रमग्नाकिशिर: किरीट संघच्छविश्वस्तमनीयतं वै। ॥१॥

Closing : आदित्यादिग्रहासर्वे नक्षत्रासुरासया।
कुर्वन्तु मंगलं तस्य पूजा कर्तृणस्य वा ॥

Colophon इति नवग्रहपूजा जिनसागरकृत सम्पूर्णम्।

१८३३. नवग्रह-पूजा

Opening : प्रणम्याद्य तत्तीर्थेश धर्म तीर्थप्रवर्त्तकम।
भव्यविघ्नोपशास्वर्थं ग्रहार्चाविर्ण्यते मया ॥१॥

Closing : देखे, क्र० १८२६।

Colophon : इति श्री केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सपूर्णम्। इति नवग्रह पूजा जी सम्पूर्णम्। शुभं अस्तु मंगलम् अस्तु।

१८३४. नवग्रह-पूजा

Opening : ग्रहाम शप्दये युष्मानयात: सपरिसदा।
अत्रोपवसतां तावो जये प्रत्येकमादरात् ॥१॥

Closing : ॐ ह्री नवग्रहेभ्य दक्षिणा प्रदानम्।

Colophon : इति नवग्रह पूजाविधानम्।

१८३५. नवकार-पंच-त्रिशत्पूजा

Opening : श्रीमज्जिनेंद्रवरसाधनसारभूत पूज्य नरामरसुखेचरनायकैश्च।
ध्येय मुनींद्रगणनायकवीतरागं संस्थापयामि नवकारसुमंत्रराजम्।

Closing : जय परमणि रंजण दुरिय विहडण ··· वरदिंतु सुहा ॥

Colophon : इति श्री नवकार पैंतीसी पूजा जयमाला सम्पूर्णम् ।

१८३६. नवपद-कलश-पूजा

Opening : — जोयन श्री जे अरे पहिलो तीरथराय ।
सोल जोजन ऊंचो सही ध्यानधरु चित लाय ॥

Closing : वाणी वाचक जस तणी कोई न थई अधूरी रे ॥२२॥

Colophon : इति इति नवपद कलश पूजा समाप्तम् ।

१८३७. नेमिनाथ जयमाला

Opening : नेमिजी तुम्हारी हठ मानी ॥

Closing : जो एतना करी ··· ··· ··· पावै ।

Colophon : इति नेमिजयमाल समाप्तम् ।

१८३८. न्हवण-पूजा

Opening : सौगंधसंगतमधुव्रतझंकृतेन संवर्णमानमिव गंधनिद्यमाद्यौ ।
आरोपयामि विबुधेश्वरबृंदवंद्य पादारविंदमभिवंद्य जिनोत-
मानाम् ॥१॥

Closing : ··· ··· जन्मजरामरण ··· ··· ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८३९. न्हवण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८३८ ।

Closing : अर्हा सिद्धा आइरिया उवज्झाया साहु परमेट्ठी ।
एदे पंच णमोयारा भवे भवे मम सुह दिंतु ।।१।।

Colophon : इति न्हवणपूजा ।

१८४०. न्हवणकाव्य

Opening : दूरावनम्रसुरनाथकिरीट कोटि संलग्नरत्नकिरणच्छविधू-
सरांघ्रि ।। ।।
प्रस्वेदतापमलमुक्तमपिप्रकृष्टैं भक्त्यां जल जिनपते वहुधाभि-
सिंचेत् ।।१।।

Closing : यं पाडुकं ··· ··· ····ल त्वदीय बिंबम् ।।

Colophon : इति बिंब स्थापण मत्र ।

१८४१. निर्वाण-पूजा जयमाला

Opening : कमलणवेप्पिणु हिये घरेप्पिणु वाएसरेगुणगणहरह ।
णिव्वाणई ठाणइ तित्थसमाणइ पयडमि भत्ति जिनेस हं ।।१।।

Closing : इय तित्थंकर तित्थइ पुण्णवित्तइ पठइ वियाणइ विमलयरे ।
तह पावपणासइ दुरिय विणासइ मंगल सयल पहु तिधरे ।।१७।।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा की प्राकृत आरती संपूर्णम् ।

१८४२. निर्वाण-पूजा

Opening : अपवित्रपवित्रो वा सर्व्वावस्थागतोपि वा ।
यः स्मरेत्परमात्मानं सः बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति णिव्वाण पूजा समाप्तम् ।

देखे, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८४३. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय ... सव्वसाहूणं ॥१॥

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा जी समाप्तम् ।

१८४४. निर्वाण-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय । णमोस्तु णमोस्तु णमोस्तु ।

... ... णमो लोए सव्वसाहूणं ॥१॥

Closing : कहे कहाली तुम सब जानो, द्यानत की अभिलाष प्रमानो ।

करो आरता वर्द्धमान की पावापुर निर्व्वाण थान की ॥७॥

Colophon : इति आरती संपूर्णम् ।

१८४५. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति निर्व्वाण पूजा ।

१८४६. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : संवत् सत्रह सै इकताल, आसिन सुदि दसमी सुविशाल ।

भैया वंदन करै त्रिकाल, जय निर्वान काण्ड गुनमाल ॥

Colophon : इति निर्वान काण्ड सम्पूर्णम् ।

१८४७. निर्वाण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाण पूजा समाप्ता ।

१८४८. निर्वाण-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८४३ ।

Closing : देखें, क्र० १८४४ ।

Colophon : इति निर्वाण पूजा सम्पूर्ण ।

१८४९ निर्वाण-पूजा

Opening : वदौ श्री भगवान को भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।१।।

Closing : श्री तीर्थङ्कर चतुर वीस भगवांन है ।
गर्भ जन्म तपज्ञान भए निरवांन है ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५०. निर्वाण-क्षेत्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४९ ।

Closing : संवत् अष्टादस सही सत्तर एक महान ।
भादो कृष्ण जु सत्तमी पूरण भयो सुजान ।।२४।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१८५१. निर्वाण क्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज चौबीस जहाँ जहाँ शिवथानक भयो ।
सिद्धभूम दशदीश मन वच तन पूजा करो ।।१।।

Closing : ए थल जावै पाप मिटावैं गावैं ध्यावे भक्ति बढ़ावें ।
जो पुजे सो शिव लहैं ।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्रकी पूजा सम्पूर्णम् ।

१८५२. निर्वाणकल्याणक-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८४३ ।

Closing : देखे, क्र० १८४१ ।

Colophon : इति श्री निर्वाणकल्याणक जी की पूजा भाषा संस्कृत जयमाल सहित सम्पूर्णम् ।

१८५३. निर्वाण-कल्याणक

Opening : केवल दृष्टि चराचर देख्यो जारिसो,
भविजन प्रति उपदेश्यो जिनवर तारिसो ।
भव भयभीत महाजन सरन जे आईया,
रतनय सुन लछन शिव पंथ भाईया ।।१।।

Closing : रचि अगरचंदन प्रमुख परिमल द्रव्य जिनजयकारियो ।
पद पतन अग्निकुमार मुकुटानल सुविधि संस्कारियो ।
निर्वान कल्याणक सुमहिमा सुनत सब सुख पाईये ।
भणि रूपचंद सुदेव जि नवर जगत मंगल गाईये ।।६।।

Colophon : इति निर्वाण कल्याणक भाषा सम्पूर्णम् ।

१८५४. नित्यनियम-पूजा

Opening : सौगन्धसंगतमधुव्रत .... ।
पादारविंदमभिवंद्यजिनोत्तमानाम् ।।१।।

Closing : सुखदेवो दुखमेटिवो एहि तुमारीवानी,
मो अधीर की बीनती सुन लीजै भगवान ।
दरसन कीजै देव कौ आदि मध्य अवसान,
सुरगन के सुखभोगके पावै पदनिरवान ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५५. पद्लावर्नी

Opening : शिखर गिर के ऊपर तिर्थङ्कर विराजे ।
आधि रात में याते देव दुंदुभिवाजे ।।

Closing : समेद शिखर पर्वत केऊपर बीसतीर्थङ्कर मुक्ति गए ।
ककर ककर सिद्ध विराजे असंख्यान मुनि मुक्ति गए ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८५६. पद्मावती-पूजाविधान

Opening : देखें, क्र० १८५७ ।

Closing : पाथोभिदिव्यगध्यैः ... .. पूजयामीष्टसिद्धैः ।।१३।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८५७. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीपार्श्वनाथ-जिननायकरत्नचूडा-,
पाशांकुशोरभफलांकितदो श्चतुष्काः ।
पद्मावती त्रिनयना त्रिफणावतंस-,
पद्मावती जयतु शासनपुण्यलक्ष्मी ॥

Closing : या देवी रिपचोरवन्हिजमहा संकष्ट संहारिणी,
या रात्रिचरभूतखेचरमहाबेतालनिर्णाशिनी,
रंकानां धनदायिनी सुखकरा इष्ठार्थ संपादिनी,
सा मां पातु जिनेश्वरी भगवती पद्मावती देवता ॥

Colophon : इति पद्मावीपूजा चारूकीर्तिकृत सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८२ ।

१८५८. पद्मावती-पूजा

Opening : देखे, क्र० १८५७ ।

Closing : श्रीमत्पद्मगराजाग्रे वाराधारां करोम्यहं,
सर्वशोकस्य शांत्यर्थं भृंगारनालनिर्गता ॥१०॥

Colophon : नहीं है ।

विशेष— इसमे पार्श्वनाथपूजा तथा धरणेन्द्रपूजा भी संकलित है ।

१८५९. पद्मावती-पूजा

Opening : श्रीमच्चतुर्द्विदशशोभितदीर्घबाहिनी वज्रादिकायुधधरामहमा-
ह्वयामि ॥
संस्थापयामि सुजनैरभिपूज्यमानां पद्मावतीक्षितिनुता फणिराज-
कांता ॥

Closing : नाहंकारवशीकृतेन मनसा न द्वेषिणा केवलम्,
नैरात्म्यं प्रतिपद्य नश्यति जनाः कारुण्य बुध्या मया ।
राज्ञ श्री हिमशीतलस्य सदसि प्रायो विदिग्धात्मना,
बौद्धोद्यान् सकलान् विजित्य सुगत पादेन विस्फालितः ॥१६॥

Colophon : इति अकलंकाष्टकम् ।

१८६०. पद्मावती-पूजा

Opening : नमः श्रीपार्श्वनाथाय ··· ··· चतुर्विंशति मंगलम् ॥

Closing : श्रीपार्श्वनाथपदपंकज-सेव्यमानं – प्रणमामि नित्यम् ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८६१. पद्मावती-पूजा

Opening : जय कुसुमकुंकुमारुणशरीर ···· पद्मावती ॥

Closing : गम्भीरं मधुर मनोहरतरं सद्घोषरत्नाकरम्,
वक्त्र पूर्णकर सुधाहितकर भक्तांबुज भास्करम् ।
नानावर्णसुरत्नभूषितकरं संसारसौख्याकरम् ।
श्रीपद्मावती देविमूर्त्तिसुभद्रं कुर्वन्तु वो मंगलम् ।

Colophon : इति श्री पद्मावती देवी पूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८३२ ।

१८६२. पद्मावती-पूजा

Opening : देखें, १८६१ ।

Closing : देखे, क्र० १८६१ ।

Colodhon : इति श्री पद्मावती पूजा समाप्तम् ।

१८६३. पद्मावती-व्रतोद्यापन

Opening : नम श्री पार्श्वनाथाय मोक्षलक्ष्मी तिवासिने ।
वक्षे पद्मावती पूजा चतुर्विंशतिअंगया ।।१।।

Closing : ये पूजयती मनकायवाणा तेषां जनानां सुखदायकानि ।
पद्मावतीनामपरं पवित्र सद्यः पव दान ददाति पूजा ।।६।।

Colophon : इति प्रथमनिरूपमं पुष्पांजलिम् ।

१८६४. पंचबालयती पूजा

Opening : श्री जिनपच अनंगजित वासु-पूज्यमल्लनेम ।
पारसनाथ सुवीर अति पूजों चितधर प्रेम ।।१।।

Closing : ब्रह्मचर्य सों नेह धर रचियो पूजन पाठ ।
पाचौं बाल जतीनकौ कीजै नित प्रति पाठ ।।२७।।

Colophon : इति श्री पचबालजती पूजा सम्पूर्णम् । शुभम्

१८६५ पंचकल्याणक-पूजापाठ

Opening : श्री चौबीस जिनेस पद बदौ मन वच काय ।
जाक ध्यावत भव्य जन भववारिधि तरिजाय ।।१।।

Closing : सात जुगुल नव एक लिपि सवत् श्रावण मास ।
कृष्णपक्ष दसमी दिवस शुक्रवार परभास ।।१३।।

Colophon : इति श्री चतुर्विंशति जिन पंचकल्यानक पूजापाठ समाप्त

१८६६. पंचकल्याणकपाठ

Openign : पणविविपंचपरमगुरुजिनशासन ... — - पापप्रणा-
सनम् ।।१।।

Closing : पावए अष्टौ सिद्ध ... चउसंघहि गए ॥२५॥

Colophon : इति श्री पच कल्याणक जी समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८८६ ।

१८६७. पंचकल्याणकपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : फुनि हरै पातक टरै विघन जे होय मगल नित नए ।
भनि रूपचंद त्रिलोकपति जिनदेव चउ सघहिगए ॥२६॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक संपूर्णम् ।

१८६८. पंचकल्याणकपूजा

Opening : सिद्ध कल्याण बीज कलिमलहरणं पंचकल्याणयुक्तम्,
स्फुर्यदेवेन्द्रवर्यै मुकुटमणिगणैर्चितपादारविन्दम् ।
भक्त्या नत्वा जिनेन्द्रसकलसुखकरं कर्मवल्लीकुठारम्,
कुर्वेऽहं पूजन वैः प्रबलभवभय शान्तये श्री जिनानाम् ॥१॥

Closing : इति शान्तिधारा त्रय —
ये कल्याणकभूषिताः सुरनुता सत्य च बोधान्विताः ।
भव्यै सद्विधिनाविधानसमये संपूजिताः संस्तुता. ॥
त्रैलोक्येशमहोदरोऽप्येव सुखं संसारकं चाप्नुतम्,
मोक्ष चापि दिशतु वैः जिनवराः सर्वात्मना सर्वदा ॥६॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणकपूजा समाप्तम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८६७ ।

दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८४ ।

Cagt, of Skt. & Pkt. Ms. P. 662.

१८६९. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८६८।

Closing : अनेकतर्कसंकर्षहर्षातितबुद्योत्तमा ।

स्वर्द्धिनी च वयस्फूर्तिजीवात् श्री प्रतिवर्द्धनम् ॥

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक पूजा जी सम्पूर्णम् । लाला संकरलाल रतनचंद के माथे को पुस्तक ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६०२।

१८७०. पंचकल्याणक-दोहा

Opening : कल्याणक नायकनमूं, कलपकुरूह कुलकंद ।

कल्मष दुर कल्याणकर, बुधकुलकमलदिनद ॥१॥

Closing : तीन तीन वसु चद ये संवत्सर के अंक ।

जेष्ट शुक्ल दशमी दिवस पूरन पठो निसंक ।

Colophon ; इति पचकल्याणक के सागीत कवित सम्पूर्णम् ।

१८७१. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : परमब्रह्मभ्यस्तेभ्यो नमो निर्वाणसिद्धये ।

येषा नामान्यनतानि कातिभिरपि सस्तुवे ॥१॥

Closing : देह दीप्तप्रकारी सुनाग सुहरी चक्रेन्द्रसपत्करी जन्मादिसुतरी ।

गुणाकरकरी स्वमोक्षधाम्नीकरी .... रोगाद्यनाशकरी ॥

Colophon : इति श्री चतुर्विंशतितीर्थङ्कर पूजा पचकल्याणक समाप्तम् ।

१८७२. पंचकल्याणक-पूजा

Opening : पंच परमगुरु वंदि करि पंचकुमार मनाय ।

मदन व्याधि मेरी हरो जगत करो सुखदाय ॥

Closing : पूजन पंचकुमार ·· — मोक्ष सुरपायहो ।।१७।।

Colophon : इति श्री पंचकुमार जिनेन्द्रपूजा संपूर्णम् ।

१८७३. पंचकुमार-विधान

Opening : ॐ परम ब्रह्मणे नमो नमः । स्वस्ति स्वस्ति, जीव जीव, नंद नंद वर्द्धस्व वर्द्धस्व विजयस्व विजयस्व आनुसाधि आनुसाधि — .... ।

Closing : ॐ ह्रीं क्रों षष्टिमहस्र मंडपेभ्यो स्वाहा । नाग-संतर्पनार्थं ईशान्यां दिसि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।

Colophon : इति पंचकुमार विधान सम्पुर्णम् ।

१८७४. पंच-मंगलपाठ

Opening : शिलागतमादिदेवयध्नस्नापयन् सुरवरा. सुरशैलमूर्ध्नि । कल्याणमी सुरदमक्षततोयपुंजे संभावयामि पुर एव तदीय बिंबम् ।।

Closing : मैं मति हीन भगति बसभावन ... ... । — .. — जिन देव वो संघहि जयौ ।।१५।।

Colophon : इति श्री पंचकल्याणक गीतम् ।

१८७५. पंच-मंगलपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : देखें, क्र० १८६७ ।

Colophon : इति श्री रूपचंद कृत पंच मंगल समाप्तम् ।

१८७६. पंचमंगलपाठ

Opening : देखें, क्र० १८६६ ।

Closing : देखें, क्र० १८६६ ।

Colophon : इति पंचमगल सम्पूर्णम् ।

१८७७. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८ ।

Closing : ॐ नंदीश्वरद्वीपबावनजिनालयस्थ जिनेभ्यो नम. ।

Colophon : नहीं है ।

१८७८. पंचमेरु-पूजा

Opening : संवौषडाहूयनिवेश्य नाम्या सान्निध्यमानीयवषड्पदेन,
श्रीपचमेरुस्थ जिनालयाना यजाम्यशीतिः प्रतिमासमस्ता ॥१॥

Closing : पचमेरु की आरती पढ़ै सुनै जो कोय ।
द्यानत फल जानै प्रभु तुरत महा सुख होय ॥

Colophon : इति श्री पंचमेरु जी की आरती भाषा सम्पूर्णम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ८९१ ।

१८७९. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८ ।

Closing : देखें, क्र० १८७८ ।

Colophon : इति पंचमेरु की आरती समाप्तम् ।

१८८०. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, क्र० १८७८ ।

गन्धपुष्पअक्षतदीपधूपै. नैवेद्य दुर्वाफलवह्निरर्घै. ।

श्री पंचमेरोस्तु जिनालयानां यजाम्यशीति प्रतिमां समस्तम् ।

Colophon : इति श्री पंचमेरू पूजाष्टकं समाप्त. ।

१८८१. पंचमेरु-पूजा

Opening : देखें, १८७८ ।

Closing : भूधर प्रति जेहा कर्म न एहा, भक्ति विषै दिठ भव्य जनो ।

कर पूजा सारी अष्टप्रकारी, पंचमेरु जयमाल भणो ॥१॥

Colophon : इति पंचमेरु पूजा ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८५ ।

१८८२. पंचमेरु-पूजा

Opening : जिनान् संस्थापयाम्याह्वानादि विधानतः ।

सुदर्शनाख्यमेरुस्थान् पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Closign : सुदर्शनादिमेरूणां पूजाकारिसुभावहा ।

रत्न-रत्नाकरेणासौ पुष्पांजलि विशुद्धये ॥

Colophon : इति श्री पुष्पांजलि पूजा समाप्तम् ।

१८८३. पंचमेरुपूजा

Opening : तीर्थंकर के न्हौन जलतै भए तीरथ सर्वदा,

तातैं प्रदच्छन देत सुरगन पंचमेरुनि की सदा ।

दो जलधि ढाई दीप में सब गनत मूल विराजही,
पूजो असी जिनधाम प्रतिमा होहिं सुख दुख भाजही ।।१।।

Closing : देखे, क्र० १८७८ । ।

Colophon : इति पंचमेरु पूजा

१८८४. पंचपरमेष्ठी अर्घ्य

Opening : श्रीमन्त्रिलोके तिलकायमान मानुन्नतोमव्यसरोजभानु: ।
देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवंद्यो वंदे जिनेन्द्रोविश्रुतं विधाता ।।

Closing : ॐ ह्रीं समोशरणादिश्वराय अष्टाविंसतिगुण विराजमानाय श्री मोक्षलक्ष्मीनिवासाय श्री सर्वसाधुपरमेष्टिणो मम सुप्रसन्नवरदा भवंतु ।।

Colophon : इति पंचपरमेष्ठी अर्घ सम्पूर्णम् ।

१८८५. पंच-परमेष्ठी जयमाला

Opening : मणुयण इद ······· अट्ठावरं मंगलं ।

Closing : अरुहा सिद्धा आयरिया उवझाया साहुपचपमेट्ठी ।
एदे पंच नमोयारो भवे भवे मम सुह दितु ।।७।।

Co'ophon : इति श्री पचपरमेष्ठी जयमाल सम्पूर्णम् ।

१८८६. पंच-परमेष्टी पाठ

Opening : प्रथम पचपद को नमों गुरुपद सीस नवाय ।
तुच्छ बुद्धि रचना रचौ सारद सरन मनाय ।।१।।

Closing : जं जै श्री आचार्य नमस्ते, गुन छतीस वपुधार्य नमस्ते ।
तिन पदनमिधरि ध्यान नमस्ते, होतआतमाज्ञान नमस्ते ।।३।।

ॐ जै श्री उपझाय नमस्ते, गुन पचीस सुखदाय नमस्ते,
वंदय जे धरि भक्ति नमस्ते, ... ॥४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१८८७. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीमतं त्रिजगदेवं त्रैलोक्यानंददायकम् ।
चन्द्राकं चन्द्रप्रभं वंदे स्वस्थप्रारब्धसिद्धये ॥

Closing : धर्माधर्मप्रकाशनैकनिपुणस्त्रैलोक्यविम्बाधरो,
मोहे भेशमृगेश्वरे गतरिपुर्देवाधिदेवो जिन. ।
संसारार्णवतारकोहतमलो धर्मादिभूषो मुनिः,
श्रीदेवेन्द्रसुकीर्त्तिपादनमितः कुर्यात्सदा वः सुखम् ॥

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री धर्म्मभूषण विरचितं परमेष्ठिपूजा समाप्ता । शुभमस्तु ।

१८८८. पंच-परमेष्ठी-पूजा

Opening : श्रीधर श्रीकर श्रीपते भव्यन श्री दातार ।
श्री सरवज्ञ नमो सदा पार उतारन हार ॥

Closing : संवत एक सहस्र नव सतक सो सताईस ।
भादो क्रुरन त्रयोदसी बुद्धवार सो गनीस ॥

Colophon : इति पच परमेष्ठी विधान सम्पूर्णम् ।

१८८९. पंचपरमेष्ठी-पूजा

Opening : ॐ अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधुभ्यो नम,
ॐ अथ अरहंतदेव के ४६ गुण ।

ॐ ह्रीं षट् चत्वारिंशत गुण सहिताहृत्परमेष्ठिभ्यो नम ।

Closing : ॐ ह्रीं वीर्य्यान्तराय कर्मरहित श्री सिद्ध परमेष्ठिभ्यो नमः ।

Colophon : नही है ।

१८६०. पंच परमेष्ठी-पूजा

Opening : कल्याणकीर्तिकमलाकरं सच्च चिदुज्वलमहः प्रकटीकृतार्थम् ।
उच्चैर्निधाय हृदिवीर-जिनं विशुद्धैः शिष्टेष्टपंच परमेष्ठीमहः प्रवक्ष्ये ॥

Closing : स्फुरंतु प्रतापतपनप्रकटीकृताशा।
श्री धर्मभूषणपदांबुजचुम्नावनि ।
कर्त्तव्यमित्युदयतं सुयसोभिनदिसूरे
सर्वतरूदपीकरणैकहेतुः ॥४॥

Colophon : इति यशोनंदिविरचिता पंचपरमेष्ठी पूजा सम्पूर्णम् ।
देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १८७ ।

१८६१. पार्श्वनाथ कवित्त

Opening : प्रभु पारसनाथ अनाथ के नाथ कि जाप जपौ जगवंदन को ;
तिहुंलोक के लायक लायक हो सुखदायक आनि निकंदन की ॥

Closing : जग सौ भै भीत तेरे पथसो परम प्रीति ।
ऐसी जाकी रीति ताको वंदना हमारी है ।

Colophon : नहीं ।

१८६२. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : • न्मंडलं चारुचतुर्विंशति कोष्टकम् ।
महारम्यं पंचवर्णं रत्नप्रकरसंभृतम् ॥२॥

Closing : श्रीमज्जिनेन्द्रपादाग्रे समस्तलोकशांतये ।
भृंगारनालनिर्वीति शांतिधारा करोम्यहम् ।

Colophon : नहीं है ।

१८९३. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : प्रानत देवलोक ते आये वामादेवी उर जगदाधार ।
अश्वसेन सुत नुत हरिहर हरि अंक हरित तन सुख दातार ।।
जरत नाग जुग बोधि दियो तिहि सुरपद परम उदार ।
ऐसे पारस को तजि आरस थापि सुधारस हेत विचार ।।

Closing : पारसनाथ अनाथन के हित दारिद गिरि को वज्र समान ।
सुखसागर वर धन को शशि सम सब कषाय को मेघ महान ।।
तिन को पूजे जो भवि प्रानी पाठ पढे अति आनंद आन ।
सो पावै मन वांछित सुख सब और लहै अनुक्रम निरवान ।।

Colophon : इति श्री पार्श्वनाथ पूजा समाप्तम् ।

१८९४. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : ह्रीं देवं पार्श्वनाथं धरणिपतिनुतं देवदेवेन्द्रवंद्यम्,
ह्रींकारं बीजमंत्रं जगदकलिमत्रं सर्वोपद्रवहारी ।
ॐ ह्रां ह्रीं हूंकारनार अघहरनमहाभक्तिरूपं जनानाम्,
व्यालीढ पादपीठं शठकमठमतिं माह्वयं पार्श्वनाथम् ।

Closing : कल्याणोदयपुष्पवल्लभदयं संसार संतापभृत्,
तुंगौतुंगभुजंगमंगलफणा. माणिक्यमालायते ।
पायास्म्यज्जनभृंगभृंगसहितो नागेन्द्र पद्मावती,
सेव्यसेवक वांछितार्थफलदं श्रीपार्श्वकल्पद्रुमः ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा ।

१८९५. पार्श्वनाथ-पूजा

Opening : सुद्ध तीर्थ पवित्र निर्मल पुण्य हिमकर शीतले ।
मिलि सुगंध जगत पावन जन्म दाघ विनासने ।।
परम श्री जिनपाद पंकज विगत कल्मषदूषणम् ।
श्री पार्श्वनाथमह् यजवर फणि लांछन भूषणम् ।

Closing : जलादिगंधाक्षतचारुपुष्पै, नैवेद्यसद्दीपकधूपफलार्घदानै ।
श्री लक्ष्मिसेनादिसुरासुरेशं, श्री पार्श्वनाथं परि्यमामि ।।

Colophon : इति पार्श्वनाथ पूजा संपूर्णम् ।

१८९६. प्रभाती मंगल

Opening : जै जै जिन देवन के देवा, सुरनर सकल करैं तुम सेवा ।
अद्भुत है प्रभु महिमा तेरी, वरणी न जाय अलप मत मेरी ।।

Closing : निस्तार के तुम मूल स्वामी, बड़े भागनि पाइयैं ।
जन रूपचद चिता कहा जब सरण चरण न आइयैं ।।

Colophon : इति श्री मगलजीत समाप्तम् ।

१८९७. प्रतिष्ठा-तिलक

Opening : अथ बिंबजिनेन्द्रस्य कर्त्तव्यं लक्षणान्वितम् ।
ऋज्यावत सुसंस्थानं तरूणांग दिगम्बरम् ।।१।।

Closing : ये केचिज्जिन ········ नरेन्द्रार्च्चितान् ।।१०।।

Colophon : इति श्री पंडिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचितं प्रतिष्ठातिलक समाप्तम् ।

१८९८. पूजामाहात्म्य

Opening : नीर के चढ़ाये वीर भवदधि पारहूजे चंदन चढ़ाये दाह दुरित मिटाईये ।
पुष्प के चढ़ाये पूजनीक हूजे जगत में अक्षत चढ़ाऐ ते अभय पद पाईये ।

Closing : पाप न कर पावै जाके जिय दया आवै धर्म को बढ़ावे दया कही आचरन को ।
ताते भव्य दया कीजे तिहुलोक सुख लीजे कहत विनोदीलाल जी तहु मरन को ।।

Colophon : इति सम्पूर्णम् ।

१८९९. पूजासंग्रह

यह पूरा ग्रंथ अस्पष्ट है । इसे पढ़ा नही जा सकता ।

१९००. पूजासंग्रह

Opening : प्रणमि सकल सिद्धनिकू प्रणमि सकल जिनराय ।
प्रणमि सकल सिद्धान्तकूँ नमि गणधर के पाय ।।

Closing : मनवछित दायक सेव सहायक जो नर निज मन ध्यान धरे ।
यह दु ख मिटि जाई सौख्य लहाई जिन चौवीसी पूज करै ।

Colophon : इति केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ पार्श्वनाथ पूजा सम्पूर्णम् । इति श्री नवग्रहारिष्ट निवारक चतुर्विंशति जिनपूजा संपूर्णम् ।

१९०१. पूजा-विधान

Opening : चितवत वदन अमल चद्रोपम तजि चिता चित होय अकामी।
त्रिभुवन चद्र पाप तम चरन नमत चरन चद्रादिक नामी॥
तिहुंजग छाई चद्रिका कीरत चिह्न चाद चितत शिवगामी।
वदो चतुर चकोर चद्रमा चद्रवरन चंद्रप्रभु स्वामी॥

Closing : राखो संभार उर कोस में, नहि विसरो पल एकधन।
परमाद चोर टारन निमित करो पाग जिन गुण कथन॥

Colophon : नहीं है।

विशेष इसमें कई पूजाएँ सकलित है।

१९०२. पुण्याहवाचन

Opening : श्री शातिनाथममरासुरमर्तिनाथ
भास्वत्किरीटमणिदीधितिपादपद्मम्।
त्रैलोक्यशाति करणं प्रणव प्रणम्य,
होमोत्सवाय कुसुमाजलिमुत्क्षिपामि॥

Closing श्री शांतिरस्तु शिवमस्तु जयोस्तु नित्यमारोग्यमस्तु: नव पुष्टि समृद्धिरस्तु. कल्याणमस्तु अभिवृद्धिरस्तु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्र-धन तथास्तु।

Colophon : इति पुण्याहवाचन संपूर्णम्।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ९१९।

१९०३ पुण्याहवाचन

Opening : श्रीनिर्ज्जरेशाधिपचक्रिपूर्वं, श्रीपादपकेरुहयुग्ममीशम्।
श्रीवर्द्धमानं प्रणिपत्य भक्त्या सकल्यनीतिकथयामि सिद्धैः॥१॥

Closing : देखें, क्र० १६०२।

Colophon : इति पुण्याहवाचन संपूर्णम्।

१६०४. पुण्याहवाचन

Opening : देखें, क्र० १६०२।

Closing : देखे, क्र० १६०२।

Colophon : इति श्री पुण्याह वाचन संपूर्णम्।

१६०५. पुण्याहवाचन

Opening : देखे, क्र० १६०२।

Closing : चतुर्वर्णसंघप्रसीदन्तु प्रीयन्तां शांतिर्भवन्तु कीर्तीभवतु दीर्घायुरस्तु कुलगोत्रधनधान्यं तथास्तु।

Colophon : इति पुण्याहवाचन लघु सम्पूर्णम्।

१६०६. पुण्याहवाचन

Opening : देखे, क्र० १६०२।

Closing : देखे, क्र० १६०२।

Colophon : इति पुण्याहवाचन सम्पूर्णम्। संवत् १८६६ साक १७३२ प्रमादनाम संवत्सरे श्राव (ण) मासे शुक्लपक्षे षष्टम्यां तद्दिने लिखित कारंजा नगरे द० देवसनराय स्वकरेण स्व-पठनार्थं ज्ञानावर्णिकर्म्मक्षयार्थम्। श्री सरस्वत्यै नम.।

१६०७. पुण्याहवाचन

Opening : ॐ पुण्याहं ३ प्रीयंतां ३ भगवतोर्हंता सर्वज्ञा। सर्वदर्शिनः सकल-वीर्याः सुसकलसुखकरास्त्रिलोकेशास्त्रिलोकेश्वरपूजिता ... ...।

Closing : स्वस्तिभद्रं चास्तु ३ नः स्वीं क्ष्वीं हुंस स्वस्ति स्वस्ति
स्वस्ति भवतु मे स्वाहा।

Colophon : इति पुण्याहवाचन ।

१९०८. पुष्पांजलि पूजा

Opening : वीरदेव को प्रनमि करि अर्चा करो त्रिकाल ।
पुष्पांजलिव्रत कथा को सुनौ भविक अघटाल ।।१।।

Closing : घाति कर्म निरमूलन करो निर्वानिपद तब अनुसरै ।
जा विधि व्रत प्रभाव तित लह्यौ, ललितकीर्ति कवि इस विधि
कह्यो ।।

Colophon : पुष्पांजलिव्रत कथा समाप्तम् ।

१९०९. रत्नत्रयपूजा

Opening : चिदगतिफणविष हरन मन, दुख पावक जलधार ।
शिवसुख सुधा सरोवरो सम्यक त्रयी निहार ।।

Closing : एक स्वरूप प्रकाश निज वचन कह्यो न जाय ।
तीन भेद व्यौहार सब द्यानत को सुखदाय ।।

Colophon : इति रत्नत्रयपूजा सम्पूर्णम् ।

१९१०. रत्नत्रयपूजा

Opening : पंचभेद जाके प्रगट ज्ञेय प्रकाशन भान ।
मोह तपन हर चंद्रमा, सोई सम्यक् ज्ञान ।।

Closing : देखें, क्र० १९०९ ।

Colophon : इति रत्नत्रय पूजा ।

विशेष— इसी से ध्यानपूजा, समुच्चय आरती भी अन्तर्भूत है ।

१६११. रत्नत्रयपूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : मोहाद्रिसंकटतटीविकटप्रवासं संपादिने सकलसत्वहितंकराय ।
रत्नत्रयाय शुभहेतिसमप्रभाय पुष्पांजलिं प्रविमलं हि अवतारयामि ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६१२. रत्नत्रय-पूजा

Opening : श्रीमतंसन्मतं नत्वा श्रीमत. सुगुरुनपि ।
श्रीमदागमत. श्रीमान् वक्ष्ये रत्नत्रयार्चनम् ॥१॥

Closing . देखे, क० १६०६ ।

Colophon : इति रत्नत्रय जी की भाषा आरता सम्पूर्णम् ।
देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६२३ ।

१६१३. रत्नत्रय-पूजा

Opening । देखे, क० १६१२ ।

Closing । इति दर्शनस्तुति .... मुक्ति ॥६॥

Colophon : इति श्री रत्नत्रयपूजा समाप्तम् ।

१६१४. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखें, क० १६१२ ।

Closing : सम्यक दरशन ज्ञाण व्रत शिवमग तीनौं मई ।
पार उतारण जांन द्यानत पूजौ व्रत सहित ॥१०॥

Colophon : इति समुच्चय पूजा जी समाप्तम् ।

१९१५. रत्नत्रय-पूजा

Opening : देखे,, क्र० १९१२ ।

Closing : अतुलसुखनिधानं ··· ··· ···· दर्शनाख्यं सुवांत्रु ।।३।।

Colophon : इति पण्डिताचार्य श्री नरेन्द्रसेन विरचिते दर्शनपूजा समाप्ता ।

१९१६. रत्नत्रय-जयमाला

Opening : जय जय सद्दर्शन भवपत्र निग्मन मोह महातरु वारण ।
उपसम कमल दिवाकर सकल गुणाकर परम मुक्ति सुखकारण ।।

Closing : मदरागकषायरजः समन भवदुर्नयदानवमंदमनम् ।
परमं शिवसौख्यनिवासकर चरण प्रणमामि विशुद्धितरम् ।।

Colophon : नहीं है ।

देखे, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६३२ ।

१९१७. रविव्रत उद्यापन

Opening : पार्श्वनाथमहं वदे सर्वविघ्ननिवारकम् ।
कमठोपसर्गहरन जोर्गाकल्पतरुं परम् ।।

Closing : रविव्रतमहापूजा श्लोकपिण्डीकृताधुना ।
पश्चात्माविते विप्र लेखक चित्ततत्पका ।।

Colophon : इति श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते आदित्यवार व्रत उद्यापन विधि पुजा समाप्तम् ।

१९१८. रविव्रत-पूजा

Opening : इश्वाकुवंशकुलमंडनअश्वसेनो तद्वल्लभः प्रतिवताजिनवामदेवि ।

सस्या जिन बिमलमूर्त्तिसुरेंद्रवंद्य त्रैलोक्यनाथजिनपार्श्वपरं नमामि ॥

Closing : इति रविव्रत पूजा सुरपति पद दूजा जे करंत नव व्रत सही । मन वचकाय धावही सो सुगपद पावही पार्श्वनाथ फल देत सही ॥१२॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा सम्पूर्णम् ।

१६१६. रविव्रत-पूजा

Opening : देखे, क० १६१८ ।

Closing : इक्ष्वाकीवरवंशभूषननृपो श्रीअश्वसेनोनुज,
वामानंदनइन्द्रचंद्रधरनी ससेव्यमान सदा ।
प्रत्याहार्य विभूषित वसुबुधि कल्याणकारी सदा,
ते तुभ्य विदधातु वांछितफलं श्रीपार्श्वकल्पद्रुम. ॥१२॥

Colophon : इति रविव्रत पूजा ।

१६२०. ऋषिमंडल-पूजा

Openign : प्रणम्य श्री जिनाधीशं — वक्षे पूजादिमल्पश. ॥

Closing : श्रीमच्चारुचरित्र ... . नंदीगुणादिमुंनि: ॥

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि: श्लोकै ग्रंथाग्रंथ । ३८० । संवत् १८१८ कार्तिक शुक्ले १४ बुद्धे लि० पंडित श्री हेमराजेन हुकुमचंद गहोई श्रावकस्य पठनार्थम् ।

१६२१. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखें, क० १६२० ।

Closing : देखे, क्र० १९२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडल पूजा समाप्ता । शतत्रयाशीभि: श्लोक ग्रथा-ग्रंथ । संवत् १९५६, वैशाख कृष्ण ८ मंगलवारे लि० ।

१९२२. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९२० ।

Closing : देखें, क्र० १९२० ।

Colophon : इति ऋषिमंडलपूजा विधि समाप्तम् ।

१९२३. ऋषिमंडल-पूजा

Opening : देखे, क्र० १९२० ।

Closing : देखें, क्र० १९२० ।

Colophon : इति श्री ऋषिमंडलपूजा समाप्तम् ।

१९२४. सहस्रनाम-पूजा

Opening : पंचपरमगुरु कोनमों, उर धरि परम सुप्रीति ।
तीरथराज जिनन्द जी, चोबीसों धरि चीत ॥१॥

Closing : सम्वत् विक्रम भूप के जुग गतिग्रह ममि जान ।
यह रचना पूरी भई मगल मुद सुखथान ॥
सिखिरचंद कृत पाठ यह बन्यौ अनुपम रास,
जो पढ़सी मन लाय के पासी सुख्य सुवास ॥

Colophon : इति श्री जिनसहस्रनाम पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । मिति पौषशुद्ध ८ बार सुभ बुध संमत् १९४२ । को पूर्ण हुई सो जयवंत प्रवर्त्तो । श्रीकल्याणमस्तु । शिखिरचंद अग्रवाल गोइल गोती कवि श्री वृंदावन के लघु सुअन कृत जयवंतो ।

१६२५. सकलीकरण

Opening : इन्द्रश्चैत्यालयं गत्वा वीक्ष्य यज्ञांगमज्जिनान् ।
यागमगलपूजार्थं परिकर्मविरेदिदम् ॥१॥

Closing : सिद्धार्थान् अभिमन्त्र्य परमंत्रेण सर्वविघ्नोप समर्थान् सर्वदिक्षु क्षिपेत् ॥

Colophon : इति सकलीकरण सपूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र० पृ० १६४ ।

१६२६. सकलीकरण विधि

Opening : धृत्वा परिधानमुत्तरीयं हारपटकं ग्रैवेयका लंबक,
केयूरांगदमध्यबंधुरकटी सूत्रं च मुद्रान्वितम् ।
चारुकुंडलकर्णपूरममलं कामिन्य कंकणान्,
मजीरं कटकादि जिनयज्ञे श्रीगंधमुद्रांकिते ॥

Closing : सर्वराजभय छि० सर्वचोरभय छि० सर्वदुष्टभय छि० सर्वदृष्टिमृगभयं छि० सर्वसर्पभय छि० सर्ववृच्चिकभय छि० सर्वग्रहभयं चि० सर्वदोषभय छि० सर्वव्या ... — ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६२७. सकलीकरण विधि

Opening : वासपूज्य जगत्पूज्य लोकालोकप्रकाशकम् ।
नत्वा वक्ष्येत्र पूजानां मंत्रान्पूर्वपुराणत ॥

Closing : लोकयाचोक्त श्री सोमसेनमुनिभि शुभमंत्रपूर्वम् ।

Colophon : इति श्री सकलीकरण विधि सम्पूर्णम् सं० १६२१ ।

१६२८. सकलीकरण विधि

Opening : देखें, क्र० १६२५ ।

Closing : देखें, क्र० १६२५ ।

Colophon : इति सकलीकरण सम्पूर्णम् । ह० पंडित परमानंदेन बाबू धर्मकुमारस्य पठनार्थं मिति आषाढ़ शुक्लपक्षे शनिवासरे सवत् १६५५ का । शुभं भूयात् ।

१६२६. समाधिमरण

Opening : गौतम स्वामी बंदु सिरनामी मरण समाधि भला है ।
मोक्ष पाऊं नीस दिन ध्याउ गाउ वचन कलायें ॥१॥

Closing : हास आवे शीव पद पावे बील सुख अनन्ता ।
द्यानत सोगत होय हमारी जैनधर्म जइवत ॥२०॥

Colophon : इति श्री समाधिमरण समाप्तः ॥

१६३०. सामायिकपाठ

Opening : आदि ऋषभ सनमति चरम तीर्थंकर चउबीम ।
सिद्ध सूरि उवझाय मुनि नमो धारि कर सीम ॥

Closing : अैसे सामायिक पढ़ो सार जान मुनिवृंद ।
धर्मराग मति अल्प फुनि भाषामय जयचद ॥

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्नम् ।

१६३१. सामायिक वचनिका

Opening : देखें, क्र० १६३० ।

Closing : देखें, क्र० १६३० ।

Colophon : इति श्री सामायिक वचनिका सम्पूर्णम् ।

१९३२. समवशरण

Opening : आज गई थी समोसरण मैं कहाँ कहुँ हीत हेत री।
बार बार दरवाजे चहुदिस परखा कोट समेत री ॥१॥

Closing : परम सरस्वती सिव — गहे निज ग्याने तीन जु वरी।
कहे दीप याते तुम सेवा भजै भावकर उरसो री ॥

Colophon : अनुपलब्ध।

१९३३. समवशरन

Opening : धूल साल देखे मूल माल नरहत,
डर मांनथल देखें जो ईमान महामानी को।
वेदी के विलोकै आप वेदी पर वेदी होत,
निरवेद पद पावै याते है कहानी को।

Closing : धरि लई सुध अनुभूत की ज्ञानलोग भोगी लयो।
अनुभाग बंध स्थिति भागतें, भागगागदारिद गयला ॥

Colophon : इति श्री मोक्षमार्ग सम्पूर्णम्। सवत् १७७४ वर्षे पोसमासे शुक्लपक्षे सप्तमी शनिवासरे लिखितम्। शुभमस्तु।

१९३४. सम्मेदाचल-पूजा

Opening : मुक्तिकान्ता प्रदातारं स्थानेषु स्थानमुत्तमम्।
मुक्ति तीर्थंकरं प्राप्य वंदे शैलेन्द्रमिद्धिदम् ॥१॥

Closing : वज्रीचंद्रप्रतेंद्रयेंद्रतरणी ······ प्राप्नुवन्ति शिवम् ॥१३॥

Colophon : इति सम्मेदाचल पूजनविधान समाप्तम्। संवत् १८२६ भाद्र वदि १२ भौम दिने लिखि।

१६३५. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : गिरसम्मेदतैं बीस जिनेश्वर सिव गए,
अवर असंषित मुनि तहा तैं सिद्ध भए ।
वदौ मन वच काय नमौं सिर नायकै,
तिष्ठौ श्री महाराज सबै इति आयकै ॥

Closing : ए बीस जिनेश्वर नमित सुरेश्वर नित भविका पूजन आवै ।
नर नारी ध्यावै सो सुख पावै रामचन्द्र जिन गिर नावै ॥११॥

Colophon : इति सम्मेदशिखर पूजा सम्पूर्णम् ।

१६३६. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : परमपूज्य जिन बीस जहाँ ते शिव लये,
औरहु बहुत मुनीश शिवानै सुखमये ।
अैसे श्री सम्मेद शिखर नमिहूं मुदा,
दरब साजि शुचि रुचि युत पूज रचो मदा ॥

Closing : जय एक बार बंदे जु कोय
तसु नर्क तिर्यं च कुगत न होय ।
इत्यादि घनी महिमा अपार
प्रणमों मनवचकर सीसधार ॥

Colophon : 'इति' ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क० ६४३ ।

१६३७. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : सिद्धक्षेत्र तीरथ परम, है उत्कृष्टसुथान ।
शिखर समेद सदानमों होई पाप की हान ॥

Closing : नेमीनाथ श्री अरहनाथ श्री मल्लाना के पूजे पाये,
श्रीयसनाथ श्री सुविधपद्म श्री मुनिसुव्रत को निचै जाये।
श्रीचन्द्रप्रभु कोस एक पर लौट फेर मुनसोव्रत आये।
शीतल अनंत संभव अभिनंदन चित्त भाये वंदो सुख पाये।

Colophon : इति कवित्त संपूर्णम्।
मती भादो, वदी ५, वारगुरु सम्बत् १९२६।
देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६४२।

१९३८. सम्मेदशिखरपूजा-विधान

Opennig : प्रणम्य सर्वज्ञमनतबोद्धामाप्तप्रदं सद्गुणरत्नसिद्धम्।
कुर्वेत्रिशुध्या सुभ्रतां हि तीर्थं सम्मेदशैलस्थजिनेन्द्रपूजाम्॥

Closing : चतु: मुनीन्द्रिभिश्लोकैमानृछदोवचोमये।
ज्ञातव्या ग्रथसंख्या नृगणकैः लेखकोत्तमैः। ५॥

Colophon : इति भट्टारक श्री धर्म्मचंद्र विनुचर पंडित गगादास कृत सम्मेदा-चलपूजा समाप्तम्।

१९३९. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : पंच परमगुरु ······ सारदा सीस॥१॥

Closing : शिखरसम्मेद ······ ······ ······ भानिये॥

Colophon : इति सवैया सपूर्णम्।

१९४०. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : देखे क्र० १९३७।

Closing : तुच्छ बुद्ध मोरी सही पंडीत करो विचार।
भूल चूक अब होई जहां लीजो चतुर सुधार॥६॥

Colophon । इति श्री सम्मेदसिखर जी सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१९४१. सम्मेदशिखर-पूजा

Opening : अमल गंग सुवारिणां भरि झारिणां सुखकारिणाः,
भवतापनिवारिणाः मलहारिणाः कर्मवारिणाः ।
सम्मेदाचलपर्वत अपवर्गतं सुखअपितम्,
वीसतीर्थसुपूजितं भववार्जितं मुक्तिसर्जितम् ।।

Closing : यः यात्राकरि भावसुद्धमनसा ते स्वर्गमुक्तिप्रदा
ते नारकतिर्यंचगतिविमुखा सद्भावनाभावत. ।
तेषां पुत्रकलत्रमित्रभवता मल्लक्ष्मी लीलाकराः
सत्समेदगिरिसु धर्ममतं कुर्वन्तु वो मंगलम् ।।

Colophon । इति श्री सम्मेद जी की पूजा सलाप्ताः ।

१९४२. समुच्चय चौवीसी पूजा

Opening : रिषभ अजित ···· ···· पूजत सुरराय ।।
Closing : मुक्ति मुक्ति दातार — · ·· सिव लहै ।।
Colophon : इति श्री समुच्चय पूजा संपूर्णम् ।

१९४३. शांतिनाथ-पूजा

Opening । शांति जिनेश्वर नमूं तीर्थ वसु दुगुनही ।
पंचमचक्री अनंता दुविधि षट्गुनीही ।।
तृणवत् रिधि सब छांरि धरि तप सिववरी ।
आह्वानन विधि करूं बार त्रय उच्चरी ।।

Closing : प्रभु कै चैय प्रमाण सुरतन धरि सेवा करत सोहयो ।
देवी वृंद जिनवर को जनम कल्याणक गायो ।।

Colophon : इति श्री संपूर्णम् ।

१६४४. शांतिनाथ-पूजा

Opening ; देखें, क्र० १६४३ ।

Closing : इति जिनमाला अमल रसाला ... — सुंदर ततखिन वरई ॥

Colophon : इति श्री शांतिनाथ जी की पूजा संपूर्णम् ।

१६४५. शांतिपाठ

Opening : शांतिजिनंशशिनिर्मलवक्त्रं सीलगुणव्रतसंयमपात्रम् ।
अष्टमहस्रमुलक्षणगात्रं नौमि जिनोत्तममंबुजनेत्रम् ।

Closing : क्षेम सर्वप्रजाना प्रभवतु बलवान् धार्मिको भूमिपालः,
काले काले च सम्यक् वर्षतु मघवान व्याधयो यातु नाशम् ।
दुर्भिक्षं चौरमारिक्षणमपि जगत मास्मभूज्जीवलोके,
जैनेन्द्र धर्मचक्रं प्रभवतु सततं सर्व्व शौख्यप्रदायि ॥

Colophon : इति श्री शांतिजिनस्तोत्रम् ।

देखें, जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६५६ ।

१६४६. शांतिपाठ

Opening : देखें, १६४५ ।

Closing : मंत्रहीनं क्रियाहीनं श्रद्धाहीनं तथैव च ।
स्तवनभक्तिः न जानामि क्षमस्व परमेश्वर; ॥

Colodhon : इति विसर्जन मत्र सम्पूर्णन् ।

१९४७. शांतिपाठ

Opening : देखें, क्र० १९४५।

Closing : आह्वानाय पुरादेव लब्धभागाः यथाक्रमम्।
मयाभ्यर्चिता भक्ता सर्वे यातु यथा स्थितिम्।

Colophon : इति श्री शांति सम्पूर्णम्।

१९४८. शांतिपाठ

Opening : देखे, क्र० १९४५।

Closing : आह्वानन नैव जानामि नैव जानामि पूजनम्।
विसर्जन नैव जनामि क्षमस्व परमेश्वर.।।
स्वस्व स्थानं गच्छतु स्वाहा।

Colophon : इति शांति पाठ।

१९४९. शांतिचक्र-पूजा

Opening : अर्हद्बीजमनाहत च हृदये ··· ···· यद्वाछितम्।।

Closing : निःशेषश्रुतबोधवृत्तमतिभिः प्राज्ञैरुदारैरपि
स्तोत्रैर्यस्य गुणार्णवस्य हरिभिः ···।
··· ·· ··· श्री शांतिनाथ सदा।।

Colophon : इति श्री शांतिचक्र पूजा जयमाल सम्पूर्णम्।

देखें, जि० र० को०, पृ० ३७६।
दि० जि० ग्र० र०; पृ० १९६।

१६५०. शांतिधारा

Opening : श्री खंडोद्रवकर्दमेसु रुचिरै: कर्पूरचूर्णै:मितै:
संमिश्रैकृतिगधिलं नदनदिकमारकूपादिभि: ।
... ... देवां जिनंस्थापये ।।१।।

Closing : सर्व्वदेशमारी छिद-२ भिद-२ सर्व्वविषभयं छिद-२ भिद-९
सर्व्वक्रूररोगवैतालशाकिनी डाकिनी भयं छिद-२ भिद-२ सर्व-
वेदनीं छिद२ भिद-२ सर्वमोहनी ... ... ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५१. शांतिधारा

Opening : सिद्धावल श्री ललनाललामं मही महीयो महिमाभिरामम् ।
आसार संसार यशोपपरामं नमामिनाभेय जिनं निकामम् ।।१।।

Closing : नेत्रे दंद्वरूजाविनाशनकरं ... — स्नानस्य गंधोदिकम् ।।

Colophon : इति शांतिधारा ।

१६५२. शांतिधारा

Opening : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं रों हूं वं भं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं
तं तं पं पं ... — .... ।

Closing : देखें, क्र० १६५१ ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । इति सिद्धासन प्रतिष्ठा संपूर्ण ।
शुभमस्तु ।

१९५३. सप्तर्षि-पूजा

Opening : श्रीमद्गणीन्द्र-हिमवन्मुखकंदरायाः वागनीसप्तसुचरितिवाक् विनिर्गतायाम् ।

स्नातानने कविधधर्मतरंगिकायां योगीश्वरानधरत्नधरान् समर्च्चे ।

Closing ; असमसुखसारं तीक्ष्णदंष्ट्राकरालं स्वकरकरजटिलं दीर्घजिह्वा-करालम् ।

सुघटविकृतचक्रं शांतिदासप्रसस्य भजतु नमतु जैनं भैरवं क्षेत्रपालम् ॥१॥

Colophon : अनुपलब्ध है ।

१९५४. सप्तर्षि-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९५३ ।

Closing : ए रिसि व्रत— ...... वसुरिद्धिहं ॥

Colophon : इति सप्तऋषि पूजा समाप्तम् ।

१९५५. सप्तर्षि-पूजा

Opening : वंदेहं विश्वसेनेशं — ... ... ज्ञानरूपं निरंजनम् ॥१॥

Closing : मानव विकृति येषां ... . तत्व तत्वार्थवेदिनः ॥१४॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६५६. सरस्वती-पूजा

Opening : ॐ नमः अघटित-परमार्थयुक्तसिद्धांतसारे,
जिनपतिसमयेऽस्मिन् सारतां संदधानः।
जयति समयसारकौशलः सम्मुनिन्द्रैः
स वसतु मम चित्ते सच्छ्रुतज्ञानरूपः।

Closing : अज्ञान तिमिरहर ज्ञान दिवाकर, पढ़े सुणे जे भाव घनी।
ब्रह्म जिनदास भासि विविध प्रकासि मनवंछित फल बुद्धिघणी ।।

Colophon : इति सरस्वति जयमाला संपूर्णम्।

१६५७. शास्त्र-पूजा

Opening : पयः पयोधेस्त्रिदशापगायाः पयः पयः पेयतयोपयोग्यम्।
समंतभद्रा श्रुतदेवतायैः भक्त्या परायैः परया ददामि ।।१।।

Closing : जिनवाणी के ज्ञान तैं सूझे लोक अलोक।
द्यानत जग जैवंत को सदा देत है धोक ।।११।।

Colophon : इति शास्त्र पूजा।

१६५८. शास्त्र-पूजा

Opening : जननमृत्युजराक्षयकारण ·· ·· अहं परिपूजये ।।१।।

Closing : मलयकीर्ति कृतामपि सस्तुति पठति यः सततं मतिमान्नरः।
विजयकीर्त्तिगुरुकृतमादरात् सुमतिकल्पलताफलमस्तुति ।।१०।।

Colophon : इति सरस्वति स्तुति विधानम्।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० १६८।

१६५९. शास्त्र-पूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८।

Closing : दुरिततिमिरहंसं मोक्षलक्ष्मी सरोजम्,
मदन भुजगमंत्रं चितमातंगसिंहम् ।
विसनघनसमीरं विश्वतत्त्वैकदीपम्,
विषयरसकरीजालं ज्ञानमाराधीयत्वम् ॥

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्तम् ।

१६६०. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : देखें, क्र० १६५७ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा जी समाप्तम् ।

१६६१. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : स्तुत्वेति .... समुद्चरेत् ॥३॥

Colophon : इति शास्त्रपूजा समाप्ता ।

१६६२. शास्त्रपूजा

Opening : देखें, क्र० १६५८ ।

Closing : देखे, क्र० १६५८ ।

Colophon : इति श्री शास्त्रपूजा सम्पूर्णम् ।

१६६३. शास्त्र जयमाला

Opening : संपयसुहकारण .... संमम्करणं ॥१॥

Closing : इय जिनवरवाणी .... कवि उत्तरई ॥१३॥

Colophon : इति श्री शास्त्रजिनवाणी की जयमाल सम्पूर्णम् ।

१९६४. शत्रुञ्जयगिरिपूजा

Opening : सिद्धं सिद्धार्थदं शुद्धं सिद्धात्मानं स्ववर्गगम् ।
ध्रोव्योत्पादगुणे युक्तं वंदे त्राणहेतवे ॥

Closing : विश्वभूषण तस्य पट्टे प्रसिद्धः कविनायकः ।
तेनेदं रचितः पाठः शत्रुंजयाख्याभिधानकः ॥

Colophon : इति श्री विशालकीर्त्यात्मजो श्री भट्टारक श्री विश्वभूषण विरचिते शत्रुंजय गिरिपूजा समाप्तम् संवत् से १० ? वर्षे अश्विनी शुक्ल द्वितीयां पटनानामनगरे श्रीमूलसंघे बलात्कार गच्छे भट्टारकाधिराज श्री सुरेंद्रकीर्तिजी तच्छिष्येण विनय ताविद तेजपालेनेयं पूजा लिखिता । सत्रुंजय पूजायाः कमलानि प्रथम वलये ।१।। द्वितीय वलये ।।८।। तृतीये ।।१२।। चतुर्थे ।।१३।। पञ्चमे ।।३२।। सर्व ६६।। कल्याणमस्तु । इति सपूर्णम् ।

१९६५. सिद्धपूजा

Opening : उर्ध्वाधोरयुतं सबिंदुसपरं ब्रह्मासुरावेष्टितम्,
वर्गापूरितदिग्गतांबुजदलं तत्संधितत्वान्वितम् ।
अतः पत्रतटेष्वनाहतयुतं ह्रींकार संवेष्टितम्,
देवं ध्यायति मुमुक्षि सुभगो वैरीभकंठीरव ॥१॥

Closing : असमसमयसारं चारुचैतन्यचिन्हम्,
परपरणतिमुक्तं पद्मनंदीन्द्रवंद्यम् ।
निखिलगुणनिकेतं सिद्धचक्रं विशुद्धम्,
स्मरति नमति यो वा स्तोति सोभ्येति मुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

देखें, दि० जि० ग्र० र०, पृ० २००

जै० सि० भ० ग्र० I, क्र० ६६० ।

१६६६. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : आवृष्टं सुरसंपदं विदधति ·········· साराधनादेवता ॥

Colophon ; इति सिद्धपूजा जयमाला समाप्ता ।

१६६७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा जयमाला समाप्तम् ।

१६६८. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धचक्रपूजा समाप्ता ।

१६६९. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।

Closing : देखें, क्र० १६६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा समाप्ता ।

१६७०. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।
Closing : जो पूजैं गावैं पुन बढावैं मन लगावैं प्रीति सौं ।
खुस्याल चन्द कहैं कहां लौं जस जिनो का रीतसौं ।
जे नाम अक्षर जपैं हरषैं धन्य ते नरनारि हैं ।
प्रभु पतित तारन दुःख निवारन भक्त को निरतार हैं ।
Colophon : इति श्री सिद्धपूजा जी समाप्तम् ।

१६७१. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।
Closing : देखें, क्र० १६६५ ।
Colophon : इति सिद्धपूजन प्रतिज्ञा सम्पूर्णम् ।

१६७२. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६७० ।
Closing : देखें, क्र० १६७० ।
Colophon : इति श्री सिद्धमहाराज की पूजा सम्पूर्णम् ।

१६७३. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १६६५ ।
Closing : सिद्ध वरै संसार, सिद्धन की पूजा करो ।
आवागमन निवार, मन वच तन पूजा करो ॥
Colophon : इति सिद्धपूजा संपूर्णम् ।

१९७४. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीतिरस्तु सुवृष्टिरस्तु धनधान्य समृद्धि-
रस्तु आरोग्यमस्तु बिजयोरस्तु भयोरस्तु पुत्रपौत्रोद्भवोरस्तु तव
सिद्धप्रसादात् ॥१॥

Colophon : इति सिद्धपूजा सम्पूर्णम् ।

१९७५. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : कृत्याकृत्तिमचारुचैत्यनिलयान् .... दुष्कर्मणा शान्तये ॥

Colophon : नही है ।

१९७६. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा ।

१९७७. सिद्धपूजा

Opening : देखें, क्र० १९६५ ।

Closing : देखें, क्र० १९६५ ।

Colophon : इति सिद्धपूजा माला सम्पूर्णम् ।

१६७८. सिद्धपूजा

Opening : परम ब्रह्म परमातमा परम जोत परमीस ।
परम निरंजन परम सिव नमो सिद्ध जगदीस ॥१॥

Closing : सुद्ध विसुद्ध सदा अविनासी········ जाने सो दीक्षना आतम को यह ॥

Colophon : संपूर्ण ।

१६७६. सिद्धपूजा

Opening : इत्थं चक्रमुपास्य दिव्य ध्यानं फलं न्यस्तुते ॥

Closing : आकृष्टं सुरसपदा विदधति मुक्तिश्रियोवश्यताम्········ पायात्पं-चनम. कृपाक्षरमयी साराधनादेवता ॥१॥

Colophon : नहीं है ।

१६८०. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : परम पूज्य चौबीस जिह जिह थानक सिव गये ।
सिद्ध भूमि निग दीस मन वच तन पूजा करो ॥१॥

Closing : जो तीरथ जावै पाप मिटावै ध्यावै गावै भक्ति करै ।
ताके जस कहिए संपति लहिए गिर के गुन को बुद्ध उचरै ॥१०॥

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा सम्पूर्णम् ।

१६८१. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : जिनाधीस सिवईस नमि सहस गुणित विस्तार ।
सिद्ध चक्र पूजा रचौं शुद्ध त्रियोग संभार ॥

Closign : जिन गुण करण आरंभ हास्य कोधाम है।
बायस का नहिं सिन्धु तारण को काम है ।।

Colophon : इति श्री सिद्धचक्रपाठभाषा समाप्तम् ।
संवत् १६६४ फाल्गुन शुक्ल ६ लिखितम् ।।

१६८२. सिद्धचक्र-पूजा

Opening : अरिहंत पद ध्यातो थको दव्वह गुण परजाय रे।
भेद छेद करि आतमा अरिहनरूपी थाय रे ।।

Closing : योग असंख्य ते जिण कह्या नव पद मोक्ष ने जाणो रे।
एह तणं अविलंबनैं आतम ध्यांन प्रमाणो रे । २१ वी० ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१६८३. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : वंदो श्री भगवानकूं भावभगत सिरनाय ।
पूजा श्री निर्वान की सिद्धक्षेत्र सुखदाय ।।

Closing : सवत् अष्टादश सही सत्तर एक महान ।
भादो कृष्ण जु सप्तमी पूरन भयो सुजांन ।।

Colophon : इति श्री सिद्धक्षेत्र पूजा समाप्तम् ।

१६८४. सिद्धक्षेत्र-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर बदो महान, कैलास सिखर तैं मोक्ष जांन ।
चंपापुर तैं श्री वासपुज, तिन मुकति लही अति हरषि हूज ।।१।।

Closing : देखें, क्र० १६८३ ।

Colophon : इति सिद्धक्षेत्र पूजा ।

१९८५. शिखर-विलास-पूजा

Opening : जेठ शुक्ल चतुर्थ दिवस ....करिकैं बहुत उछाह ॥

Closing : .... ध्यावैं सो सुख पावैं रामचंद्र निति सिरनावैं ॥

Colophon : इति श्री शिखर विलास जी की पूजा सम्पूर्णम् । लिखंते सीकर-मध्ये — मिति फाल्गुन सुदि अठाई संवत् १९४२ । का लिखते बेठराज दिवाण जी सुखलाल जी का पोता भूल चूक सुद्ध करो ।

विशेष—इसके Closing के पहले का बहुत से पत्र गायब हैं ।

१९८६. सील-बत्तीसी

Opening : सीलबतीसीवर्णवउ ... . सदा सुमरौ रिसहेश्वर ।१॥

Closing : हरिहर इंद नरिंद नरसुर जप हिए कान्ताजेन नारी ।
सजम धरम सुगण अकू जंपहि जसु ते हरि ॥

Colophon : इति सीलबतीसी समाप्तम् ।

१९८७. सिंहासन-प्रतिष्ठा

Opening : श्रीमद्वीरजिनेशानां प्रणिपत्य महोदयम् ।
नव्याशनस्य सूत्रेण शुद्धि वक्ष्ये यथागमम् ॥

Closing : नेत्रे द्वंद्वरुजाविनाशनकरं गात्रं पवित्रीकरम्
वात. पित्तकफादिदोषरहित सूत्र च सूत्र भवेत् ।
पापं कर्म कुरोगनाशनपरं राहुक्षयं कुर्वते,
श्रीमत्पार्श्वजिनेन्द्रपादयुगलं स्नानरय गंधोदकम् ।

Colophon : इति शांतिधारा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु । पौषमासे शुक्लपक्षे तिथौ ६ संवत् १९५५ । श्री इदं पुस्तकं लिखाया भगवानदीन पंडित ।

देखें, जै. सि. भ. ग्र., क. ६६४ ।

१९८८. शीतलनाथ पूजा

Opening : सीतल जुगपद नमूं धर्मदसधा इम भाष्यो,
उत्तमषिमा सु आदि अंत ब्रह्मचर्य सन्ध्यायो ।
सुनि प्रतिबोध हूयो भवि मोक्ष मारग कौं लागै,
आह्वानन विधि करुं चलण जुग करि अनुरागै ।।१।।

Closing : पूर्वाषाढ़ नक्षत्र माघ वदि द्वादशी,
जनमैं श्री जिननाथ वियोगे सब हृसी ।

Colophon : अनुपलब्ध ।

विशेष— इसके बाद अनन्तनाथ, पार्श्वनाथपूजा, शान्तिनाथ पूजा तथा पद्मावती पूजा अधूरी-अधूरी लिखी गई है ।

१९८९. स्नानपूजा-विधि

Opening : प्रथम हुँ निस्सही पूर्वक देह रै जी आवी अंग,
सुद्ध करी नवा वस्त्र पहरी स्वभाल तिलक करिनै ... ।

Closing : देवचन्द्र जिन पूजतां करता भवपार ।
जिन प्रतिमा जिन सारषी कही सूत्र मंझार ।।

Colophon : इति स्नानपूजा विधि संपूर्णम् ।

१९९०. सोलहकारण-पूजा

Opening : एन्द्रं पदं प्राप्य परं प्रमोदं धन्यात्मनामात्मनिमन्यमानः ।
दृक्-शुद्धिमुख्यादि जिनेन्द्रलक्ष्मी महामोहं षोडशकारणानि ।।

Closing : भक्ति प्रदा सुरेन्द्रसंस्तुतमिदं तीर्थंकराणां पदम्,
लब्धुं वांछति योनि (पि) वा चतुरं संसारभीताशयैः ।।
श्रीमद्दर्शनशुद्धिसूरिविनयं ज्ञानं तदा तत्फलम् ।
भक्त्या षोडशकारणानि सततं संपूज्य आराधयेत् ।।

Colophon : नहीं है ।

१९९१. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।
Closing : इम सोलाकारण — ... — सिद्धवरं गणहियइ हरा ।
Colophon : इति सोलाकारण पूजा जयमाल संपूर्णम् ।

१९९२. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।
Closing : इण बहु भविय — — ... संकम्पवि — ... ।
Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९३. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।
Closing : देखें, क० १९९१
Colophon : इति श्री सोलहकारण पूजा सम्पूर्णम् ।

१९९४. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।
Closing : देखें, क० १९९१ ।
Colophon : इति षोडसकारण अंग पूजा समाप्ताः ।

१९९५. सोलहकारण-पूजा

Opening : देखें, क० १९९० ।

Closing : एई सोले भावना सहित धरै व्रत जोइ ।
देव इन्द्र नरविंद पद द्यानत शिव पद होइ ।।

Colophon : इति श्री सोलै कारण पूजा जी समाप्तम् ।

१९९६. सोलह्कारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।।

Closing : एते षोडशभावना ... ... मोक्षं च सौख्यास्पदम् ।।

Colophon : इति श्री षोडशकारण जयमाला भाषा संस्कृत पूजा समाप्तम् ।

१९९७. सोलह्कारणपूजा

Opening : देखे, क्र० १९९० ।

Closing : देखे, क्र० १९९१ ।

Colophon : इति षोडशकारण पूजा ।

१९९८. सोलह्कारण-पूजा

Opening : देखें, क्र० १९९० ।

Closing : भविभवियणिवारणं सोलहकारणं पयडमिगुण-गण-सायर: ।
पणविवि तित्थंकर — ... ।।

Colophon : अनुपलब्ध ।

१९९९. सोलह्कारण-पूजा

Openign : सरब परब मै बड़ा अठाई परब है,
नदीश्वर स्वर जाहि लिए बहु दरब है ।
हमें सकति सो नाहि इहाँ करि थापना,
पूजें जिनग्रह प्रतिमा है हित आपना ।।

Closing : देखें, क्र० १९९५ ।

Colophon : इति सोलैकारण पूजा ।

२०००. सोलहकारण-पूजा

Opening : मैया मेरी कूरिया हसुन ?
आवे मेरी कूरिया हसुन ।
लै खोज मेरी हम वहहमको न बिसरो ये कहमा ।
कर हे सीता वीसेर हम ॥१॥

Closing : सांझ सुबेरा बेर न जाने न जाने धूप अब बरखा जी ॥

Colophon : नहीं है ।

२००१. सोलहकारण-पूजा

Opening : सोलैकारन भाय तीर्थंकर जे भये,
हर्षे इन्द्र अपार मेरु पै ले गए ।
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसों,
हमहूँ षोडस भावन भावैं भाव सों ॥

Closing : देखें, क्र० १९९५ ।

Colophon : इति सोलह कारन पूजा सपूर्णम् । भाद्र शुक्ल १० गुरु स० १९६५ आरा में बाबू हरिदास ने लिखा बाबू अनंतकुमार के पढ़ने हेतु । शुभम् ।

२००२. सोनागिरि-पूजा

Opening : जबूद्वीप मंझार भरत क्षेत्तर कह्यौ,
आरज षंड सुजान बद्र देसै लह्यौ ॥

सोनागिर अभिराम सुपर्वत है तहाँ ।
पंच कोडि अर अरघ मुक्ति पहुंचे तहाँ ॥

Closing : सोनागिर जैमाल का लघुमति कहि बनाय ।
पढ़े सुने जो प्रेम सो तिनको पातक जाय ॥१७॥

Colophon : इति सोनागिरि पूजा संपूर्णम् ।

२००३. स्तवन जयमाल

Opening : श्रीमत् श्रीजिनराजजन्मसमये इंद्रादिहर्षायमान् ।
हस्ताब्जविराजमानत्रिपुरीपुष्पांजलि दापयन् ।
इन्द्राणीपरिवारभृत्यसहिता: देवांगनानृत्यवान,
नानागीतविनोदमंगलविधौ पूजार्थमादसौ ॥१॥

Closing : जिनवर वरमातामाननीय समर्थो स जयति जिनराज लालचंद्र विनोदी ।
जिनवरपदपूज्यं भावनेंद्रसुपूज्यं सकलमलविमुक्तं ते लभते विमुक्तिम् ।

Colophon : इति श्री स्तवन जयमाल सम्पूर्णम् ।

२००४. स्वाध्याय पाठ

Opening : शुद्धज्ञानप्रकाशाय लोकालोकैकभानवे ।
नम: श्री वर्द्धमानाय वर्द्धमान-जिनेशिने ॥१॥

Closing : उज्जोवण मुज्जोवण णिव्वाहण .... — .... भणिया ॥३॥

Colophon : इति स्वाध्याय पाठ: ।

२००५. श्यामलयक्ष पूजा

Opening : महिषासीनकराष्ठासित नख-शिखसुन्दररूप ।
स्थापित यक्ष अष्टमजिना श्यामलरूप अनूप ॥

Closing : श्यामल यक्ष समर्च अर्घ पूजे जो प्राणी ।
तनमन कर आह्लाद प्रगति रुचि हृदि हरषानि ॥
तेइ अन्न धन सौभाग्य अष्टगत पद मिलि जावै ।
अजितदास मन आस पूज एहि गहि सुख पावै ॥

Colophon : इति श्री श्यामल-यक्ष पूजा सम्पूर्णम् ।

२००६. तत्वार्थसूत्राष्टक-जयमाला

Opening : उदधिक्षीरसुनीरसुनिर्म्मलैः कलशकांचनपूरितशीतलैः ।
पवनपावनश्रीश्रुतपूजनैः जिनगृहे जिनसूत्रमहं भजे ॥१॥

Closing : इति जिनमतसूत्रे --- --- --- मोक्षमार्गस्य भानुः ॥

Colophon : इति तत्वार्थसूत्राष्टक जयमालसहित समाप्ता ।

२००७. तेरहद्वीप-पूजा

Opening : श्री अरिहंत प्रमाण करि पंच परमगुरु ध्याइ ।
तिनके गुन बरनन करौं, मन वच सीस नवाइ ॥

Closing : अचल मेरु पश्चिम सुखकार कुमुद देश बसै निरधार ।
जिन मंदिर तहाँ पूजो जाइ, रूपाचल पर अरघ चढ़ाइ ॥

Colophon : अनुपलब्ध ।

२००८. तीनलोक-संबंधी-पूजा

Opening : यह विधि ठाड़ो होय कै प्रथम पढ़ै जो पाठ ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम नासै कर्म जु आठ ॥

Closing : तिहूं जग भीतर श्री जिन मन्दिर बने अकित्रिम महासुखदाय ।

नर सुर खग कर वंदनीक जे तिनको भविजन पाठ कराय ।।
धन धान्यादिक संपति तिनके पुत्र पौत्र सुख होउ भलाय ।
चक्रिपद सुरपद खग इंद्र होय कै करम नास शिवपुर सुखथाय ।।

Colophon : इति श्री तीनलोक-संबंधी पूजा संपूर्णम् ।

२००९. तीसचौबीसी-पूजा

२००९

Opening : संवौषडाह्वानम् संयुक्तान् ठः ठ. स्थापन-निष्टिनार्थान् .... ।।

Closing : सकलसुखधामास्त्रिकालस्य ...... शिवकान्ति ।।

Colophon : इति चौबीसी पूजा समाप्तम् ।

२०१०. तीसचौबीसी-पूजा

Opening : ॐ जय जय जय णमोऽस्तु णमोऽस्तु णमोऽस्तु ... सव्वसाहूणं ।।

Closing : जम्बूघातकपुष्करेषु ... नित्यमाप्नुते ।।

Colophon : इति मधुकरविनिर्योगात् सवणविभावशर्म्मणाविहिता सुहितकरो-भव्यानां नंद्यादचंद्र तारा कनि इति पंडित श्री भावशर्मकृत मधु-करकारितं त्रिशतचतुर्विंशतिकार्चा समाप्तम् ।

२०११. उद्यापन

Opening : भवांभोधिनिमग्नानां जन्तुनां तारणे क्षम ।
संस्थापयामि दशधा धर्म्मशर्म्मैककारणम् ।।

Closing : श्रीनाभीजिनींदो परमानंदो परमसुखकरकारम् ।
भवसागरपारं दुरघनिवारं परम •• .... सुखकारम् ।।

Colophon . इति ।

२०१२. वर्द्धमान-पूजा

Opening : श्रीमतवीर हरैं भवपीर भरैं सुख सीर अनाकुल ताई ।
केहरि अंक अरी करि दंक नये शिव पंकज मोलि सुआई ।।
मैं तुमको इत थापत हौं प्रभु भक्त समेत हिये हरिखाई ।
हे करुना धन धारक देव इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई ।

Closing : श्री सनमति के जुगल पद जो पूजैं धरि प्रीत ।
वृंदावन सो चतुर नर लहै मुकत नवनीत ।।

Colophon : इति श्री वीर वर्द्धमान पूजा समाप्तम् ।

२०१३. वर्तमानचौबीसी-पाठ

Opening : वंदो पाँचो परमगुरु सुरगुरवंदत जास ।
विघन हरन मंगल करन पूजत परम प्रकाश ।।

Closing : रिषभ देव को आदि अंत श्री वर्द्धमान जिनवर सुखकार ।
तिनके चरन कमल को पूजै जो प्रानी गुनमाल उचार ।।
ताके पुत्र मित्र धन जीवन सुख समाज गुन मिले अपार ।
सुरपद भोग भोगि चक्री ह्वै अनुक्रम लहै मोक्ष पदसार ।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौवीस तीर्थंकर जिन पूजापाठ वृंदावन कृत सम्पूर्णम् । ज्येष्ठ मासे शुक्लपक्षे तिथौ १५, भृगुवासरे संवत् १९५२ ।

विशेष—इसके नीचे कवि नाम वर्णन भी दिया गया है ।

२०१४. वर्तमानचौवीसी-पूजा

Opening : श्री आदीश्वर आदि जिन अंतनाम महावीर ।
वन्दौ मन वच काय सौ मेटौ भव भय भीर ।।१।।

Closing : चौबीसों जिनराज की महिमा कही बताई ।
पढ़े सुनै नरनारी सब सुर शिव पहुँचे जाई ।।४३।।

Colophon : इति श्री वर्तमान चौबीसी बास ठिठाने ? की पूजा सम्पूर्णम् । शुभमस्तु सिद्धिरस्तु । कल्यानमस्तु शुभ सम्वत् १८६० । मासोत्तमे मासे अग्रहने मासे शुक्लपक्षे द्वादश्यां चन्द्रवासरे पुस्तकमिदं रघुनाथ सर्मने लेखि पट्टनपुरमध्ये आलमगंज निवसतु । लेखक पाठकयो मगलमस्तु ।। शुभ भूयात् ।

२०१५. वर्तमानजिननाम

Opening : नत्वा सिद्धसमूहं च ज्ञानमूर्तिजिनप्रभम् ।
भरतैरावतास्थानां जिनैः साकं विदेहजै ।।

Closing : भूतानागतवतर्मानजिन ···· ··· ·· सद्भव्यसंप्रार्थनात् ।।३०।।

Clolophon : इति श्री अतीतवर्त्तमानागतपंचभरतैरावतत्रिशच्चतुर्विंशतिका लौकिकाव्यवस्थायां वीक्ष्य कृता शुभचन्द्रेण जिनभक्तिरागात्स्विर नन्दतु । इति त्रिशत्चतुर्विंशतिका पूजा समाप्ता ।

२०१६. विद्यमान-बीसतीर्थंकर-पूजा

Opening : पूर्वापरविदेहेषु विद्यमान-जिनेश्वर· ।
स्थापयामि अहम् अत्र शुद्धमम्यक्तहेतवे ।।१।।

Closing : श्री मदिरादियुगं देवमजितं वीर्यमुत्तमम् ।
भूयात् भव्य सतां सौख्यं स्वर्ग-मुक्ति-सुखप्रदः ।।

Colophon : इति श्री वीस विद्यमान पूजा संपूर्णम् ।

२०१७. विद्यमान बीस पूजा

Opening : देखे, क्र० २०१६ ।

Closing : ए बीस जिणेसर नमिय सुरासुर,
बिहुरमाण मय संथुणिया ।
जे भणई भणावइ अरु मनम वइ ,
ते पावइ सिव परमपय ॥

Colophon : इति बीस बहुरमाण की पूजा जयमाल समाप्तम् ।

२०१८. विद्यमान बीस तीर्थंकर पूजा विधान

Opening : वंदो श्री जिनबीसकों वि हुमान सुखखान ।
दीप अढाई क्षेत्र में श्री विदेह शुभ थान ॥१॥

Closing : सम्बत्सर विक्रम विगत बसु अमग्रहससि कंद ।
ज्येष्ट शुद्ध प्रतिपद सुदिन पूरन भयो सुछन्द ॥

Colophon : इति श्री सीमन्धरादि बीस तीर्थंकर पूजा समाप्तम् । शुभमस्तु ।
लिखा शिखिरचन्द भाद्रपद कृष्ण ग्यारह (एकादशी) वार
शुक्रको शुभ बेला पूर्ण करी । सो जयवन्त प्रवर्त्तो ।

२०१९. विद्यमान बीस तीर्थंकर-पूजा

Opening : श्रीमज्जबूधातुकीपूष्कराद्धं द्वीपेषु स्वयेविदेहा. शर स्युः ।
वेदा वेदा विद्यमानाजिनेद्राः प्रत्येकं तास्तेषु नित्य यजामि ॥१॥

Closing : एते विंशति तीर्थंरा अघहराः कर्म्मारिविध्वंसका,
संसारार्णव तारणैकचतुरा इंद्रादिदेवीरिता ।
अंतातितगुणाकरा सुखकरा मोहांधकाराषहा,
मुक्ति श्रीललनाविलास ललिता रक्षंतु वो भाक्तिकान् ॥१२॥

Colophon : इति विंशतिविद्यमान तीर्थंकर पूजा समाप्ता ।

२०२०. व्रत-विधान

Opening : चौदशि ग्यारस ११ आठें ८ तीज ३ चौथ ४ एवं उपवास ४५
भावनांपचीसी व्रत दसें १० पून्यों १५ एवं उपवास २५ भावनां
बत्तीसी व्रत ।

Closing : आश्विनन्यां पूर्वमुपवास एक पूर्ण सप्तविंशति,
नक्षत्रव्रते द्वितीयमुपवासमन्यां क्रियते ॥

Colophon इति व्रत विधानम् ।